बेहतर जीवन के लिए

मनोविज्ञान

बारहवीं कक्षा के लिए पाठ्यपुस्तक

कमला भुटानी अजीत कुमार दलाल
बसन्त कुमार दास देवव्रत बनर्जी

अनुवाद

कमला भुटानी नरेन्द्र सिंह
शिवकुमार गुप्ता



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
सितम्बर 1992 : आश्विन 1914

PD3 T-MB

प्रकाशन सहयोग

सी.एन. राव : अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग

प्रभाकर द्विवेदी : मुख्य संपादक
दिनेश सक्सेना : संपादक
~~प्रियम बड़ा : सहायक संपादक~~

यू. प्रभाकर राव : मुख्य उत्पादन अधिकारी
सुरेन्द्र कांत शर्मा : उत्पादन अधिकारी
अमित श्रीवास्तव : वरिष्ठ कलाकार
मौ. समिउल्लाह : उत्पादन सहायक
प्रकाश टहिल्याणी : उत्पादन सहायक

आवरण एम. सफल

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस	नवजीवन ट्रस्ट भवन	सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस
श्री अरविंद मार्ग	चितलापक्कम, क्रोमपेट	डाकघर नवजीवन	32, बी.टी. रोड, सुखचर
नई दिल्ली 110016	**मद्रास 600064**	**अहमदाबाद 380014**	**24 परगना 743179**

मूल्य : रु. 21.50

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा कम्प्यूग्राफिक्स, एच-16, ग्रीन पार्क एक्सटेंसन, नई दिल्ली 110016 द्वारा लेज़र कंपोज होकर न्यू एज प्रिंटिंग प्रेस, रानी झाँसी रोड, नई दिल्ली 110005 द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

बारहवीं कक्षा की इस पाठ्यपुस्तक की रचना आज की युवा पीढ़ी की आवश्यकताओ और समस्याओ को दृष्टि में रखकर की गई है। यह मानव व्यवहार के बारे मे समझ विकसित करने पर केन्द्रित है। यह मानसिक स्वास्थ्य के महत्व को भी प्रस्तुत करती है। इसका उद्देश्य युवाओ को अपनी समस्याएं स्वयं समझने और उनका सामना करने में सहायता करना है।

पाठ्यक्रम विकास एक निरन्तर प्रक्रिया है और विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों में हुई उन्नति से अवगत कराने के लिए पाठ्यविवरणो को निश्चित समय के पश्चात् संशोधित किया जाता है। सभी राज्यो और केन्द्र शासित प्रदेशों के मनोविज्ञान के पाठ्यविवरणो का एक कार्यगोष्ठी में विश्लेषण किया गया जिसमें एक व्यापक पाठ्यविवरण बनाने का प्रयत्न किया गया जो इस अवस्था के विद्यार्थियो की आवश्यकताओ और समस्याओं से संबधित हो।

पाण्डुलिपि की रचना चार लेखकों द्वारा की गई। लेखको का मुख्य प्रयास ऐसी सामग्री विकसित करना था जो विद्यार्थियों को प्रत्ययो का आधारभूत बोध करा सके। विषय सामग्री अपने आप मे संपूर्ण है, विशेषतया उन विद्यार्थियों के लिए जिनके लिए +2 स्तर अन्तिम बिन्दु होगा। साथ ही यह उन विद्यार्थियो की अपेक्षाओ को भी पूर्ण करेगी जो भविष्य मे विश्वविद्यालय स्तर पर मनोविज्ञान को एक विषय के रूप मे लेगे।

पाण्डुलिपि का मनोविज्ञान के विशेषज्ञो द्वारा दो कार्यगोष्ठियों मे पुनरीक्षण हुआ और उनके सुझावो को लेखको ने इसमें समाविष्ट किया।

इस पुस्तक के विकास के लिए विस्तृत योजना और समन्वय डा. कमला भुटानी द्वारा किया गया जो चार लेखकों मे से एक हैं। प्रो. ए. शर्मा, प्रो. परीन एच. मेहता, प्रो. के.एन. सक्सेना और प्रो. जे.एस. गौड़ ने डा. कमला भुटानी को कार्य की विभिन्न अवस्थाओं में बहुमूल्य निर्देशन प्रदान किया। इस कार्य में गहन रुचि लेने के लिए प्रो. आर. मुरलीधरन, शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और निर्देशन विभाग की तत्कालीन विभागाध्यक्षा का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

मैं उन लेखकों द्वारा किए गए प्रयत्नो के प्रति हार्दिक आभार अभिलिखित करता हूँ जिन्होने अपने इस निर्दिष्ट कार्य को पूर्ण किया।

मूल अंग्रेजी पुस्तक के हिन्दी रूपान्तरण के कार्य का समन्वय और अनुवाद डा. कमला भुटानी एवं डा. नरेन्द्र सिंह ने किया।

चूँकि पाठ्यपुस्तक की रचना निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें पाठ्य सामग्री का सशोधन और आधुनिकीकरण सतत् आधार पर चलता रहता है, अतः हम इस पुस्तक के बारे मे प्राप्त समालोचना के लिए सदैव आभारी होंगे।

डा. के. गोपालन
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् इस पाठ्यपुस्तक की पाण्डुलिपि के पुनरीक्षण के लिए इन विशेषज्ञों का आभार व्यक्त करती है।

1. प्रो. अणिमा सेन
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

2. प्रो. जी.सी. गुप्ता
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

3. प्रो. के.डी. बूटा
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

4. प्रो. पूर्णिमा माथुर
आई.आई.टी.
नई दिल्ली

5. प्रो. विधु मोहन
पंजाब विश्वविद्यालय
चण्डीगढ़

6. प्रो. आर.आर. त्रिपाठी
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

7. प्रो. मंजुलि गौन
बड़ौदा विश्वविद्यालय
बड़ोदरा

8. प्रो. सी.जी. पाण्डेय
नागपुर विश्वविद्यालय
नागपुर

9. प्रो. जयप्रकाश
एच.जी. विश्वविद्यालय
सागर

10. प्रो. एम.एस. थिमप्पा
बंगलौर विश्वविद्यालय
बंगलौर

11. प्रो. मर्सी अब्राहम
केरल विश्वविद्यालय
त्रिवेन्द्रम

12. प्रो. एच.जी. सिंह् (अवकाश प्राप्त)
गुरुकुल काँगड़ी
हरिद्वार विश्वविद्यालय

13. प्रो. सी.के. धर (अवकाश प्राप्त)
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली

14. डा. ई. मार (अवकाश प्राप्त)
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली

15. डा. मानसिंह्
गोहाटी विश्वविद्यालय
गुवाहाटी

16. डा. सी.एन. माथुर
सुखाड़िया विश्वविद्यालय
उदयपुर

17. डा. आर.बी. सिंह
जोधपुर विश्वविद्यालय
जोधपुर

18. डा. बी.सी. कार
उत्कल विश्वविद्यालय
भुवनेश्वर

19. डा. सी. बीना
यूनिवर्सिटी कालेज फॉर विमेन
कोटी, हैदराबाद

20. डा. एस.जे. सिंह
एच.जी. विश्वविद्यालय
सागर

21. डा. आशुम गुप्ता
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

22. डा. एन.के. चड्ढा
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

23. डा. पी.के. ढिल्लों
दिल्ली विश्वविद्यालय
साउथ कैम्पस
नई दिल्ली

24. डा. पी. खण्डेलवाल
दिल्ली विश्वविद्यालय
साउथ कैम्पस
नई दिल्ली

25. डा. आनन्द प्रकाश
दिल्ली विश्वविद्यालय
साउथ कैम्पस
नई दिल्ली

26. डा. वी. वीरा राघवन
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

27. डा. अमूल्या खुराना
आई.आई.टी.
नई दिल्ली

28. डा. कमलेश मलहोत्रा
गार्गी महाविद्यालय
नई दिल्ली

29. डा. वीना टक्कर
गार्गी महाविद्यालय
नई दिल्ली

30. श्रीमती वन्दना तरनेजा
गार्गी महाविद्यालय
नई दिल्ली

31. डा. प्रेम कपूर
इन्द्रप्रस्थ महाविद्यालय
नई दिल्ली

32. डा. मीनाक्षी सक्सेना
इन्द्रप्रस्थ महाविद्यालय
नई दिल्ली

33. डा. पूनम बत्रा
जीसस मेरी महाविद्यालय
नई दिल्ली

34. डा. एन. मुखर्जी
कमला नेहरू महाविद्यालय
नई दिल्ली

35. डा. जनक जी. सिह
कमला नेहरू महाविद्यालय
नई दिल्ली

36. श्रीमती ममता जाफ्फा
कमला नेहरू महाविद्यालय
नई दिल्ली

37. डा. एस. जावा
लेडी श्रीराम महाविद्यालय
नई दिल्ली

38. डा. रेनु नरचल
लेडी श्रीराम महाविद्यालय
नई दिल्ली

39. डा. के.सी. तुली
जाकिर हुसैन महाविद्यालय
दिल्ली

40. श्रीमती रक्षा अरोड़ा
एस.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

41. डा. जी.के. जुनेजा
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली

42. डा. नरेन्द्र सिह
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली

लेखक

1. डा. कमला भुटानी
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली

2. डा. अजीत कुमार दलाल
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

3. डा. बसन्त कुमारदास
बी.जे.बी. महाविद्यालय
भुवनेश्वर

4. डा. देवव्रत बनर्जी
निदेशक
सी.पी.टी.आर.
39-सी, सदानन्द मार्ग
कलकत्ता

हिन्दी रूपान्तरण का पुनरीक्षण

1. प्रो. एच.जी. सिह
(अवकाश प्राप्त)
गुरूकुल कागड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

2. डा. डी.एन. श्रीवास्तव
आगरा महाविद्यालय
आगरा

गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ:

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

मो० क० गांधी

विषय-सूची

एकक 1

व्यक्तिगत भेद

इस एकक को पढ़ने के बाद विद्यार्थी इस योग्य होंगे कि वे

- जानें कि व्यक्तियों के विभिन्न पहलुओं में अंतर होते हैं जो सामान्य रूप से वितरित होते हैं;
- व्यक्तिगत भेदों के निर्धारकों की व्याख्या कर पाएँ;
- बुद्धि का अर्थ एवं उसके मापन के विषय में बता पाएँ;
- अभिक्षमता के प्रत्यय और उसके मापन को समझ पाएँ;
- विद्यालयी उपलब्धि का अर्थ तथा उसे प्रभावित करने वाले कारकों का वर्णन कर पाएँ;
- अभिरुचि का स्वरूप तथा उसके मापन को समझ पाएँ।

हम सब भिन्न हैं

आपने अपने विद्यालय में प्रातःकालीन प्रार्थना सभा में एकत्रित छात्र-छात्राओं में क्या कभी शारीरिक भिन्नताओं को देखा है। प्रत्येक कक्षा की पंक्ति में विद्यार्थियों की ऊँचाई और वज़न मे स्पष्ट अंतर दिखाई पड़ता है। प्रत्येक कक्षा के विद्यार्थियो की योग्यताओं और अभिरुचियों में भी अतर होता है। उनमें वक्ता, खिलाड़ी, नर्तक, गायक, उच्च उपलब्धि वाले निम्न उपलब्धि वाले, नेता, अनुगामी आदि होते हैं। छात्रों की विषय संबंधी रुचियों में भी अंतर होता है जैसे विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, मानविकी और कम्प्यूटर आदि। विज्ञान मे भी भौतिकी, रसायन, जीव, वनस्पति इत्यादि अनेक विषयों में अभिरुचियों की भिन्नता होती है और इन भिन्नताओं की सूची असीमित है। आप अपने सहपाठियो में स्थित इस भिन्नता से अवगत हैं यहाँ तक कि पशु जगत में भी हाथी, भैंस एवं अन्य यूथचारी पशु समूहों मे 'नेता' एवं 'अनुगामी' होते हैं।

इस संसार में वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ, कलाकार, श्रमिक, किसान, संत-महात्मा तथा अन्य लोग रहते हैं इन लोगों के व्यवहार मे अंतर होता है। उनकी शारीरिक बनावट, अभिरुचि, मानसिक योग्यता, उपलब्धि और अभिक्षमताओं में भी अंतर होता है। कुछ लोग बौने होते है, कुछ विशालकाय होते हैं लेकिन अधिकांश लोगों की ऊँचाई सामान्य होती है। कुछ दुबले-पतले होते हैं तो कुछ बहुत मोटे परंतु अधिकांश लोग इन दोनों सीमाओं के बीच के होते हैं। जहाँ हम एक ओर शकुंतला देवी जैसी महान

गणितज्ञ के बारे मे जानते है वहाँ ऐसे भी लोग है जो मानसिक रूप से विकलाँग है। लेकिन अधिकाँश लोगों की ज्ञानात्मक योग्यताएँ सामान्य है। इसी प्रकार हमने राजनीति मे विशेष रुचि रखने वाले लोगो के बारे में पढ़ा है जिन्होने अपना सारा जीवन राजनीति को समर्पित कर दिया। दूसरी ओर वे लोग भी है जो राजनीति में बिल्कुल रुचि नही रखते। उसी प्रकार हमारा बहुत से अभियताओं, कलाकारों, अभिनेताओं, वैज्ञानिकों, सगीतज्ञो और व्यापारियो आदि से सपर्क होता है जो अपने-अपने कार्य क्षेत्रो मे सफल हैं। उनमें अपने उन कार्यों के लिए कुछ जन्मजात योग्यताएँ हैं और वे उपयुक्त प्रशिक्षण से ही अपने-अपने क्षेत्रो मे सफल हुए हैं। हम कह सकते हैं कि उनकी उन क्षेत्रो में कार्य करने की अभिक्षमता है।

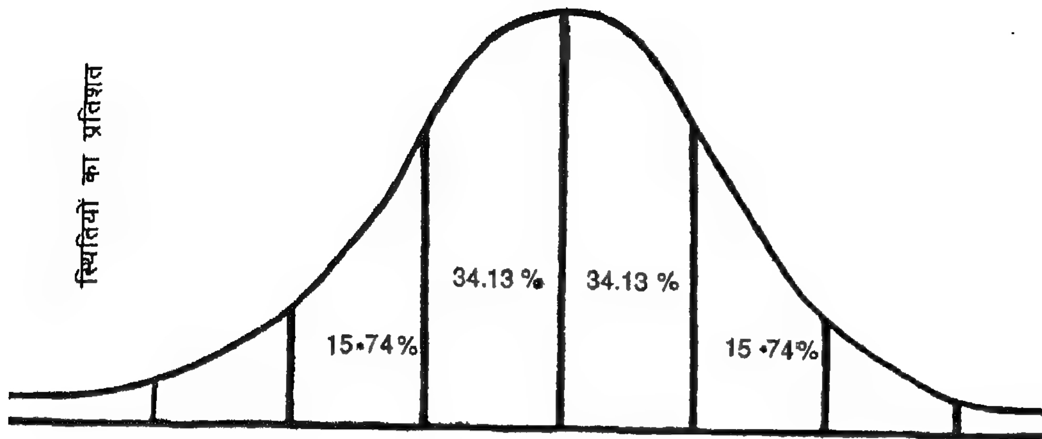
उपरोक्त चर्चा से यह स्पष्ट हो जाता है कि जिस प्रकार सभी लोगों में एक समान ज्ञानात्मक योग्यताएँ जैसे अभिक्षमता, बौद्धिक योग्यता एव अभिरुचियाँ नहीं पाई जातीं उसी प्रकार उनमें शारीरिक गुण भी समान नही पाए जाते। वे भिन्न हैं। जब हम मनुष्यो की शारीरिक विशेषताओं जैसे वजन, ऊँचाई और त्वचा के रंग आदि को मापते है तो पाते है कि कोई भी दो व्यक्ति एक समान नहीं हैं। लोगो की भिन्नता तब और स्पष्ट दिखायी पड़ती है जब हम उनकी योग्यताओं, अभिक्षमताओ तथा अन्य व्यावहारिक विशेषताओं का निरूपण करते हैं। अतः यह ठीक ही कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने में अनोखा है। सर फ्राँसिस गाल्टन ने पहली बार सन् 1896 में मनुष्यो मे वशानुसंक्रमण के विस्तार पर अध्ययन किया। उन्होंने व्यक्तियों में विभिन्नता के मापन के लिए सवेदन-गति परीक्षण तैयार किए।

भिन्नताएँ सामान्य रूप से वितरित होती हैं

व्यक्ति एक दूसरे से भिन्न केवल मात्रा में होते हैं। मात्रा का विचरण सदैव कुछ निश्चित सीमा के अन्दर ही होता है। जैसे लोगो के शारीरिक गुणो की सीमाएँ होती हैं वैसे ही मनोवैज्ञानिक गुणो की भी सीमाएँ होती हैं। शारीरिक गुणो मे ऊँचाई, वज़न, अन्य योग्यताएँ ओर साहसिक क्रियाकलापो आदि की सीमाओ का अभिलेख हम " गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड " मे उल्लिखित पाते हैं। मनुष्य के शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक विशेषताओ का विचरण न तो पूर्ण शून्य से प्रारम्भ होता है और न ही अनंत तक पहुँचता है।

अगर हम सामान्य जनसंख्या में यादृच्छिक प्रतिचयन द्वारा बड़ी सख्या मे लोगो को चुने और उनके किसी मनोवैज्ञानिक गुण का मापन करें तो हमे ज्ञात होता है कि उस गुण का विचरण विशिष्ट प्रकार का है। अधिकतर लोग औसत के लगभग अंक प्राप्त करते हैं बाकी व्यक्तियो मे कुछ बहुत अधिक अक और कुछ बहुत कम अक प्राप्त करते हैं। जब हम इन अंको को लेखाचित्र पर रेखांकित करते हैं तो हमें घटाकार वक्र प्राप्त होता है जिसको सामान्य वितरण वक्र कहा जाता है। उदाहरणार्थ अगर हम यादृच्छिक प्रतिचयन द्वारा बहुत से व्यक्तियो के बौद्धिक लब्धाँक का लेखाचित्र बनाएँ तो हम पाएँगे कि 100 में से 68.26% के अंक वक्र के मध्य क्षेत्र में पड़ते है। यह मध्य क्षेत्र ही औसत कहलाता है। बचे हुए अंको में से 15.74% मध्यक्षेत्र के ऊपर एव अन्य 15.74% मध्य क्षेत्र के नीचे पड़ते हैं जैसा कि चित्र 1.1 में दिखाया गया है।

यह वितरण चार चतुर्थांशों मे भी बाँटा जा सकता है जिसके प्रत्येक चतुर्थांश मे सम्पूर्ण वितरण का 25% होता है। हम व्यक्तियो की स्थितियों को उनके अंको के आधार पर प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ चतुर्थांशों मे निश्चित कर सकते हैं। इस प्रकार का वितरण सामान्य जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है। चाहे हम शारीरिक गुणों, मानसिक योग्यताओं अथवा व्यक्तित्व विशेषको का मापन करें, उनका जनसंख्या में वितरण इसी सामान्य वितरण जैसा ही होता है। चूकि एक विशेषक सामान्य रूप से वितरित होता है अतः किसी भी व्यक्ति का प्राप्तांक दूसरे के प्राप्तांक



चित्र 1.1 *सामान्य जनसंख्या मे गुणो का वितरण*

से अपनी सापेक्षिक स्थिति दर्शाता है। ऐसी स्थिति यह दर्शाती है कि किसी व्यक्ति की योग्यता की मात्रा एक समूह में कैसे कदाचित अथवा सामान्य रूप से पाई जाती है

मान लीजिए एक विद्यार्थी ने मनोविज्ञान में 60% अंक प्राप्त किए। अंकों का यह प्रतिशत तब तक अर्थ पूर्ण नहीं है जब तक हम उस विद्यार्थी की उसकी कक्षा में सापेक्षिक स्थिति नही जानते। यदि 50% विद्यार्थियो ने 60% से अधिक अंक प्राप्त किए हैं और उच्चतम अंक 90% तक है तो यह विद्यार्थी औसत के आसपास होगा। दूसरी तरफ यदि केवल 30% विद्यार्थियों ने उससे अच्छा किया है तो हम निश्चित रूप से उसे अति उत्कृष्ट की श्रेणी मे रखेगे। इस प्रकार व्यक्ति की योग्यता का सूचकांक सदैव सापेक्षिक होता है। किसी व्यक्ति की योग्यता की सराहना करने के लिए यह जानना आवश्यक है कि वह समूह के अन्य सदस्यों की तुलना में कैसा है।

व्यक्तिगत भेदों के निर्धारक

क्यों एक व्यक्ति दूसरे से भिन्न है? वे कौन से कारक हैं जिनसे ये भेद उत्पन्न होते हैं? किस सीमा तक ये भेद वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में महत्वपूर्ण हैं? किसी विद्यार्थी को अच्छी शिक्षा देने के बाद भी कम अंक प्राप्त करने का कारण क्या उसकी कम ज्ञानात्मक योग्यता, कम अभिप्रेरण अथवा घर में अनुकूल वातावरण की कमी होती है। ये कुछ प्रश्न हैं जिनका प्रत्येक विद्यार्थी, अध्यापक, और माता-पिता को समान रूप से सामना करना पड़ता है।

व्यक्तिगत भेदों को निर्धारित करने वाले कारको को प्रायः दो वर्गों—आनुवशिकी एवं पर्यावरण में बाँटा जाता है। आनुवशिकी के पक्षधर दावा करते हैं कि वशानुसंक्रमण व्यक्तिगत भेदों को निर्धारित करते हैं दूसरी ओर कुछ अन्य लोग पर्यावरण संबंधी कारकों जैसे परिवार, विद्यालय, साथी समूह सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रभावो को व्यक्तिगत भेदों के मुख्य निर्धारक होने का दावा पेश करते हैं।

आनुवशिकी के योगदान

किसी व्यक्ति की आनुवंशिकी उन विशेष जीन्स की बनी होती है जो वह अपने माता-पिता से गर्भधारण के समय प्राप्त करता है। ये जीन्स गुणसूत्रों में होते हैं जो जोड़े के रूप मे रहते हैं। मानव के प्रत्येक

कोषाणु में 46 अथवा 23 जोड़े गुणसूत्र होते हैं। यद्यपि प्रत्येक जीन एक इकाई के रूप में प्रेषित होता है लेकिन मानव की अधिकतर विशेषताए बहुत से जीन्स के ससर्ग पर आधारित होती हैं। यहाँ तक कि साधारण शारीरिक विशेषताए जैसे ऊँचाई, त्वचा का रंग इत्यादि भी अनेको जीन्स के सम्मिलित प्रभाव द्वारा ही निर्धारित होते है। मानव शरीर में घटित होने वाले संभावित जीन्स संसर्गों की प्रायः असीमित विभिन्नताएँ है। यहाँ तक कि मनुष्य की साधारण विशेषताएँ भी सामान्यतः बहुत से जीन्स के सम्मिलित प्रभाव पर निर्भर हैं। प्रत्येक माता-पिता के शरीर मे प्रत्येक जनन कोशिका (महिला में अडाणु एवं पुरूष मे शुक्राणु) मे जीन्स के विभिन्न ससर्ग होते हैं। इसके अतिरिक्त माता-पिता की जनन कोशिकाओ के आपस में संसर्ग से ही नए जीव (शरीर) की उत्पत्ति होती है जो संभावित जीन्स संसर्गों की भिन्नता और बढ़ा देते हैं। कुछ विशिष्ट जीन्स ससर्गों से कुछ विशेष प्रकार की असामान्यताएँ जैसे बौनापन, मानसिक मदन और रंगाधता आदि उत्पन्न हो सकते है।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो गया कि दो सगे भाईयों या बहनों की भी आनुवशिकी एक समान नहीं होती। भातृ यमज, जो यद्यपि एक ही समय पैदा हुए, अलग-अलग जनन कोशिकाओं से विकसित होने पर वे आनुवंशिकी में सामान्य भाई बहनों की तरह ही होते हैं। वे एक ही या भिन्न लिग के और आकृति मे बिल्कुल भिन्न हो सकते हैं। समरूप यमज, जो कि एक निषेचित अडाणु के विभाजन से विकसित होते हैं, में एक जैसे जनन कोशिका पाए जाते है। जहाँ तक आनुवशिकी का संबंध है ऐसे व्यक्ति पूरी तरह एक दूसरे की प्रतिलिपि होते हैं। जे.जी. मेंडेल ने मटर के पौधों की विभिन्न जातियो की नर, मादा के प्रति-प्रजनन द्वारा उत्पन्न पौधों पर प्रयोग किए तथा वर्णसंकर मटरों द्वारा वंशानुसंक्रमण के सिद्धांतो का सूत्रपात किया। उनके वशानुसक्रमण के इन सिद्धातो के आधार पर पौधो एवं पशुओ मे आनुवशिक प्रेषण की व्याख्या की गई है।

पर्यावरण के योगदान

पर्यावरण के बहुत से कारक व्यक्ति को जीवन भर प्रभावित करते हैं। हम इन कारकों को मुख्य रूप से चार समूहो में बाँट सकते हैं—
(अ) भौतिक कारक (ब) सामाजिक-सांस्कृतिक कारक (स) आर्थिक कारक तथा (द) मनोवैज्ञानिक कारक।

(अ) भौतिक कारक

भौतिक कारको में जलवायु और प्राकृतिक ससाधन आते है। विश्व के अनेक भागों मे रहने वाले लोग विभिन्न प्रकार की जलवायु अवस्थाओं मे रहते हैं। वे घने जंगलों, मरुस्थलो, समुद्रतटीय प्रदेशों, पहाड़ी प्रदेशो, तथा मैदानों इत्यादि में रहते हैं। एक विशिष्ट प्रजाति होने के कारण मनुष्य पर्यावरण की अतिभिन्न दशाओं के अनुकूल बनने में सक्षम है। चरमसीमा वाली जलवायु दशाओं में रहने वाले लोगो मे वातावरण के साथ अनुकूलन करने के लिए अनेक शारीरिक परिवर्तन हो जाते हैं। उदाहरणार्थ एस्किमो की रक्त परिचालन पद्धति उसकी चर्बी की मोटी परत के नीचे रहती है जिसके कारण उनके शरीर की गर्मी सुरक्षित रहती है। अत्यधिक ठंडे और गर्म प्रदेशों, मरुस्थलों, पहाड़ो एवं मैदानो मे रहने वाले लोगों की ऊँचाई, शारीरिक आकृति, त्वचा के रंग, आदतों, और जीवन शैलियो में पर्याप्त भिन्नता होती है।

(ब) सामाजिक-सास्कृतिक कारक

सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों मे परिवार, पास-पड़ोस, विद्यालय और वे सब सामाजिक समूह आते हैं जिनसे सामाजिक-सास्कृतिक मूल्यो, अभिवृत्तियों तथा भाषा आदि का प्रेषण होता है। घर तथा पास-पड़ोस व्यक्ति के व्यक्तित्व को एक विशिष्ट ढंग देने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अपने माता-पिता, परिवार एवं पड़ोसी सदस्यो से परस्पर व्यवहार के फलस्वरूप बच्चे व्यक्तिगत पसंदगी एवं नापसंदगी, आकांक्षाएँ, रूढ़ियाँ, संवेगात्मक प्रतिक्रियाएँ, नैतिक स्तर एवं जीवन मूल्य सीखते हैं। विभिन्न प्रकार की कौटुम्बिक व्यवस्थाएँ व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्धारण मे

अपना योगदान करती हैं जो एक परिवार से दूसरे परिवार मे एवं एक ही परिवार में एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न होती हैं। विद्यालय का बच्चों के व्यक्तित्व विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यहाँ अध्यापक मनोवैज्ञानिक रूप से माता-पिता का स्थानापन्न करते हैं। विद्यालय का वातावरण बच्चो को विद्वान, कलाकार, समूह नेता, संगीतज्ञ अथवा सामाजिक कार्यकर्ता बनने का अवसर तथा कार्यक्षेत्र प्रदान करता है। विद्यार्थियो एवं अध्यापको का सहयोग एव परस्पर व्यवहार सामाजिक अधिगम के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। विभिन्न सम्मिश्रणो मे यह सब कारक व्यक्तियो के व्यक्तित्वो में अंतर उत्पन्न करने में प्रभावपूर्ण हैं।

प्रत्येक समाज में सांस्कृतिक परपरा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को उसके सदस्यो द्वारा सौंपी जाती है। जनसमूह प्रचार साधन जैसे चलचित्र, रेडियो, दूरदर्शन, समाचारपत्र तथा पत्रिकाएँ आदि व्यक्तियों पर उस सस्कृति विशेष का प्रभाव डालने में सहायक होते हैं। इसका प्रभाव सामाजिक अधिगम की प्रक्रिया द्वारा जीवन मूल्यों, विचारो, विश्वासों, रीति-रिवाजो तथा धर्म को अन्तरस्थ करने पर भी पड़ता है। साथी समूहो, युवक संगठनों, सामाजिक तथा धार्मिक सस्थाओं के साथ समाजीकरण व्यक्ति के विश्वासो, अभिवृत्तियो तथा जीवन मूल्यों को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करता है। इन सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों के प्रभाव एक ही समाज एवं संस्कृति के लोगो पर अलग-अलग प्रकार के होते है।

(स) आर्थिक कारक

व्यक्ति का आर्थिक स्तर उसके विकास के विभिन्न पक्षों जैसे शारीरिक, अभिप्रेरणात्मक, सवेगात्मक, सामाजिक, भाषायी एवं व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। इसका ज्ञानात्मक विकास और विद्यालयी उपलब्धि पर भी प्रभाव पड़ता है। निर्धनता एव कुपोषण बच्चों के बौद्धिक विकास पर विपरीत प्रभाव डालते पाए गए हैं। कई अध्ययनों में यह पाया गया है कि आर्थिक कारक लोगो में भिन्नता बढ़ाने मे मदद करते है। वे व्यक्तियो मे विभिन्न गुण विकसित करते हैं और इस प्रकार व्यक्तिगत भेद में अपना योगदान करते हैं। जनसंख्या विस्फोट का भी आर्थिक कारकों से घनिष्ठ सबंध है। जनसंख्या के घनेपन का मानव व्यवहार एव विकास पर प्रभाव का अध्ययन किया गया। घनी आबादी का प्रभाव, पोषण स्तर, आर्थिक एव सामाजिक विशेषाधिकारों के बटवारे, विद्यालयी पढ़ाई, स्वास्थ्य व्यवस्था, बच्चो के पालन-पोषण तथा इसी प्रकार की अन्य बातो पर पड़ता है। अनेक प्रकार के असामान्य व्यवहार, अपराध, अकेलेपन की भावना, कुण्ठा और आक्रोश का सबध आधुनिक समाज के भीड़-भाड़ वाले घरों से पाया गया है।

(द) मनोवैज्ञानिक कारक

प्रत्येक व्यक्ति अपने आप मे एक गत्यात्मक संगठन है जो प्रत्यक्षीकरण, स्मृति, अधिगम, चिंतन, बोलने, कल्पना करने, अनुभव करने तथा हर प्रकार के कौशलों को सीखने की योग्यता रखता है। उसकी अभिरुचियाँ भिन्न हैं। उसका व्यक्तित्व अनोखा है। उसकी अभिवृत्तियाँ तथा मूल्य उसके अपने समूह के सदस्यों के साथ परस्पर व्यवहार के परिणामस्वरूप हैं। मनोवैज्ञानिक कारको के ये अन्तर व्यक्तिगत भेदो के निर्धारण में महत्वपूर्ण हैं।

व्यक्तिगत भेद आनुवंशिकी एवं पर्यावरण की परस्पर क्रिया का परिणाम हैं

व्यक्तिगत भेदों के मुख्य कारक आशिक रूप से व्यक्ति की आनुवंशिकी तथा आंशिक रूप से उसकी पर्यावरणीय दशाएँ हैं जिनसे उसका सपर्क होता है। व्यक्तित्व विशेषको का गुणारोपण न तो केवल आनुवंशिकीय है और न केवल अर्जित कारकों पर निर्भर है। किसी विशेषक में व्यक्तिगत विभिन्नता आनुवंशिकी एवं पर्यावरण की परस्पर क्रिया के परिणामस्वरूप उत्पन्न होतीं हैं। किसी विशेषक के

प्रकटीकरण मे आनुवशिकी क्षमता तथा पर्यावरण अवसर प्रदान करता है।

मानव जीवधारी होने के कारण व्यक्ति न तो वंशानुसंक्रमण से बच सकता है न ही वह जिस पर्यावरण में रहता है उस पर्यावरण के सामाजिक-सास्कृतिक प्रभावो से दूर रह सकता है। इस प्रक्रिया में जैविकीय तथा सामाजिक-सास्कृतिक पर्यावरणो के आपसी संबधो के परिणामस्वरूप मानव विकास होता है। सामाजिक-सास्कृतिक परिवेश का प्रभाव कभी-कभी व्यक्तित्व विशेषको जैसे ईमानदारी, अंतर्मुखी-बहिर्मुखी, अभिरुचियों, मिलनसारी तथा आकाक्षा का स्तर इत्यादि के विकास मे स्पष्ट दिखता है। आनुवंशिकी तथा पर्यावरण की सापेक्ष भूमिका तथा उनकी परस्पर क्रिया की प्रकृति प्रत्येक व्यक्ति मे भिन्न-भिन्न होती है लेकिन किसी न किसी रूप मे परस्पर क्रिया सदैव होती है। अतः यह बात मान लेना तर्क सगत है कि व्यक्तिगत भिन्नता उत्पन्न करने मे आनुवशिकी तथा पर्यावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कुछ महत्वपूर्ण चर जो दो व्यक्तियो के बीच अतर पैदा करते हैं जैसे बुद्धि, अभिक्षमता, विद्यालयी उपलब्धि और अभिरुचि की व्याख्या निम्न प्रकार से की गई है।

1 बुद्धि

विद्यालय एवं कालेजो मे अध्यापक मानते हैं कि बुद्धि विद्यालय की शिक्षा या शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाला सर्वाधिक महत्वपूर्ण चर है। न केवल शैक्षिक संस्थाओ में वरन् समाज, कुटुम्ब, उद्योग और मानव जीवन के अधिकतर क्षेत्रों में भी बुद्धि लोगों की सफलता एवं निपुणता को प्रभावित करने वाला प्रधान कारक है। मनोवैज्ञानिक "बुद्धि" की व्याख्या अनेक प्रकार से करते हैं परंतु कोई भी दो मनोवैज्ञानिक बुद्धि की किसी एक सर्वमान्य परिभाषा पर सहमत नही हैं। कुछ मनोवैज्ञानिक बुद्धि की सामान्य योग्यता के रूप मे अथवा एक प्रकार की शक्ति जैसे विद्युत शक्ति की भाँति व्याख्या करते हैं जो व्यक्ति के चिंतन एवं क्रियाओ को प्रभावित करती है। कुछ अन्य मनोवैज्ञानिको का विचार है कि बुद्धि विभिन्न योग्यताओ को लिए समष्टि योग्यता है। हम कह सकते हैं कि *बुद्धि ज्ञान को अर्जित और प्रयुक्त करने की क्षमता है* ।

बुद्धिलब्धि (बु ल)

बुद्धिलब्धि (बु ल) को बुद्धि के माप के रूप में माना गया है। अल्फ्रेड बिने ने 1908 में बद्धिलब्धि की गणना के लिए मानसिक आयु के प्रत्यय को प्रस्तुत किया। मानसिक आयु को मानसिक योग्यता के विकास के उस स्तर के रूप में पारिभाषित किया गया है जो उस शारीरिक आयु में विशेष होती है जिस पर व्यक्ति औसत रूप से पहुँचते हैं। उदाहरणार्थ एक आठ वर्ष की मानसिक आयु का बच्चा औसत रूप से आठ वर्ष के आयु समूह के मानसिक स्तर पर पहुँच जाता है। बद्धि परीक्षणों के प्रयुक्त करने से किसी व्यक्ति की मानसिक आयु का मूल्यांकन किया जाता है।

प्रायः मानसिक आयु शारीरिक आयु से भिन्न होती है। यह देखा गया है कि व्यक्ति की मानसिक आयु शारीरिक आयु के साथ-साथ बढती है लेकिन यह बढ़ोतरी एक निश्चित सीमा तक ही होती है। बुद्धिलब्धि मानसिक आयु (मा आ) और शारीरिक आयु (शा आ) के भागफल को 100 से गुणा करने (गणना की आसानी के लिए) पर प्राप्त होती है जैसे $\frac{\text{मा आ}}{\text{शा आ}} \times 100$ बुद्धिलब्धि की महत्वपूर्ण विशेषता है कि यह किसी व्यक्ति के पूरे जीवन में थोड़े बहुत अतरों के साथ एक जैसी रहती है। केवल नाम मात्र की अस्थिरता हो सकती है। इसीलिए बु ल को मानव बुद्धि का विश्वसनीय माप माना गया है।

औसत बुद्धि के बुद्धिलब्धि स्तर को 100 माना गया है। इसका तात्पर्य यह है कि जब मानसिक आयु शारीरिक आयु के बराबर होती है तब यह औसत बुद्धि दर्शाती है। मा आ जब शा आ से कम होती

है तब बु ल स्तर औसत से नीचे माना जाता है और मा आ जब शा आ से अधिक होती है तब बु ल स्तर औसत से ऊपर अथवा श्रेष्ठ श्रेणी का माना जाता है। मान लीजिए क, ख और ग एक ही शारीरिक आयु के तीन बच्चे हैं परन्तु उनकी मानसिक आयु भिन्न-भिन्न है तो उनकी बु ल की निम्नलिखित प्रकार से गणना करेगे।

बच्चा क : मा आ = 14, शा आ 16

$$\text{बु ल} = \frac{\text{मा आ}}{\text{शा आ}} \times 100$$

$$= \frac{14}{16} \times 100 = 87.5$$

बु ल = 87.5 (औसत से कम)

बच्चा ख : मा आ = 16 शा आ = 16

$$\text{बु ल} = \frac{\text{मा आ}}{\text{शा आ}} \times 100$$

$$= \frac{16}{16} \times 100 = 100$$

बु ल = 100 (औसत)

बच्चा ग : मा आ = 20, शा आ = 16

$$\text{बु ल} = \frac{\text{मा आ}}{\text{शा आ}} \times 100$$

$$= \frac{20}{16} \times 100 = 125$$

बु ल = 125 (औसत से अधिक)

बुद्धि का वितरण सामान्य होता है

एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति का बुद्धि स्तर भिन्न होता है और इस तरह प्रत्येक व्यक्ति बुद्धि में अलग है। बुद्धि का विकास आंशिक रूप से जीन्स की संरचना पर और आंशिक रूप से पर्यावरण की दशाओ पर निर्भर करता है और दोनो का योगदान महत्वपूर्ण होता है। अनेक विश्वसनीय बुद्धि परीक्षणों को कई प्रकार के समूहो पर किया गया जिनसे पता चला कि बु ल का वितरण सामान्य जनसंख्या मे निश्चय ही सामान्य संभाव्यता वितरण के अनुसार है। अतः यह माना गया है कि सामान्य जनसंख्या में बुद्धि का सामान्य वितरण होता है। अगर हम किसी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाले न्यादर्श का मापन करें तो हमें बु ल मापन के सभी स्तर प्राप्त होते हैं। जितने लोगों का औसत से नीचे विचलन होता है उतने ही लोगों के बु ल अको का औसत से ऊपर विचलन होता है। जब हम बुद्धि के वितरण वक्र मे 90 बु ल से नीचे अंक देखते हैं और 110 बु ल से ऊपर अंक देखते हैं तो उन लोगो की सख्या धीरे-धीरे कम होती जाती है। जैसे कि औसत व्यक्ति बुद्धि वितरण की मध्य स्थिति में होते हैं वैसे ही बौद्धिक दृष्टि से श्रेष्ठ एव मानसिक रूप मे विकलांग व्यक्ति बुद्धि वितरण में उच्चतम और निम्नतम स्थिति में होते हैं। अतः बुद्धि मे व्यक्तिगत भेद गुणात्मक न होकर अपेक्षाकृत परिमाणात्मक है।

जब बु ल मापको को रेखा चित्र पर प्रदर्शित करते हैं तो घंटे के आकार का सामान्य वितरण वक्र बन जाता है। बुद्धिलब्धि का औसत 100 माना गया है। जिनकी बु ल 90-110 के बीच में है उनको औसत बुद्धि वाला समझा जाता है। बु ल के इस क्षेत्र मे आने वाले लोग जनसंख्या का 68.26 प्रतिशत है। जैसे-जैसे हम वितरण के निम्नतर छोर की ओर जाते हैं हमें 90 से कम बु ल के लोग मिलते हैं। जब हम वितरण के उच्चतर छोर की ओर जाते हैं, हमे 110 बु ल से ऊपर के लोग मिलते है। इन्हें बु ल वितरण में स्थिति के अनुसार सामान्यतः अतिश्रेष्ठ, मेधावी और प्रतिभाशाली इत्यादि कहा जाता है।

II अभिक्षमता

जैसे हमें विभिन्न बौद्धिक स्तर वाले लोग मिलते हैं वैसे ही विभिन्न योग्यताओं वाले लोगो के उदाहरण भी मिलते हैं। भारती बचपन से ही अच्छी गायिका है। जॉन को घड़ी एव मशीनी खिलौने की यात्रिक बनावट के बारे में अच्छी समझ है। सलमा एक कुशल अभिनेत्री है और मनजीत एक अद्वितीय खिलाड़ी है।

उनकी इन प्रतिभाओं को विद्यालय में मान्यता दी जाती है और अध्यापक उनकी इन विशिष्ट योग्यताओं अथवा अभिक्षमताओं को विकसित करने में प्रोत्साहन देते हैं।

बुद्धि की तरह अभिक्षमता को भी पारिभाषित करना कठिन है। अभिक्षमता के प्रत्यय के बारे में अनेक विचारधाराएँ हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों का विश्वास है कि अभिक्षमता जन्मजात क्षमता है और कुछ अन्य इसे व्यक्ति की कौशल प्राप्त करने की वर्तमान योग्यता मानते हैं। कुछ मनोवैज्ञानिको का मत है कि अभिक्षमता का तात्पर्य किसी की क्षमता से ही नहीं है वरन् किसी कौशल या व्यवसाय मे दक्षता प्राप्त करने के लिए उसकी तैयारी और उपयुक्तता से भी है।

एफ. एन. फ्रीमैन के अनुसार "अभिक्षमता व्यक्ति की उन विशेषताओं का मिश्रण है जो व्यक्ति की कुछ विशिष्ट ज्ञान, कौशल अथवा संगठित प्रतिक्रियाओं को अर्जित करने की (प्रशिक्षण से) क्षमता को इंगित करता है जैसे किसी भाषा का बोलना, सगीतकार बनना अथवा मशीनी कार्य करना"। अतः जब हम किसी विशेष प्रकार की क्रिया के लिए किसी व्यक्ति की अभिक्षमता की बात करते हैं तब हमारा तात्पर्य उचित दशाओं में कार्य करने की सभाव्य दक्षता से होता है। दूसरे शब्दों मे व्यक्ति की यह वर्तमान क्षमता है जो अब निष्पादन द्वारा प्रकट होती है और भविष्य में भी उसके निष्पादन की पूर्व सूचना देती है।

पर्यावरण से प्रभावित जन्मजात क्षमता

अभिक्षमता वह जन्मजात क्षमता है जो व्यक्ति के पर्यावरण द्वारा प्रभावित होती है। किसी भी क्षेत्र के कार्य का अधिगम, व्यक्ति की सीखने की तत्परता पर निर्भर करता है। किसी विशेष योग्यता की अभिक्षमता उस योग्यता के अधिगम मे सहायता पहुँचाती है और इसके परिणामस्वरूप वह योग्यता जन्मजात संभाव्य क्षमता की पूर्ण अभिव्यक्ति के रूप में व्यक्त होती है। कोई विशेष अभिक्षमता जीवन के प्रारंभिक काल मे स्वयं प्रकट हो सकती है और व्यक्ति उस योग्यता में दिए प्रशिक्षण को आसानी से ग्रहण करता है।

इस प्रकार अभिक्षमता एक ओर अपनी संभाव्य योग्यताओं के प्रकटन के लिए जन्मजात कार्य क्षमता पर निर्भर है और दूसरी ओर अपने स्पष्टीकरण एवं प्रस्फुटन के लिए अनुकूल वातावरण तथा अभ्यास पर निर्भर है। इन दो महत्वपूर्ण प्रभावों के कारण लोगों की अभिक्षमताओं में बहुत अंतर होता है।

अभिक्षमता जीवन में सापेक्षतः स्थिर होती है

किसी भी व्यक्ति की सभाव्य योग्यता मे स्थिरता एव निरंतरता ध्यान देने योग्य होती है।उदाहरणार्थ कोई व्यक्ति अच्छा सगीतकार बनने के प्रमाण दर्शाता है तो यह भी संभव है कि भावी जीवन में वह अच्छा संगीतकार बन जाए। अनुकूल अवसरों की सहायता से छिपी हुई योग्यताएँ जीवन में पर्याप्त रूप में उभर कर सामने आ जाती हैं। किंतु जीवन की प्रारंभिक अवस्था मे पहचानी गई अभिक्षमता अनुकूल अवसरों की कमी एवं उसके लिए उसी प्रकार के आवश्यक मात्रा में प्रशिक्षण के अभाव में लुप्त हो जाती है।

अभिक्षमता परीक्षण

अभिक्षमता विशेष योग्यता होने के कारण मापी जा सकती है। अभिक्षमता परीक्षण का विचार अभिक्षमता में व्यक्तिगत भेदो के मापन के साथ ही उत्पन्न हो जाता है। अभिक्षमता परीक्षण किसी व्यक्ति की किसी विशेष प्रकार के कार्य में सभाव्य योग्यता का मापन है। मानकीकृत परीक्षणो पर किसी व्यक्ति के निष्पादन द्वारा उसकी संभाव्य योग्यताएँ प्रकट होती हैं। फ्रीमैन के अनुसार "अभिक्षमता परीक्षण को व्यक्ति पर इसलिए करते हैं जिससे उसकी आशाजनक अथवा निश्चित रूप से किसी विषय को पढ़ाने की योग्यता का मापन हो सके"। पिछले पाँच दशकों में मनोवैज्ञानिको द्वारा विकसित सैकड़ों अभिक्षमता परीक्षण हमारे पास हैं। इन परीक्षणों द्वारा किसी व्यक्ति की सफलता का पूर्वानुमान किसी भी

कार्य क्षेत्र जैसे शैक्षिक, व्यापार, उद्योग अथवा व्यावसायिक क्षेत्रो मे लगाया जा सकता है।

अनेक प्रकार के अभिक्षमता परीक्षण हैं जैसे यांत्रिक (मशीनी) अभिक्षमता परीक्षण, सगीत अभिक्षमता परीक्षण, औषधि विज्ञान परीक्षण, अभियात्रिकी, विज्ञान, आंकिक योग्यता और अमूर्त तार्किक अभिक्षमता परीक्षण हैं। अभिक्षमता परीक्षणो का उपयोग विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमो में प्रवेश के लिए किया जाता है। व्यक्तियो पर उचित अभिक्षमता परीक्षण देकर उनका विभिन्न व्यवसायों के लिए चयन कर सकते हैं। अभिक्षमता परीक्षणों का उपयोग अध्ययन करने के विषयों और जीवन मे व्यवसाय चयन करने के निर्देशन मे भी किया जाता है।

III. विद्यालयी उपलब्धि

माता-पिता एवं अध्यापक प्रायः अपने बच्चो व छात्रो की विद्यालय मे उपलब्धि के बारे मे सदैव चिंतित रहते हैं। विद्यालयी उपलब्धि से तात्पर्य हम सामान्यतः *विद्यार्थी की शैक्षिक विषयो मे मूल्याकन के पश्चात् प्राप्त श्रेणी अथवा योग्यताक्रम से लेते हैं* । किसी भी अध्यापक से किसी विद्यार्थी के बारे में पूछने पर वे बताएँगे कि कोई विद्यार्थी उपलब्धि मे दूसरों से कितना भिन्न है। उनमें से कुछ उच्च उपलब्धि वाले, कुछ निम्न एवं बहुत से औसत उपलब्धि वाले छात्र होते हैं। अध्यापक को प्रत्येक छात्र की योग्यता को ध्यान में रखकर जब अपने विषय सामग्री की कठिनाई के स्तर को बनाए रखना पड़ता है तब उन्हें समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

विद्यालयी उपलब्धि अनेक कारकों पर निर्भर करती है

उपलब्धि को व्यक्तिगत भेदों का पूर्ववर्ती अथवा स्रोत नहीं माना जा सकता अपितु यह व्यक्तिगत भेदो का परिणाम है। व्यक्तियों की योग्यता तथा निष्पादन मे भेद के कारण ही उनकी उपलब्धि में भिन्नता पाई जाती है।उपलब्धि का स्तर व्यक्ति के कार्य के मानक पर निर्भर करता है। यह व्यक्ति के निष्पादन उसकी बुद्धि, अभिक्षमता, पर्यावरणीय प्रभाव, अभिरुचियों इत्यादि की परस्पर क्रिया का परिणाम है।

पर्यावरणजन्य प्रभावों में व्यक्ति के जीवन मे जन्म से मृत्यु पर्यंत सभी प्रकार के सामाजिक, सास्कृतिक एव शैक्षिक अवसर अथवा प्रतिकूल अवस्थाएँ आती हैं। पर्यावरण की विभिन्न दशाएँ विद्यालयी उपलब्धि को प्रभावित करती हैं परिणामतः उपलब्धि के विभिन्न स्तर हो जाते हैं।

अभिप्रेरण एक महत्वपूर्ण कारक है

यह प्रायः कहा जाता है कि उपलब्धि अथवा निष्पादन का अभिप्रेरण से सीधा संबंध है। एक विद्यार्थी जो अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अत्यंत अभिप्रेरित है वह उस विद्यार्थी की तुलना मे अधिक परिश्रम करेगा जिसने अपने लिए आसान लक्ष्य रखा है और जो अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अभिप्रेरित नही है। जब योग्यता और अभिप्रेरण प्रत्येक व्यक्ति में भिन्न-भिन्न है तो उपलब्धि का स्तर भी उसी प्रकार अवश्य भिन्न होगा।

IV अभिरुचि

अभिरुचियाँ व्यक्तित्व के वे महत्वपूर्ण पहलू हैं जिनका उपरोक्त पहलुओ से बहुत कम या कोई सरोकार नहीं है। *व्यक्ति को जिस कार्य को करने मे आनद मिलता है वह उसमें उसकी अभिरुचि को दर्शाता है* । यह इस तथ्य से भिन्न हो सकता है कि उसे क्या करना है अथवा उसमे क्या करने की सामर्थ्य है। कल्पना प्रेमपूर्ण उपन्यास पढ़ने में रुचि रखती है जबकि मानक दुविधा और जोखिम से भरे कारनामे पढ़ते हुए अपने वातावरण को भूल जाता है। जयद सुनील गावस्कर को अपना आदर्श मानता है और रूपाली की मनपसंद गायिका लता मंगेशकर है।

अभिरुचियाँ स्थाई होती हैं

अगर हम कुछ लोगो के बारे मे अनुदैर्घ्य अध्ययन

करें तो हमे आसानी से ज्ञात हो जाएगा कि उनकी अभिरुचियाँ सतही या अस्थाई नही होती हैं। अगर वे व्यवसाय के रूप मे पूरी तरह प्रकट नही हुई हैं तो वे लोगो के शौक मे परिलक्षित होती हैं। अभिरुचियों की अभिव्यक्ति व्यक्तियों के क्रियाकलाप में होती है। व्यक्तियो की अभिरुचियाँ उनके आतरिक विशेषक हैं। व्यक्ति अभिरुचियों मे भिन्न होते हैं। व्यक्ति के अभिप्रेरण को उसकी अभिक्षमताओं तथा योग्यताओं से अधिक उसकी अभिरुचियाँ प्रभावित करती हैं। अभिरुचि किसी व्यवसाय चयन के निर्धारण मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक सफल व्यक्ति अनिवार्यतः प्रसन्न व्यक्ति नही हो सकता जब तक उसे अपने व्यवसाय में रुचि न हो।

अभिरुचियो का मापन

व्यक्ति जिन क्रियाओं, कार्यों आदि को करने मे आनंद प्राप्त करता है उनके बारे मे थोड़ी बहुत जानकारी रखना शिक्षा एवं व्यवसाय संबधी निर्देशन मे अत्यंत महत्वपूर्ण है। अगर हम विद्यार्थियों से सीधा प्रश्न करें कि वे क्या लेखाकर बनना पसद करेंगे? वे यह बताने मे असमर्थ होंगे कि वे अपनी जीविकोपार्जन के लिए क्या करना पसंद करेंगे। इसीलिए कागज पेंसिल अभिरुचि परीक्षण बनाए गए है जो समस्या तक थोड़ा घूम-फिर कर पहुँचते हैं। विभिन्न क्रियाकलापो के प्रति विद्यार्थियो की प्रतिक्रियाओं की जाँच करके उनसे यह पूछ कर कि वे किन व्यक्तियों की प्रशंसा करते हैं और विद्यालय मे अध्ययन के लिए कौन-कौन से विषयों का चुनाव करेंगे, आदि को जानकर किसी भी विद्यार्थी की अभिरुचियों को जाना जा सकता है। विद्यालय परामर्शदाता विद्यार्थियों की अभिरुचियों तथा उनकी दूसरी क्रियाओं को जानकर विद्यार्थियों के व्यवसाय चयन में सहायता कर सकते हैं। सन् 1920 मे ई के स्ट्राँग द्वारा निर्मित स्ट्राँग के व्यवसाय अभिरुचि प्रपत्र के साथ ही अभिरुचियों के अध्ययन का शैक्षिक परामर्श के क्षेत्र में पदार्पण हुआ। व्यवसाय चयन तथा वर्गीकरण की महती आवश्यकता के कारण बहुत से अभिरुचि परीक्षण विकसित किए गए हैं। अभिरुचियो के मापन का इसलिए बहुत व्यावहारिक महत्व है क्योंकि किसी भी विद्यार्थी अथवा कार्यकर्ता की उपलब्धि न केवल उसकी योग्यताओ पर बल्कि उसकी अभिरुचियों पर भी निर्भर करती है। विद्यार्थियो को अपनी अभिरुचियो के बारे में जानने की अधिक आवश्यकता होती है क्योकि उनकी अभिरुचियों को जानकर ही उनका सही समय मे तथा सही दिशा में विकास किया जा सकता है।

सारांश

प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से शारीरिक विशेषताओ के साथ-साथ बुद्धि, अभिक्षमता, विद्यालयी उपलब्धि एव अभिरुचियो आदि मे भिन्न होता है। ये विशेषताएँ जनसख्या मे सामान्य रूप से वितरित होती हैं। आनुवशिकी एव पर्यावरण व्यक्तिगत भेदो के दो महत्वपूर्ण निर्धारक हैं। भौतिक, सामाजिक-सास्कृतिक, आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक कारक व्यक्तिगत भेदो को प्रभावित करने वाले पर्यावरणीय कारको मे महत्वपूर्ण हैं।

बुद्धि की ज्ञान के अर्जन एव उसे व्यवहार मे लाने की क्षमता के रूप मे व्याख्या की गई है। बुद्धिलब्धि को सामान्य रूप से बुद्धि का मापन स्वीकार किया गया है। औसत छात्र उसे कहा गया है जिसकी मानसिक आयु और शारीरिक आयु बराबर हो। बुद्धि को सामान्य रूप से वितरित माना गया है।

अभिक्षमता को पर्यावरण से प्रभावित होने वाली जन्मजात योग्यता के रूप मे पारिभाषित किया गया है। अभिक्षमताएँ सापेक्षतः जीवन मे स्थाई होती है जिन्हें विभिन्न प्रकार के अभिक्षमता परीक्षणो द्वारा मापा जा सकता है। अभिक्षमता परीक्षणो का उपयोग चयन, नियुक्ति और निर्देशन में किया जाता है। विद्यालयी उपलब्धि के अतर्गत विभिन्न विद्यालयी विषयो एव विद्यालय से सबधित क्रियाओ मे प्राप्त श्रेणी अथवा क्रम आता है।उपलब्धि सामान्य

रूप से वितरित होती है। किसी विद्यार्थी का उपलब्धि स्तर उसकी बुद्धि, अभिक्षमता, पर्यावरण सबधी कारको, अभिरुचियो और अभिप्रेरको आदि पर निर्भर करती है।

कोई व्यक्ति जिस कार्य को करने मे आनन्द अनुभव करता है उसी को उसकी अभिरुचि माना गया है। अभिरुचियाँ स्थाई होती हैं। इन्हे विभिन्न परीक्षणो द्वारा मापा जा सकता है तथा विद्यालय मे परामर्शदाता विद्यार्थियो के उनके विषयो एव व्यवसाय के चयन मे निर्देशन के लिए इन तथ्यो का उपयोग कर सकता है।

प्रश्न

1. व्यक्तिगत भेदो का वर्णन कीजिए और बताइए कि वे किस प्रकार सामान्य रूप से वितरित हैं।
2. व्यक्तिगत भेदो के निर्धारको की व्याख्या कीजिए।
3. व्यक्तिगत भेदो मे पर्यावरणीय कारको के योगदान की व्याख्या कीजिए।
4. बुद्धि किस प्रकार व्यक्तिगत भेदो का एक महत्वपूर्ण चर है व्याख्या कीजिए।
5. सूत्र की सहायता से बुद्धिलब्धि के प्रत्यय का वर्णन कीजिए।
6. अभिक्षमता किसे कहते हैं? अभिक्षमता किस प्रकार व्यक्तिगत भेदो की निर्धारक होती है वर्णन कीजिए ।
7. अभिक्षमता परीक्षण किसे कहते हैं? अभिक्षमता परीक्षण के उपयोग क्या है?
8. विद्यालयी उपलब्धि किसे कहते हैं? उन कारको का वर्णन कीजिए जिन पर विद्यालयी उपलब्धि निर्भर करती है ।
9. अभिरुचि क्या है? अभिरुचि मापन के महत्व का वर्णन कीजिए।

निम्न प्रश्नों मे सही विकल्प पर यह चिन्ह (√) लगाइए।

10.. व्यक्ति एक दूसरे से इनमे भिन्न होते हैं

(क) प्रकार (ख) गुण (ग) मात्रा

11. शारीरिक तथा मानसिक विशेषको मे व्यक्तिगत भेदो का वर्गीकरण

(क) आशिक होता है (ख) प्राकृतिक होता है (ग) सामान्य होता है (घ) सादा होता है

12.. माता और पिता द्वारा निषेचित प्रत्येक कौशिका मे गुणसूत्र की सख्या यह होती है

(क) 26 (ख) 24 (ग) 23 (घ) 46

13. आनुवशिक विशेषताओ को यह आगे बढ़ाने वाला होता है

(क) रक्त (ख) जीन (ग) मस्तिष्क (घ) स्नायु

14. औसत बुद्धि का बुद्धिलब्धाँक यह माना गया है

(क) 90 (ख) 100 (ग) 110 (घ) 120

15. जिसकी मानसिक आयु वास्तविक आयु से अधिक होती है वह व्यक्ति

(क) औसत से नीचे होता है (ख) औसत होता है (ग) औसत से ऊपर होता है

एकक 2

व्यक्तित्व

इस एकक को पढ़ने के पश्चात् विद्यार्थी इस योग्य होंगे कि वे

- व्यक्तित्व को पारिभाषित कर सकें;
- व्यक्तित्व के विभिन्न उपागमों का विवेचन कर सकें;
- व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारकों को बता सकें;
- व्यक्तित्व के मापन के लिए विभिन्न परीक्षणों और प्रविधियों का वर्णन कर सकें।

मनोविज्ञान का इतिहास साक्षी है कि व्यक्ति दूसरों के व्यवहार के प्रकारो अथवा व्यक्तियो के बारे में मूल्याकन करना एवं समझना पसद करते रहे हैं। विज्ञान के रूप मे मनोविज्ञान वैज्ञानिक ढंग से व्यक्ति के व्यवहार के विभिन्न पहलुओं के अध्ययन का प्रयास करता है। इस प्रकार के अध्ययन न केवल मनोवैज्ञानिकों को बल्कि सामान्य जन को भी व्यक्तित्व के बारे मे स्पष्ट विचार बनाने में सहायता देते हैं। व्यक्तित्व के ज्ञान और समझने के कई लाभ हैं। यह न केवल व्यक्ति को अपने व्यवहार के बारे में अवगत कराता है बल्कि कुछ सीमा तक दूसरो के व्यवहार के प्रति उसे संवेदनशील बनाता है। यह ज्ञान उसे अपने अथवा दूसरो के व्यवहार द्वारा होने वाली समस्याओ को पहले से जानने और उनसे समायोजन में सहायता कर सकता है।

परिभाषा

व्यक्तित्व शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के "परसोना" शब्द से हुई है जिसका अर्थ मुखौटा या मुखावरण है। यूनान के अभिनेता अपनी पहचान को छिपाने के लिए मुखावरण लगाकर मंच पर आते थे। नाटक की यह प्रविधि बाद मे रोम के लोगों ने भी अपनायी जिन्होंने परसोना का तात्पर्य बतलाया कि "जैसा कोई दूसरों को दिखता है" न कि जैसा कोई वास्तव में है।

उसी समय से शरीरविज्ञान, जननिकविज्ञान, मनोविज्ञान एवं समाजशास्त्र जैसे विषयों मे व्यक्तित्व से सबधित अनुसंधान किए गए हैं। इन अनुसधानों ने ही व्यक्तित्व के असख्य सिद्धातो एवं मापन प्रविधियो के बनने का मार्ग प्रशस्त किया है।

विभिन्न सिद्धातवादियों ने व्यक्तित्व की व्याख्या

एवं उसे पारिभाषित करने का प्रयास किया। आर.एस. वुडवर्थ ने व्यक्तित्व की परिभाषा "व्यक्ति की सम्पूर्ण व्यवहार गुणावस्था" के रूप में की। जे.एफ. डैशियल ने व्यक्तित्व की परिभाषा व्यक्ति के उस पूर्ण संगठित व्यवहार विशेष के रूप में की जिसे उसके साथी सतत् रूप में उसे पा सकें। प्रारंभ की अधिकतर परिभाषाओं में व्यक्तित्व के अभिव्यक्त एवं बाह्य पहलुओं पर बल दिया गया है। इन परिभाषाओं की अनुपयुक्तता के कारण व्यक्तित्व को फिर से पारिभाषित किया गया जिसमें अभिप्रेरणात्मक एवं अन्य व्यावहारिक विशेषताओं का भी समावेश किया गया। अनेक विद्यमान परिभाषाओं में से सबसे अधिक स्वीकृत परिभाषा गॉर्डन ऑलपोर्ट की है।

गॉर्डन ऑलपोर्ट के अनुसार "व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोदैहिक तत्रों का गत्यात्मक संगठन है जो उसके विशिष्ट व्यवहार एवं चिन्तन को निर्धारित करते है।" इस परिभाषा के मुख्य प्रत्ययों को अच्छी प्रकार समझने के लिए नीचे स्पष्ट किया गया है।

मनोदैहिक तत्र

मनोदैहिक तत्र उन आदतों, अभिवृत्तियों, सवेगात्मक दशाओं, अभिप्रेरकों एवं विश्वासों से बने है जो प्रकृति से तो मनोवैज्ञानिक हैं किंतु उनका शारीरिक आधार व्यक्ति की तंत्रिका, ग्रंथियाँ तथा सामान्य शारीरिक अवस्थाएँ होती हैं जिनसे क्रिया करने की संभाव्य क्षमता आती है।

गत्यात्मक

गत्यात्मक शब्द का तात्पर्य व्यक्तित्व की सतत् विकसित होती एवं बदलती प्रकृति से है। व्यक्ति के विकास के साथ-साथ उसके शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक पहलू विभिन्न समयों तथा दशाओं मे विकसित तथा परिवर्तित होते हैं। इन परिवर्तनों का प्रमाण हमें एक ही व्यक्ति अथवा वस्तु के प्रति विभिन्न स्थितियो में हमारी विभिन्न प्रतिक्रियाओं को करने में मिलता है।

सगठन

संगठन शब्द इस बात पर बल देता है कि व्यक्तित्व के विभिन्न तंत्र उसके समग्र से विशेष संबंध रखते हैं। यह इस बात को इंगित करता है कि व्यक्तित्व कुछ विशेषकों का योगमात्र नही है बल्कि विभिन्न विशेषक अथवा व्यक्तित्व के प्रत्यक्ष पहलू एक साथ एकत्रित होते हैं तथा एक केंद्रीय बिंदु से प्रभावित होते हैं जिसको साधारणतया "स्व" कहते हैं।

विशिष्ट

विशिष्ट शब्द का तात्पर्य व्यक्ति के अपने मनोदैहिक तंत्रो की व्यवहार में अभिव्यक्ति की पृथक्कता अथवा अनन्यता से है।

व्यवहार एवं चिन्तन

किसी व्यक्ति के विचार एव क्रियाएँ जो उसके व्यक्तित्व की किसी विशेष लक्ष्य की ओर अभिव्यक्ति होते हैं उस व्यक्ति को अपने वातावरण में समायोजन करने में सहायता करते हैं।

निर्धारित करना

निर्धारित करना शब्द मनोदैहिक तत्रो की अभिप्रेरणात्मक भूमिका पर बल देता है। जब व्यक्ति के आतरिक अथवा बाह्य वातावरण के किसी उद्दीपन से उसकी अभिवृत्ति, विश्वास अथवा अन्य कोई मनोदैहिक तंत्र जागृत हो जाता है तो वह उन्हीं समायोजक तथा अभिव्यक्त क्रियाओं को उत्तेजित करता है जो उस व्यक्ति विशेष की अभिव्यक्ति के विशिष्ट प्रकार हैं।

व्यक्तित्व के उपागम

व्यक्तित्व की जटिल प्रकृति के परिणामस्वरूप व्यक्तित्व के अध्ययन की समस्या पर विभिन्न प्रकार से विचार किया गया है। समय के साथ-साथ व्यक्ति की प्रकृति की विभिन्न व्याख्या, वर्णन एवं निरीक्षण करने के तरीके विकसित हुए हैं।

हर एक उपागम एक दूसरे से व्यवहार के "क्या" "क्यो" और "कैसे" इन प्रश्नो के उत्तरो पर बल देने में भिन्न हो जाता है। वे व्यवहार की समानताएँ एवं भिन्नताएँ, सगतियाँ एवं असगतियाँ एवं परिवर्तन की व्याख्या करने में भी भिन्न हैं।

यह ध्यान देने योग्य है कि व्यक्तित्व के सिद्धांत जो व्यक्ति की व्याख्या करने की किसी विशेष योजना के अंतर्गत आते हैं उन्हें एक उपागम मे समूहबद्ध किया गया है। वास्तव में एक ही उपागम मे विभिन्न सिद्धांत है और यह आवश्यक नहीं है कि जो मनोवैज्ञानिक समान विचारधारा वाले उपागम में आते हैं वे व्यक्तित्व के अध्ययन के सभी पहलुओ पर एक सा दृष्टिकोण रखते हों। कुछ महत्वपूर्ण उपागम निम्नलिखित हैं।

(अ) मनोविश्लेषणात्मक उपागम

इस उपागम के अतर्गत मनीवैज्ञानिको ने व्यक्तित्व के विकास, पोषण तथा परिवर्तन के लिए उत्तरदायी गहन मनोवैज्ञानिक शक्तियो को पहचानने का प्रयत्न किया। यद्यपि जिन शक्तियों को उन्होने पहचाना वे भिन्न थीं। कुछ ने उन्हें मूलप्रवृत्तियाँ कहा जो मुख्यतः अचेतन हैं। दूसरों ने इन्हें आवश्यकताएँ कहा जो पर्यावरण से परस्पर प्रतिक्रिया करके व्यक्तित्व को बनाती हैं। सिगमण्ड फ्रॉयड ने एक सिद्धात प्रमाणित किया जिसे "मनोविश्लेषणात्मक सिद्धात" कहते हैं। उन्हें मनोविश्लेषणात्मक सिद्धात का जनक कहा जाता है। उनके आधारभूत विचारो में मूलप्रवृत्यात्मक प्रवृत्तियाँ हैं जो मानव व्यवहार का निरूपण करती हैं। "जिजीविषा" अथवा जीवन मूलप्रवृति में वे सभी व्यवहार सम्मिलित हैं जो मानव जीवन के परिरक्षण, निरंतरता तथा प्रजनन से सबधित है। "मुमूर्षा" अथवा मृत्यु मूलप्रवृति जीवन के विनाश से सबधित है। उन्होंने मन को कुछ भागो मे बाटा जिन्हें "चेतन" "पूर्व चेतन" तथा "अचेतन" की सज्ञा दी। इन तीनो में से अचेतन मन मनुष्य के अभिप्रेरण के पीछे मुख्य सिद्धांत माना गया। उनकी "इदम्", "अहम्" तथा "पराहम्" की धारणाओ ने व्यक्तित्व के तीन पहलुओ का वर्णन किया।

इदम्, अहम् तथा पराहम्

इदम् उन सभी मूलप्रवृत्यात्मक आवेगों का प्रतिनिधित्व करता है जो जन्म के समय विद्यमान होते हैं तथा अचेतन एव स्वचालित रूप से कार्य करते हैं। इसका केवल एक ही सिद्धात होता है — "सुख की चाह"। बालक के विकास के साथ-साथ उसके इदम् का वास्तविकता से अंतर्द्वंद्व होता है जिससे आवेगों एवं मूलप्रवृत्तियों की उन्मुक्त अभिव्यक्ति को छिपाने की अथवा उन पर नियंत्रण करने की आवश्यकता पड़ती है। इस अंतर्द्वंद्व की स्थिति के परिणामस्वरूप इदम् के एक भाग का दूसरे भाग अहम् मे रूपांतरण हो जाता है। अहम् वास्तविकता की मागों से प्रभावित होता है और इसका मुख्य कार्य वास्तविकता की मागों को जिनको वास्तविकता का सिद्धांत कहते हैं, तथा इदम् की मांगों को जिसको सुखेप्सा सिद्धांत कहते हैं के बीच मध्यस्थता करना होता है। अहम् प्रत्यक्षीकरण, अधिगम, चिंतन आदि प्रक्रियाओं के लिए उत्तरदायी होता है। अहम् जो वास्तविकतोन्मुख होता है इदम् की प्रवृतियों की संतुष्टि को सदैव संभव नहीं होने देता। इसी कारण इदम् की प्रवृत्तियों तथा वास्तविकता की मांगो के बीच अतर्द्वंद्व का क्रम बना रहता है जिससे अंततः पराहम् का उदय होता है। पराहम् मुख्यतः अंतःकरण की समस्याओं अथवा नैतिक मानकों एवं उन नियमों से संबधित होता है जो माता-पिता तथा समाज द्वारा शासित होते हैं तथा व्यक्ति में अतरस्थ होते जाते हैं। अहम् तथा पराहम् का विकास वह सरचनाएँ हैं जिनसे जीव का अतिजीवन निश्चित होता है और मूलप्रवृत्यात्मक आवेगो की वैध रूप से सतुष्टि होना सुनिश्चित होती है। फ्रॉयड के अनुसार विकास की प्रक्रिया अतर्द्वंद्व की श्रृखला और उसके समाधान से गुजरती है और उसी का परिणाम व्यक्ति का अद्वितीय व्यक्तित्व होता है।

मनोलैंगिक अवस्थाएँ

फ्रॉयड ने कई अवस्थाओं का भी वर्णन किया है जिन्हें प्रायः मनोलैंगिक अवस्थाएँ कहते हैं और जिनमें होकर वयस्क होने तक व्यक्ति का विकास प्रगति करता है। फ्रॉयड के अनुसार विकास की संपूर्ण प्रक्रिया जीवन के प्रथम कुछ वर्षों में ही पूर्ण हो जाती है। इसी दृष्टि से पूर्व बाल्यावस्था के इन वर्षों को निर्णायक माना गया है। मनुष्य का सामान्य अथवा असामान्य होना बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि उसके माता-पिता अथवा दूसरों ने उसके साथ कैसा व्यवहार किया और उसका एक अवस्था से दूसरी अवस्था में परिवर्तन कितना सरल रहा।

नवफ्रॉयडवादी

फ्रॉयड के सिद्धांतों से मतभेद के कारण उनके कुछ प्रमुख शिष्यों ने उनसे अलग होकर अपने सिद्धांत स्थापित किए। यद्यपि फ्रॉयड द्वारा प्रतिपादित कुछ सिद्धांतों पर सहमत होते हुए भी उन्होंने काम मूलप्रवृत्ति अथवा मनोलैंगिक सुख के सिद्धांत पर बल देने का परित्याग किया। कुछ सिद्धांतवादी जो फ्रॉयड से अलग हुए उनमें अल्फ्रेड एडलर, केरेन हॉर्नी, कार्ल गुस्ताव युंग तथा एरिक एरिक्सन के नाम प्रमुख हैं। इन्हें प्रायः नवफ्रॉयडवादी कहा जाता है।

श्रेष्ठता और शक्ति

एडलर ने दावा किया कि मानव व्यवहार के पीछे मुख्य शक्ति "काम" नहीं है किंतु प्रभुत्व, शक्ति, श्रेष्ठता तथा पद प्राप्त करना है। व्यक्ति द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को पाने में असफलता के कारण "हीनता" की प्रबल भावना उत्पन्न हो जाती है जिससे "हीनता ग्रन्थि" बन जाती है। सामान्यतः प्रबल हीन भावना से ग्रस्त व्यक्ति इस प्रकार का व्यवहार करते हैं जिससे वे अपनी हीन भावना पर किसी संपूर्ति उपलब्धि द्वारा विजय पा सकें। उदाहरणार्थ नेपोलियन की उपलब्धियाँ उसके छोटे कद के कारण उत्पन्न हीनता की भावना का सपूर्ति व्यवहार माना जाता है। बहुत से उदाहरणों मे यह संपूर्ति व्यवहार व्यक्ति के सामान्य समायोजन में सहायता करता है।

दुश्चिन्ता

हॉर्नी ने व्यक्तित्व की गतिक संरचना को समझने के लिए दुश्चिंता को आधारभूत कारक मानकर उस पर ध्यान केन्द्रित किया। दुश्चिंता ग्रस्त व्यक्ति ऐसे तरीके विकसित कर लेते हैं जिनसे वह दुश्चिंता उत्पन्न करने वाली परिस्थितियो में समायोजन कर लेते हैं। व्यक्ति समस्याओं के समाधान के लिए अनुपयुक्त तरीकों का आश्रय लेते है। हॉर्नी ने उन्हें तंत्रिकातापी आवश्यकताएँ कहा। जब समस्याओं का समाधान नहीं होता तो कुछ विशेष आवश्यकताएँ व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं जीवन को निर्धारित एवं शासित करती हैं।

भूत एवं भविष्य पर बल

युंग के सिद्धांत मे फ्रॉयड के समान बहुत से प्रत्यय जैसे अहम्, अचेतन इत्यादि हैं किंतु उन्होंने अचेतन के प्रत्यय की और व्याख्या की तथा 'सामूहिक अचेतन' 'आद्य प्ररूप' तथा 'परसोना' इत्यादि प्रत्ययों को स्वयं सिद्ध मान लिया। उनके अनुसार व्यक्तित्व प्रधानतया भूतकाल के प्रवृत्यात्मक आकारो पर आधारित होता है जो प्रत्येक व्यक्ति को वंशानुसंक्रमण से मिलते हैं उनका यह भी विश्वास था कि व्यक्ति अपने भूतकाल से बंधा नहीं होता किंतु अपने भविष्य का प्रभावपूर्ण सृजन कर सकता है।

अहम् समाकलन की खोज

एरिक्सन ने 'अहम् समाकलन की खोज' नामक प्रत्यय पर बल दिया है, जिसको उन्होंने व्यक्तित्व का आधारभूत पहलू माना है। इस खोज में अपने आदर्श के साथ तादात्मीकरण सम्मिलित है जो बदले मे परिवर्तनशील लक्ष्यों तथा मूल्यों की स्पष्टता इत्यादि पर निर्भर है। किंतु यह अवस्था निष्क्रिय नहीं है बल्कि जीवन के साथ परिवर्तित होती रहती है।

(ब) विशेषक उपागम

विशेषक सिद्धांत को मानने वालों का कहना है कि लोग व्यक्तित्व की उन बहुत-सी विशेषताओं के कारण एक दूसरे से भिन्न हैं जिनमें से प्रत्येक किसी विशेषक का प्रतिनिधित्व करती है। *विशेषक व्यक्ति की उस विशेषता को कहते हैं जो प्रत्येक व्यक्ति में समान्यतः स्थायी और संगतिपूर्ण तरीके से भिन्न होती है।* मनोवैज्ञानिको ने विशेषक की परिभाषा व्यक्ति के प्रायः उन चिरस्थायी मनोवैज्ञानिक विशेषताओ के अद्वितीय संगठन के रूप में की है जो उसके परस्पर संबंधों में परिलक्षित होता है। जी. डबल्यू ऑलपोर्ट तथा आर कैटेल ने विशेषक को केंद्रीय विचार बिंदु मानकर अपने व्यक्तित्व के सिद्धांतो को उसके इर्द-गिर्द विकसित किया। किंतु उनके सिद्धात मुख्यतः व्यक्ति के आधारभूत विशेषको को पहचानने मे प्रयुक्त विधियो के कारण भिन्न हैं।

ऑलपोर्ट का वर्गीकरण

ऑलपोर्ट के अनुसार विशेषक व्यवहार करने के विशेष तरीके से कुछ अधिक है। यह व्यक्ति के भीतर की एक वास्तविक शक्ति, अभिप्रेरक या चित्तवृत्ति है जो किसी विशेष प्रकार के व्यवहार को प्रारंभ तथा निर्देशित करती है। उदाहरणार्थ उदारता विशेषक की अभिव्यक्ति व्यक्ति द्वारा उदारता के कार्य करना है किंतु इन कार्यो का करना व्यक्ति के उदारता पूर्वक कार्य करने की चित्तवृत्ति द्वारा शासित होता है। ऑलपोर्ट ने विशेषको को दो भागों में वर्गीकृत किया है। सामान्य विशेषक जो सभी व्यक्तियों में विद्यमान होते हैं और अद्वितीय विशेषक जो किसी व्यक्ति विशेष के व्यक्तित्व की विशेषता होते हैं। उन्होंने व्यक्ति के अद्वितीय विशेषकों, जो किसी भी व्यक्तित्व को समझने में केंद्रीय भूमिका निभाते है, के अध्ययन की आवश्यकता पर बल दिया। अद्वितीय विशेषक वे गुण हैं जो व्यवहार को विस्तृत रूप से प्रभावित करते हैं और दूसरों से पृथक दिखते हैं।

कैटेल का वर्गीकरण

कैटेल ने व्यक्तित्व के अध्ययन के लिए सांख्यिकीय विधि का प्रयोग करते हुए 16 कारकों की पहचान की। उन्होने कुछ विशेषकों का प्रयोग किया और कारक विश्लेषण प्रविधि का प्रयोग करके उन्हें 16 कारको मे समूहबद्ध किया। ये 16 कारक किसी भी व्यक्तित्व की परिच्छेदिका पर प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। उदाहरणार्थ "अ" व्यक्ति ए बी और एल (संकोची, बुद्धिमान एवं शकालु) कारकों पर अधिक अंक ले सकता है और ई एच और क्यू (नम्र, भीरू और समूह पर निर्भर) कारकों पर कम अंक ले सकता है आदि।

विशेषक सिद्धांतवादी इस बात पर सहमत हैं कि यद्यपि विशेषक एक दूसरे से स्वतंत्र हो सकते हैं पर वास्तविक व्यवहार में उनमें परस्पर संबंध होता है। हम कदाचित ही ऐसा व्यवहार देखते हैं जिसमें केवल कोई एक विशेषक ही अभिव्यक्त होता है। विशेषकों का परस्पर संबंध तथा अभिव्यक्ति एक ही साथ होती है। इस प्रकार विशेषक उपागम ने व्यक्तित्व के अनुसधान एवं मापन की उन्नति में बहुत योगदान किया है।

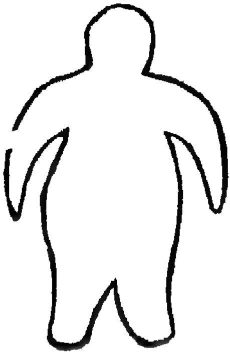
(स) प्रकार उपागम

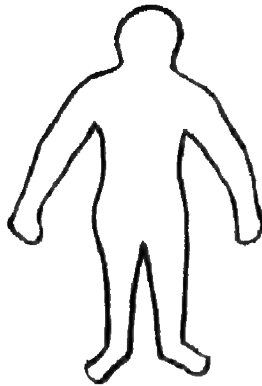
लोगो को विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत करना बहुत पुरानी धारणा रही है। ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में एक यूनानी शरीरवेत्ता हिपोक्रेट्स ने व्यक्तित्व को स्वभाव के आधार पर चार प्रकारों में समूहबद्ध किया:

(क) आशावान — प्रसन्नचित, फुर्तीला, दृढ
(ख) खिन्न वृत्तिवाला — निराश
(ग) कोपशील — गर्म स्वभाव
(घ) श्लैष्मिक — शांत, सुस्त

1954 मे डबल्यू एच शेल्डन ने शरीर की बनावट के आधार पर व्यक्तित्व का तीन प्रकारों में वर्गीकरण किया:

(क) गोलाकार — (नाटा और मोटा) मिलनसार, आरामतलब







गोलाकार आयताकार लम्बाकार

चित्र- 2.1 *शेल्डन का व्यक्तित्व के प्रकारों का वर्गीकरण*

(ख) लंबाकार — (लंबा और दुबला पतला) संकोची, आत्म केंद्रित

(ग) आयताकार — (भारी और हृष्टपुष्ट) शोर करने वाला, आक्रामक तथा फुर्तीला

किंतु जब वैज्ञानिक अनुसंधान किए गए तब यह वर्गीकरण सही सिद्ध नहीं हो पाए। वैज्ञानिक तौर से व्यक्तित्व का एक प्रकार व्यक्तियों के उस समूह को कहते हैं जिनके विशेषक एक समान होते हैं। उदाहरणार्थ व्यक्तित्व को "बहिर्मुखी" अथवा "अंतर्मुखी" प्रकारों में बाँटा जा सकता है। बहिर्मुखी व्यक्तित्व का तात्पर्य विशेषक के ऐसे समूह से है जैसे मिलने-जुलने वाला, मित्रता रखने वाला इत्यादि। अंतर्मुखी उन विशेषकों को कहते हैं जैसे शर्मीला, विनिवर्तित इत्यादि। किंतु अधिकतर लोग बीच की प्रकृति (न अंतर्मुखी न बहिर्मुखी) के होते हैं। केवल कुछ ही लोग अत्यधिक अतर्मुखी अथवा अत्यधिक बहिर्मुखी होते हैं। यह महत्वपूर्ण बात स्मरणीय है कि व्यक्तित्व का प्रत्येक प्रकार सामान्य घंटी के आकार के वक्र के अनुसार वितरित होता है।

1967 में एच.जे. आइजेन्क ने व्यक्तित्व को तीन प्रकारों में वर्गीकृत किया हैः

(क) बहिर्मुखी तथा अंतर्मुखी

(ख) स्थिर तथा तन्त्रिकातापी

(ग) मनस्तापी

व्यक्तित्व के प्रकारों का यह वर्गीकरण सामान्यतः मनोवैज्ञानिक व्याधियों का रोग निदान करने में प्रयुक्त होता है।

व्यक्तित्व का "ए" प्रकार का सिद्धांत

यह व्यक्तित्व के प्रचलित प्रकार उपागमों में से एक है जो कि बहुत वादविवाद और वादानुवाद से उत्पन्न हुआ है। यह सिद्धांत चिकित्सा क्षेत्र से निकला है जिसमें हृदय की बीमारियों को व्यक्तित्व के कुछ निश्चित प्रकारों से जोड़ा गया है। हृदय की हृद् धमनी बीमारी मूलतः दो प्रकार की है। सीने में दर्द और हृदय रोग जो ऑक्सीजन की कमी के कारण होता है तथा मौत का कारण बन सकता है। बहुत समय तक यह समझा जाता रहा था कि हृदय की हृद् धमनी बीमारी कोलेस्ट्रॉल जमा होने के कारण होती है किन्तु 1950 से इस पर चिकित्सा से सबधित लोगों ने प्रश्न चिन्ह लगा दिया। 1955 में उन्होने तनाव को एक महत्वपूर्ण हेतु कारक के रूप में जोड़ा। मेयर फ्राइडमैन और रे रोजनमैन ने 1958 मे एक हृद् धमनी उन्मुख

व्यवहार की पहचान की जिसको "ए" प्रकार कहा। तदुपरात 1969 और 1975 मे "ए" प्रकार और "बी" प्रकार के व्यक्तियों की पहचान की गयी। उदाहरणार्थ "ए" प्रकार के व्यक्तित्व के लोग प्रतिस्पर्धी, अस्थिर, उच्च उपलब्धि प्राप्त करने वाले, क्रियाशील और आक्रामक इत्यादि होते हैं। "बी" प्रकार का व्यक्तित्व इनके विपरीत कम अभिप्रेरित और अपेक्षाकृत दबावमुक्त होता है। "ए" प्रकार का व्यक्तित्व सिद्धात अभिप्रेरण के अध्ययन मे एक लाभदायक प्रत्यय बन गया है। "ए" प्रकार के व्यक्तित्व उच्च अभिप्रेरक वाले, आक्रामक तथा इच्छित वस्तु प्राप्त करने वाले माने गए है। व्यक्तित्व के "ए" प्रकार के साथ मुख्य विशेषक तनाव, अभिप्रेरण तथा आक्रमण संबद्ध किए जाते हैं।

रोज़नमैन ने 1964 मे इन प्रकारो का मूल्यांकन करने के लिए एक व्यक्तित्व साक्षात्कार सूची बनाई। उसके बाद से बहुत से परीक्षण विकसित किए गए। अभी कुछ वर्षों में कुछ मनोवैज्ञानिको ने इन प्रकारों पर भी शंका व्यक्त की है और यह वादानुवाद अभी चल रहा है किंतु निश्चय ही "ए" प्रकार के व्यक्तित्व की धारणा चिकित्सा तथा मनोविज्ञान को समीप लायी है। वैदिक काल से आधुनिक काल तक प्रकार सिद्धातों ने व्यक्तित्व के अध्ययन के सभी पहलुओ को प्रभावित किया है। वे सदैव वादानुवाद का विषय रहे हैं किंतु उन्होंने व्यक्तित्व को समझने में बहुत योगदान दिया है।

(घ) सामाजिक अधिगम उपागम (व्यवहारवाद)

व्यक्तित्व के अध्ययन का सामाजिक अधिगम उपागम व्यक्तित्व के स्रोतो की अपेक्षा उसके प्रकटीकरण से अधिक संबंधित है। जबकि मनोविश्लेषण वादी व्यवहार के स्रोतो की खोज और व्यक्तित्व की विशेषताओं का अनुमान लगाने का प्रयत्न करते है, सामाजिक अधिगम सिद्धांतवादी अपने आपको प्रत्यक्ष व्यवहार के निरीक्षण एवं व्याख्या तक ही सीमित रखते है अतः इसे प्रायः अधिगम अथवा प्रासगिक उपागम कहते है।

इन सिद्धातवादियों के अनुसार व्यवहार अथवा व्यक्तित्व निजी तथा पर्यावरणीय चरों के बीच निरंतर परस्पर क्रिया का परिणाम है। पर्यावरणीय स्थितियाँ अधिगम द्वारा व्यवहार को आकार देती हैं और इसके बदले में मनुष्य का व्यवहार वातावरण को बनाता है। अतः व्यक्ति एवं स्थितियाँ आपस में एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

आदत

अधिगम सिद्धांतवादियों के बहुत बड़े समूह मे से जे. डॉलर्ड तथा एन.ई. मिलर ने अपने स्वीकृत सिद्धांतों को व्यक्तित्व की व्याख्या करने में केंद्रित किया। उनके सिद्धांत में आदत केंद्रीय धारणा है। आदत उद्दीपन और अनुक्रिया के बीच का सीखा हुआ साहचर्य है। उन्होंनें यह दावा किया कि व्यक्तित्व उन विशिष्ट उद्दीपन अनुक्रिया इकाइयों (आदतों) के आकारो से बना है जिन्हें विशेषको के नाम दिए गए हैं। उदाहरणार्थ किसी व्यक्ति को इसलिए आक्रामक कहा जाता है क्योंकि वह विभिन्न उद्दीपनों की अनुक्रिया ठोकर मारकर, पीटकर और अश्लील भाषा का प्रयोग करके करता है। उस व्यक्ति ने इस आक्रामक विशेषक को अर्जित किया क्योकि उसे आक्रामक अनुक्रियाओं के लिए पुनर्बलित किया गया।

अनुकरण

डॉलर्ड और मिलर के विचारों का अनुसरण करके कुछ सिद्धातवादियों ने नई आदतो को सीखने और पुरानी आदतों को तोड़ने मे सामाजिक अनुकरण की आवश्यकता पर बल दिया। *अनुकरण वह प्रक्रिया समझी जाती थी जिसमे आदर्श व्यवहार देखकर व्यक्ति नए व्यवहार को सीखते हैं और अपने व्यवहार की दिशा बदल लेते है* । इसे प्रायः "निरीक्षणात्मक अधिगम" कहते हें। इस प्रकार आदर्श व्यवहार के वे आकार माने गए है जिनको नकल व अनुकरण किया जा सकता है। "आदर्श" शब्द केवल इंसानी आदर्शों तक ही सीमित नहीं रखा गया था बल्कि इसमें

प्रतीकात्मक आदर्श जैसे चलचित्र, दूरदर्शन कार्यक्रम, धार्मिक, साहित्यिक, संगीत तथा लोककथा के नायक भी होते थे। अतः व्यक्तित्व के विकास, पोषण, वृद्धि तथा परिवर्तन को अनुकरण की प्रक्रिया के इर्द-गिर्द केंद्रित होने का दावा किया गया।

अनुक्रिया एवं पुनर्बलन

बी.एफ. स्किन्नर ने व्यवहार की व्याख्या अनुक्रिया और पुनर्बलन के रूप में की है। उन्होने कहा कि उद्दीपन जो अनुक्रिया को उत्पन्न करता है उसको पहचानना आवश्यक नहीं है। अनुक्रिया को वातावरण पर इस प्रकार कार्य करना पड़ता है कि पुनर्बलन उत्पन्न हो अतः उनके सिद्धांत को "क्रियाप्रसूत अनुकूलन" कहा गया। उनके अनुसार व्यक्तित्व व्यवहारात्मक विशेषकों का समूह है और प्रत्येक विशेषक संबंधित अधिगमित अनुक्रियाओं के विन्यास की व्याख्या करता है। क्रियाप्रसूत अनुकूलन के सिद्धांत को व्यक्तित्व का आधार माना गया है। उदाहरण के लिए स्किन्नर ने यह दावा किया कि कोई किशोर अपने माता-पिता की इच्छाओं के सामने जब झुकता है, तभी अनुमोदन पाता है, उसमें शीघ्र ही नम्रता का विशेषक विकसित हो जाता है। इसी प्रकार किसी भी व्यक्ति को उसके उदार कामों को पुरस्कृत करके उसमें उदारता पैदा की जा सकती है। क्रियाप्रसूत पुनर्बलन को व्यक्तित्व का रूप निर्धारित करने मे महत्वपूर्ण साधन समझा गया था। व्यक्तित्व की व्याधियों से संबंधित कई समस्याओं को नियत्रित करने के लिए इसको व्यवहार में लाया गया है।

व्यक्तित्व का सामाजिक अधिगम उपागम व्यक्तित्व विशेषताओं के प्रकटीकरण पर सामाजिक रीति-रिवाजों, परंपराओं, अपेक्षाओं तथा स्थितियों के महत्वपूर्ण प्रभाव को प्रस्तुत करता है। इस उपागम का यह भी दावा है कि स्वीकृत तथा अस्वीकृत सामाजिक व्यवहार अधिगमित होते हैं और व्यक्तित्व सामाजिक अधिगम का परिणाम है।

(ङ) मानवतावादी एवं अस्तित्ववादी उपागम

सृजनात्मक सभाव्य क्षमता तथा सकारात्मक विकास पर बल

मानवतावादी सिद्धातवादी व्यक्ति की सृजनात्मक संभाव्य क्षमता तथा उसके निजी विकास पर बल देते हैं। अब्राहम मैस्लो ने मानवतावाद को मनोविज्ञान की दो प्रमुख विचारधाराओं अर्थात् मनोविश्लेषणवाद तथा व्यवहारवाद का विकल्प कहा। मानवतावादी मनोवैज्ञानिक अपना ध्यान सामान्यतः प्रत्येक व्यक्ति को स्वनिर्देशन की अनुभूति प्राप्त करने में सहायता करने में लगाते हैं। उनका बल मानव की स्वयथार्थीकरण की प्रवृत्ति पर तथा संभाव्य क्षमताओ का विकास करने तथा बेहतर व्यक्ति बनने पर होता है। कार्ल रोजर्स ने भी व्यक्ति की स्वःनिर्देशन क्षमता तथा सकारात्मक विकास की सभाव्य योग्यता पर बल दिया।

अर्थपूर्ण अस्तित्व पर बल

मैस्लो के मानवतावादी उपागम के विचारों के साथ अस्तित्ववादी मनोवैज्ञानिक भी जुड़ गए। वे हमारे आधुनिक तकनीकी समाज जो मानव अस्तित्व में अर्थहीनता से ग्रस्त है, मे व्यक्ति के अव्यक्तिकरण पर चिंतित हैं। आधुनिक मनुष्य को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा जाता है जो एकांतवास, विरक्ति तथा अर्थविहीन अस्तित्व से पीड़ित है। इस उपागम का यह दावा है कि इन कष्टों पर विजय पाने के लिए मानव अस्तित्व को स्वपहचान की अनुभूति स्थापित करने तथा विश्व के साथ अर्थपूर्ण संबंधों को जोड़ने की आवश्यकता है। यह आधुनिक मानव तक पहुँचने की कोशिश करता है और उसके मूल्यो को स्पष्ट करने तथा अर्थपूर्ण एवं उद्देश्यपूर्ण अस्तित्व बनाने में सहायता प्रदान करता है। मनुष्य को स्वसंकल्प की आवश्यकता की पहचान करवाता है तथा यह समझाता है कि उसे विकल्पो मे से चुनने की स्वतत्रता है। यद्यपि मानवतावादी तथा अस्तित्ववादी उपागम एक

दूसरे से मिलते-जुलते हैं, मानवतावादी सिद्धात स्वयथार्थीकरण पर बल देता हैं जबकि अस्तित्ववादी निजी उत्तरदायित्व तथा स्वसंकल्प पर बल देता हैं जो स्वतंत्रता एव अर्थपूर्ण अस्तित्व की ओर अग्रसर करता है।

व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक

अब तक के विवेचन से यह स्पष्ट हो गया कि व्यक्तित्व एक गत्यात्मक एवं सतत् प्रयत्नशील प्रणाली है। व्यक्तित्व का विकास शून्य मे नहीं होता। व्यक्ति के बहुत से आंतरिक तथा बाह्य कारक व्यक्तित्व को प्रभावित करते है तथा रूप प्रदान करते हैं। दूसरे शब्दों में व्यक्ति की जननिक सरचना, परिवार, शिक्षा, संस्कृति, धर्म इत्यादि का व्यक्तित्व पर बहुत प्रभाव पड़ता है। हम इन कारकों को दो भागो मे वर्गीकृत कर सकते हैं—जैविकीय तथा मनोसामाजिक।

(i) जैविकीय

(अ) *आनुवशिकी :* अधिकतर मनोवैज्ञानिको का यह विश्वास है कि आनुवशिकी व्यक्तित्व के मुख्य निर्धारको में से एक है। भ्रातृयमजों तथा समरूप यमजों जिनकी जननिक सरचना एक समान होती है, पर किए गए अध्ययनो द्वारा प्राप्त प्रमाणों से यह ज्ञात होता है कि उनकी मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ जैसे अनुक्रिया शैली, बुद्धि, अभिरुचि, तनाव, सहनशीलता इत्यादि में भी समानता होती है।

(ब) *स्वायत्त तंत्रिकातंत्र :* स्वायत्त तंत्रिकातंत्र क्रिया (अनुकंपी तंत्रिकातत्र तथा परा अनुकंपी तंत्र) तथा संवेग एवं अभिप्रेरण के बीच संबंध सिद्ध हो चुका है। एक अध्ययन में यह पाया गया है कि जिन लोगों के अनुकंपी तंत्रिका तंत्र की प्रतिक्रियाएँ अत्यंत तीव्र होती है वे दूसरो पर निर्भर, सुझाव मानने वाले, स्वप्निल तथा आदर्शवादी होते हैं। जिनकी अनुकंपी प्रतिक्रियाएँ कम होती है (अनुमानतः परा अनुकंपी प्रधान) वे प्रायः शांत, टालने वाले, अवसरवादी तथा स्वतंत्र होते हैं।

(स) *अंतः स्रावी ग्रंथियाँ :* असामान्य ग्रंथि दशाओं पर किए गए अध्ययनों द्वारा पर्याप्त प्रमाण मिले हैं कि न्यासर्ग का व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है। इन अध्ययनो द्वारा कुछ सिद्धांत निकलकर आए जो यह दावा करते है कि सामान्य व्यक्तित्व भी ग्रंथि स्राव का परिणाम है। यह पाया गया कि अल्पावटुता (अवटु न्यासर्ग की सामान्य से कम उत्पत्ति) से ग्रस्त लोग प्रायः सुस्त, शक्तिहीन तथा मद बुद्धि वाले होते हैं। इस न्यासर्ग की अत्यधिक मात्रा मे उत्पत्ति के मामले मे व्यक्ति अशांत, दुश्चिंताग्रस्त तथा अत्यधिक क्रियाशील हो जाता है। यह भी पाया गया है कि पुरुषों में काम न्यासर्ग के अत्यधिक स्राव के कारण आक्रामकता तथा संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं में वृद्धि हो जाती है।

(द) *बाह्य रूप से प्रभावित करने वाली जैविकीय दशाएँ :* कुछ कारक जो स्वभावतः जैविकीय होते है किंतु आनुवशिकीय नहीं होते वे भी व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। यह भी पाया गया है कि अधिक समय तक क्षुधा, अर्धोपवास की अवस्था, विटामिन बी की कमी, औषधियाँ, संक्रमण, भौतिक दबाव जैसे निरंतर शोर, अत्यधिक प्रकाश इत्यादि भी व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं।

(ii) मनोसामाजिक कारक

व्यक्तित्व के कुछ महत्वपूर्ण मनोसामाजिक निर्धारक निम्नलिखित हैं :

(क) परिवार : व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में से एक, जीवन के प्रारंभिक वर्षों के अनुभव हैं। व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करने वाली बहुत-सी स्थितियों में, व्यक्ति और उसके परिवार के सदस्यो का संबंध सर्वप्रथम आता है। परिवार का प्रभाव न केवल बाल्यावस्था मे बल्कि विकास की सभी अवस्थाओ में महत्वपूर्ण है परंतु कुछ अवस्थाओं में अन्य अवस्थाओं की अपेक्षा परिवार के सदस्य अधिक प्रभावित करते हैं। परिवार के सदस्यों के साथ बिताया गया समय, व्यक्ति के व्यवहार पर उनका नियंत्रण,

उनके साथ विकसित संवेगात्मक संबंध तथा घर का सुरक्षित वातावरण ये सब मिलकर परिवार को व्यक्ति के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण बना देते है।

व्यक्तित्व को रूप प्रदान करने के लिए परिवार से संबंधित एक और महत्वपूर्ण पहलू बच्चो के पालन-पोषण की विधि तथा अभिरुचियो, अभिवृत्तियो, मूल्यो, पुरस्कार एवं दंड तथा प्यार की भावनाओं का संप्रेषण है।

(ख) विद्यालय : व्यक्तित्व के विकास पर घर तथा माता-पिता के पश्चात् विद्यालय तथा अध्यापको का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। प्रारंभिक वर्षों में बच्चे घर के अलावा अन्य स्थानो की अपेक्षा विद्यालय मे ही अधिक समय व्यतीत करते हैं। विद्यालय में अध्यापकों तथा अन्य विद्यार्थियों के बीच सकारात्मक एवं अनुकूल संबंधों द्वारा जो सुखद संवेगात्मक वातावरण निर्मित होता है, बालक को अपनी उच्चतम क्षमता के अनुसार कार्य करने मे सहायता करता है। वह अधिगम का आनंद लेता है तथा विद्यालय और बाहर के सदस्यों के साथ स्नेहपूर्ण तथा मित्रवत् संबंध स्थापित करता है। विद्यालय अथवा महाविद्यालय से घृणा के कारण विद्यार्थी विद्यालय से भाग सकता है या उसे छोड़ सकता है। यदि विद्यालय मे रहने के लिए उसे बाध्य किया जाए तो वह बदला लेने के लिए दुर्व्यवहार कर सकता है। अधिकतर वयस्कों द्वारा शैक्षिक सफलता को बहुत महत्व दिया जाता है। विद्यार्थी द्वारा प्राप्त सफलता की मात्रा विद्यार्थी के व्यक्तित्व को उसके सकारात्मक स्वप्रत्यय तथा उच्चतर लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अवसर ढूँढने के संबंध में उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करती है।

(ग) संवेगात्मक कारक : संवेग व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण निर्धारक है क्योंकि वे निजी तथा सामाजिक समायोजन को प्रभावित करते हैं। उनका व्यक्ति की अभिवृत्तियों, मूल्यों तथा मतो इत्यादि से भी घनिष्ठ संबंध है। संवेगात्मक संतुलन, जिसमे सुखद संवेग दुःखद संवेगों से अधिक होते हैं, अच्छे, निजी तथा सामाजिक समायोजन तथा सुख के लिए आवश्यक है। किसी व्यक्ति के लिए यह भी आवश्यक है कि वह भय, क्रोध, ईर्ष्या इत्यादि संवेगो से उत्पन्न दुःखद अनुभवो से समायोजन करने की सहिष्णुता तथा योग्यता विकसित करे। यह पाया गया है कि संवेगात्मक पृथक्करण का व्यक्तित्व पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(घ) सफलता तथा असफलता : जीवन में सफलता तथा असफलता व्यक्ति के स्वप्रत्यय, स्वमूल्याकन तथा आकांक्षाओं को अत्यधिक प्रभावित करती है। सफलता प्रायः आत्म संतोष की ओर अग्रसर करती है। यह प्रतिष्ठा, सामाजिक पहचान, तथा आर्थिक लाभ का स्रोत होती है जो बदले मे सकारात्मक स्वप्रत्यय को योगदान देते हैं। दूसरी ओर असफलता निम्न आत्म सम्मान, दुश्चिंता, शर्म तथा अवसाद की भावना की ओर अग्रसर करती है। सफलता तथा असफलता का व्यक्तित्व पर प्रभाव व्यक्ति की आयु के अनुसार पड़ता है। उदाहरणार्थ यदि कोई छात्र परीक्षा मे प्रथम प्रयास में ही सफलता प्राप्त कर लेता है तो इसका उसके व्यक्तित्व पर कहीं अधिक अनुकूल प्रभाव होगा अपेक्षाकृत इसके कि यदि वह उसी परीक्षा मे दो बार असफल होने के बाद सफल हो।

(ङ) सांस्कृतिक कारक : समाज की धार्मिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक स्थितियो से उत्पन्न भेदभाव तथा पूर्वाग्रह किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को रूप देने में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। हमारे देश में जातिगत, सामुदायिक तथा भाषा पर आधारित भेदभावो का व्यक्ति के स्वःप्रत्यक्ष, सामाजिक मूल्याकन तथा निर्णयों पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

(च) आर्थिक तथा रोज़गार समस्याएँ : आधुनिक समाज मे बहुत से लोगों के लिए बेरोज़गारी, मुद्रास्फीति तथा कार्य असंतोष उनमें दबाव का कारण बन गए हैं। मुद्रास्फीति से उन लोगो को कठिनाइयाँ होती हैं जिनकी आय-व्यय का अनुमान बढ़ते हुए मूल्यों के साथ कदम मिलाकर नहीं चल सकता। जनसंख्या के

बहुत बड़े भाग को बेरोज़गारी की गम्भीर समस्या के कारण भौतिक कष्टो, हतोत्साह तथा स्वय के अवमूल्यन का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार की समस्याएँ किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व पर दूरगामी प्रभाव डाल सकती है।

(छ) गृह-कलह तथा पारिवारिक अस्थिरता : दुःखदायी घरेलू परिस्थितियो से उत्पन्न पारिवारिक तथा सामाजिक समस्याएँ जैसे तलाक, दुःखद अतर्वैयक्तिक संबध, अवसर व्यर्थ खो देने की भावनाएँ परिवार के सभी सदस्यो मे अत्यधिक तनाव उत्पन्न करती हैं। इनके परिणामस्वरूप किसी भी व्यक्ति मे असामान्य ढंग का व्यवहार अथवा व्यक्तित्व की व्याधियाँ पैदा हो सकती है।

(ज) तीव्र सामाजिक परिवर्तन : तीव्र सामाजिक परिवर्तन ने मानव जाति के लिए गभीर समस्याओं का सृजन कर दिया है। आज मनुष्य के सामने पारंपरिक मूल्यों की पुनर्स्थापना, अस्तित्व सबंधी दर्शन, नए अनुदर्शनो का विकास तथा समय एव स्थान की योजना की समस्याएँ हैं। आज अनेक लोग सार्थक अस्तित्व, आनंद तथा चिरस्थायी विश्वास तथा दर्शन की खोज में है। दूसरे शब्दो मे आज सभी लोग आमतौर से जानी जाने वाली अस्तित्ववादी दुःश्चिता से पीड़ित हैं। उपरोक्त कारक व्यक्ति के जीवन की उत्तमता तथा व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करते हैं।

(झ) पर्यावरणीय कारक : पर्यावरण विशेषज्ञों द्वारा की गई शोध से यह ज्ञात होता है कि व्यक्ति के शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य में पर्यावरण संबंधी कारको का महत्वपूर्ण योगदान है। पर्यावरणीय कारक जैसे शोर, तापमान, प्रदूषण तथा भीड़-भाड़ से व्यक्तित्व की व्याधियाँ पैदा हो सकती हैं। इन कारकों के कारण अत्यधिक तनाव होता है जिससे जैविकीय, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक सड़ाव हो सकता है।

व्यक्तित्व का मापन

जिन मनोवैज्ञानिको ने व्यक्तित्व के सिद्धांत प्रतिपादित किए उन्होने ही उसे आकने तथा मापने के लिए परीक्षण भी विकसित किए। विभिन्न सैद्धातिक विचारों से सबधित अनेक व्यक्तित्व परीक्षण है। ये परीक्षण न केवल सामान्य व्यक्तित्व को समझने मे लाभप्रद है बल्कि नैदानिक विन्यासो मे विभिन्न मनोवैज्ञानिक व्याधियो का रोग निदान करने मे प्रयुक्त होते हैं। कुछ परीक्षण व्यक्तित्व की सतही विशेषताओ को आकते हैं जबकि अन्य व्यक्तित्व के अंतर्निहित पहलुओं से सबंधित हैं। व्यक्तित्व मापन के कुछ महत्वपूर्ण परीक्षण तथा प्रविधियाँ निम्नलिखित हैं।

(i) व्यक्तित्व अनुसूचियाँ तथा प्रश्नावलियाँ

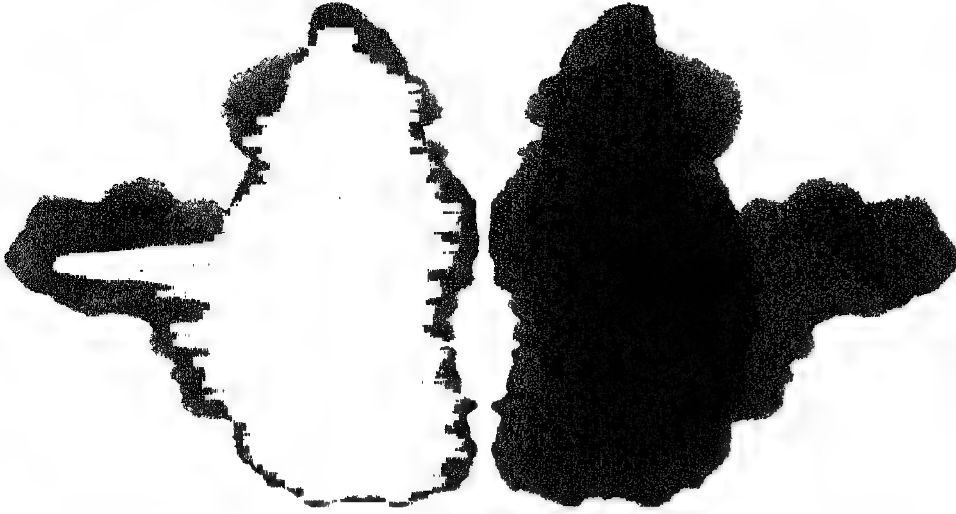
व्यक्तित्व अनुसूचियाँ तथा प्रश्नावालियों कुछ छपे हुए कथन या प्रश्नो के विन्यास के रूप मे होती हैं जो मानव व्यवहार मे व्यवहृत होते हैं। प्रयोज्य को उन पदो पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करनी होती है। पद सामान्यतः व्यवहार के विशिष्ट ढंग अथवा विशेषकों से संबंधित होते हैं। इनके कुछ महत्वपूर्ण परीक्षण हैं — सिन्हा दुश्चिता अनुसूची, बी सी मुखर्जी की व्यक्तित्व अनुसूची, सक्सेना समायोजन परीक्षण, मॉडसले व्यक्तित्व अनुसूची। ये परीक्षण अपेक्षाकृत कम समय लेते हैं तथा प्रयुक्त करने मे आसान होते हैं।

(ii) स्थिति परीक्षण

इस परीक्षण मे प्रश्नो अथवा कथनो के स्थान पर कुछ स्थितियाँ विकल्पो के साथ वर्णित होती है। प्रयोज्य को वह विकल्प चुनना होता है जिसे वह इस दृष्टि से सबसे अच्छा समझता/ समझती है कि अगर वास्तव मे वह उस स्थिति का सामना करे तो उसी विकल्प को चुनेगा/ चुनेगी।

(iii) प्रक्षेपण प्रविधियाँ

इन व्यक्तित्व परीक्षणों में स्याही के धब्बे, अस्पष्ट चित्र, तथा अपूर्ण वाक्य होते हैं। ये परीक्षण व्यक्तित्व के उन केंद्रीय पहलुओं को प्रकट करने का उत्तरदायित्व लेते हैं जो व्यक्ति के चेतन मन में नहीं भी हो सकते। इनका अरचित स्वरूप अनुमानतः

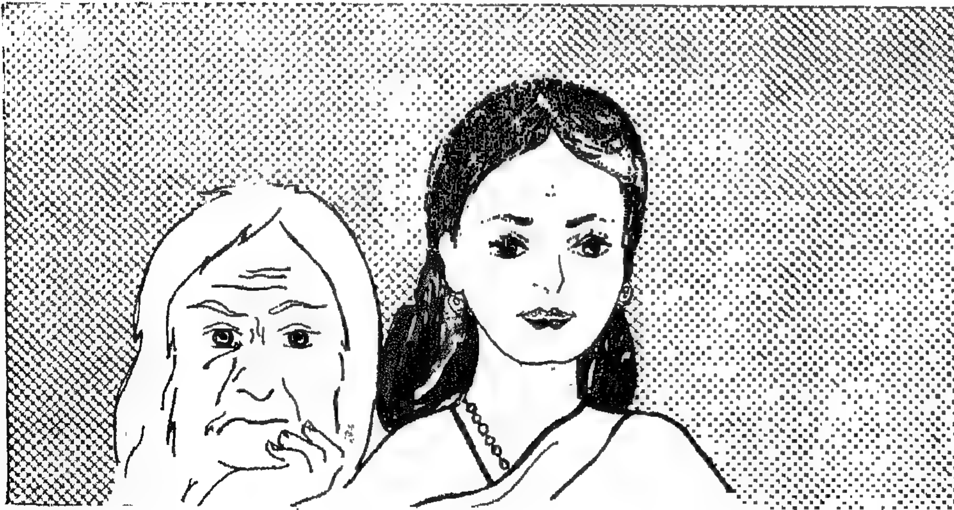


चित्र 2.2 *रोर्शा का एक स्याही धब्बा*

अचेतन अभिप्रेरणों, दमित इच्छाओं, आतरिक भय तथा ग्रंथियो को उभार कर प्रकट करता है। परीक्षण परिस्थिति में कुछ मामलों में सतही पहलू भी सामने आ जाते हैं। इन परीक्षणो की व्याख्या नीचे की गई है।

(अ) रोर्शा परीक्षण

यह परीक्षण हर्मन रोर्शा ने विकसित किया। इसमें दस पत्रक हैं जिन पर समरूप स्याही के धब्बे बने हुए हैं। धब्बे को देखते हुए प्रयोज्य से पूछा जाता है कि जो कुछ वह उनमे देख रहा/ रही है वह



चित्र 2.3 *एक कथ्य सप्रत्यक्षण परीक्षण पत्रक*

बताता/बताती जाए। परीक्षण के बाद स्थिति, निर्धारकों तथा विषय वस्तु के आयामों पर अनुक्रियाओं का विश्लेषण किया जाता है। रोर्शा परीक्षण अच्छे प्रक्षेपण परीक्षणों में से एक है तथा विस्तृत रूप से प्रयुक्त होता है।

(ब) कथ्य संप्रत्यक्षण परीक्षण (थीमेटिक एपरसेप्शन टेस्ट—टी ए टी)

इस परीक्षण को हेनरी मरे ने विकसित किया। इस परीक्षण में 30 पत्रक हैं। अधिकतर पत्रक किसी दृश्य का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनमे लोग परस्पर व्यवहार कर रहे हैं। किंतु दृश्य अस्पष्ट तथा अर्ध-रचित है और प्रयोज्य को अपनी आंतरिक दशा के अनुसार अनुक्रिया करने का पर्याप्त अवसर प्रदान करते हैं। इस परीक्षण में प्रयोज्य को प्रत्येक पत्रक देखना होता है और अपनी कल्पना के आधार पर एक कहानी लिखनी होती है। इन कहानियों का विश्लेषण प्रयोज्य पर प्रभाव डालने वाली आवश्यकताओं तथा दबावो को ध्यान में रखकर किया जाता है। यह परीक्षण नैदानिक तथा अनैदानिक दोनों प्रकार की परिस्थितियो में विस्तृत रूप से प्रयुक्त होता है।

(स) वाक्य पूर्णता परीक्षण

इसमें शाब्दिक सामग्री प्रयुक्त होती है। प्रयोज्य को कुछ अपूर्ण वाक्य पूर्ण करने को दिए जाते हैं उदाहरणार्थ, मुझे बहुत .... अनुभव हो रहा है। मुझे .... बिल्कुल सहन नहीं होता। प्रयोज्य को अपने अनुभव के अनुसार इन वाक्यो को पूर्ण करना होता है।

उपरोक्त वर्णन से हमे यह ज्ञात होता है कि मनोविज्ञान के क्षेत्र में व्यक्तित्व का मूल्यांकन एवं मापन एक कौशलपूर्ण एवं परिष्कृत कार्य है। आजकल व्यवहार की भविष्यवाणियाँ व्यक्तित्व के मापन पर आधारित होती हैं।

सारांश

व्यक्तित्व को व्यक्ति के भीतर उन मनोदैहिक तत्रों का गत्यात्मक सगठन पारिभाषित किया गया है जो उसके विशिष्ट व्यवहार एव चिंतन को निर्धारित करते हैं। परिभाषा के मुख्य प्रत्ययो की व्याख्या की गई है। व्यक्तित्व के मनोविश्लेणात्मक, विशेषक, प्रकार, सामाजिक अधिगम, तथा मानवतावादी एव अस्तित्ववादी उपागमों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। मनोविश्लेषण के जनक सिगमंड फ्रायड ने मूलप्रवृत्यात्मक प्रवृत्तियो तथा मन के भागो पर बल दिया है और इदम्, अहम् तथा पराहम् व्यक्तित्व के तीन पहलू बताए गए है। नवफ्रॉयडवादी मानते थे कि मनोग्रंथियाँ दुश्चिंता, सामूहिक अचेतन तथा अहम् समाकलन की खोज व्यक्तित्व के मूलाधार पहलू थे।

विशेषक की व्याख्या व्यक्ति के उन सापेक्षतः चिरस्थायी मनोवैज्ञानिक विशेषताओ के अद्वितीय सगठन के रूप में की गई है जो उसके परस्पर संबंधों मे परिलक्षित होता है। विशेषक सिद्धातवादियो ने अपने अनुसधान सामान्य, अद्वितीय तथा 16 कारक उपागम के इर्द-गिर्द केंद्रित किए। प्रकार उपागम मे हिप्पोक्रेटस, शेल्डन, आइजेन्क तथा फ्राइडमेन एवं रोजनमैन के व्यक्तित्व उपागमो की व्याख्या की गई है।

सामाजिक अधिगम उपागम वैयक्तिक तथा पर्यावरण चरो के बीच परस्पर व्यवहार पर बल देता है। आदत, अनुकरण, अनुक्रिया तथा पुनर्बलन इस उपागम की मुख्य धारणाएँ है। मानवतावादी उपागम स्वयथार्थीकरण पर बल देता है जबकि अस्तित्ववादी वैयक्तिक उत्तरदायित्व तथा स्व सकल्प पर बल देते हैं जो स्वतत्रता और अर्थपूर्ण अस्तित्व की ओर अग्रसर करते है।

आनुवशिकी, स्वायत्त तत्रिकातत्र, अतः स्रावी ग्रथियो तथा बाह्य रूप से प्रभावित करने वाली जैविकीय दशाएँ व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले जैविक कारक है। परिवार, विद्यालय, सवेगात्मक कारक, सफलता तथा असफलता, सास्कृतिक कारक, आर्थिक तथा रोजगार की समस्याएँ, गृह कलह एव पारिवारिक अस्थिरता, तीव्र सामाजिक परिवर्तन तथा पर्यावरणीय कारक व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कुछ महत्वपूर्ण मनोसामाजिक कारक है।

व्यक्ति के व्यक्तित्व के मापन के लिए व्यक्तित्व अनुसूचियाँ, प्रश्नावलियाँ, स्थिति परीक्षण तथा प्रक्षेपण प्रविधियाँ प्रयुक्त होती हैं।

प्रश्न

1. व्यक्तित्व क्या है? व्यक्तित्व की परिभाषा मे प्रयुक्त महत्वपूर्ण शब्दो की व्याख्या कीजिए।
2. व्यक्तित्व के विभिन्न उपागमो का सक्षेप मे वर्णन कीजिए।
3. व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले जैविकीय तथा मनोसामाजिक कारको का वर्णन कीजिए।
4. व्यक्तित्व के मापन मे प्रयुक्त विभिन्न परीक्षणों तथा प्रविधियो की व्याख्या कीजिए।
5. निम्न को अनुरूप कीजिए

फ्रॉयड	प्रकार उपागम
स्किन्नर	मनोविश्लेषणात्मक
ऑलपोर्ट	मानवतावाद
आयजेन्क	सामाजिक अधिगम
रोजर्स	विशेषक उपागम

6. निम्न वाक्यो की पूर्ति कीजिए .

   अ. आनुवशिकी .... है।

   ब. फ्रॉयड के अनुसार मन की संरचना .... से हुई है।

   स. विशेषक .... है।

   द. व्यक्तित्व मापन की तीन प्रविधियाँ .... हैं।

एकक 3

संप्रेषण तथा अंतर्वैयक्तिक संबंध

इस एकक को पढ़ने के बाद विद्यार्थी इस योग्य होंगे कि वे

- संप्रेषण के बारे मे जानें;
- शाब्दिक और अशाब्दिक संप्रेषण की व्याख्या करें;
- संप्रेषण की प्रभावकता पर असर डालने वाले कारकों का वर्णन करें;
- संप्रेषण के बाधकों के बारे में बता सकें;
- अभिवृत्ति के प्रत्यय, इसकी विशेषताएँ व संघटकों की व्याख्या करें;
- रूढ़ि के प्रत्यय की परिभाषा करें;
- पूर्वाग्रह तथा उसके स्रोतों का वर्णन करेंगे ।

लोग अपनी भावनाओ, अनुभवों व विचारो का शाब्दिक तथा अशाब्दिक संप्रेषणों द्वारा विनिमय करते हैं। इन्ही संप्रेषणों की प्रभावशीलता पर सभी अंतर्वैयक्तिक संबंध आधारित होते हैं। किसी भी अंतर्वैयक्तिक स्थिति में संप्रेषित विषय वस्तु अधिकतर अभिवृत्तियों, रूढ़ियों तथा पूर्वाग्रहों पर आधारित होती हैं। यह एकक सप्रेषण के विभिन्न पहलुओ एवं अभिवृत्तियों, रूढ़ियों व पूर्वाग्रहों से संबंधित है।

संप्रेषण

सप्रेषण का अंग्रेज़ी पर्यायवाची शब्द कम्यूनिकेशन लैटिन के कम्यूनिस शब्द से निकला है जिसका तात्पर्य कॉमन (सामान्य) से है। संप्रेषण में एक व्यक्ति दूसरे के साथ सामान्य समझ स्थापित करने का प्रयत्न करता है। अतः संप्रेषण की व्याख्या दो अथवा अधिक व्यक्तियों के बीच में सूचना व अनुभव के आदान-प्रदान के रूप में की गई है। कुछ सीमा तक सभी जीवित प्राणी अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करते है। चीटियों के बारे में यह कहा गया है कि वे घ्राणशक्ति द्वारा संदेश देकर अपनी भोजन एकत्र करने वाली क्रियाओं को समन्वित करती हैं। जंगल में जब चिड़ियाँ ज़ोर-ज़ोर से चीं-चीं करती हैं तो वे पक्षियों व पशुओं को चीते की उपस्थिति की चेतावनी देती हैं। घरेलू जानवर भी अपने स्वामियों

के हाव-भाव तथा विभिन्न ध्वनियों द्वारा दिए हुए बहुत से आदेशों को समझ जाते हैं। मानव संप्रेषण इसलिए अद्वितीय बन जाता है क्योंकि उसमें सूचना के प्रेषण के लिए सामान्य संकेतों को सृजन तथा प्रयोग करने की उच्च योग्यता है। कुछ संकेत भौतिक वस्तुओं जैसे मेज़, पुस्तक अथवा वृक्ष से तथा कुछ क्रियाओं जैसे दौड़ने, सोने तथा बोलने से संबधित होते हैं। बुद्धि, सहानुभूति, स्वामिभक्ति इत्यादि के संकेतों के प्रत्ययों को समझने में अत्यधिक कठिनाई होती है। विभिन्न भाषाएँ संकेतों की उच्च विकसित व्यवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करती है। शाब्दिक अथवा अशाब्दिक भाषा को प्रयोग करने की यही योग्यता मनुष्यों को सूचना तथा अनुभवों का आदान-प्रदान करने तथा दूसरों से सीखने योग्य बनाती है। इस प्रकार *संप्रेषण को विचारों, मतों या सूचनाओं के बोलने, लिखने या संकेतो द्वारा प्रदान करने से पारिभाषित किया गया है।*

मानव संप्रेषण विभिन्न स्थितियों में घटित होता है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष, वैयक्तिक या अवैयक्तिक हो सकता है। यह स्थितियाँ इस प्रकार वर्गीकृत की जा सकती हैं– (क) द्विवैयक्तिक (ख) छोटा समूह (ग) सार्वजनिक (घ) संगठनात्मक तथा (च) जनसंचार। *द्विवैयक्तिक संप्रेषण दो व्यक्तियों के बीच होता है।* वे मित्र, युगल, व्यापार में भागीदार या बाज़ार में बात करते हुए दो अपरिचित हो सकते हैं। इस प्रकार के संप्रेषण में अधिकतर वे सभी दैनिक अनौपचारिक आदान-प्रदान सम्मिलित होते हैं जिसमें हम प्रातः से संध्या तक व्यस्त रहते है। *छोटे समूह संप्रेषण* में दो से अधिक व्यक्ति सम्मिलित होते हैं। यह आवश्यक नही कि वह प्रत्यक्ष ही हो वह समूह के दूसरे सदस्यों के द्वारा भी हो सकता है। परिवार के सदस्यों, पड़ोसियों तथा सहयोगियों का संप्रेषण इसी श्रेणी में आता है। *सार्वजनिक संप्रेषण* अधिक औपचारिक होता है तथा सार्वजनिक स्थानों जैसे सभागार, विद्यालय प्रांगण, मंदिर, अथवा गाँव की *चौपाल* मे होता है। सार्वजनिक संप्रेषण औपचारिक सामाजिक स्थिति है जो अनौपचारिक, अरचित तथा छोटे समूह के संप्रेषण के विपरीत पूर्वनियोजित होती है। *संगठनात्मक संप्रेषण* उन विन्यासों जैसे उद्योगों, चिकित्सालयों, शासकीय विभागों, सैनिक तथा विद्योपार्जन संस्थानों पर व्यवहृत होता है। इन संगठनों में संप्रेषण औपचारिक, संरचित, श्रेणीबद्ध तथा प्रायः बहुत सी सरणियों से युक्त होता है। ऐसे विन्यासों में किसी विशेष संप्रेषक की प्रभावकता से संबंध नहीं होता किंतु संप्रेषण की भूमिका पर होता है। संप्रेषण के सभी वर्गों में जन संचार सबसे अधिक औपचारिक, अवैयक्तिक तथा एक तरफा होता है। इसमें रेडियो, दूरदर्शन, समाचार पत्र, पुस्तकें, चलचित्र इत्यादि साधन आते हैं। जनसंपर्क में बहुत बड़ी संख्या में लोगों के प्रयत्न सम्मिलित होते हैं।

संप्रेषण प्रक्रिया

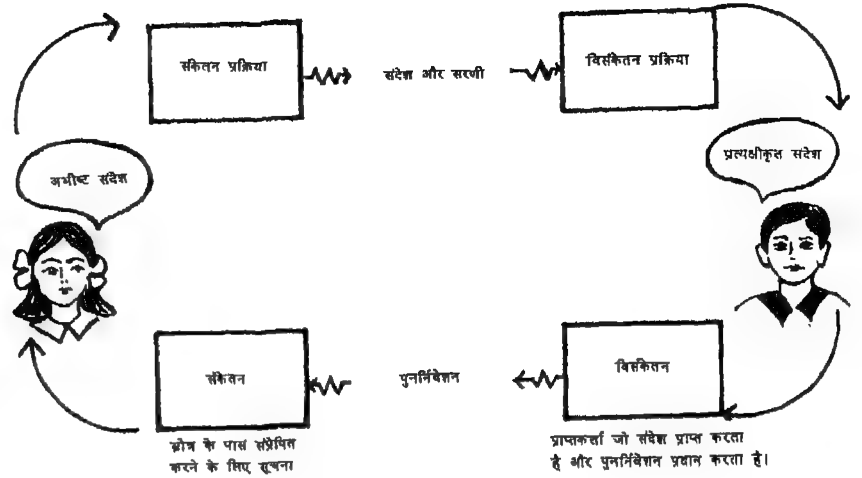
संप्रेषण प्रक्रिया के आठ प्रमुख तत्वों — स्रोत, संदेश, संकेतन, सरणी, प्राप्तकर्ता, विसंकेतन, पुनर्निवेशन तथा शोर की व्याख्या नीचे की गई है।

(क) स्रोत

संप्रेषण प्रक्रिया स्रोत अथवा भेजने वाले से प्रारंभ होती है। जिसके पास संप्रेषित करने के लिए अभीष्ट संदेश होता है। स्रोत संदेश का जन्मदाता होता है और यह एक व्यक्ति अथवा एक साथ काम करने वाले बहुत से व्यक्तियों जैसे संगीत का समूह अथवा दूरदर्शन समाचार दल हो सकता है। संदेश भेजने वाला स्रोत हो सकता है और नही भी हो सकता है। उदाहरण के लिए जब विद्यालय के प्रधानाचार्य कोई उच्च अधिकारियों से प्राप्त हुआ संदेश देते हैं तो वे उसके स्रोत हैं। जब प्रधानाचार्य अपना निजी संदेश देते हैं तब वे स्वयं स्रोत बन जाते हैं।

(ख) संदेश

संदेश वह उद्दीपन है जो स्रोत प्राप्तकर्ता को प्रेषित करता है। यह उन संकेतो से बना होता है जिनसे अभीष्ट अर्थ प्रेषित होता है। अधिकतर संदेशों में शब्द



चित्र 3.1 *संप्रेषण का आधारभूत प्रतिरूप*

होते हैं जो या तो लिखित या मौखिक होते हैं। फिर भी विविध प्रकार के अशाब्दिक व्यवहार जैसे शारीरिक भाषा, मोर्स कूट, संकेत भाषा, हाव-भाव आदि भी संदेश को संप्रेषित करने में प्रयुक्त हो सकते हैं।

(ग) संकेतन

अभीष्ट संदेश को प्रयुक्त संकेतों में रूपांतरण करने की प्रक्रिया को संकेतन प्रक्रिया कहते हैं। संकेतन काफी सरल भी हो सकता है जैसे जलपानगृह में नाश्ते अथवा चाय का आदेश देना। दूसरे अवसरों पर संकेतन अत्यधिक कठिन भी हो सकता है जैसे किसी छात्र का निष्पादन अपर्याप्त क्यों है, को व्यक्त करने के लिए उचित शब्द ढूंढना।

(घ) सरणी

सरणी का तात्पर्य उस साधन से है जिसके द्वारा कोई संदेश स्रोत से प्राप्तकर्ता तक पहुँचता है। यह वह पथ है जिससे संदेश भौतिक रूप से प्रेषित होता है। अंतर्वैयक्तिक संप्रेषण की मुख्य सरणी दो व्यक्तियो के बीच आमने-सामने आदान-प्रदान होता है। जन संचार साधनों की कुछ प्रमुख सरणियाँ रेडियो, दूरदर्शन, चलचित्र, समाचारपत्र तथा पत्रिकाएँ हैं।

(ङ) प्राप्तकर्ता

प्राप्तकर्ता वह व्यक्ति है जो संदेश प्राप्त करता है और जिस पर उसके विसंकेतन का उत्तरदायित्व होता है।

(च) विसंकेतन

विसंकेतन वह प्रक्रिया है जिससे प्राप्तकर्ता द्वारा संकेतों की व्याख्या की जाती है। यद्यपि कुछ जटिल संदेशों जैसे कि किसी विदेशी भाषा अथवा मोर्सकूट के वास्तविक अनुवाद करने की आवश्यकता होती है। अधिकतर स्थितियों में विसंकेतन साधारणतया प्राप्तकर्ता द्वारा संदेश की व्याख्या ही होती है।

(छ) पुनर्निवेशन

प्राप्त करने वाले द्वारा भेजने वाले को वापिस दिया गया पुनर्निवेशन वास्तव में एक और संदेश होता है जो संप्रेषण की प्रभावकता को इंगित करता है। पुनर्निवेशन इसलिए वांछनीय है क्योंकि इसी से स्रोत को यह पता चलता है कि प्रारंभिक संदेश ठीक-ठीक संप्रेषित नहीं किया गया तथा उसे दोहराने की आवश्यकता है। पुनर्निवेशन से यह भी इंगित हो सकता है कि बाद में आने वाले संदेशों में सुधार की

आवश्यकता है। हमारी अपने सामाजिक प्राणी होने की व दूसरों के विषय में बहुत-सी समझ पुनर्निवेशन पर आधारित है। पुनर्निवेशन से यह ज्ञात होता है कि संदेश का श्रोतागण पर अभीष्ट प्रभाव हुआ या नहीं। जब आप बात कर रहे हैं तो दूसरे व्यक्ति का केवल सिर हिलाना स्वीकृति को इंगित करने के लिए पर्याप्त है। एक तरफा संप्रेषण पुनर्निवेशन के लिए अवसर प्रदान नहीं करता। अतः हम यह पाते हैं कि जहाँ पुनर्निवेशन होता है वहाँ दो तरफा संप्रेषण होता है तथा पुनर्निवेशन के अभाव का तात्पर्य एक तरफा संप्रेषण होता है।

(ज) शोर

संदेश को प्रेषित करने व पुनर्निवेशन प्राप्त करने, दोनों में ही शोर द्वारा संदेश मे बाधा हो सकती है जिसमें संदेश की अस्पष्ट शब्दावली से लेकर खराब दूरभाष संबंध तक हो सकता है। *कोई भी कारक जो प्राप्तकर्ता का संदेश ग्रहण करने की योग्यता में बाधा, विकृति अथवा हस्तक्षेप करता है, शोर कहलाता है।*

संप्रेषण के प्रकार

विस्तृत रूप से संप्रेषण शाब्दिक अथवा अशाब्दिक हो सकता है। प्रायः लोग आमने-सामने की स्थिति में स्पष्टता को बढ़ाने तथा परिणामतः संदेश का प्रभाव बढ़ाने के लिए संप्रेषण के इन दो प्रकारों को मिला लेते हैं। शाब्दिक संप्रेषण लिखित संदेश द्वारा भी हो सकते हैं। बधिर तथा गूंगे व्यक्तियो के साथ संप्रेषण पूर्णतया अशाब्दिक जैसे शारीरिक भाषा होता है, उदाहरण के लिए आँख की गतियाँ, हाथ के हाव-भाव, आसन इत्यादि होता है। दूरदर्शन तथा नाटक संप्रेषण के शाब्दिक तथा अशाब्दिक, दोनों प्रकारों को प्रयुक्त करते हैं।

(i) शाब्दिक संप्रेषण

संप्रेषण का आधार भाषा—शाब्दिक संप्रेषण सदैव किसी भाषा के प्रयोग द्वारा होता है। भाषा की आधारभूत इकाइयाँ शब्द हैं जो प्रत्ययों का प्रतिनिधित्व करने वाले चिन्ह है। बोली हुई भाषा मे इन शब्दों का आधार संप्रेषक की घोषतंत्री से उत्पन्न हुई संक्षिप्त व स्पष्ट ध्वनियाँ है। ये ध्वनियाँ प्राप्तकर्ता द्वारा संदेश का तात्पर्य समझने के लिए विसंकेतित की जाती हैं। मुख्यतः वाणी तथा भाषा के द्वारा ही मनुष्य अपने विचारो, भावनाओं और अभिप्रायो को दूसरे व्यक्ति को संप्रेषित करते हैं।

भाषा का आविष्कारक मानव — यद्यपि मनुष्यों की घोषतंत्री अधिक विकसित होती है किंतु पशु भी एक दूसरे से संप्रेषण करने के लिए अपनी घोषतंत्री का प्रयोग करते हैं। कहा जाता है कि वनमानुष संप्रेषित करने के लिए 300 से अधिक ध्वनियो का प्रयोग करते हैं। ई.एल. टॉरेन्स ने उल्लेख किया है कि वनमानुष को अमरीकन सांकेतिक भाषा के 200 तक शब्द सिखाए जा सकते हैं। यद्यपि वानर शब्द सीख भी सकते हैं तथा उन्हें सार्थक क्रमो में जोड़ भी सकते हैं किंतु वे मनुष्यो की भाँति वाक्यों की रचना नहीं कर सकते। कुछ तोते मनुष्य की आवाज़ का अनुकरण कर सकते हैं किंतु नए वाक्यों का सृजन नहीं कर सकते। मनुष्य की भाषा पशुओं के संप्रेषण से दूसरे प्रकारों से भी भिन्न हैं। जबकि विभिन्न सांस्कृतिक समूहों के सदस्यों ने 3000 से अधिक विभिन्न भाषाओं का विकास कर लिया है किंतु वनमानुष चाहे वे वन मे हों अथवा प्राणी-घर में पाले गए हों एक ही प्रकार के पदार्थ अथवा अनुभव का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक सी ध्वनियों का प्रयोग करते हैं। दूसरी ओर मनुष्यों ने वस्तुओं तथा विचारों मे छोटे-छोटे विभेदों का प्रतिनिधित्व करने के लिए बहुत से विभिन्न शब्दों का सृजन किया है तथा जहाँ तक आवश्यक हुआ प्रत्ययों तथा विचारों के लिए नए शब्दों का आविष्कार किया। बच्चे भी सहज रूप से नए वाक्यों का सृजन कर सकते हैं तथा ध्वन्यात्मक समानता रखने वाले शब्दों में अंतर कर सकते हैं। व्याकरण के नियम प्रत्येक भाषा में शब्दों के प्रकार, वाक्यों में उनका क्रम, वाक्य संरचना, वाक्यांशों तथा वाक्यो के हर संभव अर्थों को शासित करते हैं।

(ii) अशाब्दिक संप्रेषण

यद्यपि हम बोली हुई भाषा पर निर्भर करने को प्रवृत्त होते हैं, हमारा संप्रेषण बहुत कुछ सीमा तक अशाब्दिक होता है। अशाब्दिक संप्रेषण में वाणी संकेत, चक्षु सम्पर्क, मुख मुद्रा, शारीरिक भाषा इत्यादि होते हैं। हम बातचीत करने के साथ इन सभी का प्रयोग कर सकते हैं। ये अशाब्दिक संप्रेषण या तो हमारी बातचीत के शाब्दिक अर्थ को विशिष्टता देते हैं या उन्हें पूर्णतया नया अर्थ दे देते हैं। बातचीत की भाषा की भाँति अशाब्दिक संप्रेषण का सदैव वही अर्थ नहीं होता और न ही उसकी विस्तृत शब्दावली होती है। जबकि किसी व्यक्ति की मुख मुद्राओं, चक्षु संपर्क का स्तर, शरीर की गति तथा हाव-भाव में, बहुत-सी सूचनाएँ होती हैं परंतु प्रत्येक का संबद्ध अर्थ सामाजिक व निजी संदर्भ पर निर्भर करता है। यह अशाब्दिक संप्रेषण विभिन्न स्थितियों में विभिन्न व्यक्तियों की विभिन्न अर्थ व्यक्त कर सकता है।

वाणी संकेत

वार्तालाप के दौरान हम जो बहुत सी ध्वनियाँ निकालते हैं वे हमारे चिंतन तथा भावनाओं को व्यक्त करती है जैसे किसी से बातचीत करते समय केवल हूँ-हूँ की ध्वनि भी दूसरे को यह पुनर्निवेशन देती है कि आप ध्यान दे रहे हैं। दूसरे वाणी संकेत जैसे सीटी बजाना या गुनगुनाना, दूसरों के साथ संप्रेषण करने के महत्वपूर्ण तरीके हैं। इन ध्वनियों का तात्पर्य स्वर, आवाज़ की प्रबलता तथा जिस व्यक्ति की ओर निर्देशित की जाए इन सब बातों पर भी निर्भर करता है। यहाँ तक कि मौन भी किसी व्यक्ति की भावनाओं तथा विचारों को संसूचित करने की महत्वपूर्ण विधि माना जा सकता है। उदाहरण के लिए किन्हीं विशेष मामलों में मौन को अनुमति अथवा सहमति का सूचक माना जाता है।

चक्षु संपर्क

संभवतः सूचना का सबसे अधिक लाभदायक अशाब्दिक स्रोत चक्षु संपर्क है। हम प्रायः दूसरों की आंतरिक स्थिति के बारे में बहुत कुछ उनके चक्षुओं तथा विचार विनिमय में चक्षु सम्पर्क से जानते हैं। प्रायः हम चक्षु के अधिक सम्पर्क की मित्रता तथा अनुराग के सूचक के रूप में व्याख्या करते हैं। चक्षु संपर्क दो तरफा संवाद को विनियमित करने में लाभदायक है। यह बोलने वाले के लिए एक प्रकार का संकेत है कि रुक जाए अथवा बोलना शुरू करे। अध्यापक कभी-कभी किसी विशेष विद्यार्थी की ओर सीधा देखते हैं। इसका तात्पर्य यह होता है कि अब बोलने की उसकी बारी है। इसी प्रकार जब विद्यार्थी अध्यापक की ओर न देखकर दूसरी ओर देखने लगते हैं इसका यह तात्पर्य है कि वे बोलना नहीं चाहते।



चित्र 3.2 *चक्षुओं द्वारा सम्प्रेषण*

मुख मुद्राएँ

संप्रेषण का दूसरा प्रकार मुख मुद्राएँ हैं। यह धारणा कि व्यक्ति के संवेग प्रायः उसकी मुखाभिव्यक्ति द्वारा अभिव्यक्त होते हैं, बहुत पुरानी है। विभिन्न शास्त्रीय नृत्य प्रकारों में विशिष्ट संवेगो को अभिव्यक्त करने के लिए मुख मुद्राओं का भरपूर प्रयोग किया जाता है। किंतु चार्ल्स डार्विन ने पहली बार मुख मुद्राओं का वैज्ञानिक अध्ययन किया। अपने विश्व भ्रमण के दौरान उन्होंने देखा कि मुख मुद्राओं का सार्वभौमिक

अर्थ होता है। उन्होंने पाया कि विश्व में सभी स्थानों पर लोग समान संवेगों को व्यक्त करने के लिए बहुत कम अंतरों से समान अभिव्यक्ति करते हैं। उनके अनुसार प्रत्येक समाज के लोग कम से कम छः आधारभूत संवेगों को समान अभिव्यक्ति द्वारा व्यक्त करते हैं। ये हैं : क्रोध, हर्ष, उदासी, विरुचि, भय तथा आश्चर्य। उदाहरण के लिए विश्व भर मे मनुष्य प्रसन्नता के समय अपने मुंह के कोनों को ऊपर ले जाते है तथा उदास होने पर नीचे की ओर लाते हैं। मनोविज्ञान के अनुसंधानो ने डार्विन के विचार का समर्थन किया है कि मुख मुद्राएँ सांस्कृतिक कारकों की अपेक्षा जैविक कारको पर अधिक निर्भर हैं। अनुसधानों के प्रमाण यह भी दर्शाते हैं कि शिशु भी अपनी सांवेगिक स्थिति को दर्शाने वाली मुख मुद्राओं को प्रदर्शित करते हैं।



चित्र 3.3 *मुख मुद्राओ द्वारा संप्रेषण*

शारीरिक भाषा

मुख मुद्राओ के साथ हम संप्रेषित करने के लिए अथवा संप्रेषण का संपूरक बनाने के लिए बाँहों, हाथों तथा आसनों का प्रयोग करते हैं। बहुत बार हम इस बारे में सजग ही नहीं होते कि हम उन शारीरिक गतियों द्वारा कुछ विशेष संदेश व्यक्त कर रहे हैं। उदाहरण के लिए जब आप यह देखते हैं कि कोई व्यक्ति निरंतर अपना आसन बदल रहा है, अपने नाखून दाँतों से काट रहा है व अपना सिर हिला रहा है तो आप यह अनुमान आसानी से लगा सकते है कि वह घबरा रहा है या तनाव मे है। इसी प्रकार मुट्ठी भींचना प्रायः क्रोध का प्रतीक है, कंधे उचकाना अज्ञानता अथवा असहायता प्रदर्शित करता है, चेहरा ढक लेना लज्जा का सूचक है इत्यादि।

शारीरिक भाषा भी सकारात्मक व नकारात्मक भावनाओं को प्रकट करती है। यदि कोई व्यक्ति जिससे हम बात कर रहे हैं बिल्कुल हमारे सामने है और थोड़ा आगे की ओर झुक जाता है तो यह प्रायः पसंद करने और घनिष्ठ संबंध का द्योतक है।

वास्तव में किसी भी सामाजिक स्थिति में लोगों की परस्पर व्यवहार के समय एक दूसरे से रखी गई शारीरिक दूरी से हमें संबंधों की अंतरंगता के स्तर का पता चलता है। किंतु इस प्रकार के बहुत से हाव-भाव, आसन तथा शारीरिक संपर्कों की व्याख्या प्रत्येक संस्कृति में भिन्न होती है। उदाहरण के लिए भारत में पैर छूना आदर करने का सूचक माना जाता है जबकि अन्य कुछ देशों में गले मिलना आदर करने का सूचक माना जाता है।

संप्रेषण की प्रभावकता पर असर डालने वाले कारक

प्रत्येक संप्रेषण का अभिप्राय उस व्यक्ति को प्रभावित करने का होता है जिसके लिए वह उद्दिष्ट किया जाता है। किंतु इसके सदैव वांछनीय प्रभाव नहीं होते। किसी संप्रेषण की प्रभावकता पर असर करने वाले बहुत से कारक होते हैं। विस्तृत रूप में यह कारक तीन पहलुओं से संबंधित हैं। (1) संप्रेषण का स्रोत (2) संदेश की विषयवस्तु तथा (3) प्राप्तकर्ता की विशेषताएँ।

(1) संप्रेषण का स्रोत

संप्रेषण की प्रभावकता पर असर करने वाले संप्रेषण के स्रोत के दो मुख्य कारक ये है (अ) स्रोत की विश्वसनीयता तथा आकर्षण तथा (ब) प्रस्तुतीकरण की शैली

(अ) स्रोत की विश्वसनीयता तथा आकर्षण

आपने देखा होगा कि बहुत से विज्ञापनों में उत्पादन की संस्तुति किसी प्रसिद्ध अथवा अनुभवी व्यक्ति द्वारा की जाती है जैसे किसी विशेष प्रकार के दंत पेस्ट की संस्तुति किसी दतविशेषज्ञ द्वारा किया जाना। इसी प्रकार यदि देश का कोई प्रसिद्ध अर्थशास्त्री कर निर्धारण के पक्ष में बोलता है तो अधिक लोग उसे स्वीकृति देंगे अपेक्षाकृत आस-पास के किसी साधारण व्यक्ति की राय के। संक्षेप में अधिक विश्वसनीय स्रोत कम विश्वसनीय स्रोत की अपेक्षा राय परिवर्तन मे अधिक प्रभावी होता है। यही बात स्रोत के आकर्षक होने के बारे मे कही जा सकती है। किसी साबुन के अच्छे गुणों को सूचित करने की अपेक्षा यदि कोई प्रसिद्ध फ़िल्म अभिनेत्री किसी विशेष किस्म के साबुन की संस्तुति करती है तो इसका प्राप्तकर्ता पर अधिक प्रभाव होता है।

(ब) प्रस्तुतीकरण की शैली

कुछ व्यक्ति अपने गुणों अथवा प्रशिक्षण के कारण सूचना के अच्छे संप्रेषक होते हैं। कुछ अच्छे वक्ता, अभिनेता, नर्तक तथा अन्य व्यक्ति अपने शाब्दिक तथा अशाब्दिक कौशलों का उचित मिलान करके संप्रेषण को अधिक प्रभावी बना सकते हैं। बहुत से राजनेता कुछ शब्दों पर उचित बल देकर अपने भाषण की आवाज़ तथा स्वरमान में परिवर्तन लाते हुए अपने हाव-भावों द्वारा संदेश को नाटकीय रूप देकर श्रोताओं को अपने साथ बहा ले जा सकते हैं। यह सामान्य अनुभव है कि विभिन्न शिक्षकों द्वारा पढ़ायी गई उसी पाठ्यसामग्री से विभिन्न मात्रा में अधिगम होता है। वक्ता की नीरस आवाज किसी बेहद रुचिपूर्ण विषय को भी नीरस बना सकती है। दूसरी ओर एक प्रभावशाली वक्ता कठिन विषय पर भी आपकी अभिरुचि जागृत कर सकता है।

(2) संदेश की विषय वस्तु

संप्रेषित संदेश को प्रभावी बनाने वाले तीन स्पष्ट गुण ये हैं :

(अ) नवीनता, (ब) संवेगात्मक अनुरोध, तथा (स) तर्कों की संख्या।

(अ) नवीनता

कोई आपको पहले सुना हुआ ही तर्क देता है तो आप अपनी प्रतिक्रिया के बारे में आसानी से सोच सकते हैं और आप शायद उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देंगे। किंतु यदि कोई ऐसा तर्क देता है जो आपने पहले सोचा या सुना नहीं है तो वह आपका ध्यान तुरंत खीच लेगा। नयी सूचना पारम्परिक सूचना की अपेक्षा सामान्यतः आपका ध्यान आकृष्ट करने में अधिक प्रभावी होती है।

(ब) *सवेगात्मक अनुरोध*

ऐसे सदेश जो प्राप्तकर्ता को अच्छे लगते हैं, अधिक प्रभावी होते हैं क्योकि वे अनुकूल प्रतिक्रियाएँ जागृत करते हैं। किंतु कुछ सदेश जो भय उत्पन्न करते हैं वे भी प्रभावी होते हैं जैसे भविष्यवाणी करना कि यदि जनसंख्या को रोका न गया तो मानवता सर्वनाश की ओर बढ़ जाएगी। यह प्रविधि माताओ द्वारा सफलतापूर्वक प्रयोग की जाती है जो अपने बच्चों को किसी अवांछनीय कार्य करने से रोकने के लिए भूतों तथा शेरों का नाम लेकर डरा देती हैं। किंतु अनुसधानों से ज्ञात हुआ है कि कम धमकी भरे संदेश अधिक धमकी भरे सदेशों की तुलना में अधिक प्रवर्तक होते हैं। अधिक धमकी संभवतः संदेश मे अवरोधन पैदा करती है। साथ ही बहुत कुछ स्रोत की विश्वसनीयता पर भी निर्भर करता है। उदाहरण के लिए यदि बच्चा माँ पर विश्वास ही नही करता तो वो जो कुछ भी कहेगी वह उसको नही सुनेगा।

(स) *तर्कों की संख्या*

संदेश का तीसरा गुण जो इसे प्रभावी बनाता है प्रस्तुत किए गए तर्कों की संख्या है। एक अनुरूप अदालत के प्रयोग में एक मनोवैज्ञानिक ने पाया कि प्रत्येक पक्ष द्वारा प्रस्तुत संबंधित प्रमाणों की मात्रा तथा तर्कों की संख्या ने निर्णय को प्रभावित किया। क्या हमें किसी तर्क के केवल एक पक्ष को ही प्रस्तुत करना चाहिए या दोनों को? यह एक बहुत जटिल प्रश्न है क्योंकि बहुत कुछ प्राप्तकर्ता पर निर्भर करता है। यदि प्राप्तकर्ता भली प्रकार से सूचित है तो तर्क के दोनों पक्षों को प्रस्तुत करना चाहिए।

3. प्राप्तकर्ता की विशेषताएँ

(अ) *प्रत्यायनीयता*

चाहे कितना ही अच्छा संप्रेषक क्यों न हो किसी विशेष संदेश का प्रभाव प्राप्तकर्ता की विशेषताओं पर निर्भर करता है। व्यक्तित्व की बहुत-सी विशेषताएँ संदेश ग्राहकता को प्रभावित करती हैं। सी एल हावलैंड तथा आई एल जेनिस ने अपने व्यक्तित्व तथा प्रवर्तन के प्रतिष्ठित अध्ययन मे यह पाया कि जो लोग दशाओ के एक विन्यास में आसानी से प्रवर्तित हो जाते हैं. वे दूसरी दशाओ मे भी प्रायः आसानी से प्रवर्तित हो जाएँगे। इससे उन्होने निर्णय लिया कि प्रत्यायनीयता एक व्यक्तित्व विशेषक है। कुछ लोग किसी भी प्रवर्तक सप्रेषण से सहमत हो जाते हैं।

(ब) *आत्म-सम्मान*

डब्लयू. जे. मैक्गवायर ने यह देखा कि जिन व्यक्तियों मे आत्म-सम्मान कम होता है वे अपनी ही राय को महत्व नहीं देते हैं और दबाव के नीचे आसानी से अपनी राय छोड़ देते हैं। किंतु ऐसी स्थिति मे जहाँ अहम् का प्रश्न सम्मिलित होता है और जिस के बारे में कोई तीव्रता से अनुभव करता है वहाँ उसकी वर्तमान राय के विरुद्ध जो भी संदेश होगा उसका विरोध होगा।

संप्रेषण में बाधाएँ

संप्रेषण सदैव उतना सक्षम नही होता जितना उससे अभीष्ट किया जाता है। कुछ बाधाएँ किसी भी सदेश के सुचारु बहाव को रोकती हैं। संप्रेषण की इन असफलताओं के परिणामस्वरूप संदेश गलत समझा जाता है। कई बार तो यह बिल्कुल ही समझ नहीं आता। कभी-कभी सूचना के आत्मसात्करण की गति अथवा परिशुद्धता में कम दक्षता होती है। सबसे बुरा तो तब होता है जब संप्रेषण पूर्णतया टूट जाता है। यह सभी दशाएँ संप्रेषण की कुछ बाधाओं की ओर इगित करती है।

संप्रेषण में बहुत सी संभावित बाधाएँ हो सकती हैं जिनमें से कुछ हैं — (क) सदेश की अनेकार्थता (ख) प्राप्तकर्ता की क्षमता की सीमाएँ (ग) सदेश की अनाभिप्रेत विकृतियाँ (घ) शोर (विकर्षण) तथा (ङ) संप्रेषण सरणी की गुणवता में कमी।

(क) *संदेश की अनेकार्थता*

संदेश तब अनेकार्थक होता है जब प्राप्तकर्ता किसी

संदेश का संप्रेषक द्वारा अभिप्रेत संदेश से भिन्न अर्थ लगाता है।

(ख) *प्राप्तकर्ता की क्षमता की सीमाएँ*

संप्रेषण में कौशल की कमी अथवा प्राप्तकर्ता की सीमाओं के कारण संदेश अनेकार्थक हो सकता है। इन सीमाओं में अल्प शब्द ज्ञान, कम बुद्धि, अवधान की समस्याएँ इत्यादि आती हैं।

(ग) *संदेश की अनभिप्रेत विकृति*

कभी-कभी प्राप्तकर्ता के अचेतन अभिप्रेरणों के कारण संदेश की व्याख्या में पक्षपात होता है1 लोग वही सुनते हैं जो वे सुनना चाहते हैं।

(घ) *शोर (विकर्षण) अथवा हस्तक्षेप*

संप्रेषण के विकर्षणों के अंतर्गत सभी बाह्य शोर जो संदेश में हस्तक्षेप करते हैं या उसके साथ-साथ प्रेषित हो जाते हैं, आते हैं जैसा कभी-कभी रेडियो कार्यक्रमों के साथ होता है। हस्तक्षेप अथवा शोर की परिभाषा में वे चीजें आती हैं जो प्राप्तकर्ता के लिए प्रेषित संदेश के अर्थ को विकृत करती हैं अथवा उसे प्राप्त करने से विकर्षित करती हैं। कभी-कभी बहुत से विभिन्न संदेश एक साथ प्रेषित हो जाते हैं ये विकर्षित कर सकते हैं। मान लीजिए आप कक्षा में बैठे हैं। अध्यापक मनोविज्ञान के किसी प्रकरण की व्याख्या कर रहे हैं। आपके पास बैठी छात्रा आप से पेंसिल माँग रही है। आपके पीछे बैठी एक छात्रा से फर्श पर पुस्तक गिर जाती है। खिड़की से बाहर स्कूटर तथा अन्य वाहन अपने भोंपू ज़ोर से बजा रहे हैं। बरामदे में कुछ विद्यार्थी बातें करते हुए चल रहे हैं और आप अपनी खोई हुई पुस्तक के बारे मे चिन्तित हैं। इनमे से कोई भी दशा अध्यापक के भाषण का प्रेषित संदेश विकृत कर सकती है तथा आप (प्राप्तकर्ता) के लिए अध्यापक (संप्रेषक) जो संप्रेषण करना चाह रहे हैं उसे समझने मे कठिनाई उत्पन्न कर सकती है। ये सभी वाहन ध्वनियाँ तथा दूसरी विकृतियाँ जो संदेश मे विकर्षण लाते हैं हस्तक्षेप अथवा शोर कहलाते हैं।

(ङ) *संप्रेषण सरणी की गुणवत्ता में कमी*

सरणी की गुणवत्ता के साथ सरणी का अवरोधन भी संप्रेषण का एक शक्तिशाली बाधक है। संगठनात्मक विन्यासों मे देखा गया है कि यदि संप्रेषण सरणी की एक भी कड़ी लापता है तो संप्रेषण के बहाव में बाधा हो जाती है।

अंतर्वैयक्तिक संबंध

हमारी दूसरे लोगों के बारे में, उनके अभिप्रेरकों, व्यवहार इत्यादि के बारे में समझ संप्रेषण के परिणामस्वरूप है। *संप्रेषण वह प्रक्रिया है जिससे हम दूसरों के साथ अपने संबंध स्थापित करते हैं, पोषित करते हैं तथा समाप्त कर देते हैं।*

हमारे प्रतिदिन के जीवन का अधिकतर संप्रेषण अंतर्वैयक्तिक संदर्भों में ही होता है चाहे वह संप्रेषण दो व्यक्तियों के बीच हो अथवा छोटे समूहों मे। अंतर्वैयक्तिक संबंध लिखी अथवा बोली गई भाषा को समझने की प्रक्रिया के ही समान है। हम बोले गए प्रत्येक शब्द पर विस्तार से बहुत कम कार्यवाही करते हैं। अपेक्षाकृत हम बोले गए अर्थ पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। कोई भी संबंध किसी के साथ हमारी सभी प्रतिक्रियाओं का जोड़ नहीं है क्योंकि दूसरों के प्रति जो विचार तथा इच्छाएँ हम रखते हैं वही कारक हमारे जीवन मे उनका महत्व निर्धारित करते हैं।

अंतर्वैयक्तिक संबंधों को पारिभाषित करना बहुत कठिन है। सामान्यतः इसका अर्थ अनुबंध होता है। जब हमारा किसी से संबंध होता है तो इसका तात्पर्य है कि हमारा उनके साथ किसी विशेष प्रकार से आपसी प्रतिक्रिया करने का समझौता है। उदाहरणार्थ इसमें दो मित्रों, माँ-बाप, बच्चों, अध्यापकों तथा विद्यार्थियों के बीच के संबंध आते हैं।

अंतर्वैयक्तिक संबंधो के बहुत से प्रभाव सामाजिक संबधों पर पड़ते हैं। उनमें से कुछ हैं—पसंद, आपसी समझ तथा विश्वास। ध्यान देने योग्य महत्वपूर्ण बात है कि यह प्रभाव बदले में अंतर्वैयक्तिक संप्रेक्षण पर भी असर डालते हैं। उदाहरण के लिए जब दो व्यक्ति

आमने सामने संप्रेक्षण के दौरान अनुभव करते हैं कि उनके काफी मुद्दों पर समान विचार हैं तो वे एक दूसरे को पसंद करना शुरू कर देते हैं। एक दूसरे को पसंद करने से अंतर्वैयक्तिक सबंध कई प्रकार से प्रभावित होता है। जैसे जो लोग एक दूसरे को पसद करते हैं वे एक दूसरे से स्पष्टवादी हो सकते हैं। अंतर्वैयक्तिक संबंध दूसरे व्यक्तियों के बारे में हमारी आपसी समझ को सुगम बनाता है। हम किसी के बारे में या तो दूसरों से उसके बारे में सुनकर अथवा उससे प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित कर तथा उसके विचारों को सुनकर जान सकते हैं। उस व्यक्ति को अच्छी प्रकार समझने के लिए हम उसकी बातो की व्याख्या तथा मूल्यांकन करते हैं। कई बार अपने पक्षपातों के कारण हम ग़लत निर्णयों पर पहुँच जाते हैं और दूसरों के बारे में ग़लतफहमी हो सकती है। हमारे अपने पक्षपातपूर्ण व्यवहार के बारे में सजगता अंतर्वैयक्तिक संबंधों में किसी ग़लतफहमी को दूर कर सकती है। अंतर्वैयक्तिक संबंध का एक और परिणाम विश्वास है। विश्वास का होना या न होना आसानी से किसी भी संबंध को मज़बूत बना या बिगाड़ सकता है। विशेषतया भावनाओ के आदान-प्रदान तथा लम्बे समय तक के संबंधों के लिए विश्वास बहुत आवश्यक है। किसी भी अंतर्वैयक्तिक संबंध मे आत्म प्रकाशन के लिए विश्वास होना पूर्व अपेक्षित है।

अंतर्वैयक्तिक संबंधों को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक तीन हैं (1) अभिवृत्ति (2) रूढ़ि तथा (3) पूर्वाग्रह। इनकी विवेचना नीचे दी जा रही है।

(1) अभिवृत्तियाँ

अभिवृत्ति क्या है जी. डबल्यू. ऑलपोर्ट, जिन्होने इस शब्द को प्रवृत्त किया इसे प्रतिक्रिया के लिए तत्परता अथवा तैयारी के रूप में परिभाषित करते है । इस शब्द को समझने का एक और तरीका है इसे एक व्यक्ति के किसी दूसरे व्यक्ति अथवा वस्तु के प्रति विचारों, भावनाओं तथा क्रियाओं को निर्देशित करने वाली अधिगमित वृत्ति कहा जा सकता है। इस अर्थ में अभिवृत्ति को किसी भी *व्यक्ति अथवा वस्तु के प्रति अनुकूल अथवा प्रतिकूल तरीके से अनुक्रिया करने वाली सामान्य पूर्ववृत्ति माना जा सकता है।*

जब भी हम दूसरो के साथ सप्रेषण करते हैं हमारे वार्तालाप की अधिकाश विषय वस्तु व्यक्तियों, मुद्दो तथा वस्तुओं के प्रति हमारी अभिवृत्तियो से सबधित होती है। हम अपनी राय, पसद-न-पसंद तथा विशेष प्रकार से कार्य करने के अभिप्राय अभिव्यक्त करते रहते हैं। कई बार लोग हमसे किसी राष्ट्रीय नेता, राजनीतिक दल, जाति समूहों, अध्यापकों अथवा सरकारी नीतियो के बारे में सीधे से हमारी राय जानना चाहते है। हमारे पास ऐसे अवसरो पर अभिव्यक्त करने के लिए प्रायः कोई-न-कोई अभिवृत्ति होती है।जब हमारे पास नही होती तो हमे अभिवृत्ति बनाने की आवश्यकता अनुभव होती है। प्रायः हम दूसरो की अभिवृत्तियों को जानने में अभिरुचि॰रखते हैं। व्यक्ति दूसरे व्यक्तियो अथवा विभिन्न समूहों के सदस्यो के साथ जिस प्रकार परस्पर क्रिया करते हैं वह बहुत कुछ उनके उन व्यक्तियो अथवा समूहों के प्रति जिनके वे व्यक्ति सदस्य हैं अभिवृत्तियो पर निर्भर करता है। अभिवृत्तियाँ अतर्वैयक्तिक संबधो का विकास करने तथा पोषण करने मे केंद्रीय भूमिका निभाती हैं।

अभिवृत्ति की विशेषताएँ

अभिवृत्ति की परिभाषा इसकी जटिल प्रकृति की ओर इंगित करती है और इसकी बहुत-सी अद्वितीय विशेषताएँ निम्न हैं।

(i) विषयवस्तु आधारित

अभिवृत्ति की एक विषय-वस्तु होती है। वह कुछ भी हो सकती है—व्यक्ति, समूह, राजनीतिक अथवा सामाजिक घटना, कोई मुद्दा अथवा यहाँ तक कि निर्जीव वस्तु। किसी व्यक्ति की कला, दर्शन अथवा धर्म या किसी विशेष व्यक्ति के प्रति अभिवृत्ति हो सकती है।

(ii) दिशा

अभिवृत्ति की एक दिशा होती है वह या तो प्रतिकूल या अनुकूल हो सकती है किंतु तटस्थ अभिवृत्ति रखना कठिन होता है।

(iii) स्थिरता

अभिवृत्ति सापेक्षतः स्थिर होती है। यह अस्थायी मनः स्थिति अथवा अचानक आवेग से सबंधित नहीं होती। अभिवृत्ति काफी समय तक दृढ़तापूर्वक बनी रहती है। इस प्रकार यह व्यक्ति की वह वृत्ति है जो उसे दूसरों से अलग दिखाती है।

(iv) अभिप्रेरणात्मक गुण

अभिवृत्ति में अभिप्रेरणात्मक गुण होते हैं। यह किसी विशेष प्रकार से क्रिया करने की तत्परता को प्रदर्शित करती है। यदि आप किसी व्यक्ति विशेष की अभिवृत्तियों के बारे में जानते है तो उसके व्यवहार के बारे में भविष्यवाणी की जा सकती है।

(v) सीखा हुआ व्यवहार

अभिवृत्तियाँ सीखी हुई होती हैं। कोई भी अभिवृत्तियो को साथ लेकर जन्म नहीं लेता है किंतु यह लोगों तथा वस्तुओं के साथ संबंधों द्वारा हमारे अनुभवों के साथ विकसित होती है।

(vi) व्यवहार में प्रकट

अभिवृत्ति अर्धचेतन स्तर पर कार्य कर सकती है। लोग प्रायः बिना जाने ही अभिवृत्तियाँ बनाए रखते हैं। किसी भी अनुकूल अथवा प्रतिकूल अभिवृत्ति का अस्तित्व तभी पता चलता है जब लोगों के व्यवहार का नज़दीक से परीक्षण किया जाए।

अभिवृत्ति के संघटक

उपरोक्त व्याख्या से हमें अभिवृत्ति के बारे मे ज्ञात हुआ कि यह क्या है। तीन सघटक जो सभी अभिवृत्तियों में सामान्य रूप से पाए जाते हैं वे है (i) ज्ञानात्मक (विश्वास) (ii) भावात्मक (भावनाएँ) तथा (iii) व्यावहारात्मक (क्रिया)।

(i) ज्ञानात्मक

ज्ञानात्मक अथवा विश्वास संघटक विश्वासों तथा मतों का विन्यास है जिसके द्वारा अभिवृत्ति व्यक्त होती हैं।उदाहरण के लिए किसी राजनीतिक दल के प्रति अभिवृत्ति के ज्ञानात्मक संघटक का तात्पर्य यह विश्वास हो सकता है कि क्या उस दल में ईमानदार, निःस्वार्थ तथा योग्य व्यक्ति नेता है। ज्ञानात्मक संघटक का तात्पर्य यह भी हो सकता है कि इस दल का जनसाधारण द्वारा किस प्रकार मूल्यांकन किया जाना चाहिए। विशेषकर किसी राजनीतिक दल के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति में यह विश्वास निहित है कि सत्ता में आने के बाद यह दल किसी भी अन्य राजनीतिक दल की अपेक्षा देश को अच्छी सरकार देगा।

(ii) भावात्मक

भावात्मक अथवा भावना संघटक का तात्पर्य किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के साथ संबंधित संवेगों से होता है। यह संवेग सुखद अथवा दुखद भावनाएँ किसी वस्तु के लिए पसंद अथवा नापसंद, अच्छी या बुरी मनःस्थिति, आकर्षण अथवा वितृष्णा हो सकते हैं। भावनात्मक संघटक अभिप्रेरक कारक की भाँति कार्य करता है तथा अनुकूल अथवा प्रतिकूल भावना की तीव्रता ही परिणामतः व्यवहार के पीछे की अभिप्रेरणात्मक शक्ति को निर्धारित करती है। उदाहरण के लिए किसी राजनीतिक दल के प्रति आपकी अभिवृत्ति का भावात्मक सघटक यह होगा कि मतदान में उस दल की विजय अथवा पराजय पर आपको कितनी प्रसन्नता अथवा दुःख होता है।

(iii) व्यावहारात्मक

व्यावहारात्मक अथवा क्रियात्मक संघटक का तात्पर्य उस वास्तविक व्यवहार से है जो किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के प्रति किया जाता है। यदि एक व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति होती है तो उसमें उस व्यक्ति की सहायता करने या समर्थन करने की प्रवृत्ति होगी। यदि उसकी अभिवृत्ति प्रतिकूल है

तो उसमे उस व्यक्ति को निरुत्साहित अथवा तुच्छ समझने की प्रवृत्ति होगी। जैसा कि ऊपर कहा गया है किसी राजनीतिक दल के प्रति अनुकूल प्रवृत्ति आपको मतदान मे दल के प्रति प्रचार करने या एक सदस्य के रूप में वास्तव में दल मे सम्मिलित होने के लिए प्रेरित करेगी।

साधारणतया अभिवृत्ति के यह तीनों संघटक एक दूसरे से सामंजस्य मे रहते हैं। अर्थात् कोई व्यक्ति यदि किसी राजनीतिक दल के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति रखता है तो वह दल की किसी भी क्रिया का सकारात्मक मूल्यांकन करेगा, उसके नेताओ को पसंद करेगा तथा मतदान के दिनो मे वास्तव में प्रचार करेगा। इस दृष्टिकोण से यह स्पष्ट होता है कि इन तीनों में से एक में परिवर्तन अन्य दूसरे संघटकों में भी परिवर्तन के लिए दवाब उत्पन्न करेगा। उदाहरण के लिए यदि संवेगात्मक संघटक में प्रत्यक्षतः सुधार किया गया तो ज्ञानात्मक सघटक में भी परिवर्तन की आशा होगी ताकि वह बदले हुए संवेगों के साथ संगति बना सके। यह तब होता है जब आप जिस राजनीतिक दल का बहुत सम्मान करते हैं और उसका नेतृत्व कोई ऐसा व्यक्ति करे जिसे आप बिल्कुल पसंद नहीं करते। यही व्यावहारात्मक संघटक के लिए भी सत्य है। उदाहरण के लिए यदि आप किसी विशेष अध्यापक को बहुत अधिक पसंद करते हैं (भावनात्मक संघटक) तथा उनका बहुत आदर करते हैं (ज्ञानात्मक संघटक) तो आप अपनी कक्षा में उनके सभी भाषणो में उपस्थित रहने का प्रयत्न करेंगे (व्यवहारात्मक संघटक)। सामान्यतः लोग अभिवृत्ति के विभिन्न संघटकों में सगति बनाए रखना चाहते हैं तथा कोई भी असगति तनाव तथा दुश्चिंता उत्पन्न करती है।

(2) रूढ़ि

रूढ़ियाँ *किसी भी समूह के व्यक्तियों के प्रति अति सामान्यीकृत विश्वास हैं।* ये वे प्रत्यय अथवा वर्ग हैं जिनमें हम लोगों का वर्गीकरण करते हैं। कोई वर्ग तब रूढ़ि बन जाता है जब किसी समूह अथवा सस्कृति के सदस्य बिना प्रश्न किए यह विश्वास करने लग जाते हैं कि कोई विशेष प्रत्यय किसी विशेष समूह अथवा संस्कृति विशेष के सभी सदस्यों का वर्णन करता है। अतः यह कहना कि जापानी लोग मेहनती हैं, यहूदी तीक्ष्ण हैं, व्यापारी कंजूस हैं, इत्यादि बातें रूढ़ियाँ हैं। कुछ रूढ़ियाँ तो अधिकतर लोग अपनी बातचीत में प्रयोग करते हैं। इन रूढ़ियों के कुछ और उदाहरण हैं कि जो लोग चश्मा पहनते हैं वे अध्ययनशील होते हैं, वृद्ध लोग समायोजन कम करते हैं, लड़कियाँ बातूनी होती हैं, अथवा लड़के अविश्वसनीय होते हैं इत्यादि।

एक बार बन जाने पर उन रूढ़ियों का बदलना बहुत कठिन होता है। वे उन तरीको को भी प्रभावित करती हैं कि हम नई सूचनाओं पर किस प्रकार कार्यवाही करते हैं तथा हमारे अंतर्वैयक्तिक संबंधों पर भी असर डालती हैं। अनुसंधानों से यह ज्ञात हुआ है कि हम वही सूचना ग्रहण करते हैं जो हमारी रूढ़ियों को दृढ़ करती है और उसे तत्परता से मान लेते हैं अपेक्षाकृत उस सूचना के जो रूढ़ियो को दृढ़ नहीं करती। इसी प्रकार लोग उन उदाहरणो का अच्छी प्रकार पुनर्स्मरण कर लेते हैं जो उनकी रूढ़ियों का समर्थन करते हैं अपेक्षाकृत उन उदाहरणों के जो उनकी रूढ़ियों के विरुद्ध होते हैं। हम प्रायः यह मान कर चलते हैं कि दूसरे लोगों के प्रति हमारी धारणाएँ सत्य हैं। हम यह चिंतन करना शुरू कर देते हैं कि हमारी रूढ़ियाँ दूसरों का सही वर्णन हैं। हम यह बहुत कम अनुभूति करते हैं कि हमारी रूढ़ियाँ मात्र सरलीकरण हैं जिन्हें सदैव गलत सिद्ध किया जा सकता है। हम अपनी रूढ़ियों को बनाए रखने के लिए आसानी से व्यक्तिगत भेदो को अनदेखा कर जाते हैं। जैसा कि ऑलपोर्ट ने कहा है कि यद्यपि अधिकतर रूढ़ियो में सच्चाई की कुछ कणिका अवश्य होती है वे बस उतने ही ठीक होते हैं जितना कि पहला मोटा अनुमान होता है।

(3) पूर्वाग्रह

रूढ़ि के समान ही एक और प्रमुख प्रत्यय है जिसे

पूर्वाग्रह कहते हैं। जबकि रूढ़ि एक प्रकार का विश्वास होता है, पूर्वाग्रह पक्षपातपूर्ण अभिवृत्ति होती है। आक्षरिक अर्थों में पूर्वाग्रह का तात्पर्य पूर्व निर्णय होता है—एक *निर्णय अथवा राय जो प्रासगिक तथ्य, मुददों तथा तर्कों का बिना विचारपूर्ण परीक्षण किए, पहले से ही बना ली जाए।* यह किसी भी व्यक्ति अथवा समूह के बारे में सीमित अनुभव तथा ज्ञान के आधार पर एक प्रकार का अति सामान्यीकरण है। यदि कोई व्यक्ति किसी समूह-धार्मिक, राजनीतिक अथवा जाति के सदस्यों के विरुद्ध पूर्वाग्रहित है तो, इसका तात्पर्य है कि वह इन व्यक्तियों का नकारात्मक प्रकार से मूल्यांकन करता है। इन सदस्यों का मूल्यांकन उनकी व्यक्तिगत विशेषताओं अथवा व्यवहार के आधार पर नहीं होता किंतु केवल इस आधार पर कि वे किसी विशेष समूह के सदस्य हैं। कई बार लोग सकारात्मक तरीके से पूर्वाग्रहित होते हैं। इस प्रकार पूर्वाग्रह आच्छादित स्वीकृति या अस्वीकृति देने अथवा दूसरों को पसंद या नापसंद करने और उनका सकारात्मक अथवा नकारात्मक मूल्यांकन करने की तीव्र भावना का प्रतिनिधित्व करता है। विभिन्न मनोवैज्ञानिको ने पूर्वाग्रह की परिभाषा एक ऐसी अभिवृत्ति के रूप में की है जो किसी व्यक्ति को किसी समूह अथवा उसके सदस्यों के बारे में अनुकूल अथवा प्रतिकूल तरीकों से चिंतन अनुभव तथा व्यवहार करने के लिए पूर्ववृत्ति बनाती है।

किसी भी धार्मिक, प्रजाति, राजनीतिक अथवा जाति समूह के विरुद्ध पूर्वाग्रह के अवांछनीय परिणाम कभी-कभी भयंकर होते हैं। 1947 मे विभाजन के समय जनाघात धार्मिक पागलपन का एक ज्वलंत उदाहरण है। देश मे विभिन्न भागों में हिन्दू, मुसलमान, शिया-सुन्नी, उच्च जाति निम्न-जाति के भेदभाव से उत्पन्न दगे दृढ पूर्वाग्रहों द्वारा समाज को हो सकने वाली हानि को दर्शाते हैं। यह अंतर्वैयक्तिक संबंधों को बहुत हद तक नष्ट कर देते हैं। अधिकतर मामलों में इस साम्प्रदायिक हिंसा का शिकार निर्दोष लोग होते हैं जो किसी विशेष समूह के केवल सदस्य ही होते हैं। पूर्वाग्रह अधिकतर किसी भी नापसंद समूह तथा इसके सदस्यो के विरुद्ध भेदभाव, हानिप्रद तथा प्रतिकूल व्यवहार की ओर अग्रसर करते हैं। हर प्रकार के अत्याचार नापसंद समूहों के अत्यंत नकारात्मक मूल्यांकन का आश्रय लेकर न्यायोचित बताए जाते हैं। विश्व इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है जिनमें पूर्वाग्रहों के कारण विस्तृत रूप से हिंसा तथा पाशविक नरसंहार हुए हैं। प्रजाति पूर्वाग्रह का सबसे अधिक भंयकर उदाहरण जर्मनी तथा अन्य यूरोपीय देशो में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 60 लाख यहूदियों की हत्या है।

पूर्वाग्रह के स्रोत

पूर्वाग्रह कहाँ से आते हैं? हम में से अधिकतर लोग किसी धार्मिक अथवा जातीय समूहों के प्रति प्रतिकूल अभिवृतियाँ क्यों रखते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए हमे यह समझने की आवश्यकता है कि पूर्वाग्रह कैसे बनते हैं। विद्यमान अनुसंधानों के आधार पर पूर्वाग्रह के स्रोत तीन वर्गों में बाँटे जा सकते हैः (अ) समाजीकरण की प्रक्रियाएँ (ब) व्यक्तित्व विशेषताएँ तथा (स) अंतर्समूह सघर्ष

(अ) समाजीकरण की प्रक्रियाएँ

माता-पिता जिस प्रकार अपने बच्चों को पालते हैं और अनुशासित करते हैं, वह प्रक्रिया पूर्वाग्रह को विकसित होने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। चूंकि बच्चे अपने माता-पिता के व्यवहार का निरीक्षण तथा अनुकरण करते है व माता-पिता उसी व्यवहार को प्रोत्साहित तथा पुरस्कृत करते हैं जिसे वह ठीक समझते है इसलिए बच्चे साधारणतया अपने माँ-बाप की अभिवृत्तियाँ ही सीखते हैं। बहुत से मनोवैज्ञानिक अध्ययन इस दिशा में संकेत करते हैं।1947 में भारत के विभाजन के बाद बहुत बड़े स्तर पर साम्प्रदायिक हिंसा से त्रस्त भारत सरकार ने गार्डनर मर्फी के निर्देशन में एक बहुत बड़ी अनुसधान प्रायोजना कराई। अपनी पुस्तक में मर्फी ने लिखा है कि भारत में पूर्वाग्रह

को बच्चे पालने की प्रक्रियाएँ जिनमें सत्ता पर निर्भरता तथा आज्ञापालन पर बल, क्रोध को नियत्रित करने की आदतों का अभाव तथा सामूहिक योजना एवं चिंतन के प्रति निरूत्साह सम्मिलित होते हैं, से जोड़ा जा सकता है। ए. के. सिंह ने अपने एक अध्ययन में बल दिया है कि बच्चे के पालन-पोषण की सत्तावादी प्रक्रियाओं का संबंध, हिन्दू, मुसलमान तथा ईसाई छात्रों मे प्रचलित अधिक पूर्वाग्रहो के साथ है।

इन पूर्वाग्रहों को अधिक विस्तृत सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए जो बहुत-सी अभिवृत्तियों के लिए उत्तरदायी हैं और जिन्हें किसी विशेष समूह के सदस्य बनाए हुए हैं तथा जिनका वे आपस में समर्थन करते हैं। विद्यालय तथा अन्य सामाजिक संस्थान भी प्रचलित समूह अभिवृत्तियों से प्रभावित होते हैं जो बदले में बच्चों के कोमल मनों को पक्षपात पूर्ण कर देते हैं।

(ब) व्यक्तित्व विशेषताएँ

पूर्वाग्रह का दूसरा स्रोत व्यक्तित्व विशेषताओ पर केंद्रित है। व्यक्तित्व के बहुत से विशेषक या विशेषताएँ हैं जो किसी व्यक्ति को पूर्वाग्रहित व्यवहार की पूर्ववृत्ति की ओर ले जाते हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान यहूदियों की सामूहिक हत्या के पश्चात् मनोवैज्ञानिकों के एक समूह ने खोज की कि व्यक्तित्व मे कुछ विशेषताएँ होती हैं जो पूर्वाग्रहो के लिए बहुत सीमा तक उत्तरदायी होती हैं। उन्होंने इन विशेषताओं को *सत्तावादी व्यक्तित्व* का नाम दिया जिसकी विशेषताएँ रूढ़िगत मूल्यों से अनम्य लगाव, शक्ति तथा चिमड़ापन के प्रति प्रशंसाभाव, सामान्यीकृत आक्रामकता, अस्पष्टता के प्रति असहिष्णुता इत्यादि है। ये लोग विश्व को दृढ़ श्वेत-श्याम श्रेणियो में ही देखते हैं जिसका तात्पर्य है कि वे या तो किसी के पक्ष में होगे या विपक्ष मे।

(स) अतर्समूह सघर्ष

दूसरे समूहो से सघर्ष भी पूर्वाग्रहित अभिवृत्तियो का मुख्य स्रोत है। यह तभी होता है जब अल्पसख्यक समुदाय बहुसख्यक समुदाय के साथ विशेषाधिकारो के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं तथा बहुसंख्यक समुदाय के मुकाबले मे अपने पद की तुलना करते हैं। यह प्रतिस्पर्धा प्रायः बहुसख्यक समुदाय के प्रति विद्वेष तथा पूर्वाग्रहित अभिवृत्तियों को जन्म देती है या इसके विपरीत भी हो सकता है। हेनरी ताजफल ने अपने अतर्समूह सबधों के सिद्धात मे यह प्रदर्शित किया है कि लोग अपने तथा दूसरे समूहो की इस प्रकार तुलना करते हैं कि वे अपनी सकारात्मक सामाजिक पहचान बनाए रखें। ऐसा करने के लिए वे सारी सकारात्मक विशेषताओ का श्रेय तो अपने समूह को दे लेते तथा नकारात्मक का आरोपण दूसरे समूहो पर कर देते हैं। यह अभ्यास प्रायः दूसरे समूहो के विरुद्ध दृढ पूर्वाग्रहों की ओर अग्रसर करता है। यह बात भारत में बहुत सत्य है जहाँ जाति तथा धर्म के पूर्वाग्रह सदियो से गहरी जड़ें जमा चुके हैं।

सारांश

इस एकक मे सप्रेषण को विभिन्न स्थितियो मे अनुभवो के आदान-प्रदान के रूप मे पारिभाषित किया है। सप्रेक्षण प्रक्रिया स्रोत, सदेश, सकेतन, सरणी, प्राप्तकर्ता, विसकेतन, पुनर्निवेशन तथा शोर के आपसी सबधित तत्वो से बनी है। शाब्दिक तथा अशाब्दिक दो प्रकार के सप्रेषण हैं। शाब्दिक सप्रेषण भाषा द्वारा होता है। अशाब्दिक सप्रेषण मे वाणी सकेत, चक्षु सपर्क, मुख मुद्राएँ , शारीरिक भाषा इत्यादि आते हैं।

स्रोत की विश्वसनीयता तथा आकर्षण, प्रस्तुतीकरण की शैली, सदेश की नवीनता, सवेगात्मक अनुरोध, तर्कों की सख्या, प्रत्यायनीयता तथा आत्म सम्मान सप्रेषण की प्रभावकता पर असर डालते हैं। सप्रेषण मे कुछ बाधाएँ सदेश की अनेकार्थता, प्राप्तकर्ता की क्षमता की सीमाएँ, सदेश की अनाभिप्रेत विकृति, शोर तथा सप्रेषण सरणी की गुणवत्ता

की कमी है। पसंद करना, आपसी समझ तथा विश्वास संप्रेषण के महत्वपूर्ण प्रभाव हैं जो अंतर्वैयक्तिक संबंधों को प्रभावित करते हैं।

अभिवृत्ति को किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के प्रति अनुकूल अथवा प्रतिकूल तरीके से प्रतिक्रिया करने की सामान्य पूर्ववृत्ति के रूप में पारिभाषित किया गया है। अभिवृत्ति की विशेषताएँ विषय वस्तु आधारित, दिशा, स्थिरता, अभिप्रेरणात्मक गुण, सीखा हुआ व्यवहार तथा व्यवहार में प्रकट बताई गई है। अभिवृत्ति के तीन संघटक ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा व्यावहारात्मक है।

रूढ़ियाँ व्यक्तियों के किसी समूह के बारे में अति सामान्यीकृत विश्वास है। पूर्वाग्रह संबद्ध तथ्यों, मामलों तथा तर्कों का बिना किसी विचारपूर्ण परीक्षण किए पहले से बने हुए निर्णय अथवा राय है। पूर्वाग्रहों के स्रोत समाजीकरण की प्रक्रियाएँ, व्यक्तित्व विशेषताएँ तथा अंतर्समूह संघर्ष हैं।

प्रश्न

1 संप्रेषण की प्रकृति का वर्णन कीजिए तथा संप्रेषण प्रक्रिया के मुख्य तत्वों की व्याख्या कीजिए।
2 संप्रेषण के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिए।
3 संप्रेषण की प्रभावकता को निर्धारित करने वाले मुख्य कारकों का वर्णन कीजिए।
4 संप्रेषण के विभिन्न बाधकों की व्याख्या कीजिए।
5 अभिवृत्ति की परिभाषा दीजिए तथा उसके मुख्य संघटकों की व्याख्या कीजिए।
6 रूढ़ि की प्रकृति का वर्णन कीजिए।
7 पूर्वाग्रह की परिभाषा दीजिए तथा उसके स्रोतों का वर्णन कीजिए।



एकक 4

समूह व्यवहार एवं नेतृत्व

इस एकक का अध्ययन करने के उपरांत विद्यार्थी इस योग्य होंगे कि वे

- समूह की विशेषताओं का वर्णन करें;
- समूह निर्माण में सुसाध्य कारकों की व्याख्या करें;
- समूह के प्रकारों का वर्णन करें;
- समूह संसक्तिशीलता को समझें;
- समूह संसक्तिशीलता में सुसाध्य आंतरिक व बाह्य कारकों का वर्णन करें;
- उपसमूहों के निर्माण का वर्णन करें;
- नेतृत्व की व्याख्या करें;
- नेताओं की विशेषताओं का वर्णन करें;
- नेतृत्व शैलियों की व्याख्या करें;
- नेता के कार्यों की विवेचना करें।

क्या आपने कभी सोचा है कि आपका कितना समय अन्य लोगों—अपने मित्रों, सहपाठियों, परिवार के सदस्यों तथा अन्य परिचितों के साथ व्यतीत होता है। इन लोगों की अनुपस्थिति में भी आप उनके बारे में सोचते हैं, बात करते हैं, अथवा उनके निर्देशों के अनुसार कार्य करते हैं। आप बहुत कम ऐसी क्रियाएँ करते हैं जो दूसरों से प्रभावित नहीं होतीं या जो दूसरों को प्रभावित नहीं करतीं । फिर भी यह प्रभाव सामान्यतः उसी समूह तक सीमित रहते हैं जिसके आप सदस्य होते हैं अथवा जिनसे आप परस्पर क्रिया करते हैं। इस प्रकार समूह व्यवहार में समूह के सदस्य के रूप में की गई सभी क्रियाएँ आती हैं। स्पष्टतः हमारा अधिकतम व्यवहार समूह व्यवहार कहा जा सकता है।

समूहों के विषय में कोई भी चर्चा समूह नेताओं के बिना अपूर्ण है। एक समूह में एक या एक से अधिक नेता होते हैं जिन पर समूह की क्रियाओं के संचालन तथा उद्देश्यों की प्राप्ति का मुख्य उत्तरदायित्व होता है। उदाहरण के रूप में हम क्रिकेट दल के कप्तान के विषय में सोच सकते हैं जो न केवल प्रतिनिधित्व

ही करता है वरन् दल के निष्पादन के लिए प्रशंसा अथवा निंदा भी पाता है।

समूह व्यवहार

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। जन्म से मृत्यु पर्यंत मनुष्य समूहों में रहते हैं तथा उनकी अधिकांश क्रियाएँ समूह के दूसरे सदस्यों की वास्तविक अथवा काल्पनिक उपस्थिति के कारण प्रभावित होती हैं। समूह, जिसका व्यक्ति सदस्य हो सकता है वे हैं परिवार के सदस्यों, छात्रो, सहयोगियों, पड़ोसियों, राजनीतिक कार्यकर्ताओं तथा दल के साथी या कार्यालय कार्यकर्ता। हम में से प्रत्येक किसी न किसी समूह का सदस्य है तथा हम एक समय में एक से अधिक समूहों के सदस्य होते हैं। हमारी अभिवृत्तियाँ, मूल्य तथा व्यवहार समूह के अन्य सदस्यो के साथ परस्पर क्रिया द्वारा प्रभावित होते हैं। इसका अपवाद हिमालय की गुफाओं में रहने वाले सन्यासी हो सकते हैं यद्यपि यह भी हो सकता है कि वे भी समूहों में रह रहे हों।

समूह

समूह की परिभाषा दो या दो से अधिक व्यक्तियों से की जा सकती है जो एक दूसरे पर निर्भर हैं तथा सामान्य लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु विश्वासों, मूल्यों तथा मानकों की भागीदारी करते हैं जो उनके आपसी आचरण को विनियमित करता है। समूह उन लोगों के एकत्रीकरण से भिन्न होता है जिसका किसी प्रकार का कोई सामाजिक सबंध नहीं होता जैसे बस रुकने के स्थान पर बस का इंतजार कर रहे लोग। इसे प्रायः असंगठित समूह अथवा जमघट कहते हैं। सामाजिक समूह जादुई प्रदर्शन देखने वाले श्रोतागणों के एकत्रीकरण अथवा भीड़ से भी भिन्न होता है।

समूह की विशेषताएँ

व्यक्तियों के एकत्रीकरण को समूह के रूप में पारिभाषित करने के लिए निम्नलिखित विशेषताएँ होनी चाहिए— (अ) सामान्य लक्ष्य (ब) समूह विचारधारा (स) समूह सरचना तथा कार्य।

(अ) सामान्य लक्ष्य

समूह का अपना उद्देश्य होता है जो इसके अधिकांश सदस्यों द्वारा समूह लक्ष्य के रूप में स्वीकृत होता है जैसे धार्मिक समूह, राजनीतिक समूह तथा मित्र समूह आदि। विभिन्न सदस्यों की अपनी बहुत सी आवश्यकताएँ हो सकती हैं जो उन्हें किसी विशिष्ट समूह मे सम्मिलित होने की ओर अग्रसर करती हैं। परंतु किसी भी समूह की प्रभावकता तथा स्थिरता के लिए यह आवश्यक है कि उसके अधिकांश सदस्य उन लक्ष्यो पर सहमत हों जिनके लिए उन्हें मिलकर कार्य करना है।

(ब) समूह विचारधारा

समूह की एक विशेषता यह भी है कि समूह के सदस्य सामान्य विश्वासों, मूल्यों तथा मानकों को मानते हैं जिसे समूह विचारधारा कहते हैं। समूह विश्वास का अर्थ, विचारों तथा ज्ञान के ऐसे विन्यास से है जो समूह के सदस्यों के सामान्य लक्ष्यों से संबद्ध है। इसी प्रकार समूह जीवन मूल्यों का तात्पर्य सदस्यों के उन विश्वासों से है कि कौन-सी वस्तुएँ अथवा क्रियाएँ ठीक तथा वांछनीय है। समूह जीवन मूल्य समूहों के लक्ष्यों के प्रतिबिम्ब होते हैं जैसे लड़कों के खेल समूह का जीवन मूल्य उचित प्रकार से खेलना हो सकता है। समूह की विचारधारा का एक अन्य महत्वपूर्ण भाग व्यवहार के मानकों अथवा नियमों का होता है। समूह मानक उसके जीवन मूल्यों से प्रभावित होते हैं। मानक उन कार्यों को कहते हैं जो किसी परिस्थिति विशेष में उचित तथा अनुचित होते हैं। समूह मानकों का पालन करने पर पुरस्कार तथा न मानने पर दण्ड भी निश्चित होता है।

(स) समूह संरचना और कार्य

प्रत्येक समूह की एक संरचना होती है जिसमें प्रत्येक सदस्य की एक निर्धारित स्थिति होती है साथ ही साथ इसकी विभिन्न क्रियाओ को करने के लिए नियम तथा

मानक होते हैं। समूह का एक नेता तथा अन्य कार्यकर्ता होते हैं। समूह के विभिन्न सदस्य आपस में अंतर्संबंधित होते हैं। सदस्यों में परस्पर विभिन्न अंतर्संबंध समूह की सामाजिक संरचना को पारिभाषित करते हैं। समूह संरचना को समूह में विभिन्न स्थितियों तथा भूमिकाओं के विन्यास के रूप में भी पारिभाषित किया जाता है। अधिकतर समूहों मे स्थितियाँ पद तथा शक्ति के आधार पर उच्च से निम्न तक श्रेणीबद्ध संरचना में निर्धारित होती हैं। कुछ सदस्य एक प्रकार के कार्य करते है और अन्य सदस्य दूसरे प्रकार के कार्य करते है। सभी समूहों मे विभिन्न स्थितियाँ पदो के अनुसार बनी होती हैं। उच्च पदों वाले लोग प्रायः निम्न पदों वाले लोगों की अपेक्षा अधिक सुविधाओं का उपभोग करते हैं। समूह इन विशेषताओं में विचरणशील होते हैं। समूह आकार में बहुत छोटा या बहुत बड़ा जैसे दो सदस्यो का अथवा लाखों सदस्यों का हो सकता है। समूह के सदस्यों मे समूह में बने रहने की तीव्र इच्छा हो सकती है अथवा वे किसी भी समय समूह छोड़ सकते है। उनमे आपस में एक दूसरे के साथ घनिष्ठ संबध हो सकता है तथा उनके समान लक्ष्य हो सकते हैं अथवा उनमें बहुत कम समान हो सकता है। व्यक्ति पद मे समान हो सकते हैं अथवा कुछ सदस्यों को दूसरों की तुलना में विशेष सुविधाएँ मिली हो सकती हैं। कुछ समूह स्थिर अस्तित्व वाले हो सकते है जबकि कुछ समूहों की प्रकृति अस्थायी अथवा अल्पकालीन हो सकती है और समय के साथ लुप्त हो सकते हैं।

भीड़

एक और शब्द जो लोगों के एकत्रीकरण की ओर संकेत करता है, भीड़ कहलाता है। समूह, भीड़ से अनेक प्रकार से भिन्न है। फ्रांसीसी पत्रकार लीबान ने भीड़ के व्यवहार के महत्व को बताया है जो सामूहिक व्यवहार का एक प्रकार है। किंतु यह सामूहिक व्यवहार सामान्यतः भय, पलायन, भीड़ की मारपीट होती है। भीड़ के लोगों में दूसरों से संबंधिता होने की अनुभूति होना आवश्यक नही होता। भीड़ का व्यवहार प्रकृति से ही स्वैच्छिक तथा विवेकहीन होता है तथा इसमें सोची समझी कार्य योजना नहीं होती है। उदाहरणार्थ दुर्घटना स्थल पर जहाँ किसी को तेज़ी से जाते हुए ट्रक ने चोट मार दी हो वहाँ सभी लोगों को क्रोध की भावना आ जाती है तथा वे दूसरे वाहनों पर हमला करके एकत्रित प्रतिक्रिया करते हैं। कभी-कभी हत्या की अफवाहों को सुनकर लोग एकाएक हिंसक हो जाते हैं जैसा कि साम्प्रदायिक दगों के मामलों में देखा जाता है। स्पष्टतः भीड़ की इस प्रकार की क्रियाएँ न तो नियोजित होती हैं और न ही प्रत्याशित व्यवहार के मानकों के अनुसार होती हैं।

समूह निर्माण में सुसाध्य कारक

समूह का निर्माण या तो सुविचारित होता है अथवा स्वतः हो सकता है। जो समूह विशेष कार्यों अथवा लक्ष्यों की पूर्ति के लिए होते हैं उनका निर्माण सुविचारित रूप से किया जाता है। ये समूह विशिष्ट लक्ष्यो जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों को आयोजित करने, कर्मचारियों का कल्याण करने अथवा चुनाव लड़ने आदि के लक्ष्यों से जन्म लेते हैं। व्यक्ति इन लक्ष्यो की प्राप्ति हेतु समीप आते हैं तथा समूह बनाते हैं। राजनीतिक दल, विभिन्न मण्डल तथा सामाजिक क्लब इसी प्रकार के समूहों के उदाहरण हैं। दूसरी ओर वे समूह जो स्वतः बनते हैं सामान्यतः परस्पर आकर्षण के कारण तथा विशिष्ट मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु जैसे दूसरों से संबंधित होने की आवश्यकता, तुलना की आवश्यकता इत्यादि के लिए विकसित होते है। यद्यपि ये समूह कुछ कार्यों मे व्यस्त होते हैं किंतु वे काम न तो उतने महत्वपूर्ण होते हैं न स्पष्ट ही जितने कि सुविचारित समूहों के कार्य होते हैं। इन सहज रूप से बने समूहों का प्रभाव सुविचारित समूहों की तुलना मे प्रायः अधिक तीव्र तथा अधिक व्यापकता से अनुभव किया जाता है। स्वतः समूहों में मित्र गुट, परिवार, जाति समूह तथा

पड़ोसी आते है। कभी-कभी ऊपरी तौर पर स्वतः समूह इसलिए बन जाते हैं क्योंकि अन्य लोगों द्वारा उन लोगों के साथ जिनमें कुछ सामान्य होता है जैसे प्रजाति, जाति, विद्यालय अथवा पड़ोस, एक ही प्रकार का व्यवहार किया गया तथा एक ही तरीके से उन्हें वर्गीकृत किया गया।

सामाजिक मनोविज्ञान में प्रारम्भिक अनुसंधानों से यह ज्ञात होता है कि समूह का निर्माण केवल अनेक लोगों को समूह के रूप में नामांकित करके उन्हें एक सामान्य कार्य पर लगाकर अथवा इन व्यक्तियों के साथ भिन्न व्यवहार करके किया जा सकता है। परिणामस्वरूप व्यक्ति स्वयं को समूह के अंग के रूप में पारिभाषित करने लगते हैं तथा उनमें 'हम' की भावना का विकास हो जाता है।

समूह निर्माण चाहे सुविचारित हो अथवा स्वतः, बहुत से कारक ऐसे है जो दोनों प्रकार के समूह निर्माण की प्रक्रिया को सुसाध्य बनाते हैं। कुछ महत्वपूर्ण कारक जो समूह निर्माण की प्रक्रिया को सुसाध्य बनाते हैं वे हैं : (i) भौतिक सामीप्य (ii) समूह के सदस्यों के प्रति आकर्षण (iii) समूह की क्रियाओं के प्रति आकर्षण (iv) तनाव पूर्ण स्थितियाँ तथा (v) समूह सदस्यता की नैमित्तता

(i) भौतिक सामीप्य

समूह निर्माण के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्तियों को एक दूसरे के साथ परस्पर क्रिया का अवसर मिले। व्यक्ति भौतिक रूप से परस्पर जितने निकट होते हैं उनके लिए परस्पर क्रिया उतनी ही सरल होगी। लोग जो पड़ोस में रहते हैं अथवा एक ही छात्रावास में रहने वालों में समूह बनाने की संभावना अधिक रहती है। एक ही भौगोलिक क्षेत्र में रहने वाले लोगों में संबद्धता की भावना विकसित हो जाती है। टी.एम. न्यूकॉम्ब ने शयनशाला में रहने वाले विद्यार्थियों में मित्रता होने का अध्ययन किया तथा यह पाया कि उन विद्यार्थियों में सबसे अधिक प्रतिशत में मित्रता का विकास हुआ जो साथ-साथ के कमरों में रहते थे। एक अन्य मनोवैज्ञानिक ने भी इसी प्रकार का संबंध कक्षा में बैठने के ढंगों तथा कक्षा के बाहर की समूह रचना में पाया। परंतु भौतिक सामीप्य अनिवार्यतः समूह निर्माण की ओर अग्रसर नहीं करता। सामीप्य तथा संपर्क व्यक्तियों को दूसरों के विषय में जानने के अवसर प्रदान करते हैं। यदि व्यक्तियों की परस्पर क्रिया सुखद अथवा संतुष्टिदायक नहीं है तो कोई समूह विकसित नहीं होगा चाहे वहाँ के व्यक्तियों में कितना भी भौतिक सामीप्य क्यों न हो।

(ii) समूह के सदस्यों के प्रति आकर्षण

कभी-कभी हम किसी समूह में इसलिए सम्मिलित हो जाते हैं क्योंकि हमारे मित्रों मे एक या अधिक उस समूह के सदस्य हैं। समूह के सदस्यों के प्रति आकर्षित होना तथा उनके साथ साहचर्य रखना, किसी समूह में सम्मिलित होने के लिए सामान्य कारण होता है। हम अपनी पसंद के व्यक्तियों के साथ आदान-प्रदान करने में आनंद का अनुभव करते हैं। प्रायः लोग उन लोगों के प्रति आकर्षित होते हैं जो अभिवृत्ति, सामाजिक आर्थिक स्तर तथा व्यक्तित्व आदि में समान होते हैं। शोध अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि अभिवृत्ति तथा व्यक्तित्व की समानता अंतर्वैयक्तिक आकर्षण की ओर अग्रसर करती है। मनोवैज्ञानिक रूप में हमें उनके साथ संतोष मिलता है जो हमारी भाँति विचार रखते हैं व एक जैसी पसंद और नापसन्द रखते हैं और कभी-कभी तो हम सक्रियता से उनका साथ ढूँढते हैं। यदि आप अपनी कक्षा में समूह निर्माण का निरीक्षण करें तो पाएँगे कि जिन विद्यार्थियों में किसी प्रकार की समानता है जैसे अभिवृत्ति, सामाजिक अर्थिक स्तर अथवा व्यक्तित्व की, वे एक साथ रहते हैं। सामाजिक पृष्ठभूमि की समानता भी समूह के निर्माण मे महत्वपूर्ण होती है।

(iii) समूह की क्रियाओ के प्रति आकर्षण

हम में से हरेक की कुछ क्रियाओं के प्रति वरीयता होती है जिनमें हम भाग लेना चाहते हैं। हम में से कुछ क्रिकेट खेलते हैं, कुछ संगीत या कुछ अन्य



चित्र 4.1 *भौतिक सामीप्य*

ऐसा ही पसंद करते हैं। जो एक ही प्रकार की क्रियाओं में रुचि रखते हैं उनका एक समूह बन जाने की अधिक संभावना होती है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि समूह हमे उन क्रियाओं मे सक्रिय योगदान करने का अवसर प्रदान करता है जो हमें अच्छी लगती हैं। दूसरी ओर यदि हम उन चीजों को पसद नहीं करते जो समूह के सदस्य हमसे अपेक्षा करते हैं तो हमारी सदस्यता को बनाए रखने की संभावना नहीं रहती और सम्भवतया हम उस समूह से नाता तोड़ लेते हैं। परीक्षा देने वाले विद्यार्थी भी एक समूह का निर्माण कर लेते हैं तथा अध्ययन की समान क्रियाओं में व्यस्त हो जाते हैं।

(iv) तनावपूर्ण स्थितियाँ

मान लीजिए आप बस मे यात्रा कर रहे हैं एकाएक समाचार फैल जाता है कि उस क्षेत्र में आतंकवादी सक्रिय हैं। इससे दुश्चिंता तथा तनाव उत्पन्न हो जाता है। आपको यह अनुभूति होगी कि लोग सहयात्रियों

के साथ अधिक बातचीत करने लगे हैं तथा एक साथ रहने की अनुभूति का विकास हो जाता है। यदि स्थिति अत्यधिक तनावपूर्ण है तथा परिणामस्वरूप सभी दुश्चिता का अनुभव कर रहे हैं तो यह लोग एक समूह की भाँति ही अनुभव करने लगते हैं। यह तथ्य है कि जब लोग तनावपूर्ण स्थिति मे होते हैं तो वे अनुभव करते है कि जीवित रहने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि उन लोगो से साथ मिलकर कार्य करें जो भौतिक तथा सवेगात्मक समर्थन दे सकें। किसी महाविपदा जैसे बाढ आने पर एक अकेला व्यक्ति आवश्यक रक्षा कार्य करने मे असमर्थ हो सकता है। उसमे बहुत से लोगों के व्यवस्थित प्रयत्नो की आवश्यकता होती है जिससे समूह का निर्माण अनिवार्य हो जाता है।

(v) समूह सदस्यता की नैमित्तता

कुछ व्यक्ति अपने समूह से बाहर अन्य लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए समूह मे सम्मिलित होते हैं। दूसरे समूह की सदस्यता को कुछ बाह्य लक्ष्यो की प्राप्ति हेतु निमित्त के रूप में देखा जाता है। इसका एक उदाहरण किसी व्यापारी का किसी सामाजिक क्लब में सम्मिलित होना है। यहाँ पर उसका उद्देश्य अनिवार्यतः समाज सेवा नही भी हो सकता अपितु सदस्यता का इस्तेमाल दूसरे इतर लक्ष्यों की प्राप्ति जैसे प्रभावशाली व्यक्तियो से संपर्क बनाना हो सकता है। समूह सदस्यता के इन नैमित्तिक प्रभावों को कई अध्ययनो में स्पष्ट किया गया है। श्रमिक समूहों के सदस्य प्रायः उल्लेख करते हैं कि सघो की सदस्यता के मुख्य लाभ उच्चतर वेतन तथा नौकरी में सुरक्षा होते हैं। इसी प्रकार कोई लड़का गली के लड़कों के समूह मे इसलिए सम्मिलित होता है जिससे उसे सुरक्षा प्राप्त हो अथवा उसे शक्तिशाली होने की अनुभूति हो चाहे समूह की क्रियाएँ आकर्षक न हो अथवा वह समूह के दूसरे सदस्यों को पसंद न भी करता हो।

समूहों के प्रकार

समूह अनेक प्रकार के होते हैं तथा उन्हें कई प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है। उदाहरणार्थ सदस्यों के आकार, लक्ष्यो, पद, अनुक्रमो, आदर्शों, सदस्यो की सामाजिक विशेषताओं जैसे जाति, धर्म इत्यादि के आधार पर समूहो का वर्गीकरण होता है। समूह के सदस्यो का व्यवहार उनके समूह के प्रकार से प्रभावित होगा। जैसे किसी विद्यार्थी का व्यवहार मित्र मण्डली में अधिक अनौपचारिक होता है अपेक्षाकृत किसी कार्य समूह के जो औपचारिक होता है।

समूह अनेक प्रकार के हो सकते हैं और कुछ समूह व्यक्ति के व्यवहार को अन्य समूहो की अपेक्षा सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। विभिन्न प्रकार के समूह हैं— (अ) प्राथमिक तथा गौण समूह (ब) अनौपचारिक तथा औपचारिक समूह (स) अंतःसमूह तथा बाह्य समूह।

(अ) प्राथमिक तथा गौण समूह

प्राथमिक समूह

समूह सदस्यो मे परस्पर क्रिया का स्तर व गुणवत्ता इस बात से निर्धारित होती है कि क्या समूह अपने सदस्यों के लिए प्राथमिक है अथवा गौण। प्राथमिक समूह का प्रत्यय सर्वप्रथम समाजशास्त्री कूले ने प्रतिपादित किया था। प्राथमिक समूह उन सदस्यों का बना होता है जो घनिष्ठ अंतर्वैयक्तिक संबंधों से बंधे होते हैं जिनमें सप्रेषण का आदान-प्रदान बहुत अधिक तथा सामान्यतः आमने-सामने होता है। एक महत्त्वपूर्ण प्राथमिक समूह परिवार के सदस्यों का होता है। परिवार में इन सदस्यों का आपस में बहुत अधिक घनिष्ठ सबंध होता है तथा निजी सम्पर्क की आवृत्ति बहुत अधिक होती है। परिवार समूह के सदस्य विभिन्न समूह क्रियाओ मे अत्यधिक सम्मिलित होते है तथा ऐसे समूहो का सदस्यों की अभिवृत्ति तथा व्यवहार पर बहुत अधिक प्रभाव होता है। अन्य प्राथमिक समूहों में पास के पड़ोसियों का, खेल के साथियो का, मनोरंजन क्लब के समूह आदि आते हैं।

किसी भी समूह को प्राथमिक समूह से नामांकित करने की मुख्य कसौटियाँ, आवेष्टन का स्तर, समूहं के सदस्यो के अंतरंग संबंध तथा सदस्यों के लिए उस समूह का महत्व होती हैं।

गौण समूह

गौण समूह अधिक अवैयक्तिक व औपचारिक होते है और नियमों एवं मानकों के कुछ विन्यासो द्वारा शासित होते हैं। इनमें संबंध एक प्रकार का अनुबंध संबंध होता है जिसमें कुछ लोग कुछ सामान्य लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए पास आते हैं और सहमति के नियमों के अनुसार कार्य करते हैं। इन समूहों में सदस्यो को समूह क्रियाओं में सम्मिलित होने का विकल्प होता है। सदस्यों को समूह छोड़ने की स्वतंत्रता भी होती है। लेकिन कुछ मामलो जैसे सैनिक सगठनो के विषय मे ऐसा नहीं होता। गौण समूहो के अंतर्गत राजनीतिक दल, व्यावसायिक समूह, कक्षा के साथी तथा सांस्कृतिक दल आते हैं।

(ब) अनौपचारिक तथा औपचारिक समूह

अनौपचारिक समूह

समूहों का दूसरा महत्वपूर्ण प्रकार अनौपचारिक समूह है। अनौपचारिक समूह की सरचना अनम्य नही होती तथा इनमें औपचारिक समूहो की अपेक्षा सवेगात्मक अभिव्यक्ति मे सहजता की मात्रा अधिक होती है। व्यवहार से सबंधित अपेक्षाएँ भली प्रकार पारिभाषित नहीं होतीं क्योंकि ऐसे समूहो में सदस्यता की भूमिका विकासात्मक होती है और औपचारिक समूहो की भाँति आरोपित नहीं होती। अनौपचारिक समूह प्राथमिक समूह भी होते हैं। परिवार अनौपचारिक समूह की श्रेणी में आता है।

औपचारिक समूह

औपचारिक समूह सामान्यतः गौण समूह होते हैं। इनकी संरचना जटिल होती है जहाँ विभिन्न सदस्यों की भूमिका पूर्व निश्चित तथा अनुक्रम में होती है। उत्तरदायित्व तथा सत्ता औपचारिक रूप से सहमत नियमों तथा मानकों के विन्यास के अनुसार होती है। ऐसे समूहों में अधिक मात्रा में आपसी व्यवहार में औपचारिकता होती है तथा भूमिका तथा अनुक्रम से सभी सबंध कार्य निर्धारित होते हैं।

राजनीतिक दल तथा औद्योगिक संगठन औपचारिक समूहों के अंतर्गत आते हैं। वास्तव में गौण समूह की सरचना यदि औपचारिक न हो तो ये समूह विघटित हो जाएँ और बहुत अधिक दिनों तक नहीं चल सकते। यह औपचारिक संरचना स्थायित्व प्रदान करती है तथा अधिक प्रभावी रूप के कार्य करने योग्य बनाती है। विभिन्न गौण समूह जैसे मदिर, गिरजाघर, गुरुद्वारे तथा अन्य धार्मिक सगठनो की औपचारिक सरचना ने ही इन संस्थाओं को शताब्दियो तक जीवित रहने में सहायता की है।

(स) अंतःसमूह तथा बाह्य समूह

अंतःसमूह

एक और प्रकार का समूहीकरण इस पूर्वानुमान पर आधारित है कि क्या व्यक्ति उसी समूह का सदस्य है अथवा किसी अन्य समूह का। व्यक्तियो की प्रकृति होती है कि वे समूहो को "हमारा समूह" तथा "उनका समूह" आदि नामो मे विभाजित कर लेते हैं। यह प्रवृत्ति शक्तिशाली अंतःसमूह तादात्मीकरण की ओर अग्रसर करती है जिसमे अपने समूह के प्रति निष्ठा, अनुरक्ति तथा वचनबद्धता की भावना का विकास होता है। ए. के. दलाल तथा अन्य द्वारा 1988 में किए गए अनुसंधान से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति अन्य जातियो के सदस्यों की अपेक्षा अपनी जाति के सदस्यो का अधिक सकारात्मक रूप मे प्रत्यक्षीकरण करते हैं। अतःसमूह के विषय में यही अनुकूल मत समाज में दूसरे समूह के सदस्यो के विरुद्ध विभेद तथा पूर्वाग्रहों की ओर अग्रसर करते हैं जिससे तनाव तथा हिंसा उत्पन्न होती है।

(अ) प्राथमिक समूह	तथा	गौण समूह
समीपस्थ आमने-सामने अतर्वैयक्तिक संबंध, संरचना में अधिक लचीलापन, कोई भी लिखित नियम तथा मानक नहीं, अनौपचारिक उदाहरणार्थ साथी समूह, परिवार तथा शौक क्लब।		सदस्यों में अवैयक्तिक संबध, संरचना अधिक अनम्य तथा औपचारिक, लिखित नियम तथा मानक, उदाहरणार्थ कार्य समूह, औद्योगिक समूह, राजनीतिक समूह आदि।
(ब) अनौपचारिक समूह	तथा	औपचारिक समूह
समूह संरचना कम अनम्य, श्रम विभाजन भूमिकाएँ विकसित होती हैं और लिखित नियमो तथा मानको से शासित नही होती। प्राथमिक भी होते हैं उदाहरणार्थ मित्र समूह परिवार आदि।		अच्छी तरह पारिभाषित लक्ष्य, विचारधारा तथा संरचना, श्रम विभाजन, लिखित मानको द्वारा शासित नियम, अधिक अनम्य, गौण समूह औपचारिक भी होते है। कार्य समूह, राजनीतिक दल आदि।
(स) अतःसमूह	तथा	बाह्य समूह
'हम' समूह, सदस्यता समूह।		वे समूह, असदस्यता समूह।

चित्र 4.2 समूहो के प्रकार

बाह्य समूह

बाह्य समूह अथवा अतःसमूह अधिकाशतः प्रतिस्पर्द्धी के रूप में देखे जाते है तथा अतः अथवा बाह्य समूह के सदस्यो के साथ संबंधों को संदेह, प्रतिद्वंद्विता तथा उदासीनता से देखा जाता है। व्यक्ति किन धार्मिक समूहों तथा जाति समूहो को अधिकतर अतःसमूहो अथवा बाह्य समूहो के नाम से जानते है, वह इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति किस धर्म अथवा जाति से संबंध है। व्यक्ति जितना अधिक अतःसमूह तथा बाह्य समूह के रूप में देखते हैं उतना ही बाह्य समूह के सदस्यो से अलगाव होता है तथा उनके प्रति विद्वेष की भावना बढ़ती है। अल्पसंख्यक तथा बहुसख्यक समुदाय कभी-कभी इस प्रकार के समूह वर्गीकरण पर अत्यधिक बल दे देते हैं जिनके परिणाम स्वरूप अतःसामूहिक विवाद हो जाते हैं।

समूह ससक्तिशीलता

विद्यालय मे वार्षिक दिवस उत्सव है तथा आपकी कक्षा को दो समूहों मे विभक्त किया गया है। एक समूह बहुत सक्रिय है। इसके सदस्य समूह क्रियाओं मे ध्यान मग्न होकर अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अत्यधिक काम करते हैं। वे एक दूसरे से बहुत घनिष्ठ हैं तथा समूह से अपना तादात्मय स्थापित करते हैं। दूसरा समूह कम सक्रिय है। इसके बहुत कम सदस्य गोष्ठियों के लिए आते हैं तथा सामूहिक क्रियाओ के नियोजन के लिए उनमे कोई उत्साह नही है। इसके सदस्यो में नज़दीकी अथवा एक दूसरे के साथ तादात्मयता नही है और वे समूह की परवाह नहीं करते।

उपरोक्त दोनो समूहो का समूह ससक्तिशीलता के आधार पर विभेद किया जा सकता है। जबकि पहले समूह मे ससक्तिशीलता की अधिकता है दूसरे समूह



चित्र 4.3 *संसक्तिशील समूह*

में संसक्तिशीलता की कमी है। समूह संसक्तिशीलता का प्रत्यय वह मात्रा है जिससे समूह के सदस्य एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं। यदि समूह के सदस्य एक दूसरे को पसंद करते हैं तथा सदस्यता को बहुत अधिक मूल्य दिया जाता है तो समूह को संसक्तिशील कहा जाता है। *समूह संसक्तिशीलता के अंतर्गत वे सभी कारक सम्मिलित हैं जो व्यक्तियों को समूह के सदस्यों के रूप मे एक जुट रखते हैं।*

समूहों में संसक्तिशीलता के स्तर पर भी विस्तृत रूप से विचलन होता है। किसी भी समूह की संसक्तिशीलता की मात्रा उन सभी कारकों पर निर्भर करती हैं जो समूह को अपने सदस्यो के लिए आकर्षक बनाते हैं। संसक्तिशीलता का प्रत्यय उन कारको के परीक्षण करने में लाभदायक है जो समूहों के सदस्यो मे आकर्षण बढ़ाते हैं अथवा घटाते हैं तथा वे भी कारक हैं जो समूह की कार्यप्रणाली को प्रभावित करते हैं।

संसक्तिशीलता को सुसाध्य करने वाले कारक

समूह संसक्तिशीलता को बढ़ाने वाले कारको को बाह्य तथा आंतरिक कारकों में विभाजित किया जा सकता है।

1. बाह्य कारक

बाह्य कारकों के अंतर्गत वे सभी बाह्य दशाएँ आती हैं जो व्यक्ति को समूह के अंदर रखती हैं।

(अ) बाहर से धमकियाँ

महत्वपूर्ण बाह्य कारकों में से एक बाहर से धमकी है। यह धमकी किसी विशेषाधिकार को खोने की, साम्प्रदायिक हिंसा, दूसरे देश से युद्ध अथवा कोई

प्राकृतिक विनाश हो सकता है। समूह संसक्तिशीलता का स्तर उच्चतर तब देखा गया है जब समुदाय प्राकृतिक विपदा जैसे बाढ़, भूकंप इत्यादि से प्रभावित होते हैं। राजनीतिक नेता प्रायः बाह्य आक्रमणों की धमकी का प्रयोग राष्ट्रीय संसक्तिशीलता उत्पन्न करने के लिए करते हैं। दुर्भाग्यवश यही प्रविधि साम्प्रदायिक नेताओं द्वारा अपने धार्मिक तथा जाति-समूहों से दूसरे समुदाय की वास्तविक अथवा काल्पनिक धमकियो के बारे में बातें करके उनमें एकता लाने के लिए प्रयुक्त की जाती है।

यह बाहरी धमकी समूह की ससक्तिशीलता क्यों बढ़ा देती है? इसके बहुत से संभावित स्पष्टीकरण हैं। सभी सदस्यों के लिए सामान्य धमकी से उन्हें यह अनुभूति हो सकती है कि उनका अपना समूह उनकी उत्तरजीविता की बेहतर संभावना का प्रतिनिधित्व करता है तथा केवल सामूहिक रूप से ही वे इस संकट का सामना कर सकते हैं। यह धमकी सदस्यो को समूह के दूसरे सदस्यों के प्रति असंतोष प्रदर्शित करने से विकर्षित करती है तथा बाहरी धमकी का सामना करने के लिए सबको एक साथ लाती है।

(ब) दूसरे समूहों से प्रतिस्पर्द्धा

दूसरे समूहो से प्रतिस्पर्द्धा एक और कारक है। किसी खेल प्रतियोगिता में जहाँ एक समूह दूसरे समूह के विरुद्ध क्षेत्रस्थ है वहाँ दोनों समूहों में स्पर्द्धा स्पष्ट होती है। इस स्पर्द्धा के परिणामस्वरूप खिलाड़ियों में तीव्र "हम भावना" तथा "वे भावना" विकसित हो जाती है। वे अपने समूह पर अधिक विश्वास करते हैं। अपने समूह को दूसरे समूहों की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ मानते है तथा उच्च स्तर की समूह संसक्तिशीलता विकसित कर लेते हैं।

(2) आतरिक कारक

समूह की विशेषताएँ भी इसकी संसक्तिशीलता को प्रभावित करती हैं। विभिन्न आतरिक कारक निम्नलिखित है।

(अ) दीक्षा मे कठिनाई

महत्वपूर्ण कारकों में से एक दीक्षा में कठिनाई होना है। सदस्यता के लिए अनेक समूह कठिन शर्तें रखते हैं। जिस व्यक्ति ने कठिन दीक्षा का अनुभव किया है यह सम्भावना अधिक होती है कि वह अपनी सदस्यता को बनाए रखेगा। उदाहरणार्थ फुटबाल टीम की सदस्यता कड़ी परीक्षा के बाद दी जाती है और इसीलिए घनिष्ठ समूह कार्यप्रणाली होती है। ऐसा समझा जाता है कि यदि आप चाहते हैं कि सदस्य बने रहें तथा समूह के प्रति निष्ठावान हों तो समूह में उनके प्रवेश को कठिन बनाइए। जो समूह सभी के लिए खुला है उसमें सामान्यतः निम्न समूह संसक्तिशीलता होती है।

(ब) नेतृत्व की प्रकृति

नेतृत्व की प्रकृति के अनुसार किसी समूह का आकर्षण भी प्रभावित हो सकता है। नेता की कार्य शैली समूह संसक्तिशीलता का स्तर निर्धारण करने में महत्वपूर्ण भूमिका रखती है।

एक कुशल नेता समूह को एक जुट रखने में उस नेता की तुलना में अच्छी स्थिति में होता है जिसे समूह के सदस्य पसंद नहीं करते तथा जो समूह के लक्ष्यों की प्राप्ति में असफल होता है।

(स) एक विशिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति

संसक्तिशीलता का स्तर इस बात से भी प्रभावित होता है कि जिन लक्ष्यों के लिए समूह का गठन हुआ उनको किस सीमा तक पूरा किया गया। यदि बहुत से सदस्य किसी विशेष लक्ष्य की प्राप्ति हेतु किसी समूह में सम्मिलित होते है तो उस लक्ष्य की प्राप्ति से संसक्तिशीलता बढ़ने की आशा की जा सकती है।

उपसमूहों का गठन

समूह संसक्तिशीलता को अनेक कारक प्रभावित करते है। समूह का आकार इसकी संसक्तिशीलता को प्रभावित करता है अर्थात् जितना बड़ा समूह होगा उतना ही वह कम संसक्तिशील होगा।उनमें विभिन्न

समूह कार्यों में तथा निर्णय लेने में अधिक औपाचरिकताएँ होती हैं। परिणामस्वरूप समूह में पदानुक्रमता की प्रवृत्ति हो जाती है जिससे उच्च पद के सदस्यों का अधिक नियंत्रण तथा प्रभाव हो जाता है। विभिन्न पदानुक्रम स्तरों पर लोगों में आपसी संबंध मानकों तथा नियमों से बंधे होते है न कि संवेगात्मक बंधनों पर। ये कारक समूह संसक्तिशीलता को कम कर देते हैं।

समूह संसक्तिशीलता की कमी के कारण उपसमूह विकसित हो जाते हैं जो सदस्यों को घनिष्ठ तथा सुरक्षित संबंध प्रदान करते हैं। पदानुक्रम के विभिन्न स्तरों पर व्यक्ति उपसमूह बना लेते हैं क्योंकि वे एक से अनुभवों में भागीदार होते है अथवा क्योंकि उनका सहमिलन उनकी सौदाकारी शक्ति को बढ़ा देता है। प्रायः ये अनौपचारिक उपसमूह ऐसे प्रच्छन्न होते हैं कि साथ काम करने वाले लोग भी इन उपसमूहों के अस्तित्व के बारे में अवगत नहीं होते। उदाहरणस्वरूप आपकी उच्चतर माध्यमिक कक्षा में बहुत से मित्रता गुट होंगे जो आपकी कक्षा के विद्यार्थियों के सामाजिक जीवन को चुपचाप प्रभावित करते हैं। जैसा कि एक मनोवैज्ञानिक ने इंगित किया है समूह के पदानुक्रम तथा उपसमूहों के अस्तित्व से गोपनीयता पोषित होती है। यद्यपि गोपनीयता समूह के अंदर खुले वैमनस्य को कम करने के लिए आवश्यक है परंतु साथ ही साथ यह उन सदस्यों में अविश्वास की भावना उत्पन्न करती है जिनको उनसे बाहर रखा जाता है। परिणामस्वरूप गोपनीयता प्रायः समूह की संसक्तिशीलता कम करती है।

नेतृत्व

बिना नेता के किसी भी समूह के बारे में सोचना कठिन है। नेता का अस्तित्व तो बिना समूह के बना रह सकता है परंतु कोई भी समूह बिना नेता के अस्तित्वहीन है। यहाँ तक कि सबसे छोटे दो सदस्यो के समूह में भी एक नेता ज़रूर होगा। हम अपने दैनिक जीवन में बहुधा नेतृत्व शब्द का प्रयोग करते है तथा नेतृत्व से संबंधित अधिकतर सामाजिक एवं राजनीतिक घटनाओं के बारे में चर्चा करते हैं। उदाहरण के लिए भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की बात करते समय हम महात्मा गाँधी, जवाहर लाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद तथा अन्य नेताओं की चर्चा किए बिना नहीं रह सकते। इतिहास को महान नेताओं, राजाओं, सम्राटों, सेना नायकों आदि के कार्य का वर्णन ही कहा जाता है।

इन व्यक्तियों को नेता क्यों माना जाता है इस प्रश्न के उत्तर के लिए हमें व्यक्तित्व की विशेषताओं के रूप में सोचना होगा। उदाहरणार्थ महात्मा गाँधी का एक महान चिंतक, संत तथा महान द्रष्टा के रूप में वर्णन किया जा सकता है। इन अर्थों में नेता की पहचान ऐसे व्यक्ति के रूप में होती है जो व्यक्तित्व की कुछ विशेषताओं में अन्य लोगों से अति उत्तम हो। नेता वे व्यक्ति भी होते हैं जो समूह क्रियाओं की योजना बना सकें तथा एक आदर्श की भाँति कार्य कर सकें। नेता समूह के वे सदस्य होते हैं जिनमें हाथ में लिए काम के लिए कौशलों का उच्चतम स्तर होता है। वे ऐसे व्यक्ति होते है जिन्हें समूह लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु सक्षम समझा जाता है।

यद्यपि इनमें से प्रत्येक नेतृत्व के विभिन्न पहलुओं पर बल देता है फिर भी यह कहा जा सकता है कि सबकी एक ही सामान्य कसौटी है कि नेता ऐसे व्यक्ति होते हैं जो समूह पर अन्य सदस्यों की तुलना में अधिक प्रभाव रखते है। इससे यह सुझाव मिलता है कि *नेता वह व्यक्ति है जिसका दूसरे अनुसरण करते हैं।*

मनोवैज्ञानिकों ने नेताओं के तीन महत्वपूर्ण गुण बताए हैं।

(i) नेता समूह के दूसरे सदस्यों से केवल प्रभाव की मात्रा में भिन्न होते हैं। इस अर्थ में कम से कम कुछ मात्रा में समूह का प्रत्येक सदस्य समूह का नेता होता है। अतः नेतृत्व मात्रा का विषय होता है तथा हमें नेता तथा अनुयायी के संदर्भ में न सोचकर किसी



चित्र 4.4 दो महान नेता

व्यक्ति में नेतृत्व की मात्रा कितनी निहित है इस विषय में विचार करना चाहिए। इस प्रकार नेता हर परिस्थिति में भिन्न हो सकते हैं और प्रस्तुत परिस्थितियों में जो व्यक्ति अधिकतम मात्रा में प्रभाव डाल सकते हैं वे उस स्थिति में नेता कहलाते हैं।
(ii) नेतृत्व को परस्पर क्रिया के परिप्रेक्ष्य में देखने की आवश्यकता है। समूह में सदस्यों के व्यवहार को सदैव नेता ही प्रभावित नहीं करते वरन् अनुयायी भी बदले में नेता को प्रभावित करते हैं।
(iii) नेता का तीसरा गुण है कि इस प्रकार पारिभाषित नेता समूह के औपचारिक अथवा अधिकृत प्रधान से भिन्न है जिसका वास्तव में बहुत कम प्रभाव होता है।

बहुत पहले सन् 1904 में टरमन ने बताया कि समाज का प्रत्येक सदस्य नेता तथा अनुयायी दोनों है। उनके इस कथन के पक्ष में दो मनोवैज्ञानिकों ने अध्ययन द्वारा प्रमाण प्रस्तुत किए। उन्होंने नौ-सेना के छात्र सैनिकों से ऐसे व्यक्तियों की पहचान करने को कहा जिन्हें वे सोचते थे कि वे अच्छे नेता बन सकते हैं और वे व्यक्ति जिन्हें वे सोचते हैं कि वे अच्छे अनुयायी होंगे। इस अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि नौ-सेना के छात्र सैनिकों ने अच्छे नेता तथा अनुयायियों के लिए समान विशेषकों को निर्दिष्ट किया। इससे इस बात को समर्थन मिलता है कि नेता तथा अनुयायी में अंतर सुविधा पर आधारित और प्रकृति में अस्थायी होता है। किसी व्यक्ति को नेता होने के लिए उसमें समूह के अनुयायी जैसे गुण होना आवश्यक है। नेता उनमें से एक होना चाहिए।

नेता की विशेषताएँ

जैसा कि पहले कहा जा चुका है एक नेता समूह का वह सदस्य होता है जो समूह की गतिविधियों को

सर्वाधिक प्रभावित करता है। परंतु एक प्रासंगिक प्रश्न यह है कि बहुत सी परिस्थितियो में कुछ व्यक्ति ही क्यों नेता के रूप में उभरते हैं, अन्य व्यक्ति क्यों नहीं? उदाहरणार्थ भारत के स्वतन्त्रता आदोलन के समय महात्मा गाँधी ही क्यों निर्विवाद नेता के रूप में उभर कर आए अन्य दूसरा क्यो नहीं? ऐसा क्या महात्मा गाँधी की अद्वितीय विशेषताओ के कारण हुआ अथवा किसी विशेष परिस्थिति के कारण हुआ अथवा दोनों के सम्मिश्रण से हुआ।

नेता की प्रमुख विशेषताओं की खोज सदैव ही मनोवैज्ञानिकों के लिए रुचि का विषय रहा है। व्यापारिक घराने, औद्योगिक इकाईयाँ, सेनापति तथा राजनीतिक दल सदैव ऐसे व्यक्तियों की खोज में अभिरुचि लेते रहे हैं जिन्हें नेतृत्व की भूमिका दी जा सके। अभी उन व्यक्तियों की पहचान के प्रयत्न चल रहे हैं जो भविष्य में अच्छे नेता बनने वाले हैं यद्यपि इसमें अभी तक सफलता नहीं मिली है। हम नेताओं की विभिन्न विशेषताएँ जो महापुरुष सिद्धांत, स्थिति परक कारक तथा परस्पर क्रियात्मक उपागमों से उभरी है, उनकी व्याख्या करने का प्रयत्न करेंगे।

(अ) नेतृत्व का महापुरुष सिद्धांत

इस सिद्धांत के अनुसार नेता उत्पन्न होते हैं, बनाए नहीं जाते। जब हम महान नेताओं जैसे महात्मा गाँधी, विवेकानंद, अब्राहम लिंकन, रानी लक्ष्मीबाई तथा महाराणा प्रताप का जीवन वृत्त देखें तो हमें पता चलता है कि वे कोई सामान्य व्यक्ति नहीं थे। उनमें अवश्य कुछ विशेष रहा होगा जिसने उन्हें महान नेता बनने में सहायता की। यदि यह अनुमान सही है तो नेताओं की कुछ अद्वितीय विशेषताओं की पहचान करना संभव होना चाहिए। महापुरुष सिद्धांत का यह मानना है कि नेतृत्व व्यक्तिगत विशेषताओं का एक विन्यास है तथा कोई भी व्यक्ति जिसमें ये विशेषताएँ हैं वह सभी परिस्थितियों में और सभी समयों में नेता होगा। इस सिद्धांत के आधार पर कार्यरत मनोवैज्ञानिकों ने नेताओं की सामान्य शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक विशेषताओ को पहचानने का प्रयत्न किया। शारीरिक विशेषताएँ जैसे लबाई, वज़न, स्वास्थ्य, व्यक्तित्व, पद इत्यादि की परीक्षा की गई। इनमे से कोई भी विशेषता नेतृत्व के साथ सतत रूप से संबद्ध नही पाई गई। शारीरिक विशेषताएँ तब महत्वपूर्ण होती हैं जब कोई फुटबाल की टीम (टोली) का चयन करता है जहाँ शारीरिक शक्ति महत्वपूर्ण होती है। परंतु वही शारीरिक रूप से शक्तिशाली व्यक्ति यह आवश्यक नही कि वाद-विवाद टोली के लिए एक अच्छा चुनाव हो। अतः नेता बनाने वाली मनोवैज्ञानिक विशेषताओ की परीक्षा पर बल दिया गया। इस प्रकार के बहुत से अध्ययन द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान किए गए। कुछ विशेषताएँ जो एक सामान्य समूह नेता में सामान्य अनुयायियो की अपेक्षा अधिक होती हैं वे थीं—

(i) समूह लक्ष्य प्राप्ति से सबद्ध योग्यताएँ—सामान्य बुद्धि, विद्वता, शाब्दिक कौशल, स्थिति में अंतर्दृष्टि, समायोजन क्षमता।

(ii) अंतर्वैयक्तिक कौशल—सहकारिता, निर्भर योग्यता, विश्वसनीयता, सामाजिक सहभागिता, लोकप्रियता।

(iii) अभिप्रेरणात्मक विशेषताएँ—उपक्रमण, दृढ़ता, सहिष्णुता।

(ब) स्थितिपरक कारक

उपरोक्त विशेषताएँ नेतृत्व के लिए निश्चित रूप से महत्वपूर्ण हैं। किंतु वास्तविक जीवन में कुछ वैयक्तिक विशेषताओ तथा नेतृत्व में संबंध जटिल है। बहुत से स्थिति परक कारक भी इस बात का निर्धारण करते हैं कि कौन नेता बनेगा। इस बात पर तर्क किया जा सकता है कि यदि भारत ब्रिटिश उपनिवेश न होता तथा राजनीतिक रिक्तता न होती तो 1915 में दक्षिण अफ्रीका से लौटने पर महात्मा गाँधी को इतनी आसानी से नेता स्वीकृत न किया जाता। समूह को चुनौती देने वाली स्थितियाँ भी नेतृत्व को प्रभावित करती हैं। अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि जिन समूहों को धमकी अथवा प्रतिस्पर्द्धा का सामना करना पड़ता

है ऐसे समूहों द्वारा उन समूहो की अपेक्षा जिनको ऐसी संकटावस्थाओ का सामना नहीं करना पड़ता, सत्तावादी नेता को स्वीकृति देने की संभावना अधिक रहती है। समूह की आवश्यकताएँ भी इस बात को निर्धारित करती हैं कि कौन नेता के रूप में उभरेंगे।

जर्मनी में हिटलर नेता के रूप में इसलिए उभरा क्योंकि उसने यह वादा किया कि वह प्रथम महायुद्ध में हुए जर्मनी के अपमान का बदला लेगा जो कि लोगों की इच्छाओं के अनुरूप था। स्थितिपरक उपागम के अनुसार समूह की आवश्यकताएँ प्रायः परिवर्तित होती है और जब ऐसा होता है तो समूह का नेता भी परिवर्तित होता है।

किंतु यह उपागम इस बात की व्याख्या नहीं कर पाता कि क्यों कुछ व्यक्ति अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा प्रायः सही समय पर, सही स्थान पर होते हैं अर्थात् यद्यपि नेतृत्व एक पूर्णतया सामान्य विशेषता प्रतीत नहीं होती, कुछ प्रकार के लोग अन्यों की तुलना में प्रायः नेता के रूप में उभरते प्रतीत होते हैं।

(स) परस्पर क्रिया उपागम

नेतृत्व के महापुरुष सिद्धांत तथा स्थितिपरक उपागम की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए नेतृत्व अध्ययन का सर्वाधिक मान्य उपागम परस्पर क्रिया उपागम है। इस उपागम में व्यक्तिगत विशेषताएँ तथा स्थिति परक कारकों को विचाराधीन रखा जाता है जो नेता के निर्धारण में परस्पर क्रिया करते है। समूह में प्रभावी नेता की भविष्यवाणी करने के लिए हमें नेता का संबंध, तत्कालीन कार्य जो कि समूह को करने हैं तथा नेता की अनुयायियों पर प्रभाव की मात्रा को ध्यान में रखना आवश्यक है। इन कारकों के विभिन्न संयोगों में नेतृत्व की विभिन्न शैलियाँ प्रभावी होगी।

नेतृत्व की शैलियाँ

शैली उस विशिष्ट तरीके को कहते है जिसमें नेता अपने समूह की क्रियाओं को सम्पन्न करते हैं। नेतृत्व की शैली व्यक्ति के अनुसार, स्थिति के प्रतिबंध तथा समूह के लक्ष्यों एवं कार्यों के अनुसार भिन्न होती है। नेतृत्व के मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में नेतृत्व की विभिन्न शैलियों के वर्गीकरण की कसौटी विकसित करने के बहुत प्रयत्न किए गए हैं। ऐसी किसी एक योजना का सुझाव देना बहुत कठिन है जिसमें एक नेता द्वारा किए गए सभी कार्यों का समावेश किया जा सके। विभिन्न समूह स्थितियों में सामान्यतः निम्नलिखित नेतृत्व शैलियाँ पाई जाती हैं।

(अ) कार्योन्मुखी तथा संबंधोन्मुखी नेतृत्व

नेतृत्व संबधी नए अनुसंधानों में अधिकतर जो वर्गीकरण संगत रूप से उभर कर आया है वह कार्योन्मुखी तथा संबंधोन्मुखी नेतृत्व शैलियों का है। कार्योन्मुखी नेता प्रमुखतः उस कार्य को सम्पन्न करने से संबंधित होते हैं जिसमे समूह व्यस्त है। यह माना जाता है कि उनके पास समूह लक्ष्यों की प्राप्ति तथा कार्य पर केंद्रित करने के बारे में सबसे अच्छा विचार है। दूसरी ओर संबंधोन्मुखी नेता मुख्यतः समूह की सामाजिक तथा संवेगात्मक समस्याओं के समाधान के बारे में समूह के भीतर तनाव तथा संघर्षों का निराकरण करके समूह में मनोबल तथा एकता बनाए रखने से संबंधित होते हैं। अतः जहाँ पहले प्रकार के नेता संबंधों की कीमत पर कार्य सम्पन्न करते हैं दूसरे प्रकार के नेता कार्य की अप्राप्ति की कीमत पर मधुर संबंध बनाए रखते हैं। जे.बी. पी. सिन्हा ने अपने अध्ययन में यह पाया है कि कार्योन्मुखी नेता भारतीय परिवेश में सफल नहीं हो पाते है। उन्होंने एक नवीन नेतृत्व शैली जिसे उन्होंने नर्चरेन्ट टास्क नेता कहा, का प्रतिपादन किया। इस प्रकार के नेता अनुयायियों की संवेगात्मक आवश्यकताओं का भी ध्यान रखते हैं। एक पिता की भाँति कार्य करके नेता समूह लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। सिन्हा की शोध से यह भी स्पष्ट होता है कि इस प्रकार के नेता भारतीय संस्कृति में अधिक प्रभावी होते हैं।

(ब) प्रजातांत्रिक, सत्तावादी तथा अहस्तक्षेपी नेता

नेतृत्व की यह तीन शैलियाँ उस तरीके के कारण भिन्न

है जिससे समूह में निर्णय लिए जाते हैं। प्रजातांत्रिक नेता निर्णय प्रक्रिया में योगदान के लिए समूह के सभी सदस्यों को समान अवसर प्रदान करते हैं। निर्णय तभी लिए जाते हैं जब समूह सदस्यों का बहुमत सहमत होता है। सत्तावादी शैली में समूह नेता द्वारा निर्णय लिए जाते हैं। वे समूह के सदस्यों से राय भी ले सकते हैं पर यदि वे इसे आवश्यक नहीं समझते तो नहीं भी ले सकते हैं। अहस्तक्षेप शैली में समूह के सदस्य अपने निर्णय स्वय लेने तथा समूह लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अपने तरीकों को निश्चित करने के लिए स्वतंत्र हैं। नेता सदस्यों को अपने चुनाव करने के लिए अधिकतम स्वतंत्रता देते है अतः समूह के सभी सदस्य नेता होते हैं। यह देखा गया है कि अत्यधिक तनाव पूर्ण परिस्थितियों में तथा ऐसी स्थितियों में जहाँ गति तथा क्रिया की त्वरित आवश्यकता है व्यक्ति सत्तावादी नेता को पसंद करते हैं। इस बात को भी इंगित करने वाले प्रमाण हैं कि जब व्यक्ति संवेगात्मक रूप से असुरक्षित होते हैं अथवा जब वे अपने को अस्पष्ट तथा जटिल सामाजिक स्थितियों में पाते हैं तो वे सत्तावादी नेता का पक्ष लेते हैं। वास्तव में प्रजातांत्रिक तथा अहस्तक्षेपी नेतृत्व शैलियों की प्रभावकता के लिए समूह सदस्यों में किसी निश्चित मात्रा में परिपक्वता, स्पष्टवादिता तथा आत्मानुशासन होना आवश्यक है। जहाँ व्यक्तियों में ये गुण विद्यमान होते हैं वहाँ इस प्रकार की नेतृत्व शैलियों की सफलता की बेहतर संभावना होती है।

(स) चमत्कारी नेता

कुछ व्यक्ति अपनी निजी सौम्यता तथा प्रभाव के कारण चमत्कारी नेता का पद प्राप्त कर लेते हैं। इन नेताओ के पास कुछ विशेष शक्ति यहाँ तक कि चमत्कार करने की शक्ति मानी जाती है। ऐसे नेताओं का उनके अनुयायियों के लिए संवेगात्मक आकर्षण होता है जिससे लोगों में जो कुछ भी ये चमत्कारी कहते है या करते है उनके प्रति अंध विश्वास होता है। इन नेताओं में चाहे जो भी संकटावस्था हो जनमानस में आशाओं को जागृत करके अपने साथ ले चलने की क्षमता होती है। विश्व इतिहास इस प्रकार के नेताओं से भरा है। जवाहर लाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस इसी प्रकार के नेता थे। एडोल्फ हिटलर चमत्कारी नेता का एक और उदाहरण है जिसने जर्मनी को द्वितीय विश्व युद्ध मे झोंक दिया था।

नेता के कार्य

नेता समूह के लिए अनेक प्रकार के कार्य करते हैं। वे विशिष्ट कार्य जो नेता करते हैं वह एक समूह से दूसरे समूह के लिए भिन्न होते हैं। एक औपचारिक संगठन मे नेता के कार्य पारिभाषित होते हैं जबकि एक मित्र मंडली में नेतृत्व के कार्य बहुत लचीले होते हैं। व्यापक अर्थों में नेता के कार्य तीन प्रकार के होते हैं। (अ) अनुरक्षण कार्य (ब) समूह लक्ष्यों की प्राप्ति और (स) समूह प्रतिनिधित्व

(अ) अनुरक्षण कार्य

नेता का एक महत्वपूर्ण कार्य यह देखना होता है कि समूह का अस्तित्व बना रहे तथा इसके विभिन्न उपविभाग निर्विघ्न रूप से कार्य करते रहें। उससे यह आशा की जाती है कि वह कार्य समूह के उपविभागों की क्रियाओं में उनकी क्रियाओं का स्तर बनाए रखने के लिए समन्वय करे। नेता इस भूमिका में समूह के आपसी सबधों के नियंत्रक के रूप में कार्य करते हैं। कुछ समूहों में सदस्यों के बीच सभी संप्रेषणों का आदान-प्रदान नेता के माध्यम से होता है। कुछ अन्य समूहों में नेता समूह के कुछ उन विशेष सदस्यों से ही घनिष्ठ संबंध रखते हैं जो बदले में समूह के दूसरे सदस्यों पर नियंत्रण रखते हैं। नेता उपविभागों तथा समूह सदस्यों पर उचित पुरस्कारों तथा दण्डों द्वारा नियंत्रण रखते हैं। वे सदस्यों को उनके सकारात्मक व्यवहार के लिए दूसरे प्रकार से पदोन्नति देकर पुरस्कृत करते हैं तथा अवांछनीय व्यवहार के लिए किन्ही पुरस्कारों से वंचित करके अथवा समूह से निष्कासित करके दण्ड देते हैं। समूह

के सदस्यों में अच्छे अंतर्वैयक्तिक संबंध बनाए रखने के लिए नेता समूह के आपसी संघर्षों के मामले में मध्यस्थ का काम करते हैं। समूह में नेता माता-पिता के रूप की भूमिका भी निभाते हैं। वे समूह के सदस्यों की संवेगात्मक आवश्यकताओं का ध्यान रखते हैं। वे समूह सदस्यों द्वारा तादात्मीकरण के लिए आदर्श होते हैं।

(ब) समूह लक्ष्य पूर्ति कार्य

नेता का कार्य न केवल समूह का अनुरक्षण करना है बल्कि समूह के लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता करना भी है। अपनी इस भूमिका में नेता वे तरीके तथा साधन निश्चित करते हैं जिनके द्वारा समूह अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार की योजनाओं में समूह के सभी उपविभाजन सम्मिलित होते हैं। एक बार जब योजना बन जाती है नेता से यह आशा की जाती है कि वे योजना के कार्यान्वियन में मुख्य भूमिका अदा करेंगे। चाहे नेता उत्तरदायित्व को प्रत्यायुक्त भी कर दें फिर भी योजना का कार्यान्वियन नेता की ही जिम्मेदारी रहती है। नेता किसी विशेष कार्य के विशेषज्ञ न भी हों किंतु फिर भी उन्हें ऐसे व्यक्ति समझा जाता है जो समूह में सबसे अधिक सूचना रखते हैं। कई बार नेता से ऐसी अपेक्षाएँ अवास्तविक होती हैं और जब समूह अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में असफल हो जाता है तो नेता कुंठित तथा मोह भंग हुए समूह सदस्यों के आक्रमण का लक्ष्य बन सकते हैं। इस प्रकार नेता को समूह की असफलता के लिए अधिकतम निंदा मिलती है।

(स) समूह प्रतिनिधित्व कार्य

सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए नेता समूह के उत्तम प्रतिनिधि होते हैं। अन्य समूहों के सदस्यो के साथ व्यवहार करने में नेता अपने समूह के लिए प्रवक्ता होते हैं। जो भी नेता कहते हैं या करते है वह समूह का स्वर माना जाता है। उदाहरण के लिए राष्ट्रीय स्तर पर जो भी कुछ राष्ट्रीय नेता जैसे प्रधानमंत्री अथवा अन्य नेता दूसरे देशों में अपनी यात्रा के दौरान कहते हैं उसे राष्ट्र का स्वर माना जाता है।

नेता न केवल समूह के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करते हैं वरन् वे समूह को एक विचारधारा भी प्रदान करते हैं। चूंकि नेता समूह के सदस्यो पर अधिकतम प्रभुत्व स्थापित करने की स्थिति में होते हैं। बहुधा समूह की शासकीय विचारधारा उनके नेतृत्व का प्रतिबिम्ब होती है। इस प्रकार बहुत से उदाहरणों मे नेता समूह की विचारधारा तथा सुव्यक्त विशेषताओं को रूप देते हैं।

सारांश

मनुष्यों का व्यवहार समूह से प्रभावित होता है। समूह व्यक्तियों का एकत्रीकरण है । समूह की विशेषताएँ समान लक्ष्य, समान विचारधारा, तथा समूह संरचना एवं कार्य हैं। भीड़ व्यक्तियों का एक अस्थायी एकत्रीकरण होता है जो किसी स्थान पर संयोगवश होता है। भौतिक सामीप्य, समूह के सदस्यो के प्रति आकर्षण, समूह क्रियाओं के प्रति आकर्षण, तनावपूर्ण स्थितियाँ तथा समूह सदस्यता की नैमित्तता कुछ कारक हैं जो समूह गठन की प्रक्रिया तथा समूह की शक्ति को सुसाध्य बनाते हैं। समूहो के प्रकार प्राथमिक और गौण समूह, अनौपचारिक तथा औपचारिक समूह तथा अंतः समूह तथा बाह्य समूह हैं। समूह संसक्तिशीलता में वे सब कारक सम्मिलित है जो व्यक्तियों को समूह के सदस्यो के रूप में इकट्ठा रखते हैं। बाहरी धमकियाँ तथा दूसरे समूहों से प्रतिस्पर्द्धा समूह ससक्तिशीलता को बढ़ाने वाले बाह्य कारक है। दीक्षा में कठिनाई, नेतृत्व की प्रकृति तथा विशिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति समूह के अंदर की कुछ दशाएँ हैं जो बड़े समूहों में समूह ससक्तिशीलता की ओर अग्रसर करती है। समूह के अंदर उपसमूह बन जाते है।

नेता की एक ऐसे व्यक्ति के रूप मे व्याख्या की गई है जो समूह के अन्य सदस्यों की तुलना में अधिक प्रभावी होता है। नेतृत्व की विशेषताओं की व्याख्या नेतृत्व के महापुरुष सिद्धांत, स्थिति परक उपागम तथा परस्पर क्रिया

उपागम के सदर्भ मे की गई है। नेतृत्व की कार्योन्मुखी, सबधोन्मुखी, प्रजातान्त्रिक, सत्तावादी एव अहस्तक्षेप ह वह चमत्कारी नेता की शैलियो की व्याख्या की गई है। नेता के प्रमुख कार्य समूह अनुरक्षण, समूह लक्ष्यो की प्राप्ति करना तथा समूह का प्रतिनिधित्व है।

प्रश्न

1. समूह की परिभाषा दीजिए तथा समूह की विशेषताओ की व्याख्या कीजिए।
2. समूह ससक्तिशीलता को सुसाध्य बनाने वाले कारको का वर्णन कीजिए।
3. विभिन्न प्रकार के समूहो का सोदाहरण वर्णन कीजिए।
4. नेतृत्व के प्रत्यय की व्याख्या कीजिए।
5. नेता की विशेषताओ की व्याख्या कीजिए।
6. नेतृत्व की विभिन्न शैलियो का वर्णन कीजिए।
7. नेता के विभिन्न कार्यों का वर्णन कीजिए।
8. निम्नलिखित पर सक्षिप्त टिप्पणी लिखिए
   (क) समूह निर्माण
   (ख) भीड़
   (ग) समूह ससक्तिशीलता
   (घ) नेतृत्व का महापुरूष सिद्धात
   (ङ) चमत्कारी नेता

एकक 5

समायोजन एवं मानसिक स्वास्थ्य

इस एकक का अध्ययन करने के उपरांत विद्यार्थी इस योग्य होंगे कि वे

- समायोजन की परिभाषा कर सकें;
- मानसिक स्वास्थ्य के प्रत्यय की व्याख्या कर सकें;
- मनन तथा आध्यात्मिक विचारधाराओं का वर्णन करें;
- वैयक्तिक समायोजन में प्रतिबल का महत्व बता सकें;
- सामाजिक समायोजन में व्यक्तित्व संरचना, मन की स्थलाकृति तथा मनोलैंगिक अवस्थाओं की भूमिका की व्याख्या कर सकें;
- तर्कसंगतीकरण, प्रक्षेपण, प्रतिक्रिया विधान, दमन, प्रतिगमन, आक्रामकता, विस्थापन, कल्पना प्रवाह, दिवास्वप्न तथा उदात्तीकरण की रक्षात्मक मनोरचनाओं का संक्षिप्त वर्णन कर सकें;
- व्यावसायिक समायोजन की व्याख्या कर सकें।

समायोजन

दैनिक जीवन में हम सभी प्रायः समायोजन पद का प्रयोग करते हैं। किसी विशेष कक्षा के कमरे में यदि पैंतीस विद्यार्थियों के लिए स्थान है और चालीस विद्यार्थी हो जाते हैं तो अध्यापक छात्रों को समायोजन करने के लिए कहते हैं। बस अथवा रेल में यात्रा करते समय भी हम प्रायः यह पद सुनते अथवा प्रयोग करते हैं। जब भी कोई अतिथि हमारे घर कुछ दिन रहने के लिए आते हैं तो हमें उन्हें अपने घर में समायोजित करना पड़ता है। यद्यपि कभी-कभी इन समायोजनों को करने में हमें कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है परंतु वे व्यक्तिगत के साथ-साथ सामाजिक शांति व सामंजस्य बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

समायोजन के अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द एडजस्टमेंट की व्युत्पत्ति जीवविज्ञान में प्रयुक्त पद 'एडाप्टेशन' से हुई। हम यह जानते हैं कि मानव के क्रम विकास का इतिहास उसकी जलवायु दशाओं के साथ अनुकूलन करने का इतिहास है। प्रकृति तथा सारा संसार ये दोनों ही व्यक्ति से चाहते हैं या समस्याएँ खड़ी करते हैं जिनसे उसे सही-सही व्यवहार करना पड़ता है। माँगों अथवा समस्याओं के साथ व्यवहार करते समय कभी उसे सुख की अनुभूति हो सकती है तो कभी

दुख की। ये समस्याएँ अनंत होती हैं। आप एक का समाधान करिए, दूसरी तैयार है और इसी प्रकार चलता रहता है।

हम अपने प्रिय जनों के साथ परिवार में रहते हुए समाज में भी रहते हैं जिसके प्रति हमारी बहुत सी वचनबद्धताएँ होती हैं। हमे अनेक नियमों एवं अधिनियमों को भी मानना पड़ता है। यदि हम सामाजिक मानकों से विचलित होते है तो हमें इसके लिए दण्ड भुगतना पड़ता है। यह भी सही है कि जब हमारी क्रियाएँ समाज के लिए लाभदायक होती हैं तो समाज द्वारा हमें पुरस्कृत भी किया जाता है। यहाँ तक कि समाज के साधारण व्यक्ति भी अपने समाज में प्रचलित व्यावहारात्मक मानकों के अनुसार चल कर हमेशा अपनी वैयक्तिकता के साथ-साथ सामाजिक शांति तथा सामंजस्य बनाए रखते हैं। ऐसे व्यक्तियों को सामान्य तथा सुसमायोजित कहा जाता है। किंतु प्रत्येक व्यक्ति की जैविक तथा मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ होती हैं जो अपनी पूर्ति चाहती हैं। वे अंशतः व्यक्ति की उस जैविक संरचना से उत्पन्न होती है जो वे दूसरों के साथ रहने के अपने अनुभवों से अर्जित करते हैं।

भोजन अथवा जल की आंतरिक आवश्यकताएँ बालक को रोने अथवा उन्हें पाने के लिए अधीर कर देती हैं। वे दूसरों से इन्हें छीनने में भी नहीं हिचकते। उसी सामाजिक व्यवस्था में बच्चे धीरे-धीरे यह सीख जाते हैं कि चाहे भोजन के लिए जैविक आवश्यकता क्यों न हो भोजन के लिए न तो रोना है और न भोजन दूसरों से छीनना है। वे अपनी आवश्यकताओं (आंतरिक परिवेश) तथा समाज की माँगों के बीच संतुलन तथा सामंजस्य बनाए रखने का प्रयत्न करते हैं। यह एक निरंतर प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी आंतरिक आवश्यकताओ, तनावो, कुण्ठाओं तथा अंतर्द्वंद्वों के साथ समायोजन के लिए प्रयास करते हैं। वे अपनी इन आंतरिक माँगों तथा बाह्य संसार द्वारा आरोपित माँगों के बीच सामंजस्य लाने का प्रयत्न करते है जो उनके व्यवहार द्वारा इंगित होता है। अतः हम कह सकते है कि *समायोजन वह मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अनेक माँगों का प्रबन्ध या सामना करते हैं।*

समायोजन की विशेषताएँ

चूँकि समायोजन एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है अतः अनेक मनोवैज्ञानिकों ने इसकी विशेषताओं की सूची बनाने का प्रयत्न किया है। समायोजन की तीन प्रमुख महत्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित है :

(अ) समायोजन व्यक्ति परक है

चूंकि कोई भी दो व्यक्ति समान नहीं होते अतः उनकी समायोजन की प्रकियाएँ भी एक जैसी नहीं हो सकती। आंतरिक तथा बाह्य माँगों के साथ-साथ कुण्ठा के लिए सहनशीलता, स्नेह की सामर्थ्य, अनुकूलनशीलता, अनुभव से लाभ उठाने की योग्यता, जीवन मूल्य, पूर्वाग्रह, अभिवृत्तियाँ तथा सामाजिक मानक, ये सभी समायोजन को व्यक्ति परक प्रक्रिया बनाते हैं जो केवल उन्हीं व्यक्तियों को ज्ञात होती हैं जो समायोजन कर रहे हैं।

(ब) समायोजन एक निरंतर प्रक्रिया है

समायोजन एक बार का मामला नही है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो जीवन के दबाव तथा तनाव का सामना करते हुए निरंतर चलती है। अतः कोई व्यक्ति जो इस समय बिल्कुल समायोजित प्रतीत हो रहा है उसके साथ गंभीर समायोजन समस्याएँ हो सकती हैं यहाँ तक कि आगे जीवन में किसी भी समय अत्यधिक दबाव वाली स्थिति में संपूर्ण समायोजन असफल हो सकता है।

(स) समायोजन संस्कृतियों के अनुसार भिन्न होता है

कोई व्यक्ति जो किसी एक समाज मे किसी विशिष्ट सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में सुसमायोजित माना जाता है वह किसी भिन्न समाज में भिन्न सांस्कृतिक विन्यास में वैसा नहीं भी माना जा सकता। उदाहरणार्थ किसी धर्म के विशेष मत के नग्न रहने वाले पुरुष अथवा जनजातीय संस्कृतियों के अर्द्ध नग्न नारी एवं पुरुषों

को भिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले भिन्न समाजों में समायोजित नहीं भी समझा जा सकता।

मानसिक स्वास्थ्य

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने व्यक्ति के संपूर्ण स्वास्थ्य के चार पहलू जैसे भौतिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक निश्चित किए हैं। इसका तात्पर्य व्यक्ति के सर्वांगीण कल्याण से है। मनोविज्ञान का आधार दर्शन शास्त्र है। इसे आत्मा तथा मन का अध्ययन माना गया जिसे मानसिक एवं ज्ञानात्मक प्रक्रियाओं ने प्रतिस्थापित कर दिया। किंतु भारतीय दर्शन तथा मनोविज्ञान अभी भी आत्मा, अतरात्मा और मन को मानवीय व्यवहार का महत्वपूर्ण आधार मानते हैं। शरीर तथा मन का आपस में घनिष्ठ सबंध है। अतः शरीर के कल्याण का मन के कल्याण से घनिष्ठ सबंध है तथा इसी प्रकार मन का शरीर से। यदि इन दोनों में से कोई भी एक अस्वस्थ हो जाता है तो उसका प्रभाव दूसरे पर पड़ता है परिणामस्वरूप व्यक्ति का सम्पूर्ण स्वास्थ्य बिगड़ जाता है।

मन का स्वास्थ्य इस बात पर निर्भर करता है कि क्या हम अपने विचारों को सकारात्मक दिशा मे ले जाते है या नकारात्मक दिशा मे। यदि मन नकारात्मक संवेगों जैसे क्रोध, घृणा, ईर्ष्या, भय तथा निराशा आदि को आश्रय देता है तो इसके अप्रत्यक्ष प्रभावों से हमारे शरीर का अनर्थ होना अवश्यंभावी ही है। वे नलिकाविहीन ग्रंथियों को नुकसान पहुँचाते है तथा वृद्धावस्था, बीमारी तथा असामयिक मृत्यु की ओर अग्रसर करते है। दूसरी ओर सकारात्मक संवेग जैसे प्रेम, उल्लास, प्रसन्नता तथा आशा तत्रिकातंत्र के स्वास्थ्य को उन्नत करते हैं और शरीर को स्वस्थ बनाते हैं। सामान्य व्यक्ति के लिए मानसिक स्वास्थ्य का अभिप्राय मानसिक बीमारी की अनुपस्थिति अथवा किसी मानसिक कष्ट के न होने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। वे सोचते हैं कि मन की परेशानियों का मानसिक बीमारियो से संबंध है।

किंतु मानसिक स्वास्थ्य का प्रत्यय सामान्य व्यक्ति के इस प्रत्यय से थोड़ा और अधिक व्यापक है। मानसिक स्वास्थ्य की महत्वपूर्ण विशेषताएँ है : (i) वैयक्तिक पर्याप्तता (ii) सामंजस्यपूर्ण जीवन तथा (iii) सामाजिक प्रभावशीलता। अतः *मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति में विद्यमान बौद्धिक, संवेगात्मक, शारीरिक, सामाजिक व आध्यात्मिक गुणो का सुखद सम्मिश्रण है*। ये गुण हम सभी में जटिल रूप से अंतर्गुम्फित हैं। व्यक्ति शून्य में नहीं रह सकते। उन्हें उन लोगो के साथ निरंतर परस्पर क्रिया करनी ही पड़ती है जो उनका निकटस्थ पर्यावरण तथा समाज बनाते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य का योगिक प्रत्यय

योग की परम्परा भारत में हजारों वर्ष पहले उत्पन्न हुई थी। इसके प्रवर्तक ऋषि तथा महर्षि, महान संत और साधु थे। इन योगियो को मन तथा शरीर पर पूर्ण प्रभुत्व था। इनमें से कुछ ने तो अलौकिक शक्तियाँ भी अर्जित कीं। ये प्राचीन योगी वेदनाओं एवं त्रासदियों के सत्यार्थ की खोज करना चाहते थे। उनकी सत्य की खोज की इच्छा ने उनको मन की सीमाएँ पार करवाईं और ज्ञानेद्रियों द्वारा आरोपित प्रत्यक्षीकरण की सीमाओं पर विजय प्राप्त करवा दी। उन्होंने अपने अनुभवों का तार्किक ढंग से विश्लेषण किया और मानसिक स्वास्थ्य की प्राप्ति की व्यावहारिक व वैज्ञानिक विधियों को जन साधारण की पहुँच तक ला दिया।

योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द 'युज' से हुई है जिसका तात्पर्य है जोड़ना या "सम्मिलन"। योग द्वारा निम्न स्तरीय प्रकृति को उच्चस्तरीय आध्यात्मिक "स्व" तक इस प्रकार पहुँचाना संभव है जिससे कि उच्च स्तरीय "स्व" निम्नस्तरीय "स्व" को दिशा दे सके अथवा "स्व" के साथ सम्मिलन कर सकें। मन हर प्रकार से शरीर को प्रभावित करने में सक्षम है। केवल शारीरिक अभ्यास द्वारा अपेक्षित परिणाम उत्पन्न नही किए जा सकते जब तक मानसिक अनुशासन का समर्थन प्राप्त न हो। अच्छा स्वास्थ्य, शक्तिशाली तत्रिकातत्र तथा अंतःस्रावी ग्रंथियों की

ठीक कार्यवाही बनाए रखना सभव नहीं होता यदि मन को दिशाहीन भटकने दिया जाए।

मनन

विचार की धारा सामान्यतः यादृच्छिक अथवा छितरी हुई होती है। मनन में इन यादृच्छिक क्रियाओं को नियंत्रित करके किसी एक दिशा में निर्देशित किया जाता है। मनन अनेक प्रकार का होता है परंतु अधिकतर लोग अपना अवधान पद या मंत्र उच्चारण, श्वसन क्रिया अथवा सुखद दृश्य या गंध पर केंद्रित करते हैं। इसके लिए आरामदायक स्थिति अथवा आसन तथा शांत, निष्क्रिय मन पूर्वापेक्षित है। मनन में एकाग्रता का लक्ष्य, मन को उपरोक्त मननशील वस्तु पर स्थिर करके विचार प्रवाह को उस पर केंद्रित करना होता है। यदि मनन द्वारा एकाग्रता की प्राप्ति हो जाती है तो मन न केवल उस वस्तु की ओर निर्देशित हो जाता है बल्कि उसमें पूर्णतः विलीन हो जाता है। तब मन का वस्तु के साथ एकाकार हो जाता है और उस समय केवल वह वस्तु ही व्यक्ति की अभिज्ञता में रहती है।

मनन का अभ्यास मन को उत्साहित तथा नवजीवन प्रदान करके इसकी शक्तियो को बहुविध तरीकों से बढ़ा देता है। इससे स्मृति, एकाग्रता तथा अमूर्त प्रत्ययों को समझने की क्षमता बढ़ती है। मनन समायोजन में भी सहायता करता है। इससे दबाव कम हो जाता है जिससे शरीर और मन धीरे-धीरे साम्यावस्था की स्थिति तथा शांति की स्थिति में आ जाते हैं जो मननकर्ता को शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार की व्याधियों से मुक्त कर देता है।

योग द्वारा मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए लोग विभिन्न आध्यात्मिक विचारधाराओ का अनुसरण करते हैं जो निम्न प्रकार हैं :

(क) *भक्ति योग* उपासना तथा प्रेम का मार्ग है। जो व्यक्ति संवेग प्रधान होते हैं वे भक्ति मार्ग का अनुसरण करते हैं। मीराबाई भगवान कृष्ण की महान आध्यात्मिक उपासिका थी। उनकी उपासना भक्ति योग का उदाहरण है।

(ख) *कर्म योग* स्वार्थ रहित सेवा का मार्ग है। यह बिना किसी बाह्य अभिप्रेरक अथवा स्वार्थपूर्ति के कार्य एवं सेवा करना है। महात्मा गाधी का जीवन मानवता की स्वार्थरहित सेवा का उदाहरण है।

(ग) *राज योग* ध्यान प्रार्थना का मार्ग है अर्थात् ऐसा मार्ग जिसमें एकाग्रता द्वारा मन पर नियत्रण तथा स्वामित्व किया जाता है।

(घ) *हठयोग* मे आसनो के अभ्यास तथा श्वसन नियंत्रण की अनुशसा की जाती है ताकि प्रसन्नता, मानसिक सतुलन तथा मन की शांति प्राप्त हो।

(ङ) *ज्ञान योग* उनके लिए है जिनके मन का झुकाव बौद्धिक है तथा यह विवेक और बुद्धि का मार्ग है।

समायोजन के क्षेत्र

जब व्यक्ति और उसके पर्यावरण के बीच के संबध व्यवहार के वर्तमान मानको अथवा जीवन स्तरों के अनुरूप होते हैं तो उसे सामान्य अथवा स्वस्थ समायोजन माना जाता है। बच्चे जो अपने माता-पिता की आज्ञा पालन करते हैं, हठधर्मी नहीं हैं, नियमित रूप से अध्ययन करते हैं, आदतो मे साफ सुथरे हैं, उनके साथी उन्हें पसंद करते हैं तो उन्हें सुसमायोजित कहा जाता है। दूसरी ओर वे बालक जिनका व्यवहार उपरोक्त व्यवहार से भिन्न है उन्हें कुसमायोजित माना जाता है। वास्तव में समायोजन तथा कुसमायोजन के बीच की सीमा रेखा अच्छी प्रकार पारिभाषित नही है।

स्वस्थ जीवन के लिए तीन प्रमुख क्षेत्रों मे उपयुक्त समायोजन करना पड़ता है (1) वैयक्तिक (2) सामाजिक तथा (3) व्यावसायिक।

(1) वैयक्तिक समायोजन

समायोजन एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया पारिभाषित की गयी है जिसके द्वारा व्यक्ति विभिन्न आवश्यकताओं के साथ समायोजन करते हैं। ये आवश्यकताएँ

आंतरिक के साथ बाह्य भी हो सकती हैं। मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ पर्यावरण के साथ परस्पर क्रिया से उत्पन्न होती है और व्यक्ति इन आवश्यकताओं से समायोजन करने के लिए निरंतर प्रतिबल मे रहते हैं।

जब से सभ्यता का विकास हुआ है हमारा समाज निरंतर गतिशील रहा है। परिवर्तन के परिणामस्वरूप ही जीवन तथा मरण, उत्तरजीविता व विलुप्तीकरण तथा विकास व विनाश की प्रक्रिया चलती रहती है। इतने पर भी मानव ने अपना अस्तित्व बनाए रखा, फला-फूला और अब समृद्ध है। हम सभी की यह अनुभूति है कि अभी भी अनेको छोटी-बड़ी चुनौतियाँ हैं जिन पर मानव जाति द्वारा विजय प्राप्त करनी है तथा सामना करना है। ये चुनौतियाँ व्यक्तियों को प्रतिबल मे रखती हैं। समायोजन एव मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए व्यक्ति को जीवन के इन प्रतिबलों के साथ प्रभावशाली समायोजन करना पड़ता है।

प्रतिबल

प्रतिबल का प्रत्यय भौतिक शास्त्र से लिया गया है। जब एक कार दूसरी कार से टकराती है तो दोनो ही क्षतिग्रस्त होती हैं। लचीले फीते को जब किसी विशेष सीमा तक खीचा जाता है तो वह टूट जाता है। इसी प्रकार हमारे जीवन मे अनेक प्रकार की शक्तियाँ अथवा प्रतिबल हमे धकेलते और खींचते रहते हैं। जीवन विभिन्न जैविक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं का सामना करने के लिए निरंतर चुनौती है। भूख, प्यास तथा निद्रा इत्यादि जैविक आवश्यकताएँ हैं जो पूर्ति की माँग करती है। प्रत्येक को स्नेह, उचित देखभाल, सहानुभूति, आपसी समझ तथा मित्रों की आवश्यकता होती है। ये सभी आवश्यकताएँ सामना करने के लिए चुनौतियाँ प्रस्तुत करती हैं। यदि हम सफलतापूर्वक उनका सामना करते है हम सुख एवं संतोष का अनुभव करते है। परंतु ऐसा हमेशा नहीं होता है। प्रायः व्यक्ति को बाधाओं व असफलताओं का सामना करना पड़ता है इससे एक प्रकार का मानसिक असंतुलन उत्पन्न हो जाता है। अतः प्रतिबल की व्याख्या *प्राणी द्वारा समायोजन करने, सामना करने तथा अनुकूलन करने की आवश्यकता द्वारा की जा सकती है।*

प्रतिबल के कारण

प्रतिबल के तीन प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं। इन कारकों को प्रतिबलक भी कहा जाता है। (अ) कुण्ठा (ब) अंतर्द्वंद्व (स) दबाव।

(अ) *कुण्ठा* : जब किसी की आवश्यकताओं की समुचित रूप से पूर्ति नहीं होती तो उसमें कुण्ठाएँ उत्पन्न हो जाती हैं। व्यक्ति की अपनी असफलताओं और सीमाओं के कारण ये मूलरूप से व्यक्ति के अन्दर ही उत्पन्न होती है। ये हीन भावना का सृजन करती है। कुण्ठाएँ पर्यावरण द्वारा भी उत्पन्न हो सकती है।

(ब) अंतर्द्वंद्व : अंतर्द्वंद्व तब उत्पन्न होता है जब आवश्यकताएँ परस्पर विरोधी होती हैं। उदाहरणार्थ विद्यार्थियों को प्रायः विषयों के चयन के विषय में अंतर्द्वंद्व होता है। कोई आत्माभिव्यक्ति के लिए संगीत के पाठ्यक्रम में आगे बढ़ना चाहता है, परंतु व्यवसाय अवसर तथा परिवार के दबावों के कारण उसे विज्ञान अथवा इसी प्रकार के पाठ्यक्रम का चयन करना पड़ता है।

(स) दबाव : दबाव उन अपेक्षाओं तथा जीवन स्तरों के रूप मे होते हैं जो व्यक्ति स्वयं के लिए निर्धारित कर लेते हैं अथवा वे दूसरों द्वारा निर्धारित किए जाते हैं।

प्रतिबल के प्रभाव

प्रतिबल के प्रभाव भी त्रिविध होते हैं। (अ) भौतिक (ब) मनोवैज्ञानिक और (स) सामाजिक।

(अ) भौतिक : प्रतिबल शारीरिक स्वास्थ्य व कल्याण को प्रभावित कर सकते हैं। तीव्र तथा बहुत समय तक चलने वाले प्रतिबल व्यक्ति के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं। प्रतिबल उच्च रक्तचाप का मुख्य कारक है जो हृदय रोगों की ओर अग्रसर करता है। प्रतिबल दशाओं के साथ विभिन्न मनोशारीरिक

बीमारियाँ जैसे दमा, व्रण, आधासीसी, संधिशोथ (गठिया) आदि संबद्ध है। अत्यधिक प्रतिबल शरीर में जैव रासायनिक परिवर्तन उत्पन्न करते हैं जैसे एड्रीनलीन न्यासर्ग का स्राव जो अंगों में दुष्क्रिया की ओर अग्रसर कर सकता है।

(ब) मनोवैज्ञानिक : मध्यम प्रतिबल का भी व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक कल्याण पर प्रभाव पड़ सकता है। यह तनाव, घबराहट, आत्मविश्वास में कमी, चिड़चिड़ापन तथा संवेगात्मक अस्थिरता उत्पन्न कर सकता है। गंभीर मामलों में आत्महत्या संबंधी विचार अथवा प्रयास भी संभव हो सकते हैं।

(स) सामाजिक : प्रतिबल आपसी सामाजिक क्रियाओं तथा उत्पादन क्षमता को भी प्रभावित करता है। तीव्र प्रतिबलों के कारण प्रायः व्यक्ति लोगों के साथ मधुर संबंध एवं मित्रता बनाए रखने में असमर्थ होते हैं। वे उपक्रमण तथा आत्मविश्वास खो देते हैं और परिणामस्वरूप उनकी कार्य कुशलता कम हो जाती है।

प्रतिबल का सामना

प्रतिबल अस्तित्व का एक अंग है तथा इस पर विजय पाई जा सकती है। जीवन में प्रतिबल की कुछ मात्रा आवश्यक है। प्रतिबल के बिना जीवन नीरस तथा चुनौतियों रहित होगा। प्रतिबल का सामना करना स्वास्थ्य तंत्र का अभिन्न अंग है। प्रतिबल का सामना करने में निम्नलिखित पाँच सोपान सहायक हो सकते हैं।

प्रथम सोपान के अंतर्गत दबाव के सामान्य लक्षणों की एक सूची बनाई जा सकती है और उसे जाँच उपकरण के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इसके द्वारा व्यक्ति को यह जानने में सहायता मिलेगी कि वह प्रतिबल के स्तर पर कितना उच्च अथवा निम्न है। इस जाँच सूची में ऐसे लक्षण जैसे सिरदर्द, गर्दन में दर्द, अन्य पीड़ा तथा दर्द (सभी बिना किसी शारीरिक कारण के) निम्न एकाग्रता, सामान्य दुर्बलता, उदासी की भावना, बहिष्करण, अशांत निद्रा आदि सम्मिलित हैं।

द्वितीय सोपान के अंतर्गत साधारण नियमित शारीरिक अभ्यास आते हैं। इनमें शरीर को फैलाना पैरों तथा हाथों के व्यायाम, शरीर को आगे और पीछे झुकाना, सुषम्ना के व्यायाम, पेट के व्यायाम इत्यादि आते हैं। इस प्रकार के व्यायाम मॉंसपेशियों का तनाव, पीड़ा तथा दर्द को दूर करते हैं एवं शरीर को सुनम्य और लचीला बनाते हैं। शारीरिक व्यायामों के साथ श्वसन संबंधी व्यायाम, उचित रक्त परिभ्रमण और मन द्वारा बेहतर एकाग्रता में सहायता करते हैं। *तृतीय सोपान* के अंतर्गत मन के व्यायाम आते हैं। इनमें मनन तथा एकाग्रता संबंधी व्यायाम आते हैं। *चतुर्थ सोपान* है कि भोजन, निद्रा तथा कार्य संबंधी आदतों को ठीक करना चाहिए।

अंतिम सोपान के अंतर्गत व्यक्ति की समाजीकरण की आवश्यकताओं की पूर्ति आती है। शौक तथा बहलाव भी सहायक होते हैं। सामाजिक तथा सामुदायिक क्रियाओं में भाग लेने से भी शिथिलीकरण में सहायता मिलती है।

2. सामाजिक समायोजन

सामाजिक प्राणी होने के नाते हम समाज में रहते हैं। हम दूसरों के बारे में राय बनाते हैं और दूसरों की हमारे बारे में राय होती है। प्रत्येक व्यक्ति समाज की स्वीकृति तथा प्रत्यभिज्ञा चाहता है। हम सामाजिक मानदण्डों के अनुसार व्यवहार करने का प्रयत्न करते हैं ताकि हम दूसरों के साथ समायोजन कर सकें। किंतु यह आसान कार्य नहीं है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व एक अद्वितीय संगठन है। इस संगठन को दूसरे अद्वितीय संगठनों जिन्हें हम समाज कहते हैं, के साथ समायोजन करने के लिए विशेष प्रयत्न करने पड़ते हैं। हम फ्रॉयड के मनोविश्लेष्णात्मक उपागम की व्याख्या कर चुके हैं जो व्यक्ति द्वारा अपने पर्यावरण के साथ समायोजन करने के प्रयत्नों को समझने में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस उपागम में उन्होंने व्यक्तित्व की संरचना, मन की स्थलाकृति तथा मनोलैंगिक विकास की अवस्थाओं की व्याख्या की है।

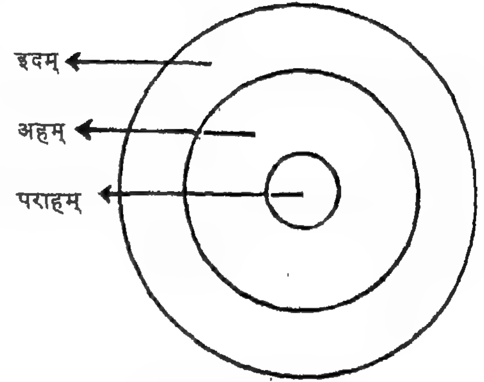
व्यक्तित्व की संरचना

फ्रायड के अनुसार व्यक्तित्व की संरचना में इदम्, अहम् तथा पराअहम् है। यह एक मानसिक अथवा आत्मिक संरचना है जो दिखाई नहीं पड़ती अथवा अनुभव नहीं की जा सकती परंतु इसकी उपस्थिति का अनुमान व्यक्ति के प्रत्यक्ष व्यवहार तथा अभिव्यक्ति से लगाया जा सकता है।

(अ) इदम्-इदम् जैविक अतर्नोदों तथा मूलप्रवृत्तियों से बना है। यह आदिम आवेगों जैसे भूख, प्यास व काम आदि का संचय है। चूँकि ये अंतर्नोद आधारभूत तथा शक्तिशाली होते हैं उन्हें अपनी त्वरित पूर्ति अपेक्षित होती है। बच्चे का मन अधिकतर इदम् से संचालित माना जाता है। इदम् सामाजिक मानदण्डों अथवा नैतिक संरचनाओं की परवाह नहीं करता तथा इच्छाओं की पूर्ति और सुख की कामना द्वारा शासित होता है।

(ब)*अहम्*-अहम् का विकास बच्चों के जीवन में उस समय होने लगता है जबसे वे अपनी माँगों एवं इच्छाओं की पूर्ति करने के लिए संसार के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं। यह जीवन के प्रथम वर्ष के दौरान ही विकसित हो जाता है। इदम् की अनियंत्रित आदिम इच्छाओं तथा वास्तविक यथार्थों जो प्रायः त्वरित संतुष्टि में बाधा डालकर कुण्ठा उत्पन्न करते हैं, के बीच अहम् मध्यस्थ होता है। अतः बच्चे अपनी आवश्यकताओं को किन्हीं विशेष समयों में परिस्थिति के अनुसार स्थगित करना, देर करना अथवा त्याग करना सीख जाते हैं जो तर्क तथा तर्कसंगतीकरण द्वारा होता है और इसे अहम् कहा जाता है। इदम् के आवेगों के लिए पहरेदार अथवा नियंत्रक का कार्य अहम् करता है क्योंकि यह वास्तविकता की माँगों, सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक परंपराओं के प्रति सजग होता है।

(स)*पराअहम्*-पराअहम् का प्रत्यय सद्विवेक अथवा "अंतरात्मा की आवाज" के समान है जो व्यक्ति को सही मार्ग में दृढ़ रहने के लिए सतर्क करता रहता है। पराअहम् का उद्भव बाल्यावस्था मे हो जाता है तथा मध्य तथा उत्तर बाल्यावस्था तक इसका विकास होता रहता है। पराअहम् में माता-पिता के नैतिक मानदण्डों एवं जीवन मूल्यों का समावेश होता है तथा बाद में इसमें उस धर्म व संस्कृति के नियम तथा मानदण्ड आ जाते हैं जिसमें व्यक्ति जन्म लेता है। यह एक ऐसा माध्यम है जो अहम् तक के इरादों एवं इदम् द्वारा इच्छाओं तथा मूल प्रवृत्तियों की संतुष्टि के साधनों का निर्णय व मूल्यांकन करता है।



चित्र 5.1 *व्यक्तित्व की संरचना*

मन की स्थलाकृति

फ्रॉयड के अनुसार मन तीन क्षेत्रों में बंटा होता है– अचेतन, पूर्वचेतन तथा चेतन

(अ) अचेतन मन

अचेतन मन जैविक अंतर्नोदों और प्रेरणाओं से बना है। हम इन अतर्नोदों को अशतः भूख, प्यास व काम के रूप में अनुभव करते हैं। मन का यह क्षेत्र व्यक्ति की अभिज्ञता से परे है क्योंकि अचेतन की विषय वस्तु मुख्यतः काम प्रवृत्तियाँ और विद्वेषपूर्ण प्रेरणाएँ जिनमें इदम् सबंधी आवेग आते हैं, होती है। उनकी प्रत्यक्ष और बारंबार अभिव्यक्ति सामाजिक रूप से मान्य नहीं होती है। अतः व्यक्ति अचेतन मन की विषय वस्तु को एक विशेष प्रकार का विस्मरण जिसे "दमन" कहा जाता है, द्वारा भूल जाता है। रक्षात्मक मनोरचनाओं

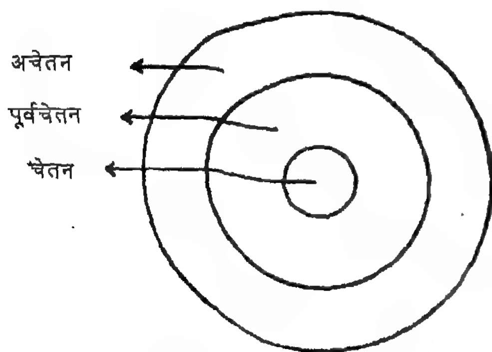
के विषय में आगे उल्लेख किया गया है। दमन में व्यक्ति दुश्चिंता का परिहार करने के लिए कुछ विशेष आवेगों, प्रेरणाओं तथा घटनाओं के प्रति अभिज्ञ न रहने के लिए अभिप्रेरित होता है। यह रक्षात्मक मनोरचनाओं (फ्रॉयड द्वारा प्रवर्तित शब्द) में सबसे आधारभूत है और दमन तथा अन्य रक्षा युक्तियों के विषय में आप इस एकक में आगे पढ़ेंगे।

(ब) पूर्वचेतन मन

पूर्वचेतन अथवा अर्द्धचेतन मन में ऐसे तत्व होते हैं जो व्यक्ति के अनुभवों का भाग होते हैं परंतु वर्तमान में वे व्यक्ति की अभिज्ञता से परे होते हैं। उन्हें किसी भी समय चेतना मे लाया जा सकता है। किंतु पूर्वचेतन मन को एक अधिक महत्वपूर्ण तथा व्यवहार कुशल कार्य करना होता है। यह सामाजिक रूप से अस्वीकृत, प्रावरोधित तथा वर्जित विचार जो बलपूर्वक अभिव्यक्ति चाहते हैं उनका दमन अथवा नियंत्रण करने में सहायता करता है। साथ ही पूर्वचेतन मन प्रायः चेतन मन के निरर्थक तथा कम मान्यता वाले विचारों एवं मतों को दबाने में अकसर सहायता करता है।

(स) चेतन मन

चेतन मन चेतना का ही दूसरा नाम है। यह व्यक्ति की तात्कालिक अभिज्ञता होती है।



चित्र 5.2 *मन की स्थलाकृति*

मनोलैंगिक विकास की अवस्थाएँ

फ्रॉयड के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत के अनुसार इदम् की शक्ति मानव विकास की विभिन्न अवस्थाओं मे शरीर के विभिन्न अगों अथवा कामोद्दीपक क्षेत्रों द्वारा व्यवस्थित ढंग से अभिव्यक्त होती है। मनोलैंगिक विकास की अवस्थाएँ अथवा काल है — (क) मुखरति अवस्था (ख) गुदा संबंधी (ग) लिंग अवस्था (घ) अंतर्हिति अवस्था (ङ) जननांगी अवस्था। इन अवस्थाओं में से किसी भी अवस्था की अति या अल्प संतुष्टि के कारण स्थायीकरण हो सकता है अर्थात् उस अवस्था के विकास में वहीं रुकावट हो जाती है।

(क) मुखरति अवस्था

जीवन के प्रथम वर्ष में मुँह शिशु का कामोद्दीपक क्षेत्र होता है। इसका तात्पर्य है कि शिशु मुँह तथा इससे संबंधित अंगों द्वारा संतुष्टि पाते हैं। खाना, नाखून काटना तथा चूसना सुखद क्रियाएँ हैं।

(ख) गुदा सबंधी अवस्था

जीवन के दूसरे अथवा तीसरे वर्षों के दौरान सांस्कृतिक मानकों तथा बालक के सांस्कृतिक विन्यास में प्रचलित आदतो के अनुसार शरीर के व्यर्थ पदार्थों का त्याग (मलमूत्र इत्यादि) एक चुनौती प्रस्तुत करता है। इस अवस्था में गुदा तथा उससे संबंधित अंग कामोद्दीपक क्षेत्र होते हैं। यह अवस्था गुदा तुष्टि अन्वेषण से जानी जाती है क्योंकि इस अवस्था में बालक मल त्याग की प्रक्रिया के साथ प्रयोग किया करते हैं। मलमूत्र प्रशिक्षण अर्थात् मलोत्सर्ग तथा मलत्याग की सही आदतों की माता-पिता द्वारा बच्चे को शिक्षा दी जाती है।

(ग) लिंग अवस्था

जीवन के तृतीय वर्ष के दौरान बच्चे लिंग अवस्था में प्रवेश करते हैं जिसमें गुदा संबधी क्षेत्र से जनन अंगों की ओर झुकाव हो जाता है। बालक की अपने द्वारा स्वयं की खोज तथा जिज्ञासा स्वयं के सुख की

ओर ले जाती है जिससे माँ-बाप क्रोधित होते और डाँटफटकार करते हैं अतः जनन अंग कामोद्दीपक क्षेत्र होते हैं। इस अवस्था में बच्चे अपने से विपरीत लिंग के माता-पिता (लड़की पिता के प्रति और लड़का माँ के प्रति) के प्रति तीव्र काम आकर्षण विकसित कर सकते हैं और अपने ही लिंग के अभिभावक को अपने प्रतिद्वंद्वी के रूप में देखने लगते हैं। लड़कों के मन में माँ के प्रति प्रेम तथा इच्छा तथा पिता के प्रति ईर्ष्या तथा प्रतिद्वंद्विता को "ओडिपस ग्रंथि" का नाम दिया गया है। लड़कियों मे इसी प्रकार की भावना को फ्रॉयड ने "इलेक्ट्रा ग्रंथि" की संज्ञा दी है।किंतु लिंग अवस्था के अंत में बच्चे की पाँच अथवा छः वर्ष की आयु के लगभग यह सुलझ जाती है।

(घ) अंतर्हिति काल

इस अवस्था में बच्चे ओडिपस तथा इलेक्ट्रा ग्रंथियों पर विजय पाने के लिए विरोधी लिंग के अभिभावक के प्रति अपनी घनिष्ठता तथा इच्छाएँ त्याग सकते हैं। वे समलिंगीय अभिभावक के प्रति अपनी घनिष्ठता को तादात्मयता द्वारा तथा उनके गुणों को अपने अंदर समाविष्ट करके पुनः सुदृढ़ करते हैं। अतः पराहम् जिसका अंकुरण लिंग अवस्था के एकदम अंत में होता है अंतर्हिति अवस्था में अब इसका परिपक्वन होता है। यह अवस्था लगभग छः वर्ष से वयःसंधि के प्रारम्भ तक रहती है। बच्चे अब अपना अवधान काम संबंधित तन्मयता से हटा कर विद्यालय कार्यों तथा जीवन के क्षेत्रों में श्रेष्ठता प्राप्त करने में लगाते हैं।

(ङ) जननांगी काल

यह मनोलैंगिक विकास की पाँचवी व अंतिम अवस्था है जिसमें वयःसंधि के परिणामस्वरूप शारीरिक परिपक्वता के कारण यौन संबंधी इच्छाओं का पुनरुत्थान होने लगता है। इस अवस्था में लिंग अवस्था की दबी हुई काम इच्छाएँ पुनः प्रकट होकर केवल विषम लिंगीय दूसरे लोगों पर स्थानांतरित हो जाती है। अतः यह अवस्था प्रौढ़ावस्था का प्रतिनिधित्व करती है। फ्रॉयड के अनुसार यह अवस्था अत्यंत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वयस्क विषम लिंगी यौन संबंध, जो यौन मैथुन, प्रजनन, तथा उपजाति प्रवर्धन का आधार है, को बताती है।

सामाजिक रूप से समायोजित व्यक्ति वही है जो सामाजिक रूप से स्वीकृत साधनों द्वारा सामाजिक आवश्यकताओं तथा चुनौतियों का सामना करते हैं। जो सामाजिक मानकों के अनुरूप चलने में असफल हो जाते हैं उन्हें कुसमायोजित व्यक्ति माना जाता है।

रक्षात्मक मनोरचनाएँ

सभी प्रकार के प्रतिबलक संवेगात्मक असंतुलन पैदा करते हैं तथा मानसिक संतुलन को भंग करते हैं। किंतु हमारे अंदर विशिष्ट विधियों द्वारा इस संतुलन को पुनः प्राप्त करने तथा बनाए रखने की स्वाभाविक प्रवृति है। ये विशिष्ट मनोरचनाएँ हैं जिनका तात्पर्य किन्ही रूपो में स्वयं को छलना है। आश्चर्य तो यह है कि हम हमेशा इन "स्वयं" को छलने वाली समायोजन रचनाओ की उपस्थिति से पूर्ण अभिज्ञ नहीं होते और न ही हम उनकी ओर अपना अवधान देना पसंद करते हैं फिर भी ये हमारी असफलता तथा कुण्ठा की भावनाओं को मंद करके हमारा आतरिक सामंजस्य सुरक्षित रखती हैं। मनोविज्ञान में ऐसी प्रतिरक्षा को रक्षात्मक मनोरचनाएँ कहा गया है। रक्षात्मक मनोरचनाएँ वे विधियाँ हैं जिनसे अहम् स्वयं को उस दुश्चिंता के अनुभव से बचाता है जो साधारणतया अचेतन आवेगों को पहचानने के परिणामस्वरूप अथवा अनैतिक कार्यों का उत्तरदायित्व स्वीकार करने पर होती है। अतः अहम् को या तो वास्तविकता को अस्वीकार करना पड़ता है या विकृत करना पड़ता है। अहम् रक्षात्मक मनोरचनाओं का सामान्यतः अचेतन रूप से उपयोग किया जाता है। यद्यपि अहम् की अधिकांशतः प्रतिक्रियाएँ चेतन हैं किंतु कभी-कभी इसकी प्रक्रियाएँ आंशिक रूप से अचेतन भी होती हैं।

रक्षात्मक मनोरचना पद का प्रयोग सर्वप्रथम फ्रॉयड

द्वारा किया गया था। मूलतः रक्षात्मक मनोरचना पद का तात्पर्य स्व-रक्षा की युक्ति है। इसका अर्थ उस आदत से है जो व्यक्ति सामान्यतः अपनी रक्षा करने के साथ-साथ अपने लिए, अपना स्वयं का सम्मान बढ़ाने के लिए विकसित कर लेते हैं। वे *विशिष्ट प्रतिक्रियाएँ जो विभिन्न प्रकार की कुण्ठाओं की धमकियों से स्वयं की रक्षा के लिए प्रयुक्त की जाती है, रक्षात्मक मनोरचनाएँ कहलाती है।*

रक्षात्मक मनोरचनाओं की दो सामान्य विशेषताएँ हैं प्रथम जब धमकी आती है तो यह स्व (स्वछवि) को नुकसान या क्षति होने से बचाती है। द्वितीय, ये रक्षात्मक मनोरचनाएँ अचेतन या आंशिक अचेतन होती हैं ये सोच समझकर प्रयुक्त नही की जातीं। जब व्यक्ति रक्षा युक्ति का प्रयोग करते है तो वे इसका उद्देश्य नही समझते। बाद में वे इसके बारे में सजग हो सकते हैं और नहीं भी हो सकते। वास्तव में यदि सीधा पूछा भी जाए तो व्यक्ति प्रायः उस उद्देश्य से ही इनकार कर देते हैं जिसके लिए इसे प्रयुक्त किया गया था।

इस संबंध में एक बात स्मरणीय है कि हम सभी इन मनोरचनाओं में सभी अथवा कम से कम कुछ तो प्रयोग करते ही हैं। इसके अतिरिक्त इनका प्रयोग बहुधा किया जाता है। यदि इन युक्तियों को यदा कदा प्रयोग किया जाए तो वे नुकसानदायक नहीं है और वास्तव में तनाव को कम करके अथवा तनाव मुक्त करके अच्छा ही करेंगी। यदि इनका अति प्रयोग किया जाए तो समायोजन में गम्भीर कठिनाइयाँ हो सकती हैं यहाँ तक कि मानसिक व्याधियाँ भी हो सकती हैं। कुछ रक्षात्मक मनोरचनाएँ हैं (क) तर्क संगतीकरण (ख) प्रक्षेपण (ग) प्रतिक्रिया-विधान (घ) दमन (ङ) प्रतिगमन (च) आक्रामकता (छ) विस्थापन (ज) कल्पनाप्रवाह (झ) दिवास्वप्न (ञ) उदात्तीकरण।

(क) तर्क संगतीकरण

किसी सामान्य व्यक्ति के लिए तर्क संगतीकरण का अर्थ है बहाने बनाना अथवा वास्तविक तर्कों के स्थान पर स्वीकृत तर्क देना। यह 'अंगूर खट्टे' प्रतिक्रिया भी कहलाती है। इस युक्ति से कुंठित व्यक्ति स्वयं को किसी ऐसी सांत्वना से आश्वस्त करते हैं जो मूलतः झूठ है पर उन्हें आसानी से स्वीकृत है। इसका प्रयोग मुख्यतः बिना किसी चेतन उद्देश्य के वास्तविक तर्कों के स्थान पर अच्छे तर्कों को देकर अपने आत्म सम्मान तथा अपने मित्रों व दूसरों की अच्छी राय बनाए रखने के लिए किया जाता है। व्यक्ति इसको इसलिए प्रयोग करते हैं ताकि क्रियाएँ न्यायोचित, तर्क संगत तथा समाज द्वारा श्लाघ्य प्रतीत हो। प्रचलित मुहावरे जैसे 'देर आए दुरुस्त आए' "सुदर किंतु सुस्त" या "मस्तिष्क विहीन सौदर्य " तर्क संगतीकरण के उदाहरण हैं।

(ख) प्रक्षेपण

थोड़े शब्दों में प्रक्षेपण 'बलि का बकरा' युक्ति है। इस प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति अपनी कमियों अथवा असफलताओं के लिए दूसरों को उत्तरदायी ठहराते हैं। विशेषकर व्यक्तिगत दोष अथवा कमियाँ दूसरों पर प्रक्षेपित की जाती हैं। इसका साधारणतम् उदाहरण असफल विद्यार्थियों में पाया जाता है जो अपनी असफलता का कारण "खराब शिक्षण" "लम्बा अथवा कठिन प्रश्न पत्र" अथवा "अस्वस्थता" बताते हैं। इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्तिगत दोषो के आरोपण के प्रयत्न से वे अपने अहम् को स्व निंदा से बचाते हैं।

(ग) प्रतिक्रिया-विधान

यह अवांछित तथा सामाजिक रूप से अमान्य इच्छाओं पर नियंत्रण करने की एक असामान्य विधि है। यह उनके अस्तित्व को पूर्ण रूपेण अस्वीकृत कर बिल्कुल ही विरोधी गुणों का विकास करके, जिससे मूलभूत अभिप्रेरकों को छिपाने तथा रोकने में सहायता मिले, किया जाता है। शेक्सप्रीयर ने ठीक ही कहा है कि बहुत ज्यादा विरोध करना एक प्रकार से अपना अपराध स्वीकार करने के समान है। यह सर्वविदित तथ्य है कि भ्रष्टाचार तथा सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध बोलने वाले मुजाहिद स्वयं उन्ही कार्यों के अपराधी होते हैं जिनकी वे दूसरों मे निंदा करते हैं।

(घ) दमन

यह विस्मरण की एक अचेतन प्रक्रिया है। इसमे व्यक्ति अपने जीवन की कुछ अवांछित घटनाओ को मन के सबसे गहरे स्तर पर दमित करने का प्रयत्न करते हैं। ये चेतन अभिज्ञता में से उन विचारों तथा आवेगों का अनैच्छिक तथा स्वतः बहिष्करण है जो व्यक्ति को अशांत कर देते हैं क्योंकि उनकी प्रकृति कष्टदायक तथा अनैतिक होती है।

(ङ) प्रतिगमन

स्व की रक्षा करने में व्यक्ति अपने जीवन के पूर्वकाल अथवा सुखद काल स्थिति मे पहुँच जाते हैं। ऐसा करने में व्यक्ति पूर्वकाल के व्यवहार के ढंग यहाँ तक कि चितन तथा अनुभव भी अपना लेते है। कभी-कभी यह पाया गया है कि जब परिवार में दूसरे बच्चे का जन्म होता है तो पहला बच्चा बाल्यावस्था का वही व्यवहार प्रदर्शित करने लगता है जो उसने कभी छोड़ दिया था। इस प्रकार के बड़े बच्चों मे अचानक बिस्तर गीला करना शुरू हो जाना प्रतिगमन प्रतिक्रिया के कारण हो सकता है। "वृद्धावस्था दूसरा बचपन होता है" वाली प्रचलित कहावत प्रतिगमन प्रतिक्रियाओं का ही उदाहरण है।

(च) आक्रामकता

यह क्रोध की हिंसात्मक अभिव्यक्ति है जो या तो शब्दों द्वारा या माँसपेशियो की तीव्र गतियो से प्रकट होती है। यह कहा जाता है कि अधिकतर आक्रामक प्रतिक्रियाएँ बाल्यावस्था में केवल अन्य लोगों के अनुकरण से सीखी जाती हैं। किंतु अधिकतर आक्रामक व्यवहार की अभिव्यक्ति कुण्ठा के प्रति की गयी प्रतिक्रिया होती है। ऐसी स्थितियों में व्यक्ति या तो मार्ग में आने वाली बाधा या बाधा के किसी स्थानापन्न पर आक्रमण करते हैं जो उनकी लक्ष्य की प्राप्ति को रोकता है। चूँकि यह आक्रमण कुण्ठा को जन्म देने वाली बाधा पर विजय पाने के लिए होता है आक्रामकता उच्च समायोजक हो सकती है। हमारे सांस्कृतिक तथा सामाजिक मानक आक्रामकता पर प्रतिबंध लगाते हैं क्योकि हमारा अस्तित्व सामाजिक समूहों में मिलकर रहने पर निर्भर है।

तीव्र आक्रामक प्रतिक्रियाएँ किन्हीं विशेष स्थितियों में आवश्यक तथा स्वीकृत मानी जाती हैं। उदाहरणार्थ व्यक्ति को समाज द्वारा किसी शस्त्रधारी डाकू अथवा अपराधी से अपने अथवा अपने परिवार के सदस्यों की जीवन रक्षा के लिए किसी भी प्रचण्ड कार्य (यहाँ तक कि हत्या) की स्वीकृति होती है। किन्तु साधारणतया आक्रामकता समायोजन की संतोषदायक प्रविधि नहीं है। ये कुण्ठा के साथ होने वाले मानसिक व शारीरिक तनावों को अस्थायी रूप से ही कम करती हैं किंतु अंत में इसको सामाजिक अस्वीकृति, दण्ड अथवा तीव्र अपराध भावना का सामना करने की सम्भावना होती है। बदले में कुण्ठा के नए स्रोत का सृजन होता है।

(छ) विस्थापन

स्व रक्षा की एक और मनोरचना विस्थापन है। इस मनोरचना द्वारा व्यक्ति अपने प्रेम अथवा घृणा की कुंठित भावनाओं को किसी उस वस्तु अथवा व्यक्ति के प्रति व्यक्त करते हैं जो उस विशेष वस्तु अथवा व्यक्ति से अलग हैं जो वास्तव मे कुण्ठा के कारण है। उदाहरणार्थ एक निःसंतान दंपत्ति अथवा अविवाहित प्रौढ़ व्यक्ति प्रायः पालतू पशु जैसे बिल्ली, कुत्तों इत्यादि से अत्यधिक प्रेम प्रदर्शित करते हैं। यहाँ बच्चे अथवा जीवन साथी के लिए कुण्ठा की भावनाएँ स्थानातरित होकर पशुओं के प्रति स्नेह मे अभिव्यक्त होती हैं। जब किसी कर्मचारी को कार्यालय कार्य में किसी ग़लती पर अधिकारी की डाँट सुननी पड़ती है तो वह अधिकारी के विरुद्ध विरोध प्रकट करने में असफल होता है। उसे चुपचाप अप्रिय कार्यालय स्थिति द्वारा उत्पन्न बुरी भावनाओं को सहना पड़ता है। जब वह घर लौटता है तो वह बिना किसी दोष के अपने जीवन साथी अथवा बच्चों पर क्रोध प्रदर्शित करता है। इस प्रकार वह अपनी उन दबी हुई आक्रामक भावनाओ को निकाल देता है जो अपने अधिकारी की ओर निर्दिष्ट होनी चाहिए थीं। इसी

प्रकार विद्यार्थी कक्षा में बुरे निष्पादन के कारण शिक्षक द्वारा डाँट फटकार अथवा दण्डित किए जाने के बाद जब घर लौटते हैं तो वे अपनी माँ अथवा भाई बहनों के साथ किसी भी बहाने से लड़ाई शुरू कर देते हैं।

(ज) कल्पना प्रवाह

जब व्यक्ति की इच्छाएँ वास्तविकता द्वारा कुंठित हो जाती हैं तो वे अपने बनाए हुए संसार में आ जाते हैं जो काल्पनिक तत्वों का बना होता है जहाँ उनकी अपूर्ण कुंठित इच्छाओं की संतुष्टि होती है। इस प्रक्रिया को कल्पना प्रवाह कहते हैं। वास्तव में यह पलायन मनोरचना है जिससे व्यक्ति वास्तविकता की कुंठाओं से अस्थायी तौर पर पलायन ढूँढते हैं। इसे पूर्णतः सामान्य क्रिया माना जाता है जब तक कि यह उस सीमा तक नहीं ले जाई जाती कि व्यक्ति वास्तविक संसार में संतुष्टि पाने के लिए प्रयत्न करना ही छोड़ दे। इस बात के प्रमाण है कि कल्पना प्रवाह में आसक्ति संसार भर के सामान्य बच्चों तथा दोनो लिंगों के युवा लोगों की सार्वभौमिक क्रिया है। यही नहीं, सृजनात्मक कल्पना प्रवाह, कल्पना को समृद्ध करती है और कभी-कभी संसार में बहुत सी वस्तुओं के सृजन तथा योगदान में सहायता करती है। कवि, वैज्ञानिक, उपन्यासकार, वास्तुकार तथा कलाकार सृजनात्मक कार्यों की कुछ अवस्थाओ में कल्पना में आसक्त होते हैं।

(झ) दिवा स्वप्न

मूलतः कल्पना प्रवाह तथा दिवा स्वप्न में कोई अंतर नहीं है फिर भी दिवा स्वप्न को तीव्र कल्पना प्रवाह के रूप में समझा जा सकता है। जब व्यक्ति दिवा स्वप्न में आसक्त होते हैं तो वे वास्तविकता से अस्थायी रूप में अलग हो जाते हैं तथा कल्पना के ससार में खो जाते हैं। मन की इस दशा को *मन तरंग* या *मनोविलास* भी कहते हैं।

(ञ) उदात्तीकरण

उदात्तीकरण में व्यक्ति की जो आवश्यकता संतुष्ट नहीं हो सकती है वह उसे अन्य किसी विकल्प लक्ष्य को स्वीकार करने की ओर अग्रसर करती है जो समाज द्वारा मान्य हो तथा कभी-कभी समाज द्वारा श्लाध्य अभिव्यक्ति के मार्ग की ओर भी अग्रसर करती है। कुंठित प्रेमी द्वारा युद्ध क्षेत्र में वीरता का उच्चतम पुरस्कार प्राप्त करना उदात्तीकरण का एक उदाहरण हो सकता है।

व्यावसायिक समायोजन

जो धन हम व्यय करते हैं उसे विशिष्ट कार्यों द्वारा कमाना होता है जिन्हें व्यवसाय या जीवनवृत्ति कहते हैं। अतः व्यवसाय हमारे जीवन का अंग है चाहे वह कृषि, उद्योग, चिकित्सा अथवा शिक्षण आदि हो। प्रत्येक व्यवसाय में व्यक्ति को वहाँ कार्य करने वाले अनेक व्यक्तियों के साथ व्यवहार करना होता है। आवश्यकताओं की पूर्ति का स्रोत होने के कारण व्यवसाय अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। प्रत्येक व्यक्ति से अपने सीखे हुए कार्य द्वारा उपयोगी भूमिका निर्वाह करने की अपेक्षा की जाती है।

व्यवसाय के क्षेत्र में समायोजन से अभिप्राय *कार्य जगत के सबंध में अन्य व्यक्तियो के साथ सामजस्य पूर्ण जीवन यापन है जिसमे भिड़त या संघर्ष बहुत कम हो।* किसी व्यक्ति के व्यावसायिक समायोजन का मापन व्यक्ति की व्यवसाय से संतुष्टि की अपेक्षा तथा उसको व्यवसाय द्वारा दी जाने वाली संतुष्टि के बीच संतुलन की मात्रा से किया जाता है। नीचे कुछ समस्याएँ दी गई हैं जिनका व्यावसायिक समायोजन करने मे सामना होने की सम्भावनाएँ है—

— कुछ आंतरिक अथवा बाह्य बाधाएँ जिनका सामना व्यक्ति को लक्ष्य प्राप्ति के प्रयत्न में करना पड़ता है। लक्ष्य प्रायः व्यावसायिक सफलता अथवा संतुष्टि होते हैं।

— व्यवसाय के अंश के रूप में कार्य की प्रकृति तथा कर्त्तव्य एवं कार्यों द्वारा उत्पन्न हुए संघर्षों को सुलझाना।

— व्यक्ति के कार्य की नगण्यता, पारिभाषित कार्य की कमी, समुदाय में व्यक्ति के कार्य की एकांतता, आर्थिक असुरक्षा के कारण जीवन वृत्ति में उत्पन्न कुंठा पर विजय पाना।

सारांश

समायोजन की ऐसी मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप मे विवेचना की गई है जिसमें व्यक्ति विभिन्न आवश्यकताओं का प्रबन्ध अथवा सामना करते हैं। समायोजन एक व्यक्तिपरक तथा सतत प्रक्रिया है। यह प्रत्येक संस्कृति में भिन्न होता है। मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति में विद्यमान बौद्धिक, संवेगात्मक, भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक गुणों का सम्मिश्रण है। मानसिक स्वास्थ्य का योगिक प्रत्यय व्यक्ति की निम्नतर प्रवृत्ति को उच्चतर आध्यत्मिक स्व के साथ आत्मसात करने पर बल देता है।

मनन मे यादृच्छिक क्रियाओ को नियत्रित करके उन्हें एक निश्चित दिशा प्रदान की जाती है भक्ति योग, कर्मयोग, राज योग, हठ योग तथा ज्ञान योग ये विभिन्न आध्यात्मिक विचारधाराएँ है।

समायोजन के तीन प्रमुख क्षेत्र—वैयक्तिक, सामाजिक तथा व्यावसायिक है। प्रतिबल की परिभाषा प्राणी पर समायोजन, सामना तथा अनुकूलन की आवश्यकता के रूप में की गई है। प्रतिबल के तीन मुख्य कारण कुण्ठा, अतर्द्वंद्व तथा दबाव है। प्रतिबल व्यक्ति के भौतिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक पहलुओं को प्रभावित करते हैं। प्रतिबल से समायोजन करना एक सोपानबद्ध प्रक्रिया है।

दूसरों के साथ समायोजन करना सामाजिक समायोजन कहलाता है। व्यक्तित्व संरचना इदम्, अहम् तथा पराअहम् की बनी होती है। इदम् मे जैविक अतर्नोद तथा मूल प्रवृत्तियाँ होती हैं। इदम् की स्वच्छद आदिम इच्छाओ और वास्तविक मान्यताओ के बीच अहम् मध्यस्थ होता है। पराअहम् अंतरात्मा की आवाज़ होती है जो व्यक्ति को सही मार्ग पर दृढ़ रहने के लिए सतर्क करती है। मन की स्थलाकृति मे अचेतन, पूर्वचेतन तथा चेतन होते हैं। अचेतन मन में जैविक अतर्नोद तथा इच्छाएँ रहती है और वह व्यक्ति की अभिज्ञता के परे होता है। पूर्व चेतन मन में ऐसे तत्व होते हैं जो व्यक्ति के अनुभव का भाग होते हैं किंतु वर्तमान में वे अभिज्ञता से परे हैं। चेतन मन में व्यक्ति की तात्कालिक अभिज्ञता होती है। मनोलैगिक विकास की अवस्थाएँ मुखरति, गुदा सबधी, लिग, अन्तर्हिति तथा जननागी होती है। वे विशिष्ट प्रतिक्रियाएँ जो विभिन्न प्रकार की कुंठाओ की धमकियों से स्व की रक्षा हेतु प्रयुक्त की जाती है रक्षात्मक मनोरचनाएँ कहलाती हैं। कुंठित व्यक्ति तर्क-सगतीकरण द्वारा अपनी क्रियाओं को न्यायोचित तर्क सगत तथा सामाजिक रुप से श्लाघ्य बनाते हैं। प्रक्षेपण द्वारा व्यक्ति अपनी कमियों या असफलताओं को किसी दूसरे पर आरोपित करते हैं। प्रतिक्रिया विधान मे व्यक्ति सामाजिक रूप से अमान्य इच्छाओं के अस्तित्व को पूर्णतः अस्वीकार करते हैं। दमन जीवन के अनैतिक आवेगो द्वारा दुखद घटनाओं को विस्मरण करने की अचेतन प्रक्रिया है। प्रतिगमन अपने जीवन के पूर्व काल अथवा सुखद समय मे जीना है। आक्रामकता शाब्दिक अथवा तीव्र मौसपेशीय गतियों द्वारा क्रोध की हिंसक अभिव्यक्ति है। विस्थापन मे व्यक्ति अपने प्रेम तथा घृणा सबधी कुंठित भावनाओं को उस विशेष वस्तु या व्यक्ति के स्थान पर जो कुठा का कारण है, से अन्य किसी वस्तु अथवा व्यक्ति के प्रति व्यक्त करते हैं। जब व्यक्ति अपनी अतृप्त इच्छाओ की सतुष्टि अपने स्वयं के बनाए संसार मे करते हैं तो उसे कल्पना प्रवाह की पलायन मनोरचना कहते हैं। दिवास्वप्न तीव्र कल्पना प्रवाह है। कुठित आवश्यकताओं को जब उच्चतर लक्ष्यो की ओर मोड़ दिया जाता है तो उदात्तीकरण की रक्षात्मक मनोरचना कहलाती है। व्यावसायिक समायोजन का तात्पर्य अपने व्यवसाय में न्यूनतम भिड़ंतो तथा संघर्षों के साथ व्यस्त रहना है।

प्रश्न

1. समायोजन तथा मानसिक स्वास्थ्य का वर्णन कीजिए।
2. प्रतिबल के कारणो तथा प्रभावों का वर्णन कीजिए। हम प्रतिबल का सामना कैसे करते हैं?
3. सामाजिक समायोजन मे मनोविश्लेषणात्मक उपागम की सार्थकता की व्याख्या कीजिए।
4. किन्ही तीन रक्षात्मक मनोरचनाओ का वर्णन कीजिए।

5. निम्न वाक्यों को पूर्ण कीजिए।
   (क) समायोजन की तीन विशेषताएँ हैं—
   1.
   2.
   3.
   (ख) भक्ति योग .... है।
   (ग) मन की स्थलाकृति मे .... है।
   (घ) मनोलैंगिक विकास की पाँच अवस्थाएँ .... हैं।
   (ङ) तर्क-संगतीकरण .... है।
6. निम्न को अनुरूप कीजिए।

(i)	अहम्	स्व का बाह्य आरोपण
(ii)	मुखरति अवस्था	ध्यान प्रार्थना
(iii)	मन्त्र उद्दीपक	वास्तविकता की माँगो की अभिज्ञता
(iv)	प्रक्षेपण	मनन
(v)	राजयोग	मनोलैगिक विकास

7. निम्नलिखित पर सक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
   (क) समायोजन की विशेषताएँ
   (ख) आध्यात्मिक संप्रदाय
   (ग) मानसिक स्वास्थ्य का योगिक प्रत्यय
   (घ) मनन
   (ङ) व्यक्तित्व की संरचना
   (च) मन की स्थलाकृति
   (छ) मनोलैगिक विकास की अवस्थाएँ
   (ज) व्यावसायिक समायोजन

एकक 6

विकासात्मक व्याधियाँ एवं व्यावहारात्मक समस्याएँ

इस एकक को पढ़ने के बाद विद्यार्थी इस योग्य होंगे कि वे

- असामान्यता, विकासात्मक व्याधियों एवं व्यावहारात्मक समस्याओं के प्रत्ययों को जानें;
- स्वलीनता के प्रत्यय, विशेषताएँ, कारण तथा नियंत्रण की व्याख्या कर सकें;
- मानसिक मंदन के प्रत्यय, प्रकार, सहायक कारक तथा नियंत्रण का वर्णन कर सकें;
- समाज विरोधी व्यक्तित्व व्याधि के प्रत्यय, विशेषताएँ, कारणात्मक कारक तथा नियंत्रण का वर्णन कर सकें;
- नशीली दवाएँ, सहनशीलता, प्रत्याहार लक्षण, नशीली दवाओं का व्यसन तथा नशीली दवाओं पर मानसिक निर्भरता के प्रत्ययों, का वर्णन कर सकें;
- नशीली दवाओं के व्यसन के कारण तथा नियंत्रण का वर्णन कर सकें;
- हठोद्रेक के प्रत्यय, कारण तथा नियंत्रण का वर्णन कर सकें;
- झूठ बोलने के प्रत्यय, प्रकार तथा नियंत्रण की व्याख्या कर सकें;
- पलायन, चोरी करना तथा बाल अपराध के प्रत्ययों का वर्णन कर सकें;
- बाल अपराध के कारण तथा नियंत्रण का वर्णन कर सकें।

दैनिक व्यवहार में हम आँसुओं एवं मुसकराहटों, चिंताओं व दुश्चिंताओं, असफलताओं और कुंठाओं एवं क्रोध तथा विषाद के समय चक्रों में से होकर गुजरते हैं। कभी-कभी हम इन स्थितियों का सामना करने में अपने आपको बिल्कुल अक्षम पा सकते हैं जिससे समायोजन की गंभीर समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं। यह समस्या व्यक्ति के स्वास्थ्य संबंधी, परिवार, पड़ोस, व्यवसाय, जीवन साथी के चुनाव, वैवाहिक कलह इत्यादि की हो सकती है। कभी-कभी हम अपनी इज़्ज़त बचाने वाले और अपने आपको धोखा देने वाले

कुछ बहानों जो रक्षात्मक मनोरचनाओं के नाम से जाने जाते है और जिनकी व्याख्या पहले की जा चुकी है, उनका आश्रय लेते हैं। यह तब होता है जब हमें कुछ स्थितियों का सामना करना पड़ता है जो हमारी मानसिक शांति तथा सामंजस्य के लिए धमकी होती हैं। ये घटनाएँ समायोजन की गंभीर विफलताओं अथवा विघटन जिन्हें व्याधियाँ कहते हैं, की ओर अग्रसर कर सकती हैं। इन विघटनों या व्याधियों को सामान्य व्यवहार नहीं माना जाता।

असामान्यता

"असामान्य" यह पद दो शब्दों से मिलकर बना है। "अ" तथा "सामान्य"। दोनों शब्दो को मिलाकर अर्थ होता है मानक से हटकर। मानक का तात्पर्य मानदंड होता है। असामान्यता सदैव सामान्यता के परिप्रेक्ष्य में ही देखी तथा समझी जाती रही है। सामान्यता का प्रत्यय या व्यवहार दोनों को विशेष सामाजिक संदर्भ में ही पारिभाषित किया जाता है। सभी समाज अपने सदस्यों को वे नियम प्रदान करते हैं जो उचित व अनुचित सामाजिक मानकों को शासित करते हैं। वर्तमान सामाजिक नियमों का उल्लंघन करने वाले की भर्त्सना की जाती है या उसे दंडित किया जाता है। सामान्यता को सामाजिक मानकों व सांस्कृतिक अपेक्षाओं के अनुसार पारिभाषित करना प्रायः अधिक सरल होता है किंतु इस प्रकार की परिभाषा दो कारणों से अपर्याप्त तथा अवैज्ञानिक होगी। प्रथम, विश्व में हजारों समाज अस्तित्व में हैं जिनके पूर्णतः विभिन्न सांस्कृतिक मानक हैं अतः सामान्यता की परिभाषाएँ भी अलग होती हैं। द्वितीय, किसी समाज विशेष के सामाजिक सांस्कृतिक मानक उसके सदस्यों की अभिज्ञता बढ़ने के साथ-साथ बदलते रहते हैं। यहाँ तक कि किसी समाज विशेष के सभी कालों के लिए संगत मानक नहीं होते अतः सामान्यता की परिभाषा भी समय-समय पर बदलती रहती है। किंतु एक बात तो स्पष्ट है कि जो व्यक्ति समकालीन स्वीकृत मानकों के अनुसार नहीं चलते वे दूसरे सदस्यों द्वारा विसामान्य समझे जाते हैं। अतः किसी व्यक्ति के *असामान्य व्यवहार से तात्पर्य व्यवहार के उन ढंगों से है जो उसके परिवार समुदाय अथवा समाज के द्वारा स्वीकृत मानक व्यवहार के अनुसार नहीं हैं।* यद्यपि सामान्यता अथवा असामान्यता को पारिभाषित करना कठिन है व्यवहार को अच्छी प्रकार समझाने के लिए मनःचिकित्सकों, चिकित्सकों, वकीलों तथा अभिभावकों इत्यादि द्वारा मानसिक बीमारियों को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया जाता रहता है। इन स्पष्टीकरणों के अनुसार मानसिक व्याधियों का तंत्रिकाताप, मनोविकृति, मनोदैहिक बीमारियाँ, विकासात्मक व्याधियाँ, व्यावहारात्मक समस्याएँ तथा मनप्रभावी पदार्थों का प्रयोग व्याधियों आदि में समूहन किया गया है। अधिक जानकारी प्राप्त हो जाने पर समय-समय पर इन वर्गीकरणों का संशोधन भी किया जाता रहा है।

विकासात्मक व्याधियाँ

प्रायः सामान्य व्यवहार से कोई विचलन एकाएक ही घटित नहीं होता। इसकी जड़ें आनुवंशिकी, बाल्यावस्था तथा पारिवारिक इतिहास में गहरे तक होती हैं। बच्चों में भी वयस्कों में होने वाली व्याधियों के समान अनेक व्यवहार की व्याधियाँ हो सकती हैं। उदाहरणार्थ बच्चे भी उद्विग्न अथवा विषादपूर्ण हो सकते है तथा उनका व्यवहार असामान्य प्रतीत हो सकता है। बच्चों को भी कुछ शारीरिक रोग जैसे दमा, व्रण (अलसर), सिरदर्द अथवा अनिद्रारोग हो सकते है जिनके मनोवैज्ञानिक कारण होते हैं। बहुत से मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि बाल्यावस्था व्यक्तित्व के बाद के विकास के लिए नाजुक काल है बच्चे के स्व प्रत्यय पर परिवार शक्तिशाली प्रभाव डालता है। वे बच्चे जिनके माँ-बाप नकारात्मक तथा बहिष्कार करने वाले होते हैं, अपने आपको अक्षम, अस्वीकृत तथा अवांछनीय अनुभव करते हैं।

किशोरावस्था अपने साथ शारीरिक व लैंगिक परिपक्वता के साथ दूसरी संबद्ध समस्याएँ भी लाती है। किशोरावस्था मे महत्वपूर्ण सामाजिक, वैयक्तिक

तथा शारीरिक परिवर्तन होते हैं। अधिकतर मनोवैज्ञानिकों का यह विश्वास है कि किशोरावस्था का तनाव मुख्यतः इसलिए होता है क्योंकि किशोर/किशोरियाँ (युवा) सामाजिक उत्तरदायित्व स्वीकार करने के लिए तैयार होते है किंतु आर्थिक रूप से वे माता-पिता या समाज पर निर्भर होते हैं। किशोरावस्था में मुख्य तनाव विद्यालयी उपलब्धि, स्पर्द्धा, मित्रता एवं अपने साथी समूहों के दबाव से होते हैं।

विकासात्मक व्याधियाँ बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था की व्याधियों के वे समूह हैं जो शारीरिक मानसिक सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास में किसी अभाव के कारण होते हैं। किशोरावस्था के दौरान अधिक संभावित विकासात्मक समस्याएँ दुश्चिता, चरित्र व्याधियाँ, नशीली दवाओं का प्रयोग तथा लैंगिक कठिनाइयाँ हैं। इस एकक में जिन मुख्य विकासात्मक व्याधियों की व्याख्या की गई है वे हैं: (1) स्वलीनता (2) मानसिक मंदन तथा (3) समाज विरोधी व्यक्तित्व व्याधि। नशीली दवाओं के व्यसन को मनप्रभावी पदार्थों का प्रयोग व्याधि के अंतर्गत वर्णित किया गया है।

व्यावहारात्मक समस्याएँ

बच्चे जिस प्रकार अपने विश्व को देखते हैं और सूचना ग्रहण करते हैं उसी से यह निश्चय होता है कि वे अपने जीवन के तनावों से किस प्रकार समायोजन करते हैं। स्विटज़रलैंड के मनोवैज्ञानिक जीन पियाजे के अनुसार शैशवावस्था में बालक आत्मकेंद्रित संवेदी-गत्यात्मक स्तर पर कार्य करते हैं। उसके पश्चात बच्चे ये सीखना प्रारंभ कर देते हैं कि संसार में और लोग भी रहते हैं। फिर अमूर्त चिंतन की अवस्था आती है। यद्यपि ये अवस्थाएँ अटल क्रम में आगे नहीं बढ़तीं फिर भी बच्चों को विकसित होने के लिए कुछ विशेष कार्यों में निपुणता होनी ही चाहिए। उन्हें समय पर मलमूत्र त्याग करना और शौच प्रशिक्षण सीखना चाहिए। अपने लिंग की निर्धारित भूमिका और दूसरों के साथ सामाजिकता भी सीखनी चाहिए। समाजीकरण की इस प्रक्रिया के दौरान बच्चों को यथार्थ जीवन की समस्याओं तथा विकासात्मक संकटों का सामना करना पड़ता हैं। थोड़े प्रतिशत बच्चों को ऐसी गंभीर समस्याएँ भी हो सकती हैं जिनमें संवेगात्मक की अपेक्षा व्यावहारात्मक पक्ष में कुछ दोष होता है।

व्यावहारात्मक समस्याओं को हम बालक के ऐसे अनुक्रिया ढंग कह सकते हैं जो माता-पिता, परिवार अथवा समुदाय के सदस्यों की अपेक्षाओ के अनुसार नहीं हैं। यह विसामान्य अथवा विकृत व्यवहार है। यह बच्चों की आयु, लिंग तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुरूप व्यवहार के स्वीकृत मानकों के अनुसार नहीं होती। व्यवहार के मानक प्रत्येक संस्कृतियों और समाजो के अनुसार भिन्न होते हैं। कोई व्यवहार जो एक समाज मे बिल्कुल सामान्य माना जाता है उसी को दूसरे समाज में समस्यात्मक व्यवहार का नाम दिया जाता है। एक अविवाहित लड़की के लड़कों के साथ स्वतंत्र मेल-जोल को हमारे देश के बहुत से परिवारों में अभी भी आलोचना की जाती है लेकिन पाश्चात्य समाज में उसी आयु की लड़की यदि दूसरे लड़कों के साथ मेल-जोल नही करती या तिथि निर्धारण (डेटिंग) पर नहीं जाती तो उसका व्यवहार सामान्य नहीं माना जाता।

व्यावहारात्मक समस्या बच्चों के अपने कल्याण के लिए, उसके माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों एवं समाज, जिसका वह सदस्य है, के लिए हानिकारक मानी जाती है। व्यावहारात्मक समस्याएँ विभिन्न प्रकार की होती हैं जैसे खाना खाने से इन्कार करना, बिस्तर गीला करना, नाखून काटना, अगूँठा चूसना, बाल नोचना, ईर्ष्या, आक्रमण, तिलचट्टा, छिपकली इत्यादि कीड़ों को देखकर दुर्भीतिपूर्ण अनुक्रिया करना, वाणी दोष जैसे हकलाना, झूठ बोलना, चोरी करना, पलायनवादिता हठोद्रेक तथा बाल अपराध इत्यादि। कुछ मुख्य व्यावहारात्मक समस्याएँ जिनका इस एकक में वर्णन किया गया है वे हैं: (1) हठोद्रेक (2) झूठ

बोलना (3) पलायन, चोरी करना तथा बाल अपराध

1. स्वलीनता

एक प्रकार की विकासात्मक व्याधि जो बच्चों मे पाई जाती है उसे स्वलीनता (ऑटिज्म) कहते हैं। इसकी उत्पत्ति यूनानी शब्द 'ऑटोज़' से हुई है जिसका तात्पर्य है 'स्वयं'। स्वलीनता का तात्पर्य हुआ स्वयं में सिमट जाना। इसका तात्पर्य है कि अपने आपको कल्पना प्रवाह की दुनिया में बंद कर लेना और स्वयं में ही अंतर्लीन रहना। *स्वलीनता बाल्यावस्था की एक गंभीर विकासात्मक व्याधि है जो सामाजिक रूप से अपने को जोड़ पाने की असमर्थता से जानी जाती है।* एक प्रमुख मानसिक चिकित्सा विशेषज्ञ लियो कैनर ने यह शब्द 1943 में सबसे पहले प्रयुक्त किया।



चित्र 6.1 *स्वलीन बालक*

स्वलीन बच्चे की विशेषताएँ

(क) स्वलीन अकेलापन

कैनर द्वारा वर्णित स्वलीन बच्चे का अत्यधिक महत्वपूर्ण लक्षण अकेलापन है। स्वलीन शिशु अपने माता-पिता की क्रियाओं के प्रति सामान्य अनुक्रिया करने में असमर्थ होते हैं। जब उन्हें प्यार करने के लिए उठाया जाता है तो वे अपने को दूर खींच लेते हैं। स्वलीन बच्चे अपने आसपास से प्रायः अलग पाए जाते हैं। वे अपने ही कल्पना जगत के स्वप्नों में खोए रहते हैं।

(ख) संप्रेषण समस्याएँ

स्वलीन बच्चों का एक अन्य लक्षण उनमे संप्रेषण कौशलों की कमी विशेषकर भाषा की कमी होती है। लगभग 50% स्वलीन बच्चे एकदम बोलते ही नहीं हैं, अन्य अपनी भाषा योग्यता का बहुत सीमित उपयोग कर पाते हैं। स्वलीन बच्चे मुसकराहट के उत्तर में न तो मुसकराते हैं और न ही दूसरे के प्यार के प्रर्दशन के उत्तर में कुछ अनुक्रिया करते हैं, यहाँ तक कि अपनी माँ को भी नहीं। दूसरों से संवेगात्मक संबंध या तो पूर्णतः अनुपस्थित होते हैं या बहुत ही कम होते है। विचित्र अकेलापन विशिष्ट रूप से ध्यान देने योग्य होता है।

(ग) रीति रिवाजी तथा बाध्यता दृग्विषय

स्वलीन बच्चे में एक विशेष प्रवृति एकरूपता को बनाए रखने अथवा पुनः प्रतिष्ठित करने की होती है। बालक की आस-पास की वस्तुओं में अगर परिवर्तन कर दिया जाए तो वे बहुत बेचैन हो जाते हैं। वे सप्ताह के प्रत्येक दिन वही कपड़े व जूते पहनना चाहते हैं। उनकी दिनचर्या में थोड़ा सा परिवर्तन भी उनमें गंभीर रूप से अस्त-व्यस्तता या हठोद्रेक ला सकता है। कैनर ने यह भी इंगित किया है कि स्वलीन बच्चे आवृत्ति मूलक शारीरिक गतियाँ करते हैं। स्वलीन बच्चे की एक सामान्य आवृत्ति मूलक शारीरिक गति अपने हाथों को अपनी आँखों के सामने लाना और अंगुलियों को

बारी-बारी से खोलना और बार-बार बंद करना है। वे लंबे समय तक अपने पंजों पर चल सकते हैं। किसी वस्तु को कई बार घुमा सकते हैं या कोई आवाज़ बार-बार करते हैं।

(घ) निर्जीव वस्तुओं में प्रभुत्वपूर्ण अभिरुचियाँ

स्वलीन बच्चों की मनुष्यों की अपेक्षा निर्जीव यांत्रिकी वस्तुओं जैसे दूरभाष, मेज या खिलौने में अभिरुचि पाई जाती है। इन बच्चों में सामाजिक संबंधों को स्थापित करने मे असफलता इतनी प्रभुत्वपूर्ण होती है कि वे अपने आपको पूर्णतः एकाकी कर लेते हैं तथा शारीरिक सामीप्य अथवा आँखों की टकटकी की उपेक्षा करते हैं।

(ङ) वाणी के विकास में मदन

स्वलीनता का एक बहुत सामान्य सा लक्षण है कि वाणी या तो लुप्त हो जाती है या कभी अर्जित ही नहीं हो पाती। एक सीमा के बाद वाणी विकास की असफलता स्पष्ट होती है। ये बच्चे अपने संप्रेषण में भी सर्वनामों का उल्टा इस्तेमाल करते हैं। उदाहरणार्थ वे प्रायः अपने आपको "तुम" कहेंगे और दूसरों के लिए "मैं" और "हम" का इस्तेमाल करते हैं।

(च) लयात्मक गतियों का प्रदर्शन

स्वलीन बच्चे प्रायः घूमने वाले, लुढ़कने वाले, उछलते हुए अथवा अपने सिर को झटके देते हुए कामो में व्यस्त पाए जाते हैं। परिक्रमा करने वाले पदार्थ जैसे बिजली के पंखें या घूमते हुए लट्टू उन्हें बहुत आकृष्ट करते हैं।

(छ) तेज़ शोर से भय

कैनर ने यह उल्लेख किया है कि स्वलीन बच्चे तेज़ शोर जैसे ध्वनि विस्तारक यंत्रों, यातायात के भोंपू, अथवा प्रेशर कुकर की सीटी की आवाज़ो से डरते हैं।

स्वलीनता के कारण

स्वलीनता के बहुत से मनोवैज्ञानिक तथा शारीरिक कारणो की पहचान की गई है। उनका वर्णन निम्नलिखित हैः

(क) पारिवारिक परस्पर क्रिया का अभाव

मनोवैज्ञानिकों का सुझाव है कि स्वलीनता मुख्यतः माता-पिता से बच्चों की दूरी तथा अकेलेपन के कारण होती है। स्वलीन बच्चों के माता-पिता प्रायः सामाजिक संबंधों के प्रति निष्क्रिय होते हैं। बच्चों के विकास के प्रारंभिक वर्षों में माँ और बच्चे की घनिष्ठ अनुरक्ति के अभाव के कारण बच्चे भाषा का विकास करने में तथा सामाजिक संबंधों का विकास करने में असमर्थ रहते हैं।

(ख) तंत्रिकीय असामान्यताएँ

मस्तिष्क को क्षति पहुँचने के कारण हुई तंत्रिकीय असामान्यताओं का भी स्वलीनता के साथ घनिष्ठ संबंध पाया गया है। स्वलीन बच्चों में कुछ प्रमस्तिष्कीय विद्युत आरेख की असामान्यताएँ सतत् रूप से उल्लिखित की गई हैं। प्रमस्तिष्कीय विद्युत आरेख प्रायः अपरिपक्व प्रकार की होती है। तंत्रिकीय असामान्यताओं के एक से अधिक कारण भी हो सकते हैं। कुछ स्वलीन बच्चे इस व्याधि को वंशानुगति द्वारा पा सकते हैं। कुछ जन्म-पूर्व चोट द्वारा और अन्य बाद के तनावों द्वारा अर्जित कर लेते हैं।

(ग) बौद्धिक न्यूनता

यह विलक्षण बात है कि स्वलीन बच्चों का 75% मानसिक रूप से मंद पाया गया है किंतु स्वलीनता तथा मानसिक मंदन पर्यायवाची नहीं हैं। इन दोनों दशाओ की तुलना से यह स्पष्ट हो जाता है कि स्वलीनता में एक विशेष ज्ञानात्मक न्यूनता होती है। अर्थात् पूरी चिंतन प्रक्रिया मे न्यूनता, जिसमें भाषा व अन्य अधिगम कौशल सम्मिलित होते हैं। यह मानसिक मंदन अथवा मानसिक विकलांगता से बिल्कुल भिन्न है।

नियंत्रण

स्वलीन बालकों का प्रभावी नियंत्रण करने के लिए निम्नलिखित उपागम सुझाए गए हैं।

(अ) शिक्षा

विशेष रूप से प्रशिक्षित अध्यापक अथवा मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ अथवा नैदानिक मनोवैज्ञानिक के निरीक्षण में शिक्षक इन बच्चों को नियंत्रित कर सकते हैं। इस उपागम में स्वलीन बच्चों को अपने शाब्दिक कौशलों को संप्रेषित करने और सामाजिक कौशलों में सुधार लाने के कुछ विशिष्ट तरीकों के शिक्षण पर बल दिया जाता है।

(ब) व्यवहार परिष्करण

नियंत्रण की यह विधि अनेक व्यावहारिक व्याधियो के उपचार मे बहुत अधिक प्रभावी सिद्ध हुई है। यह आई.पी. पैवलॉव, जे.बी. वॉटसन तथा बी.एफ. स्किनर द्वारा समर्थित क्लासिकी व्यनुबंधन-पुनर्अनुबंधन तथा पुरस्कार-दण्ड के व्यवहार के सिद्धांतों पर मुख्यतया आधारित है। यह स्वलीन बालकों के संप्रेषण तथा सामाजिक कौशलों में सुधार लाने के लिए व्यवहृत होता है।

(स) माता-पिता को परामर्श

माता-पिता को व्यावहारिक परामर्श दिया जाता है कि वे अपने स्वलीन बच्चों को विशेषकर जब वे हिंसक हो जाएँ तो उन्हें कैसे नियंत्रण करें। उन्हें अपने बच्चों को कुछ मूलभूत सामाजिक कौशल विकसित करने में सहायता करने की विधियों का शिक्षण दिया जाता है। आजकल संस्थानों में बच्चों को रखना निरुत्साहित किया जाता है क्योंकि उसके कुछ हानिकारक प्रभाव होते हैं। अतः "दैनिक देखभाल घर" या "दैनिक केन्द्र" को अच्छा व्यावहारिक विकल्प पाया गया है जहाँ माँ-बाप विशेष रूप से प्रशिक्षित अधिकारियों से यह निर्देशन प्राप्त कर सकते हैं कि वे अपने स्वलीन बच्चों का किस प्रकार नियंत्रण करें।

(2) मानसिक मंदन

मानसिक मंदन शब्द का इस्तेमाल नैदानिक मनोवैज्ञानिक, मनःचिकित्सक, स्नायु विशेषज्ञ तथा बाल रोग विशेषज्ञ आदि करते हैं। इसका तात्पर्य जन्म से या उसके बाद बाल्यावस्था अथवा किशोरावस्था में उत्पन्न मानसिक न्यूनता या बौद्धिक कमी से है। इसके लिए एक और शब्द मानसिक विकलांगता है। यह दोषपूर्ण प्रत्यक्षात्मक अथवा अन्य चिंतन प्रक्रियाओं और संवेगात्मक के साथ-साथ सामाजिक विकास में व्यक्त होता है। मानसिक रूप से मंद को मानसिक मंदतायुक्त भी कहा जाता है। वे बौद्धिक प्रवीणता, संवेगात्मक स्थिरता और सामाजिक परिपक्वता अर्जित करने में मदन प्रदर्शित करते हैं। यहाँ तक कि जब वे शारीरिक रूप से बालिग हो जाते हैं तो भी वे ऐसे संवेगात्मक व सामाजिक व्यवहार करते हैं जो उनकी आयु से बहुत छोटे बच्चों के लिए उपयुक्त होते हैं। अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ मेंटल डेफिशेंसी (एएएमडी) ने मानसिक मंदन की एक व्यापक परिभाषा तथा वर्गीकरण प्रस्तुत किया है। अपने 1983 के नवीनतम संशोधन में एच. जे. ग्रॉसमेन ने मानसिक मंदन को निम्न प्रकार से पारिभाषित किया है। "मानसिक मंदन का तात्पर्य समायोजित व्यवहार में कमियों के साथ विद्यमान सार्थक रूप में औसत से नीचे की सामान्य बौद्धिक कार्यक्षमता है जिसका विकासात्मक काल में प्रकटन हो जाता है।"

यहाँ पर सार्थक रूप से औसत से नीचे बुद्धि का तात्पर्य लगभग 70 से कम बुद्धि लब्धांक से है तथा समायोजित व्यवहार का तात्पर्य उस मात्रा तथा सीमा से है जिससे व्यक्ति अपनी आयु तथा सांस्कृतिक समूह के अनुरूप अपने निजी तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जिनकी उनके आयु तथा सांस्कृतिक समूहों के अनुरूप उनसे अपेक्षा की जाती है, उनको निभा सकता है। विकासात्मक काल से संबंध जन्म से 18 वर्ष की आयु तक है। इस प्रकार *कम बौद्धिक कार्यक्षमता तथा समाज की माँगों के साथ समायोजन में असमर्थता* मानसिक मंदन की उपयुक्त परिभाषा मानी जा सकती है।

ए ए एम डी द्वारा किया मानसिक मंदन का वर्गीकरण बुद्धि लब्धांक के सांख्यिकीय वर्गीकरण पर आधारित है जो सारणी 6.1 में दिया गया है और आगे के पृष्ठों पर इसकी व्याख्या की गई है।



चित्र 6.2 मानसिक रूप से मंद बालक

सारणी 6.1

मानसिक मंदन	बुद्धि लब्धि सीमा
1. अल्प मानसिक मंदन	55-69
2. मध्यम मानसिक मंदन	40-54
3. तीव्र मानसिक मंदन	25-39
4. गहन मानसिक मंदन	25 से नीचे

(क) अल्प मानसिक मंदन

मानसिक रूप से मंद बच्चों का एक बहुत बड़ा भाग अल्प मंद बच्चों का है। सामान्य बच्चों से तुलना में अल्प मंद बच्चे सुस्त होते हैं और उनमें स्फूर्ति, उत्सुकता व संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं में सहजता की कमी होती है। वे अधिकतर निश्चल, अकर्मण्य एवं निष्क्रिय, आसानी से बेवकूफ बन जाने वाले, आशुविश्वासी एवं आसानी से समाज विरोधी अपराधी कार्यों या अन्य प्रकार के अवाछित व्यवहारों मे लगाए जा सकने वाले होते हैं। उनका चिंतन अपरिष्कृत तथा मूर्त होता है क्योंकि उनमें प्रत्ययों के साथ कार्य करने व अमूर्त चिंतन की योग्यता सीमित होती है। अगर उन्हें सामान्य विद्यालय में प्रवेश दिया जाए तो वे अधिगम में अपेक्षित प्रगति करने में असफल होते हैं और कक्षा में दूसरे सामान्य बच्चों से पिछड़ जाते हैं। विद्यालय से पूर्व के वर्षों में इन बच्चों में कुछ सामाजिक तथा संप्रेषण कौशलों का विकास हो जाता है यद्यपि संवेदी तथा गत्यात्मक क्रियाओं के विकास में कुछ पिछड़ापन रहता है। सामान्य बालकों से उनको विभेदित करना तब तक कठिन होता है जब तक कि वे पढ़ने लिखने का प्रयत्न शुरू नहीं करते। वे धीमी गति से सीखने वाले होते हैं किंतु किशोरावस्था प्राप्त करने तक वे पढ़ सकते हैं और आसान गणित कर सकते हैं। विद्यालय मे प्रायः उन्हें शिक्षकों की विशेष देखभाल और ध्यान की आवश्यकता होती है

अथवा उन्हें विशेष कक्षाओं अथवा विद्यालयों में स्थानांतरित करना पड़ता है।

(ख) मध्यम मानसिक मंदन

पूर्व बाल्यावस्था में मध्यम मानसिक मंदन को अल्प मानसिक मंदन अथवा सामान्य बच्चो से विभेदित करना कठिन होता है। मध्यम मानसिक रूप मे मद बच्चे 5-6 वर्ष की आयु तक कुछ संप्रेषण कौशल सीख लेते हैं। यद्यपि वे समाज में दूसरो के साथ आसानी से मेल जोल नही बढ़ा सकते। उनका गत्यात्मक विकास सामान्य बच्चों की अपेक्षा कुछ धीमी गति वाला होता है किंतु अधिकतर बच्चे थोड़े से प्रशिक्षण के साथ घरेलू जीवन में समायोजित हो सकते हैं। अपने विद्यालयी जीवन में वे कुछ शैक्षिक कौशल सीख लेते हैं। उचित प्रशिक्षण और दृढ़ विश्वास के साथ उन्हें अपनी देखभाल करने के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है। वे नहा सकते हैं, कपड़े पहन सकते हैं, अपने-आप खाना खा सकते हैं और शौचालय जा सकते है परंतु वे सामान्य विद्यालयो में पढ़ने में अक्षम होते हैं। उन्हें व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रो में अत्यधिक देखभाल तथा ध्यान से विशिष्ट प्रशिक्षण का उचित अवसर दिया जाता है। बाद में वे संरक्षित कार्यशालाओं में निकटता से निरीक्षण में काम करने योग्य हो सकते हैं। यह भी पाया गया है कि विशिष्ट प्रशिक्षण द्वारा उनमें से थोड़े बच्चों को पढ़ना और थोड़ा बहुत लिखना सिखाया जा सकता है। कुछ तो बोलचाल की भाषा पर अच्छा आधिपत्य पा लेते हैं किंतु मध्यम मंदन के इन सभी उदाहरणों में अधिगम का स्तर सापेक्षतः धीमा होता है तथा उनका प्रत्ययीकरण या प्रत्यय निर्माण भी अत्यधिक सीमित होता है। वे प्रायः अपनी पोशाक में बेढंगे तथा गंदे दिखते हैं। अधिकतर बच्चे शारीरिक विकृतियों तथा गत्यात्मक समन्वय की कमी से ग्रस्त होते हैं। ऐसे बच्चों की सार्थक अल्प संख्या वैरपूर्ण तथा आक्रामक होती है साधारणतया वे प्यारे, मिलनसार, भद्र तथा सीधे-सादे दिखते हैं।

(ग) तीव्र मानसिक मदन

तीव्र मानसिक बच्चे अल्प और मध्यम मंद बच्चों से सार्थक रूप से भिन्न होते हैं। उदाहरणार्थ 3-5 वर्ष की आयु के दौरान तीव्र रूप से मद बच्चों के गत्यात्मक तथा भाषा विकास में कमी दिखने लगती है किंतु यदि उन्हें प्रशिक्षण दिया जाए तो यद्यपि बहुत मंद गति से ही सही, संकेत तथा आसान भाषा द्वारा दूसरों के साथ संप्रेक्षण कर लेते हैं और अपनी निजी आवश्यकताओं की देखभाल कर लेते है। इस वर्ग के बच्चों में अनेक सरचनात्मक व शारीरिक असमानताएँ जैसे सिर, हाथ, पैरों तथा शरीर की अनुपातहीन तथा अवरुद्ध वृद्धि पाई जाती है।

(घ) गहन मानसिक मदन

गहन मानसिक मदन इन सबसे अधिक गंभीर है। जीवन के पूर्व कालीन वर्षों में बच्चे बहुत कम सवेदी-गत्यात्मक एवं भाषा विकास प्रदर्शित करते हैं। इन्हें जीवन पर्यंत अत्यधिक गहन देखभाल तथा संस्थानो में रखने की आवश्यकता होती है।

मानसिक मंदन में योगदान करने वाले कारक

निम्नलिखित कारक मानसिक मंदन मे योगदान करते हैं।

(क) जन्मपूर्व काल के दौरान की समस्याएँ

यदि गर्भवती माँ गंभीर कुपोषण (भोजन की अत्यधिक कमी) का शिकार हो अथवा किसी सक्रामक रोग जैसे पीलिया आदि से पीड़ित हो तो भ्रूण की वृद्धि प्रभावित हो जाने की संभावना होती है। यदि माँ अत्यधिक मानसिक तनाव व दुश्चिंता से ग्रस्त है तो इस काल के दौरान यह तनावपूर्ण मानसिक दशा उसके भ्रूण को प्रभावित कर सकती है। नशीले पदार्थ जैसे धूम्रपान, मद्यपान अथवा अन्य नशीले पदार्थों का सेवन भी भ्रूण में मानसिक मंदन का कारण बन सकता है

(ख) शिशु के जन्म के दौरान जटिलताएँ

शिशु के जन्म के समय माँ को कई संकटों से गुज़रना

पड़ता है। कुछ मामलों में तो शल्यचिकित्सा का दखल अपरिहार्य हो जाता है। बहुत से मामलों में शल्य चिमटों का प्रयोग अनिवार्य हो जाता है। शल्य चिमटों द्वारा पैदा किए गए बहुत से शिशुओं के सिर में घाव लग जाते हैं। जन्म के समय के शल्य चिमटों द्वारा लगे यह घाव प्रायः मानसिक मंदन की ओर अग्रसर करते हैं।

(ग) शैशवावस्था और बाल्यावस्था में दुर्घटनाएँ

शैशवावस्था और बाल्यावस्था के दौरान यदि उचित देखभाल या ध्यान न दिया जाए तो बहुत से बच्चो के साथ घरेलू दुर्घटनाएँ जैसे चारपाई अथवा सीढ़ी से गिरना, बड़े बच्चों द्वारा पीटा जाना अथवा माँ अथवा परिचारी की गोद से गिरना इत्यादि हो सकती हैं। इस प्रकार की दुर्घटनाएँ होना बहुत सामान्य है और अधिकतर वे बिना ध्यान दिए और बिना देखभाल के ही गुज़र जाती हैं। सिर की किसी प्रकार की चोट से भी सावधान रहना चाहिए चाहे वो दिखने में छोटी ही क्यों न हो।

(घ) जननिक दोष

मानसिक मंदन अधिकतर जननिक कारकों से निर्धारित हो सकता है। गुणसूत्रों में विभिन्न प्रकार की असामान्यताएँ बहुत से उदाहरणों मे मानसिक मंदन का कारण होती हैं। ये गुणसूत्र असामान्यताएँ अथवा अनियमितताएँ कैसे घटित हो जाती है इनका ज्ञान अभी तक स्पष्ट रूप से नहीं हो पाया है। साधारणतया जीन्स शरीर के पाचक रस तथा रासायनिक कार्यविधियों को नियंत्रित करके अपने प्रभाव उत्पन्न करते हैं। विकासात्मक शोध यह संकेत देते हैं कि गर्भधारण करने वाली माँ की बड़ी आयु तथा गुणसूत्रो की असामान्यताएँ विकसित होने की प्रवृत्ति के बीच संबंध होता है। मस्तिष्क, हृदय की कुरचनाओ के साथ-साथ बहुत सी अन्य शारीरिक विकृतियाँ अथवा अल्प विकास प्रायः जननिक असामान्यताओं के कारण होता है। अधिकतर मामलों मे शीघ्र मृत्यु हो जाती है। मानसिक मंदन में इस असामयिक मृत्यु का कारण उनके शरीरों में प्राकृतिक रूप से प्रतिरोध शक्ति में कमी होना होता है। यह अनुमान किया गया है कि तीव्र मंदन में से 2 से 4% जैव रासायनिक कारकों के कारण होता है।

(ङ) सामाजिक-सांस्कृतिक कारक

यह देखा गया है कि जिन बच्चों का पालन-पोषण अत्यधिक प्रतिकूल संस्थानो के वातावरण में होता है उनमें औसत से निम्न बौद्धिक क्षमता प्रदर्शित करने की सभावना होती है। संस्थानों का वातावरण प्रायः एकरसता व नीरसता से पूर्ण, देखभाल करने वाले या स्नेह देने वाले की कमी, रुचिपूर्ण तथा समृद्ध उद्दीपनों का वंचन तथा सुखद अनुभवो के अभाव से जाना जाता है। इस प्रकार का वंचित, कुपोषण युक्त वातावरण या तो मानसिक अवसामान्यता उत्पन्न करता है या मानसिक रूप से मंद बच्चों में मंदन और बढ़ा देता है। परिवार का वातावरण या संस्कृति भी कभी-कभी आर्थिक वंचन, सामाजिक तथा संवेगात्मक समस्याओं से युक्त हो सकती है। परिवार में संबद्धता की कमी, असंगठित अथवा दुखी परिवार, शाब्दिक अथवा दृश्य उत्तेजनाओ मे विविधता का वंचन तथा सामान्य निर्धनता एव असुविधाएँ भी मानसिक मदन में योगदान करते हैं। एक महत्वपूर्ण प्रत्यय जो अनुसंधानों से उभर कर आया है उसे सांस्कृतिक-पारिवारिक मानसिक मंदन कहते हैं। जिसका तात्पर्य उस मंद बच्चे से है जिसकी बौद्धिक कमी के लिए किसी एक स्पष्ट जैविक अनियमितता को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। इस बच्चे का कम से कम माँ-बाप मे से एक और/या एक भाई बहन उसी की भाँति मंद हो सकता है।

मानसिक मंदन के नियंत्रण की व्यवस्था

(अ) पारिवारिक उत्तरदायित्व

मानसिक रूप से मंद बच्चों को परिवार का स्नेह, परस्पर क्रिया और साथी समूह के तादात्म्य की आवश्यकता होती है, किंतु इन आवश्यकताओं की

प्रायः इसलिए पूर्ति नहीं हो पाती क्योंकि इन बच्चों को अलग से देखा जाता है। मानसिक रूप सें मद बच्चे का परिवार अपने बच्चे के बारे में प्रायः अपराधी अनुभव करता है जिसके परिणामस्वरूप परिवार के सदस्यों का व्यवहार अति संरक्षणशील हो जाता है। जिससे बालक अपनी सीमित योग्यताओं का स्वयं-सहायक कौशलों को सीखने मे पूर्ण लाभ नहीं उठा पाते। यहाँ तक कि कुछ परिवार तो मंदन को ही अस्वीकार करते हैं और सामान्य विद्यालयी उपलब्धि की अपेक्षा करते हैं। यह उन बच्चों के लिए और अधिक समस्याएँ उत्पन्न कर देता है जो प्रायः उनकी अपेक्षाओं को पूर्ण करने में असफल हो जाते हैं।

(ख) निदान को स्वीकार करना

माता-पिता की प्रतिक्रियाएँ इस निदान के प्रति कि उनके बच्चे मानसिक रूप से मंद हैं प्रायः बिल्कुल भिन्न होती हैं। निदान के प्रति प्रायः चार प्रकार की अनुक्रियाएँ हो सकती हैं। अपराधी भावना, क्रोध, निराशा तथा अस्वीकृति। अपने बच्चों के बारे में माता-पिता की प्रतिक्रियाएँ प्रायः उलझनपूर्ण होती है। एक ओर तो वे अपने बच्चों के लिए अति सुरक्षात्मक, स्नेहिल, ध्यान रखने वाले होते हैं दूसरी ओर उनमें उसके लिए क्रोध, लज्जा तथा अपराध की भावना होती है। कुछ माता-पिता तो इस निदान को स्वीकार करने में इतनी लज्जा का अनुभव करते हैं कि वे बहुत से विशेषज्ञों की इस अपेक्षा से राय लेते हैं कि उनका बच्चा "सामान्य" है। इसमें उनका समय और धन तो लगता ही है साथ ही बच्चे के लिए रचनात्मक क्रियाओं से उनका ध्यान हट जाता है।

(ग) संस्था में रखना

विशेषज्ञ प्रायः मानसिक मंद बच्चो को जहाँ तक संभव हो परिवार के सदस्यों के साथ रखने तथा उनकी देखभाल करने का उत्तरदायित्व लेने की राय देते हैं। किंतु तीव्र तथा गहन रूप से मंद बच्चों को संस्थाओं में रखने की आवश्यकता होती है। मानसिक मंदन के क्षेत्र में आधुनिक अध्ययनों से बहुत से रुचिकर तथ्य स्पष्ट हुए हैं। मध्यम रूप से मंद छोटे बच्चों की जब छोटे समूहों में देखभाल की गई जिन्होंने परिवार के परिवेश को स्थानापन्न किया तो उनमें बेहतर सामाजिक कौशलों तथा शाब्दिक योग्यताओं का विकास हुआ। इन बच्चों ने उन बच्चों की अपेक्षा जिन्हें मानसिक व्याधियों के लिए बड़े अस्पतालों में रखा गया था, इन कौशलों को अर्जित करने में भी कम समय लिया। संस्था मे रखने का या विशेष संस्थान या अस्पतालो में प्रवेश मुख्यतः दो कारको द्वारा निर्धारित होता है। (अ) मानसिक मंद बच्चे की व्यावहारिक समस्याओं की मात्रा (ब) उचित समायोजन, रहने के स्थान तथा मंद बच्चे के अनुरक्षण से संबंधित सामाजिक, आर्थिक कारक। उदाहरणार्थ मानसिक रूप से मंद कुछ बच्चे अपने परिवार में बहुत समस्याएँ उत्पन्न करते हैं। इसके परिणामस्वरूप परिवार के दूसरे सदस्यों को उनके साथ रहना मुश्किल हो जाता है। वे भयंकर रूप से विध्वंसक, आक्रामक, शोर करने वाले तथा बखेड़ा करने वाले हो सकते हैं। इन परिस्थितियों में माँ-बाप उस बच्चे को किसी संस्था में रखने पर बाध्य हो जाते हैं। बहुत से मामलों में सामाजिक आर्थिक कारक जैसे परिवार में स्थान की विकट समस्या, अति भीड़-भाड़, असमर्थ या विकलांग (शारीरिक तथा आर्थिक रूप से) माँ-बाप, या पड़ोसियों की शिकायतें भी ऐसे महत्वपूर्ण कारक हैं जो मानसिक रूप से मंद व्यक्ति को अपने घर से किसी उपयुक्त संस्था में स्थानांतरण की आवश्यकता को प्रभावित कर सकते हैं।

(3) समाजविरोधी व्यक्तित्व व्याधि

आपका सामना ऐसे व्यक्तियों से तो हुआ ही होगा जो बिना आवश्यकता के धोखा देते हैं, बिना कारण झूठ बोलते हैं दूसरों के प्रति शंकालु रहते हैं और दूसरो के प्रति निष्क्रिय अनुक्रिया करते हैं। वे स्वार्थी अनुत्तरदायी, आवेग पूर्ण, अपराध भावना रहित तथा

दण्ड देने पर भी न सीखने वाले होते हैं। वे मनोरोगी नहीं होते क्योंकि उनकी वास्तविकता पर अच्छी पकड़ होती है वे भयभीत नहीं होते या नशे के आदी नहीं होते। किंतु उनका व्यवहार कुछ असंगत अथवा आसामान्य होता है जो उनके स्वयं के लिए तथा दूसरों के लिए संकट का स्रोत होता है। इस प्रकार की विकृति व्यक्तित्व व्याधि कहलाती है। इसे समाज विरोधी रोग या मनोरोग के नाम से भी जाना जाता है।

उपरोक्त लक्षणों का वर्णन सर्वप्रथम जे. सी. प्रिचर्ड ने 1837 में किया। उन्होने इसे नैतिक उन्माद कहा क्योंकि ऐसे लोगों की बुद्धि सामान्य थी किंतु नैतिक मूल्य भ्रष्ट थे। प्रिचर्ड ने अनुभव किया कि ऐसे व्यक्ति में आत्म-अनुशासन की कमी होती है। प्रिचर्ड के बाद नैदानिकों ने ऐसे व्यवहार को नामांकित करने के लिए, संरचनात्मक मनोरोग व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग किया। सन् 1920 तक इस प्रकार के व्यक्तियों को मनोरोगी तथा समाज विकृति व्यक्तित्व वाला नामांकित किया गया। अमेरिकन साइकेट्रिक एसोसियेशन ने 1960 के अंतिम वर्षों में समाज विरोधी व्यक्तित्व पद की रचना की। एच. क्लेकले ने अपनी 1964 मे लिखी पुस्तक "*द मास्क ऑफ सैनिटी*" में समाज विरोधी व्यक्ति का वर्णन किया है। अपने विभिन्न नैदानिक अनुभवों के आधार पर उन्होने बहुत सी कसौटियों का सूत्रपात किया जिनका इस्तेमाल करके समाज विरोधी व्यक्तियो को पहचाना जा सके। उनकी सूची में पछतावे अथवा शर्म का अभाव, अविश्वसनीयता, असत्यता एवं कुटिलता की कसौटियाँ आती हैं। समाज विरोधी व्यक्ति अपराध भावना अनुभव नही करते और ऐसा लगता है कि वे न अनुभव से सीख पाते है न विशेषतया पीड़ा से तथा उनके जीवन की कोई योजना नहीं होती। हम यह कह सकते हैं कि *समाज-विरोधी लोग दूसरे लोगो, समूहों, सामाजिक मूल्यों तथा मानकों के प्रति निष्ठा में असमर्थ* होते हैं और *उनका व्यवहार प्रायः समाज के साथ उनको संघर्ष की स्थिति में ले आता है।*

समाज विरोधी व्यक्ति की विशेषताएँ

वे प्रमुख विशेषताएँ जो सभी समाज विरोधी व्यक्तियों में सामान्यतः पाई जाती हैं निम्नलिखित हैं। किंतु यह स्मरणीय रहे कि ये सभी विशेषताएँ प्रायः किसी एक व्यक्ति मे नहीं पायी जातीं।

(क) नैतिक मूल्यों, दुश्चिंता व अपराध भावना का अभाव

समाज विरोधी व्यक्ति शाब्दिक स्तर के अतिरिक्त नैतिक मूल्यों को समझ पाने अथवा स्वीकार कर पाने में असफल होते हैं। उनके नैतिकता के उच्च मानदण्डों का पालन करने के वाचिक दावे प्रायः खोखले शब्द मात्र ही होते हैं। वे अपने तनावों तथा निजी समस्याओं को चुपचाप सहन करने और उन पर चिंता करने की अपेक्षा नाटकीय व्यवहार करते हैं। वे प्रायः द्वेषपूर्ण तथा आक्रामक हो जाते हैं और अपने दुर्व्यवहार पर उन्हें बहुत कम या जरा सी भी अपराध भावना नहीं होती। उनकी दुश्चिंता तथा अपराध भावना की कमी उनके बाहरी भोलेपन व निष्कपटता से मिलकर प्रायः उन्हें संदेह व चोरी के अपराध मे पहचाने जाने तथा अन्य अवैध क्रियाओ से बचाने में सहायता करती है।

(ख) अनुत्तरदायी तथा आवेगपूर्ण व्यवहार

समाज विरोधी व्यक्तियो में सामान्यतः दूसरो के अधिकारों, आवश्यकताओं तथा कल्याण के प्रति अनादर होता है। वे अधिकतर आदतन झूठ बोलने वाले होते हैं। वे जो कुछ चाहते हैं उसे उन्होंने स्वयं कमाने की अपेक्षा दूसरों से लेना ही सीखा है। वे सनसनीखेज़ तथा प्रसन्नता और अपरंपरागत व्यवहार के लिए ग्रहणशील होते हैं। वे आवेग पूर्ण तरीकों और बिना परिणामों की परवाह किए कानून तोड़ देते हैं। अपने भूत अथवा भविष्य की वास्तविकताओ को बिना सोचे वे केवल अपने तात्कालिक वर्तमान के प्रति ही चिंतित होते हैं।

(ग) ऊपरी आकर्षण व प्रभावी बुद्धिवादी

बहुत से समाज विरोधी व्यक्ति प्रभावोत्पादन, प्रेम किए जाने योग्य एवं आकर्षक पाए जाते हैं। उनके दूसरों को निरस्त्र कर देने वाले तरीके उनके लिए आसानी से मित्रो को जीत लेते हैं। वे प्रायः विनोद-वृत्ति तथा जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण प्रदर्शित करते हैं। यदि उनके झूठ किसी प्रकार पहचाने जाते हैं तो वे ऐसा दिखाते हैं कि वे झूठ के लिए सच्चे हृदय से दुखी हैं। वे आसानी से क्षमा माँग लेते हैं और प्रतिज्ञा करते हैं कि वे अपने में पूर्ण सुधार कर लेंगे किंतु वास्तव में उनका तात्पर्य ऐसा कभी भी नहीं होता। ऐसा लगता है कि उन्हें दूसरो की आवश्यकताओं तथा दुर्बलताओ के बारे में अंतर्दृष्टि होती है तथा वे उनका शोषण करने में काफी कुशल होते हैं। वे अपना दोष दूसरो पर प्रक्षेपित करके अपने समाज विरोधी आचरण के लिए आसानी से बहाने तथा तर्कसंगतीकरण ढूँढ़ लेते हैं। वे प्रायः दूसरों को तथा अपने आपको कायल कर लेने मे समर्थ हो जाते हैं कि वे पूर्णतः दोष मुक्त हैं।

(घ) सत्ता का तिरस्कार एवं अनुभवों से लाभान्वित होने में असमर्थता

समाज विरोधी व्यक्ति इस प्रकार का व्यवहार करते हैं जैसे विद्यमान सामाजिक नियम अथवा अधिनियम उन पर व्यवहृत नहीं होते। उनका सामाजिक सत्ता का जान बूझकर तिरस्कार प्रायः आवेगपूर्ण, वैरपूर्ण तथा अपराधपूर्ण क्रियाओं द्वारा प्रदर्शित होता है। उनका पिछला इतिहास अपने शैक्षिक अथवा कानूनी कार्य करवाने वाले अधिकारीगण के साथ अधिकतर कठिनाइयों वाला होता है। यद्यपि उनमे से कुछ प्रायः छोटे-मोटे अपराध अथवा अपराध क्रियाओं को कर जाते हैं किंतु वे सदैव पेशेवर अपराधी नही होते। चाहे कितनी दिक्कतें उन्हें पेश आएँ अथवा दण्ड मिले वे ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे उन्हें कुछ भी नहीं हुआ या फिर वे अपनी समाज विरोधी क्रियाओं के परिणामों से बिलकुल निरापद रहते हैं।

(ङ) सामान्य अंतर्वैयक्तिक संबंधों में निष्क्रिय

प्रारभ मे समाज विरोधी व्यक्ति दूसरो का प्रेम और मित्रता जीतने मे समर्थ पाए जाते हैं किंतु बाद में वे अपने घनिष्ठ मित्रो का साथ पाने मे असमर्थ होते हैं। वे प्रायः अनुत्तरदायी, स्वार्थी, विषम, तुनक मिज़ाज, सहानुभूतिविहीन, अकृतज्ञ तथा अपने व्यवहार में पछतावे रहित होते हैं। वे प्यार को समझने अथवा उसकी कद्र कर पाने में तथा दूसरों को प्यार देने में असफल होते हैं। सत्य ही कहा गया है कि समाज विरोधी इस ससार मे पृथकत्व में इस प्रकार लपेटे हुए अलग-थलग विचरण करते हैं जैसे किसी पृथक्कारी मे हो। वे बिरले ही प्रभावित होते हैं, न कोई उन्हें दुखित कर सकता है और न ही वे अपने साथियो की भावनाओ से विचलित होते हैं।

कारणात्मक कारक

व्यक्तित्व व्याधियाँ लम्बे समय तक चलती हैं। समाज विरोधी व्यक्तित्व व्याधि बाल्यावस्था या पूर्व किशोरावस्था में जन्म लेती है तथा प्रौढ़ावस्था मे बनी रहती है। विश्व का इतिहास बताता है कि जिन लोगों को हम समाज विरोधी की संज्ञा देते हैं वे सभ्यता के प्रारम्भ से ही सभी जगह विद्यमान थे और आज भी प्रायः हर समाज में विद्यमान हैं। समाज विरोधी व्याधि के कारणात्मक कारकों के बारे मे जो प्रमाण एकत्रित किए गए हैं वे कुछ परस्पर विरोधी हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि समाज विरोधी व्यक्तित्व व्याधि की ओर बढ़ाने वाले यथार्थ कारको को अभी पूर्ण रूप से समझा नही गया है। इसके अतिरिक्त ये कारक बदलते हुए आर्थिक तथा सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में भिन्न होते हैं।.

मनोवैज्ञानिकों, अपराधशास्त्रियों, समाज शास्त्रियो तथा मानव विज्ञानियो द्वारा इस क्षेत्र में किए आधुनिक अनुसंधानों ने (अ) परिवार और सामाजिक संदर्भ (ब) अधिगम में दोष एव (स) केंद्रीयतंत्रिका तंत्र में शारीरिक दुष्क्रिया को समाज विरोधी व्यक्तित्व व्याधि के

कारणात्मक कारकों के रूप में माना है। इनकी व्याख्या नीचे दी गई है।

(अ) परिवार और सामाजिक सदर्भ

प्रायः कहा जाता है कि समाज विरोधी व्यक्तित्व का विकास बचपन के पारिवारिक संबंधों में किसी प्रकार का विक्षोभ हो जाने के कारण होता है। अनुसंधानों से इंगित होता है कि माता-पिता में किसी एक द्वारा दूसरे को छोड़ देने , तलाक अथवा अलग रहने से हुई कमी का मृत्यु द्वारा हुई कमी को छोड़कर, समाज विरोधी व्यवहार के विकास से संबंध होता है। ज्यादातर अनुसंधानकर्ता यद्यपि इस बात पर बल देते हैं कि माता-पिता की कमी स्वयमेव समाज विरोधी व्यक्तित्व व्याधि के लिए उत्तरदायी नहीं हैं बल्कि घर का अशांत वातावरण तथा उपेक्षा करने वाले माता-पिता उत्तरदायी हैं। पारिवारिक संबंधों का एक अन्य पहलू अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रायः दो प्रकार के व्यवहार के ढंग होते हैं जो समाज विरोधी व्यवहार को जन्म देते है वे हैं (अ) माता-पिता की बच्चों के प्रति उदासीन, दूरीपूर्ण अभिवृत्ति एवं (ब) माता-पिता द्वारा बच्चों को अनुशासित करने में असंगतता। किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के आकार देने में माता-पिता की अभिवृत्तियाँ तथा व्यवहार अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। यदि माता-पिता का बालक के प्रति व्यवहार उदासीन, भावशून्य व दूरी पूर्ण है तो माता-पिता तथा उनके बच्चों के बीच स्नेह पूर्ण घनिष्ठ संबंध विकसित नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त हम जानते हैं कि अनुकरण बाल्यावस्था की एक मूलभूत विशेषता है। उदासीन माता-पिता के बच्चे अपने माता-पिता के आदर्शों का अनुकरण करते हुए अपने बाद के संबंधों में उदासीन बनने की संभावना रख सकते हैं।

इसी प्रकार माता-पिता के व्यवहार में असंगतता, स्वस्थ व्यक्तित्व के विकसित होने पर प्रभाव डालती है। कुछ माता-पिता एक अवसर पर अपने बच्चे के किसी व्यवहार को स्वीकृति देते हैं तो किसी दूसरे अवसर पर उसी व्यवहार को वे अस्वीकृत कर देते हैं। पुनः कुछ माता-पिता व्यवहार के किसी मानक या मानदण्ड के बाह्यरूप में अनुपालन को न केवल पुरस्कृत करते है वरन् गुप्त रूप से अपालन को भी पुरस्कृत करते हैं जिसका बाहर वालो को पता ही नहीं चलता। अतः इस प्रकार के माता-पिता अप्रत्यक्ष रूप से समाज विरोधी प्रतिक्रियाओं की ओर अग्रसर करने वाले व्यवहारों को पुरस्कृत अथवा प्रोत्साहित करते हैं। यदि माता-पिता स्वयं अपनी भूमिकाएँ ठीक से निभाने में असफल होते हैं तो उनके बच्चो को भी अनुकरण करने के लिए स्थिर माता-पिता के स्थिर आदर्श नहीं मिल पाते। परिणामस्वरूप उनमें सुस्पष्ट स्वपहचान अथवा स्वछवि की अनुभूति विकसित नहीं हो पाती।

(ब) अधिगम में दोष

नैदानिक मनोवैज्ञानिक समाज विरोधी व्यक्तियों के अत्यंत बद्धिमान होते हुए भी दण्डात्मक अनुभवों से सीखने की असमर्थता को लेकर चिंतित हैं। क्लेकले ने पाया कि समाज विरोधी व्यक्तियो में परिहार अधिगम की कमी थी। हम साधारणतया दण्डात्मक परिस्थितियों का पूर्वानुमान करके उनका परिहार करना सीख जाते हैं। परंतु समाज विरोधी इसमे असफल होते हैं। यह भी सम्भावना है कि समाज विरोधी व्यक्ति आघात का परिहार नहीं करते क्योंकि वे आघात को सामान्य लोगों जैसा भयपूर्ण नहीं पाते क्योंकि वे अल्प भावप्रबोधित होते हैं। यदि हम इसे दूसरे प्रकार से कहें तो समाज विरोधी व्यक्ति अपने भावप्रबोधन को उन्नत करके इष्टतम् स्तर पर लाने के लिए प्रायः किसी प्रकार की उत्तेजना ढूँढ़ते रहते हैं। उनमें प्रायः उत्तेजना का सृजन करने की और परिणामों की परवाह किए बिना चाहे एक क्षण के लिए ही सही उसका आनंद उठाने की तीव्र इच्छा होती है। अधिकतर वे दिनचर्या तथा नीरसता को सहन नहीं कर पाते। इससे यह स्पष्ट होता है कि समाज विरोधी व्यक्ति, अपराध जो उन्हें उत्तेजना देता

है उसे करने के बाद दड के पूर्वानुमान से भयभीत नहीं होते क्योंकि दंड तो अपराध करने के बहुत देर बाद मिलता है।

(स) शारीरिक दुष्क्रिया

बहुत से शोधकर्ताओं ने समाज विरोधी तथा सामान्य व्यक्तियों में शारीरिक भिन्नताओं की खोज की है। समाज विरोधी व्यक्तियों की असामान्य प्रमस्तिष्कीय विद्युत आरेख होती है। ये हिंसक तथा आक्रामक समाज विरोधी के मामले में पाया गया है। प्रमस्तिष्कीय विद्युत आरेख में असामान्यता दो प्रकार की होती है। प्रथम तो यह कि उनकी मस्तिष्क की तरगें धीमी होती हैं जैसा कि बच्चों मे होता है जिसका तात्पर्य मस्तिष्क की अपरिपक्वता से हैं। जैसे-जैसे ये व्यक्ति बड़े होते हैं और उनकी वल्कुट 30-40 वर्ष की आयु तक अधिक परिपक्व हो जाती है तब अधिकतर समाज विरोधी लोग समाज विरोधी कार्य कम करने लगते हैं।

अधिकतर समाज विरोधी व्यक्तियों में दूसरी असामान्यता मस्तिष्क की सकारात्मक नोकीली रेखाएँ हैं। सकारात्मक नोकीली रेखाओं का साहचर्य आवेगपूर्ण आक्रामक कार्यों से है तथा ऐसे व्यक्ति अपने कार्यों के प्रति अपराध भावना अथवा दुश्चिंता नहीं प्रदशित करते। ये सकारात्मक नोकीली रेखाएँ मस्तिष्क के उपवल्कुटीय तंत्र विशेषकर वह तंत्र जो संवेग और अभिप्रेरण को नियंत्रित करते हैं उनमें दुष्क्रिया प्रदर्शित करते हैं।

समाज विरोधी का नियंत्रण

इसमें दो राय नहीं है कि समाज विरोधियो को नियंत्रित करना कठिन है। अभी तक कोई ऐसा चिकित्सा कार्यक्रम नहीं बना है जो समाज विरोधी व्यक्तियों को नियंत्रित करने में तथा उनको सामान्य स्वस्थ जीवन में पुनः स्थापित करने में प्रभावी सिद्ध हुआ हो। सामान्यतः समाज विरोधी व्यक्ति में सहिष्णुता, स्थायित्व और दृढ निश्चय की बेहद कमी होती हैं। यदि उनमें से कुछ उपचार के लिए अपने को प्रस्तुत करते भी हैं तो वे प्रायः जादू के से उपचार की अपेक्षा करते हैं। वे अपने लिए कुछ भी करने को तैयार नहीं होते । अधिकतर वे स्वयं ही आते हैं और तब उपचार की इच्छा करते हैं जब वे किसी कानूनी उलझन मे अथवा किसी गम्भीर पारिवारिक समस्या मे फँस जाते है।

उपचार की चार विधियाँ जो समाज विरोधी के लिए प्रायः संस्तुत की जाती है, वे निम्नलिखित हैः

(i) वैयक्तिक मनोचिकित्सा

वैयक्तिक मनोचिकित्सा एक विशेष मनोवैज्ञानिक प्रविधि है जिसमें व्यक्ति या रोगी को जैसा इस चिकित्सा में उसे कहा जाता है, को अपनी सब समस्याओं के बारे में बिना किसी प्रतिबंध के सब कुछ बता देना होता है। यह एक प्रकार की वार्तालाप चिकित्सा है। रोगी से स्पष्ट रूप से बातचीत करते हुए मनोचिकित्सक समस्या की जड़ तक पहुँचना चाहते हैं जो रोगी को पीड़ित करती है। फिर वे सकारात्मक सुझाव अथवा अभ्यास बताते हैं जिससे समस्याएँ धीरे-धीरे कम होती हैं और अंत में समाप्त हो जाती है। चिकित्सा की इस विधि की प्रभावकता रोगी के निष्कपट सहयोग पर निर्भर करती है।

(ii) सामूहिक चिकित्सा

सामूहिक चिकित्सा से तात्पर्य रोगियों का समूहों में उपचार से है। इनकी व्यवस्था विशेष अस्पतालों या उपचार केन्द्रों के अलग रोगी कक्षो या इकाइयों में होती है। यद्यपि इस विधि की अपनी सीमाएँ हैं फिर भी इस विधि की समाज विरोधी के संबंध में वरीयता सिद्ध हो चुकी है।

(iii) औषधि चिकित्सा

औषधि चिकित्सा का अर्थ है विशिष्ट औषधियो के उपयोग द्वारा उपचार करना । कुछ मामलों में जहाँ अत्यधिक आक्रामक समाज विरोधी व्यक्तित्व व्याधियाँ होती हैं उनमें कुछ विशेष शान्तिदायक (तंत्रिका को शांत करने वाली) औषधियाँ आक्रामकता या

विध्वंसकता के विशिष्ट प्रस्फोटनों को रोकने में बहुत प्रभावशाली सिद्ध हुई है। फिर भी यह मानना पड़ेगा कि बहुत सी मुख्य शांतिदायक और शांतिकर, निद्रा प्रवृत्त औषधियाँ जो आजकल प्रयुक्त की जाती हैं इस प्रकार की व्याधियों के लिए कम लाभ की ही होती है।

(iv) व्यवहार चिकित्सा

व्यवहार मनोचिकित्सा एक आधुनिक मनोवैज्ञानिक प्रविधि है जो व्यक्तियों की अवाछनीय आदतों को तोड़ने या उन्हें निर्मूल कर व्यवहार और संवेगों का परिष्करण करने के लिए प्रयुक्त की जाती हैं। यह कौशलपूर्ण प्रविधि है जिसमें अधिगम के आधुनिक सिद्धांतों के नियमो का उपयोग लाभकारी ढंग से किया जाता है। बहुत से विशेष यंत्र भी इस चिकित्सा विन्यास में प्रयुक्त किए जाते हैं। समाज विरोधी व्यक्तियों का इलाज करते समय इस उपचार का एक महत्वपूर्ण पहलू है कि इसमे समाज विरोधी व्यक्तियो के उपचार के लिए ऐसी उचित स्थिति प्रदान की जाती है कि उनका सुधरा हुआ व्यवहार चिकित्सा कराने वाले अन्य समाज विरोधियो के सामने आदर्श बन जाए। इस तरह वे स्वय चिकित्सक या परिवर्तनकर्ता जैसा कि उन्हें नाम दिया जाता है की भाँति कार्य करके दूसरों की सहायता करते हुए साथ में अपने मनोविकारी व्यवहार के परिष्करण को बहुत सीमा तक सुदृढ़ कर लेते हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि बहुत से समाज विरोधी व्यक्ति 40 वर्ष की आयु के बाद बिना किसी उपचार के स्वयं ही अपने व्यवहार को सुधार लेते हैं।

मनप्रभावी पदार्थ प्रयोग व्याधियाँ

नशीली दवाओं (ड्रग) का व्यसन

पिछले दो दशकों से नशीली दवाओं के व्यसन ने पूरे विश्व के समाजो को परेशान किया हुआ है। शुरू में यह कुछ विकासशील देशों तक ही सीमित रहा किंतु अब यह पूरे विश्व में फैल चुका है और पूर्ण विश्व समस्या बन गया है। इस समस्या के अतिवृहत् परिमाण के महत्व को ध्यान में रखकर संयुक्त राष्ट्र संगठन ने 26 जून सन् 1989 को औषधि दुरुपयोग और मद्यपान के विरुद्ध अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाया।

नशीली दवाओं के व्यसन से संबंधित महत्वपूर्ण प्रत्यय

(क) नशीली दवा (ड्रग)

नशीली दवा (ड्रग) का शब्द कोषीय अर्थ है कोई भी पदार्थ जो किसी दवा की रचना मे प्रयुक्त होता है। किंतु नशीली दवा की कार्यकारी परिभाषा है कि "कोई पदार्थ जिसे जब शरीर मे लिया जाए तो वह उसके एक या अधिक शारीरिक या मानसिक कार्यों मे परिवर्तन कर दें।" इस परिभाषा के अनुसार लगभग सभी व्यक्ति पदार्थ प्रयुक्त करते है। उदाहरणार्थ अनेक व्यक्ति दुश्चिंता, दर्द या अनिद्रा को कम करने के लिए मद्यपान, सिगरेट, या गोलियों का इस्तेमाल करते है। यहाँ तक कि साधारण पेय जैसे सुबह की चाय और कॉफी की प्याली जो हमें उत्तेजित करती है, उनमे विशेष पदार्थ होते हैं। इसके अतिरिक्त चिकित्सक बहुत से पदार्थ अच्छे स्वास्थ्य और विभिन्न बीमारियों को ठीक करने के लिए देते हैं। अधिकतर प्रयुक्त होने वाले पदार्थ कैफीन, निकोटीन और मद्यसार हैं। किंतु कैफीन, निकोटीन और मद्यसार कानूनी रूप से वैध पदार्थ हैं इसीलिए बहुत से व्यक्ति यह विश्वास नहीं करते हैं कि ये द्रव्य पदार्थ किसी प्रकार की व्याधि उसी प्रकार उत्पन्न कर सकते है जैसे उदाहरणार्थ हेरोइन, कोकेन या मरीजुआना कर सकते हैं।

(ख) सहनशीलता

किसी नशीली दवा के प्रति सहनशीलता का अर्थ है *किसी विशेष मात्रा के बारम्बार प्रयोग करने पर अनुक्रिया कम हो जाना।* उदाहरणार्थ जब कोई व्यक्ति प्रथम बार सिगरेट पीता है तो पहली सिगरेट पीने से एक सिगरेट द्वारा जो अनुक्रिया होती है वही सौवीं सिगरेट पीने के बाद नहीं होती। सभी व्यसन

करने वाली नशीली दवाओं के बारे में यह सच है। नशीली दवा की समान मात्रा प्रत्येक बार समान अनुक्रिया नहीं देती।

(ग) प्रत्याहार लक्षण

नशीली दवाओं के व्यसन से संबंधित एक और महत्वपूर्ण प्रत्यय प्रत्याहार है। जब कोई नशीली दवा नियमित रूप से ली जाती है तो दो प्रकार के लक्षण घटित होते हैं—दैहिक और मनोवैज्ञानिक। नशीली दवाओं पर निर्भरता का परिणाम परिवर्तित शारीरिक दशा होती है जो नशीली दवा के आगे के निरंतर इस्तेमाल के लिए बाध्य कर देती है। यदि नशीली दवा का प्रयोग नहीं किया जाता तो दैहिक व्याकुलता या शारीरिक लक्षणों का अनुक्रम प्रकट होना शुरू हो जाता है। व्यक्ति इन लक्षणों का प्रत्याहार करने के लिए नशीली दवाओं का प्रयोग करते हैं। इन लक्षणों में उदर या पूरे शरीर में पीड़ा, आँख और नाक से पानी बहना, पेट का खराब हो जाना आदि शामिल हैं। मनोवैज्ञानिक लक्षणों में सुख लेने अथवा तीव्र उत्कट व्याकुलता का परिहार करने के लिए कुछ कालावधि पर नशीली दवा के प्रयोग की तीव्र लालसा शामिल है।

(घ) नशीली दवाओं का व्यसन

नशीली दवाओं के व्यसन का तात्पर्य *ऐसी नियत कालिक या निरंतर उन्मादन के सेवन से है जो व्यक्ति या समाज या दोनों के लिए हानिकारक है।* इसकी तीन विशेषताएँ है। (i) नशीली दवाओं को लगातार लेने की तीव्र अंतर्नोद या इच्छा (ii) उसके प्रति सहनशीलता का उत्तरोत्तर विकास और वांछनीय प्रभावों को उत्पन्न करने के लिए नशीली दवा की मात्रा में निरंतर वृद्धि की प्रवृत्ति और *(iii) नशीली दवाओं पर निर्भरता।*

कुछ महत्वपूर्ण अनुसंधानो का साराश निम्नलिखित हैं

1. जब व्यक्ति नियमित रूप से नशीली दवाओ का सेवन करते हैं तो वे इसके बिना सामान्य रूप से कार्य नहीं कर सकते।
2. सभी नशीली दवाएँ व्यसनी नहीं होतीं केवल मस्तिष्क को निराशाजनक करने वाली नशीली दवाएँ व्यसन करती है।
3. व्यसनी नशीली दवाएँ नशीली दवाओं के प्रति सहनशीलता उत्पन्न करती हैं।
4. जब सामान्य स्तर से कम नशीली दवा ली जाएं तो प्रत्याहार लक्षण घटित होते हैं। वे नशीली दवा लेने की मात्रा और अवधि पर भी निर्भर करते हैं।

(ङ) नशीली दवाओं पर मनोवैज्ञानिक निर्भरता

नशीली दवाओ पर मनोवैज्ञानिक निर्भरता का तात्पर्य उस स्थिति से है जब नशीली दवा व्यक्ति के जीवन में इतनी महत्वपूर्ण हो जाती है कि उसकी सारी क्रियाएँ नशीली दवाओ की पूर्ति सुरक्षित करने के चारों और केंद्रित हो जाती हैं। नशीली दवा व्यसन करने वाली हो या न हो किंतु व्यक्ति केवल इसके प्रभावों का आनंद लेने के लिए अथवा इसके न मिलने पर इसकी अनुपस्थिति से उत्पन्न इसकी असुविधाओं का परिहार करने के लिए इसे बिना रुके निरंतर लेने के लिए बाध्य हो जाते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने यह सुझाव दिया कि सभी प्रकार की नशीली दवाओं के दुरुपयोग के लिए नशीली दवाओं पर निर्भरता का शब्द इस्तेमाल करना बेहतर होगा। नशीली दवाओ के दुरुपयोग का अर्थ केवल निजी सतोष के लिए नशीली दवाओं का अत्यधिक प्रयोग करना है यह कभी-कभी या स्थायी हो सकता है।

नशीली दवाओं के मूलभूत प्रभाव

नशीली दवाएँ मनुष्यों को अनेक प्रकार से, दैहिक और मानसिक दोनों रूपों से प्रभावित करती हैं। यह मस्तिष्क की सामान्य कार्य प्रणाली को प्रभावित करती है। यह तंत्रिका तंत्र की कार्य प्रणाली को मंद कर सकती है और उसमें हस्तक्षेप कर सकती है। इसलिए नशीली दवाओ का व्यक्ति के व्यवहार पर स्पष्ट प्रभाव

दिखाई देता है। कोई भी नशीली दवाओं के इस्तेमाल के कारण उत्पन्न गम्भीर लक्षण अनुभव कर सकता है।

व्यसन करने वाली नशीली दवाओं के प्रकार

इन व्यसनी नशीली दवाओं को पाँच विस्तृत वर्गों मे वर्गीकृत किया जा सकता है: (क) उत्तेजक (ख) शामक (ग) मतिभ्रम करने वाली (घ) कैनेबिस और (ङ) स्वापक। इन्हें उदाहरण सहित आगे बताया गया है।

(क) उत्तेजक

इस समूह में कोकेन, निकोटीन और तम्बाकू सम्मिलित हैं। ये नशीली दवाएँ हमारे देश में साधारणतया पाई जाती हैं। ये नशीली दवाईयाँ थोड़े समय के लिए तंत्र को उत्तेजित कर देती हैं।

(ख) शामक

इस समूह में हम मद्यसार, वेलियम, सौम्य शामक, ट्राइटानोल और कामपोज़ को वर्गीकृत कर सकते हैं। वे चिंता को अस्थायी तौर पर कम कर देते हैं। नशीली दवा, लेने वाले के चारों ओर की संवेदनशीलता को मंद कर देती है। किंतु इन नशीली दवाओं के निरंतर प्रयोग करने वाले व्यसनी में मनोवैज्ञानिक असुरक्षा, चिंता और अनिद्रा विकसित हो जाती है।

(ग) मतिभ्रम करने वाली नशीली दवाएँ

इस समूह में एल एस डी आती है। एल.एस.डी से मतिभ्रम उत्पन्न होता है जिसका अर्थ है बिना उद्दीपन के अपने आस-पास वस्तुओ का देखना। यह तीव्र व्यसन करने वाली नशीली दवा है जो व्यसनी में भय, चिंता और असुरक्षा उत्पन्न करती है।

(घ) कैनेबिस

इस समूह में गांजा, भाग, चरस और मेरीजुआना सम्मिलित हैं। ये हमारे देश में सामान्यतः पाई और प्रयुक्त की जाती हैं। ये सभी व्यसन करने वाली नशीली दवाएँ हैं और व्यसनी उन्हें आसानी से नहीं छोड़ सकते।



चित्र 6.3 *क्या हमें नशीली दवाएँ लेनी चाहिएँ ?*

(ङ) स्वापक

संवेदन मंदक, अहिफेनासव, पैथेडीन, हेरोइन और अफीम इस समूह में आती है। इनसे शारीरिक कमजोरी उत्पन्न होती है।

पीड़ानाशक जैसे कि ऐस्पिरिन आदि और दूसरी दवाएँ विश्व भर में सभी लोगों द्वारा पीड़ा और चिंता को अस्थायी तौर पर कम करने के लिए प्रयुक्त की जाती हैं। ये दवाएँ तंत्रिका तंत्र पर कार्य करती है।

कारणात्मक कारक

नशीली दवाओ के व्यसन के घटित होने में तीन मुख्य कारक है : (अ) जैव रासायनिक (ब) व्यक्तित्व कारक और (स) वातावरणजन्य, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव।

(अ) जैव रासायनिक

व्यसनी नशीली दवाएँ प्रायः अपने प्रयोग के थोड़े समय के अंदर ही कुछ स्पष्ट जैव रासायनिक परिवर्तन उत्पन्न कर देती हैं। इस प्रकार से उत्पन्न एकाएक प्रभाव व्यक्ति द्वारा वांछित होते हैं वे या तो अपने कारण या जीवन की व्याकुल करने वाली समस्याओं से बचने के लिए या आशंकाओं और चिंताओं को कम करने के लिए या कुछ सुखमय अनुभव पाने के लिए ऐसा करते है।

(ब) व्यक्तित्व कारक

प्रायः सभी नशीली दवाओं के व्यसनियों में कुछ बड़ी अथवा छोटी व्यक्तित्व की व्याधियाँ होती हैं। संवेगात्मक अस्थिरता, अपरिपक्वता और आवेगपूर्णता उनके व्यवहार की सार्थक विशेषताएँ हैं। यद्यपि व्यवहार के कुछ क्षणिक परिवर्तन जैसे विश्वसनीयता और कार्य कुशलता में ह्रास, नशीली दवाएँ प्राप्त करने के लिए धन प्राप्त करने के लिए दूसरों को धोखा देने या लूटने की आवश्यकता, असत्य आदि, व्यक्तित्व पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं किंतु ये अनिवार्यतः स्थाई नहीं होते। यह नशीली दवाओं के व्यसनियों के अनुवर्ती अध्ययन से सिद्ध हो चुका है। जिज्ञासा और किसी "नवीन" वस्तु के अनुभव करने का जोखिम किसी भी युवा को नशीली दवाओं के व्यसन की ओर अग्रसर कर सकता है।

(स) वातावरण जन्य, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव

नशीली दवाओ के कारणों के पीछे अनेक प्रकार के सामाजिक-सांस्कृतिक कारक कार्यशील प्रतीत होते हैं। खंडित गृह, माता-पिता की बीमार अभिवृत्तियाँ, माता-पिता और बड़े भाई-बहनों के व्यवहार की व्याधियाँ, भीड़-भाड़ वाले घर, स्नेह का अभाव, शिक्षकों की नकारात्मक अभिवृत्ति, अपराध प्रभुत्व स्थानों या क्षेत्रों के नज़दीक निवास, आदि कुछ ऐसे कारण हैं जो नशीली दवाओं के व्यसन में योगदान देते हैं।

नशीली दवाओं के व्यसन का नियंत्रण

नशीली दवाओं के व्यसन का नियंत्रण एक जटिल और कठिन कार्य है। यह किसी मनोरोग विशेषज्ञ, चिकित्सक मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कार्यकर्ता द्वारा अकेले नहीं किया जा सकता। इस समस्या का एकमात्र उत्तर है विशेषज्ञों के समूह द्वारा किया जाने वाला समाकलित या सम्मिलित कार्य, उपचार के प्रथम चरण में व्यसनी को विषमुक्त किया जाता है। वास्तव मे यह विशेष दवाओं की सहायता से प्रत्याहार लक्षणों (अर्थात् जब नशीली दवा का प्रयोग बंद कर दिया जाता है तो तीव्र शारीरिक व्याकुलता होना) से लड़ने का एक तरीका है।

जब प्रत्याहार लक्षणों पर यथोचित नियंत्रण पा लिया जाता है तो नैदानिक मनोवैज्ञानिक को अपने विशेष तरीके से जिसे मनोचिकित्सा और परामर्श कहते हैं, मध्यस्थता करनी पड़ती है। व्यक्तिगत और सामूहिक परामर्श मनोवैज्ञानिक या परामर्शदाता द्वारा दिया जाता है। ये उपाय सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा आगे सुदृढ किए जाते हैं। इनको व्यसनियों के घर, उन्हें और उनके घर के सदस्यों को अभिप्रेरित करने और उपचार को जारी रखने के लिए मिलने जाना पड़ता है। परिवार-चिकित्सा या परामर्श देने का कार्य

कुशल समाज कार्यकर्ताओं द्वारा किया जाता है जिससे कि पड़ोसियों और परिवार के सदस्यों का व्यसनी के प्रति अस्वीकरण, द्वेषभावना की अभिवृत्ति में परिवर्तन किया जा सके। उचित व्यवसाय प्रशिक्षण आदि के लिए प्रबंध किया जाता है ताकि व्यसनी स्वस्थ जीवन की ओर पुनः प्रस्थापित किए जा सकें। इन दीर्घावधि और बहुपक्षीय उपायों द्वारा व्यसनी को समाज का उपयोगी सदस्य बनाने के प्रयत्न किए जाते हैं।

व्यावहारिक समस्याएँ

1. हठोद्रेक

हम जानते हैं कि क्रोध एक तीव्र संवेग है जो हमारे अन्दर अधिकतर अवांछनीय प्रतिक्रियाएँ और व्यवहार उत्पन्न करता है। बच्चों के मामलो में ये प्रतिक्रियाएँ और अधिक घटित होने की सम्भावना होती है क्योंकि उनमें अभी तक पर्याप्त आत्मसंयम और तात्कालिक आवश्यकताओं की संतुष्टि को टालना विकसित नहीं हुआ होता। इसलिए जब भी कोई माता-पिता बच्चों की इच्छा या कार्य को रोकते हैं, बच्चों में क्रोध उत्तेजित हो जाता है। क्रोध पर नियंत्रण कुछ विशेष आदतो के विकास पर निर्भर करता है। यदि बच्चों को संवेगात्मक दृष्टि से संतुलित वयस्क के रूप मे विकसित करना है तो आवश्यक है कि इन आदतो को बच्चों में प्रारम्भ से ही विकसित कर दिया जाए।

हठोद्रेक की परिभाषा क्रोध के अनियन्त्रित विस्फोटन के रूप में की जाती है जिसका प्रदर्शन ठोकर मारने, चीखने-चिल्लाने, श्वास को रोकने और यहाँ तक कि फर्श पर लोटने में होता है। *यह बच्चे के रोष और कुण्ठा का शारीरिक प्रदर्शन है।* व्यवहार के दूसरे प्रकाशन शर्मीलापन, चिड़चिड़ापन और बदलती मनोवृत्तियाँ हैं।

हठोद्रेक की घटनाएँ विद्यालय पूर्व आयु के बच्चों, विशेषकर 2 से 4 वर्षों के बीच सामान्य हैं। इस अवधि के दौरान बच्चे की संवेगात्मक विकास की आवश्यकता



चित्र 6.4 *बच्चे का हठोद्रेक*

बहुत तीव्र होती है। वे सब कुछ अपने आप स्वयं करना चाहते हैं। वे कपड़े पहनना, भोजन करना और बाहर घूमने जाना आदि काम स्वयं करना चाहते हैं। उन्हें ऐसा प्रतीत होता है कि पृथ्वी पर ऐसा कोई काम नहीं जिसे वे नहीं कर सकते। किंतु बच्चों के बड़े होने की यह प्राकृतिक इच्छा प्रायः माता-पिता द्वारा निरुत्साहित की जाती है। बच्चो के माता-पिता उन पर समय नहीं दे पाते और वे तब तक इंतजार नही कर पाते जब तक बच्चे अपने हाथ मे लिया काम समाप्त कर लें। वे बच्चों को शीघ्र कार्य पूरा करने के लिए झिड़की देते हैं या बच्चे की ओर शीघ्रता से सहायता देने के लिए दौड़ पड़ते हैं जिसे बच्चें बुरा मानते है। इससे बच्चो को कुंठा होती है और वे क्रोध की ओर अग्रसर होते हैं। यही कारण है कि हठोद्रेक विस्फोटक शौच क्रियाओं और भोजन के समय ही घटित होते हैं।

हठोद्रेक के कारण

हठोद्रेक के निम्नलिखित मुख्य कारण है :

(अ) आंगिक व्याधियाँ

कभी-कभी बच्चे की शारीरिक दशाएँ जैसे भोजन करने की गलत आदते, निद्रा व उचित विश्राम की कमी, मूत्राशय या आँतों की सफाई आदि भी हठोद्रेक के लिए उत्तरदायी होते हैं। आंगिक दोष जैसे मिर्गी, सिर की चोट, दुर्घटना या चिरकालिक बीमारी के बाद स्वास्थ्य लाभ हठोद्रेक की ओर अग्रसर कर सकते हैं।

(ब) माता-पिता द्वारा अति सुरक्षा

बच्चे "शक्ति के पुंज" होते हैं यदि उन्हें खेल अवसरों से वंचित किया जाए तो वे अशांत, चिड़चिड़े, ज़िद्दी और क्रोधित हो सकते हैं। अति-सुरक्षित और अति-संरक्षित बच्चे अपनी इच्छानुसार जो कुछ वे चाहते हैं पाने के आदी हो जाते है। परिणामस्वरूप वे यह शीघ्र ही सीख लेते हैं कि उनके हठोद्रेक उनके वातावरण पर शासन करने के और अपने माता-पिता को अपनी माँगों के सम्मुख झुकाने के लिए फलप्रद साधन हैं। यही कारण है कि बच्चों में हठोद्रेक गम्भीर बीमारी के बाद स्वास्थ्य लाभ के दौरान और इकलौते बच्चे के मामले में घटित होते हैं।

(स) प्रतिरूपण

बच्चे बहुत जल्दी अनुकरण कर लेते हैं। वे अपने माता-पिता के चिड़चिड़ेपन और तुनक मिजाज होने का अनुकरण करने की ओर उन्मुख होते हैं। अधिकांशतः हठोद्रेक वाले बच्चे अपनी माँ को यह कहते हुए सुनते है कि "ओह यह बच्चा बिल्कुल अपने पिता पर गया है। इसके पिता भी उतने ही तुनक मिज़ाज हैं और ऐसा तो परिवार मे ही है।" स्वभावतः बच्चे हठोद्रेक के प्रदर्शन में गर्व का अनुभव करते हैं क्योकि उनमें ऐसी भावना होती है कि यह सब उनके परिवार में चला आ रहा है और इस प्रकार वे परिवार की परम्परा को अनुरक्षित किए हुए हैं। ऐसा करने में वे यह अनुभव करते हैं कि वे अपनी माता-पिता की अपेक्षाओं के अनुसार रह रहे हैं और उन्हीं के व्यवहार का यह प्रतिबिंब है।

(द) संवेगात्मक असुरक्षा

कई बच्चे वास्तविक जीवन या अपनी कल्पना प्रवाह मे बिना प्यार के अथवा अस्वीकृत अनुभव कर सकते हैं। हठोद्रेक वास्तविकता के परीक्षण के उनके अचेतन प्रयत्न हैं। वे अपने आप से यह पूछते प्रतीत होते हैं "यदि मैं अपने हठोद्रेक विस्फोट के कारण बुरा हूँ, तो क्या मेरी माँ मुझे वास्तव में मारेगी या मार डालेगी"। एक प्रकार का भय अचेतन स्तर पर उनके मन में छाया रहता है। यदि इस बीच उन्हें माँ द्वारा वास्तव में पीटा जाता है तो उनके मन में अस्वीकृत करने वाली और निष्ठुर माँ का विचार दृढ होकर उनकी संवेगात्मक असुरक्षा को और बढ़ावा देता है। अतः हठोद्रेक अस्वीकार करने वाले माता-पिता के बारे मे तथ्य के सत्य या असत्य के परीक्षण करने के लिए एक प्रयत्न के रूप में प्रयुक्त होता है।

हठोद्रेक का नियंत्रण

(अ) सामान्य शारीरिक जाँच

सर्वप्रथम बच्चे की सम्पूर्ण शारीरिक जाँच करनी चाहिए ताकि किसी आंगिक व्याधि की जाँच की जा सके। बच्चे के सामान्य स्वास्थ्य की जाँच अवश्य होनी चाहिए। यदि भोजन, निद्रा और मूत्राशय तथा आँतों की सफाई संबंधी त्रुटिपूर्ण आदतें हैं तो उन्हें सुधार देना चाहिए। कुछ हठोद्रेक जो आंगिक व्याधियों के कारण होते हैं जैसे मिर्गी, दुर्घटना के कारण सिर की चोट आदि तो उनका अन्य दवाओं द्वारा उपचार किया जाना चाहिए।

(ब) बच्चे के पालन-पोषण संबंधी व्यवहार में परिष्करण

हठोद्रेक के मूलभूत कारणों में श्रमसाध्य अनुसंधानों की आवश्यकता है। माता-पिता की त्रुटिपूर्ण अभिवृत्तियाँ जो बहुत से मामलों में इस समस्या के लिए उत्तरदायी है, उन्हें सुधारना होगा। यदि उन्हें पूर्ण रूप से सुधारा नहीं जा सकता तो कम से कम माता-पिता के निष्कपट प्रयत्नों द्वारा उन्हें परिष्कृत किया जा सकता है। इससे वर्तमान दशाओं में सहजता होगी और परिवार में बच्चे के समायोजन में सुधार होगा। माता-पिता को दृढ़ता पूर्वक यह आश्वासन दे दिया जाना चाहिए कि उनका बच्चा किसी मानसिक रोग से ग्रस्त नहीं है, जो एक ग़लत धारणा वे किसी कारणवश अपने मन में पाल रहे होंगे। बच्चों के सर्वांगीण विकास में पर्याप्त स्थान, खेलने की सामग्री और सम आयु के साथी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

(स) माता-पिता की संवेगात्मक परिपक्वता

हठोद्रेक के दौरान न तो बच्चों को डाँटना चाहिए और न माता-पिता को उन पर क्रोधित होना चाहिए। माता-पिता द्वारा बच्चों को संतोषजनक कारण दिए जाने चाहिए कि उनकी माँगों को इस समय क्यों पूरा नहीं किया जा रहा है। उनकी माँगों का अनौचित्य उन्हें भली-भाँति स्पष्ट कर देना चहिए। उन्हें पूर्णतः मनवाने के सभी प्रयत्न करने चाहिए। इसके बावजूद भी यदि बच्चे अपने हठोद्रेक जारी रखते हैं तो उनकी उपेक्षा कर देनी चाहिए। तूफ़ान को चले जाने दीजिए। किंतु इस उदासीनता के दौरान बच्चों को विवेकपूर्ण ढंग से समझाते रहना चाहिए वरना बच्चे उदासीनता को नाराज़ माता-पिता का अस्वीकरण समझकर ग़लत अर्थ लगाएँगे। आश्चर्य जनक रूप से हठोद्रेक के बहुत से मामलों में यह विधि अधिक प्रभावशाली सिद्ध हुई है। हठोद्रेक वाले बच्चे यह सीख लेते हैं कि उनकी संरक्षकों के शोषण की यह नीति अब लाभांश नहीं देती और वे अपने हठोद्रेक द्वारा वातावरण पर शासन नहीं कर सकते। अतः वे हठोद्रेक के प्रदर्शन द्वारा माता-पिता से रिश्वत लेने की आदत को छोड़ने पर बाध्य हो जाते हैं।

(2) झूठ बोलना

शब्द कोष में झूठ बोलने का अर्थ है "असत्य को बताना" अर्थात् अनुचित या ग़लत तथ्य। *यह किसी तथ्य को इच्छापूर्वक बताने का, झुठलाने का, विकृत करने या ग़लत प्रतिनिधित्व करने का सुविचारित प्रयत्न है* । इसे किसी तथ्य के घटित होने का सचेत सम्पूर्ण खंडन भी कहा जा सकता है। व्यक्ति जो झूठ बोलने का आश्रय लेते हैं उन्हें झूठ बोलने वाला कहा जाता है किंतु छोटे बच्चों के मामलों में काफ़ी छूट दी जाती है जो बहुत-सी बातें कह सकते हैं सभी सही नहीं होतीं। वे ग़लत बातें इसलिए करते हैं क्योंकि प्रथमतः उनके पास चीज़ों के वर्णन अथवा तथ्यों का उल्लेख करने के लिए उपयुक्त या सही ज्ञान नहीं होता। दूसरे उनके पास प्रचुरता में तूफ़ानी कल्पना प्रवाह होता है। परिणामस्वरूप बच्चों द्वारा किसी वस्तु या घटना का सही चित्र प्रस्तुत करते समय वह प्रायः उनके तूफ़ानी कल्पना प्रवाह और अभिलाषी चिंतन से चित्रित हो जाती है।

झूठ बोलने के प्रकार

एक प्रसिद्ध ब्रिटिश अपराध शास्त्री सर सिरिल बर्ट

ने झूठ बोलने को निम्नलिखित आठ प्रकारों में विभाजित किया है।

(क) विनोदशील असत्य

शैशवावस्था अथवा पूर्व बाल्यावस्था में बच्चे प्रायः केवल आमोद-प्रमोद के लिए असत्य बोलते हैं। ऐसे असत्यों को अपराध नहीं कहा जा सकता। अपितु ऐसे असत्य कभी-कभी आसपास के बड़ों के लिए काफी मनोरंजन प्रदान करते हैं।

(ख) कल्पना प्रवाह असत्य

ऐसे मिथ्याभाषण प्रायः अभिलाषी चिंतन के लिए अवसर प्रदान करते हैं। चार वर्ष की आयु तक कल्पना प्रवाह झूठ की प्रवृत्ति काफ़ी अधिक होती है। इस उम्र में बच्चें रंगीन कल्पना प्रवाह के जगत मे रहते हैं। वह अपनी कल्पना प्रवाह के उत्पादकों का ऐसे वर्णन करते हैं जैसे वे वास्तविकता में विद्यमान हैं।

(ग) उलझन भरे असत्य

कभी-कभी ऐसा होता है कि बच्चे किसी वस्तु अथवा घटना के औचित्य या अनौचित्य के बीच विभेद करने में असफल हो जाते हैं और ऐसे मामलों में उलझन के कारण बच्चे अपनी लाज रखने के लिए मिथ्याभाषण का सहारा लेते हैं।

(घ) दम्भ युक्त असत्य

बहुत से बच्चे इसलिए झूठ बोलते हैं जिससे वे इसमें झूठे दम्भ का आनंद लेते हैं। ऐसे असत्य उनके अहम् को संतोष प्रदान करते हैं। वे ऐसी विशेष वस्तुओं का वर्णन करते हैं जिनके बारे में वे पूर्णतः अनभिज्ञ हो सकते हैं। उन्होंने उस वस्तु को न तो देखा और न किया हो सकता है। ऐसे असत्य उन बच्चों में सामान्य होते हैं जिनमें हीनता की भावना होती है।

(ङ) प्रतिशोधी असत्य

कभी-कभी बच्चे उन दूसरे बच्चों के बारे में झूठी कहानियाँ बनाते रहते हैं जिन्होंने उन्हें किसी प्रतियोगिता की स्थिति में पराजित किया हो। स्पष्टतः इन बनाए हुए असत्यों को फैलाने के पीछे मिथ्याभाषी का अपने विरोधी पर अपनी श्रेष्ठता दिखाने का अस्वस्थ प्रयत्न इंगित होता है। यह दृग्विषय बहुत से वयस्कों में भी पाया जाता है।

(च) स्वार्थपूर्ण असत्य

कभी-कभी यह पाया गया है कि व्यक्ति जानबूझ कर अपने कार्यों में किसी त्रुटि को छिपाने के लिए असत्य बोलते हैं। वास्तव में वे ऐसे असत्य दूसरों के समक्ष पोल न खुल जाए इसलिए स्वरक्षा के साधन के रूप में बोलते हैं।

(छ) निष्ठायुक्त असत्य

व्यक्ति अपने समूह के प्रति स्वामिभक्त हो सकता है चाहे वह समूह अच्छे कार्यों में या अवांछनीय कार्यों में संलग्न हो। प्रायः यह पाया गया है कि इस प्रकार के वफादार व्यक्ति जिन्होंने समूह के साथ तादात्मीकरण कर लिया है वे समूह की आपत्तिजनक क्रियाओं की रक्षा करने अथवा ढकने के लिए झूठ बोलते हैं।

(ज) रोगात्मक झूठ

बहुत से व्यक्तियों में विशेष प्रकार ग्रंथियाँ या असामान्यताएँ होती हैं। ये ग्रंथियाँ अप्रत्यक्ष रूप में असत्य बोलने की आदतों में प्रदर्शित होती हैं। वे व्यक्ति जो बिना किसी बात के मिथ्याभाषण में आनंद प्राप्त करते या केवल दूसरों के ऊपर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करके संतोष प्राप्त करने के प्रयत्न में झूठ बोलते हैं वे रोगात्मक मिथ्याभाषी कहलाते हैं।

नियंत्रण

बचपन में यदि असत्य भाषण का पता चल जाए तो इसे समूल नष्ट किया जा सकता है। किंतु एक वयस्क या अभ्यस्त मिथ्याभाषी को सुधारना बहुत कठिन काम है। बारम्बार राय देते रहना या प्रवचन देना "यह

करो, यह मत करो" ये व्यावहारिक रूप में कोई प्रभावकारी परिणाम देते हुए नहीं पाए गए हैं। बच्चे जब झूठ बोलने की प्रवृति दिखाना शुरू करते हैं उनकी झूठ के परिहार में सहायता की जा सकती है। कभी-कभी झूठ बोलने की समस्या पर घुमाव-फिराव वाले तरीके से पहुँचने की अपेक्षा झूठ बोलने वाले व्यक्ति पर सीधा आक्षेप लगाना प्रभावशाली पाया गया है। मान लीजिए आप किसी बच्चे को झूठ बोलता हुआ पाते हैं तो बच्चों को यह पूछने की अपेक्षा कि क्या वे झूठ बोल रहे हैं यह पूछना सदा बेहतर होता है कि वे झूठ क्यों बोल रहे हैं। सीधे अभियोग लगाने से आप असत्य बोलने वाले व्यक्ति को शीघ्रता से असत्य बोलने के लिए और अधिक सामग्री जुटाने के बहुत कम अवसर देते हैं। इसके अतिरिक्त ऐसे प्रयत्न करने चाहिए जिनसे समस्या की जड़ तक पहुँचा जा सके जिससे कि इसे सुलझाने के लिए उचित योजना नीति व्यवहृत की जा सके। झूठ बोलने की समस्या के नियंत्रण की व्याख्या विस्तारपूर्वक नीचे की गई है।

(क) झूठ बोलने के मूल कारणों की खोज

यह महत्वपूर्ण है कि उन कारण या कारणों का सावधानी से पता किया जाए झूठ बोलना जिनका एक प्रकट लक्षण है। मूल कारणों का इस प्रकार पता या गहन खोज सावधानी पूर्वक करनी होगी। असत्य भाषण के मूल कारणों को जानने के बाद शिक्षक, माता-पिता या मनोवैज्ञानिक बच्चे को झूठ बोलने की आदत को छोड़ने के लिए राजी करते हैं।

(ख) उत्तेजक अवसरों का परिहार

शिक्षक अथवा माता-पिता को हमेशा ऐसे अवसर या स्थितियों का परिहार करना चाहिए जहाँ बच्चों के मिथ्याभाषण के लिए उत्तेजित या प्रलोभित होने की सम्भावना हो। बच्चों को ऐसी स्थितियों में जान-बूझकर अनावृत्त करके परीक्षण करना लाभदायक नहीं है क्योंकि बच्चे के लिए बुरी आदत को ग्रहण करना अच्छी आदतों की अपेक्षा अधिक सरल होता है। इसलिए हमें सभी मोहक या उत्तेजक स्थितियों के परिहार का प्रयत्न करना चाहिए जिनमें बच्चों के झूठ बोलने का शिकार बनने की संभावना होती है।

(ग) मिथ्याभाषियों द्वारा अपराध स्वीकरण

जब बच्चे पहली बार झूठ बोलते हुए पाए जाते है तो यह उचित होता है कि उनसे ईमानदारी से यह क़बूल करवा लिया जाए कि उन्होने कुछ ग़लत किया है। अपराध स्वीकरण के पश्चाताप से लज्जा और परेशानी की भावना उत्पन्न होती है। ये सब अप्रिय भावनाएँ बच्चों के लिए भविष्य में झूठ बोलने में निवारक का काम करती हैं।

(घ) सकारात्मक निर्देश

बच्चों के असत्य भाषण के उपचार के लिए नकारात्मक की अपेक्षा सकारात्मक निर्देश अधिक प्रभावशाली साधन माने गए हैं। शिक्षक अथवा माता-पिता को "मत करो" अर्थात् नकारात्मक निर्देशो का परिहार करना चाहिए। इसके स्थान पर उन्हें सकारात्मक निर्देश "ऐसा करो" देने की कोशिश करनी चाहिए। बच्चों को सच बोलने के लिए प्रोत्साहित करना झूठ बोलने के लिए हतोत्साहित करने की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली पाया गया है। बाल मनोवैज्ञानिको के अनुसार प्रत्येक बच्चा नकारात्मकता की अवस्था से गुज़रता है। इसका अर्थ यह हुआ कि विकास की एक निश्चित अवस्था में बच्चे प्राकृतिक प्रवृत्ति के रूप में उसके विपरीत करते हैं जो उससे न करने के लिए कहा जाता है। वे बड़ों के निर्देशों को नकारने या अवज्ञा करने में संतोष का अनुभव करते हैं। वैसे भी सकारात्मक निर्देश नकारात्मक निर्देशों की अपेक्षा बच्चों द्वारा आसानी से स्वीकृति पा जाते हैं।

(ङ) दण्ड

ग़लत कार्य को ठीक समय पर दंडित करना बहुत पुरानी सुधारात्मक प्रविधि रही है। किंतु दंड असत्य बोलने वाले के असत्य के अनुसार होना चाहिए। अप्रत्यक्ष दंड जैसे बच्चे से बातचीत करना बद कर देना, बच्चे की उपेक्षा करना या उसके लिए चिंता

में कमी प्रदर्शित करना भी बच्चे के झूठ बोलने के उपचार में प्रभावशाली सिद्ध हुए हैं। किंतु इस प्रकार की चिकित्सा लंबी अवधि तक नहीं चलनी चाहिए क्योंकि इसका बच्चों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। वे अपने को बहिष्कृत अनुभव कर सकते हैं। अस्वीकृति की तीव्र भावना उन्हें आक्रामक बनने या अधिक गंभीर अपराध में संलग्न होने के लिए उद्यत कर सकती है। दंड देने का उद्देश्य बच्चों को यह अनुभूति करवाना है कि झूठ बोलना एक अस्वस्थ आदत है।

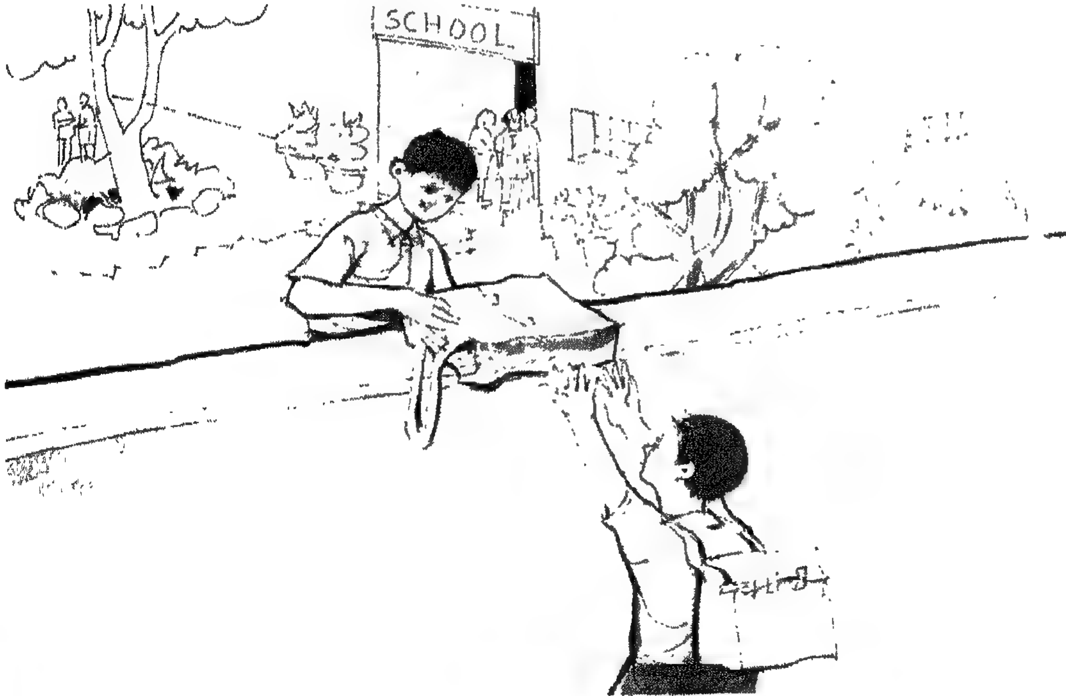
(च) बच्चों की आवश्यकताओं की संपूर्ति

बाल मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि बच्चे उच्च कल्पना से सम्पन्न होते हैं। उनमें सब प्रकार की वस्तुओं और जीवन की घटनाओं की कल्पना करने की प्राकृतिक योग्यता होती है। जब वे कल्पना के आकर्षण में होते हैं तो वे आत्मश्लाघा करते रहते हैं और रंगीन कहानियाँ बनाते रहते हैं। वे अपनी उन अविश्वसनीय कहानियों की वास्तविकता के विषय में दूसरों को मनवाने का प्रयत्न करते हैं। यदि संभव हो तो माता-पिता व शिक्षक बच्चों को नए स्थानो को देखने के और नई वस्तुओं के साथ कार्य करने के अवसर प्रदान करने का प्रयत्न कर सकते हैं। इससे उनके सम्मुख नई स्थितियाँ खुलेंगी जिनसे उन्हें एक ओर तो सूचनाएँ मिलेंगी और दूसरी ओर उनकी कल्पना समृद्ध होगी।

3. पलायन, चोरी करना और बाल-अपराध

(i) पलायन

पलायन का तात्पर्य *विद्यालय से भागना या फरार होना या सबंधित अधिकारियो की आवश्यक आज्ञा प्राप्त किए बिना विद्यालय के बाहर घूमते रहना है।* इस प्रकार का अपराधी व्यवहार विद्यालयों में शिक्षको द्वारा और घर पर माता-पिता द्वारा ऐसे युवाओं के



चित्र 6.5 *पलायनकर्ता*

प्रति गलत व्यवहार करने द्वारा प्रेरित होता है। कक्षा में इन युवाओं की अध्ययन में अभिरुचि की कमी, कक्षा की क्रियाओं पर ध्यान न देने, बुरे निष्पादन और शिक्षा कार्य के स्तर तक आने में असफलता के कारण शिक्षकों द्वारा इन्हें तीव्र आलोचना और कठोर दंड मिलता है। विद्यालय से भागने वाले युवा अधिकांशतः अपना समय पास के खेल मैदान, उद्यान, गली के किनारे या छवि गृहों में व्यर्थ करते हैं। बढ़ते हुए पलायन के मुख्य कारणों में से एक यह है कि युवा अपने विद्यालय के पाठ्यक्रम को रुचिकर नहीं पाते। विद्यालय के बाहर का विश्व उत्तेजनात्मक उद्दीपनों से पूर्ण होता है। जो उन्हें अपनी ओर आकर्षित करता है।

(ii) चोरी करना

चोरी करने से हमारा तात्पर्य दूसरे *व्यक्ति की किसी वस्तु को उसकी बिना स्वीकृति या जानकारी के ले लेना है।* इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि चोरी की गई वस्तु छोटी है या मूल्यवान, चोरी का कार्य अपने आप में न केवल अवांछनीय बल्कि कुछ मामलों में कानून के विरुद्ध समझा जाता है। यह ध्यान देने योग्य है कि यदि यह कार्य 5 वर्ष से कम आयु के बच्चे ने किया है तो उसे "चोरी" की संज्ञा नहीं दी जा सकती। यह स्पष्ट है कि 4-5 वर्ष की आयु तक बच्चे इस सीमा तक उचित नैतिक मूल्य विकसित नहीं कर पाते कि वे "चुराने और न चुराने" में विभेद कर सकें। वास्तव में उन्हें संपत्ति के नियम सिखाने की आवश्यकता है और यह भी कि क्या मेरा है और क्या तुम्हारा। कुछ बच्चे "मेरा तुम्हारा संबंध" के ज्ञान को अर्जित करने मे अधिक समय लेते हैं।

कुछ विशेष मनोवैज्ञानिक मामलों में चोरी करने का साहचर्य किसी एक निश्चित वस्तु से होता है। निश्चित चोरी की गई वस्तु बहुमूल्य या बहुत क्षुद्र हो सकती है। इन दोनों ही स्थितियों में किसी वस्तु को चुराने की एक विशेष प्रवृत्ति या यूँ कह सकते हैं कि एक सम्मोहक इच्छा होती है। वे जब भी और जहाँ भी उसे देखते हैं केवल उसी वस्तु को चुराते हैं। वे बाध्यकरण के शिकार हो जाते हैं। बाध्यता से किसी विशेष वस्तु की चोरी करना एक प्रकार का मानसिक रोग समझा जाता है जिसे "चौर्योन्माद" कहते हैं। लेखक के विद्यालय के छात्रावास का एक साथी चौर्योन्माद का शिकार था। उसकी चोरी नहाने के साबुन पर आबद्ध थी। एक बार रंगे हाथों पकड़े जाने पर उसके पास से साबुनों से भरा हुआ एक सदूक पाया गया जो सभी छात्रावास के कमरों से चुराए गए थे।

(iii) बाल-अपराध

बाल अपराध का अर्थ है तरुणावस्था के अपराध। संक्षिप्त रूप से इसका अर्थ *किसी भी अनुमानतः 18 वर्ष से कम और 10 वर्ष से अधिक के युवा में कोई भी नियम तोड़ने वाला व्यवहार है।* पलायन और चोरी करना भी बाल अपराध के अंतर्गत आते हैं यदि इसे 18 वर्ष की कम आयु के युवक ने किया हो। ऐसा व्यवहार प्रायः होता है यद्यपि यह समाज द्वारा स्वीकृत नहीं है और सामान्यतः यह किसी न किसी प्रकार की भर्त्सना, जुर्माना, दंड या सुधारात्मक कार्य के लिए आवश्यक समझा जाता है। अतः अपराधी व्यवहार की श्रेणी में विद्यालय से पलायन, चोरी करना, निःशुल्क या बिना टिकट यात्रा करना, लड़कियों से छेड़-छाड़, अवैध नशीली दवाओं का प्रयोग, हत्या, बलात्कार या और कोई गम्भीर अपराधी कार्य आते हैं।

बाल अपराध के कारणात्मक कारक

पलायन, चोरी करना और बाल-अपराध के कारणात्मक कारक विस्तृत रूप से (अ) पारिवारिक, (ब) सामाजिक सांस्कृतिक, (स) व्यक्तित्व और (द) आर्थिक कारको में विभाजित किए जा सकते हैं।

(अ) पारिवारिक कारक

बाल-अपराध के क्षेत्र में किए गए अध्ययनों से प्रदर्शित होता है कि अधिकतम संख्या में बाल-अपराधी खंडित

घरों से आते हैं जहाँ पारिवारिक बंधन बिगड़े होते हैं। बच्चों के व्यक्तित्व का विकास उनके माता-पिता के चरित्र और आचरण से प्रभावित होता है। ऐसे बच्चे का मिलना मुश्किल है जो अपने व्यवहार को समाज द्वारा स्वीकृत मूल्यो और मानकों के अनुसार ढाल लें, जिसके माता-पिता नियमित रूप से झूठ बोलते हों, दूसरों को ठगते हों, ढोंगी हों और दूसरे प्रकार के व्यवहार करते हों जो चरित्र व्याधि के अंतर्गत आते हैं।

(ब) सामाजिक सांस्कृतिक कारक

परिवार के बाद बच्चो और युवाओ के जीवन मे विद्यालय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बच्चे के व्यक्तित्व के निर्माण में विद्यालय के वातावरण को महत्वपूर्ण माना जाता है। बाल-अपराध दूसरों के साथ परस्पर व्यवहार द्वारा अर्जित किए जाते हैं। किसी युवा का व्यक्तित्व बहुत सीमा तक उसके साथियों के आचरण से प्रभावित होता है। इसीलिए कहावत कही जाती है कि "व्यक्ति अपनी मित्र-मण्डली से जाना जाता है"। विद्यालय में बाल-अपराध अधिकतर उन विशेष समूहों से संबंध रखते हैं जिन्हें टोली या गिरोह कहा जाता है।

ऐसा ठीक ही माना जाता है कि चलचित्र बाल-अपराध के लिए बहुत सीमा तक उत्तरदायी है। प्रणय और साहसिक कार्यों के रोमांचक दृश्यों द्वारा अपराध और हिंसा के नए तरीके प्रायः प्रस्तुत किए जाते हैं। निःसंदेह युवाओं के विकासशील मन पर इनका हानिकारक प्रभाव पड़ता है। अधिकतर बड़े कस्बों मे आस पास ही कुछ स्थान ऐसे होते हैं जहाँ बाल-अपराधों का प्रभुत्व होता है। इन क्षेत्रों में जीवन का स्तर निम्न होता है। बच्चों की मृत्यु दर उच्च होती है। मनोरंजन के साधन प्रायः न के बराबर होते हैं और अधिकतर घर अस्थायी होते हैं। शहरों के कुछ होटल, छवि गृह या मनोरंजन के स्थान, पान की दुकानें आदि कभी-कभी अपराध स्थल बन जाते हैं।

(स) व्यक्तित्व कारक

संवेगात्मक अस्थिरता बाल-अपराध के महत्वपूर्ण कारणों में से एक मानी जाती है। बच्चों का व्यक्तित्व प्यार और स्नेह की कमी, संवेगात्मक असुरक्षा, कठोर अनुशासन, अपर्याप्तता का भाव, हीन-भावना, अस्वीकृति और अलगाव या परायापन और सत्ता के प्रति विद्रोह की प्रवृत्ति से प्रभावित होता है। मन की ऐसी अवस्था बच्चों को अपराधी क्रियाएँ करने के लिए प्रेरित करती हैं। बहुत सी स्थितियों में मस्तिष्क की क्षति तथा मानसिक मंदन अपराधी प्रवृत्ति से संबंधित पाए गए है। मस्तिष्क की क्षति केंद्रीय तंत्रिका तंत्र के अवरोधक नियंत्रण को कम कर देती है। इससे चिड़चिड़ेपन और हिंसक व्यवहार की ओर प्रवृत्ति होती है।

(द) आर्थिक कारक

अनुसंधानकर्ताओं द्वारा यह पाया गया है कि अपराध और निर्धनता का आपस मे घनिष्ठ संबंध है। दूसरे शब्दों में निर्धनता बहुत से मामलों में अपराधी क्रियाओं के लिए शक्तिशाली अभिप्रेरक का काम करती है। परिवार की कम आय ऐसे परिवारों के बच्चों को आर्थिक बोझ मे भागीदार बनने और अपनी शिक्षा की उपेक्षा करने के लिए बाध्य कर देती है। उन्हें जलपान गृहों, होटलों आदि में काम करने पर मजबूर होना पड़ता है जहाँ उन्हें विभिन्न प्रकार की अपराध क्रियाएँ करने का प्रलोभन हो जाता है। ऐसे होटल और भोजनालयों में काम करने वाली लड़कियाँ आसानी से यौन अपराधों की ओर आकर्षित हो जाती हैं क्योंकि उनके वेतन कम होते हैं, निवास गंदे होते हैं और काम करने के घंटे अधिक होते हैं। यह तथ्य है कि कई बार निर्धन परिवारों के लड़के और लड़कियों की इच्छाएँ अपूर्ण रह जाती है और वे उन्हें उचित या अनुचित साधनों द्वारा संतुष्ट करना चाहते हैं। किंतु फिर भी ऐसा निष्कर्ष निकालने का कोई कारण नहीं दिखाई देता कि निर्धनता निश्चित रूप से अपराध की ओर अग्रसर करती है क्योंकि ऐसे बहुत से

उदाहरण है जहाँ यह पाया गया है कि अपराध समृद्ध परिवारों में प्रचुर मात्रा में है और दूसरी ओर निर्धनता से ग्रस्त परिवारों में यह एकदम नहीं है।

उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट हो जाता है कि कारणात्मक कारक बहुविध हैं। वे व्यक्ति जिनका अपने वातावरण से समायोजन के ढंगों में सामाजिक रूप से स्वीकृत मान्य साधनों और मानकों का अनुप्रयोग सम्मिलित है, स्वस्थ कहलाते हैं। दूसरी ओर वे व्यक्ति जो वातावरण से समायोजन के लिए असामाजिक और अस्वीकृत साधनो का इस्तेमाल करते हैं, अपराधी कहे जाते हैं। इस प्रकार बच्चे अनेक कारणों सामाजिक, व्यक्तिगत, पारिवारिक, मनोवैज्ञानिक और आर्थिक के संयुक्त योगदान द्वारा अपराधी बन जाते हैं। अतः बाल-अपराध को नियंत्रित करके और पुनः स्थापित करके उन्हें समाज के उदीयमान और स्वस्थ सदस्य बनाने के लिए इन कारणों को समझना और दूर करना अनिवार्य है।

बाल-अपराध की रोकथाम और पुनः स्थापन करने के लिए महत्वपूर्ण तरीके नीचे दिए गए है।

(i) परख अवधि

बाल-अपराधी को विशेष रूप से प्रशिक्षित व्यक्ति जिसे परख अवधि अधिकारी कहा जाता है, की देख-रेख और अधीक्षण में रखा जाता है। उनका उत्तरदायित्व अपराधियों की उचित देखभाल करना, और समाज में उन्हें स्थापित करने व सामान्य जीवन व्यतीत करने के लिए सहायता करना होता है। अतः अपराधी न केवल अपने को परिशोधन करने या सुधारने का अवसर पाते हैं अपितु उन्हें इस उद्देश्य के लिए सहायता और समर्थन भी प्राप्त होता है।

(ii) सुधार संस्थाएँ

सुधार शिक्षालय, प्रमाणित विद्यालय और सहायक गृह जैसी संस्थाएँ अपराधियों को सुधारने के लिए बनी हैं। इन विद्यालयों में उन्हें विविध प्रकार के शिक्षण और व्यवसाय प्रशिक्षण के अवसर प्रदान किए जाते हैं। इन संस्थाओं का उद्देश्य अपराधियों की सर्वांगीण उन्नति करना है।

(iii) मनोवैज्ञानिक व्यवस्था

जबकि उपरोक्त विधियाँ सरकार द्वारा राज्य व केंद्र दोनों स्तरों पर बाल-अपराधियों के नियंत्रण के लिए इस्तेमाल में लाई जाती हैं, मनोवैज्ञानिक अपने तरीके से अपराधियों के व्यवहार का उपचार या परिष्करण करते हैं। इनमें से निम्नलिखित तीन उल्लेखनीय हैं।

(अ) क्रीड़ा चिकित्सा

यह एक विशेष तरीका है जिसमें क्रीड़ा का प्रयोग चिकित्सा प्रविधि या मनोवैज्ञानिक उपचार विधि के रूप में किया जाता है। इसमे योजनाबद्ध और सुनियंत्रित खेल की स्थिति में अपराधी लड़के और लड़कियाँ भाग लेकर अपनी दमित इच्छाओं और भावों को प्रकट कर सकते हैं। दमित अभिप्रेरणाओं और संवेगों की मुक्ति से उनकी रचनात्मक शक्ति के विकास में सहायता मिलती है। क्रीड़ा चिकित्सा मे व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों ही तरह के खेलों की व्यवस्था की जा सकती है।

(ब) मनोअभिनय

इस प्रविधि में भी पहली विधि जैसी विरचना निहित होती है। अंतर केवल यह है कि नियंत्रित खेलों के स्थान पर अच्छी प्रकार लिखे हुए सामूहिक नाटकों की व्यवस्था की जाती है। अपराधियों को विभिन्न भूमिकाओं में भाग लेने की अनुमति दी जाती है जिसमें वे दमित अभिप्रेरणाओं को मुक्त करते हैं।

(स) अंगुलि-चित्रण

इस विधि में बाल-अपराधियों को एक सादा कागज और कुछ रंग दे दिए जाते हैं। उन्हें अपने तरीके से जो कुछ वे चाहें चित्रित करने को कहा जाता है। इसका मुख्य प्रयोजन चित्र बनवाने का नहीं होता बल्कि इस माध्यम द्वारा पिछली दो विधियों के समान अपने दमित विचारों और अभिप्रेरणाओं की अभिव्यक्ति करने का होता है।

इन तीन विधियों के अतिरिक्त मनोवैज्ञानिक कभी-कभी दूसरी विधियों जैसे परिवार निर्देशन,

माता-पिता निर्देशन, मनोरंजन चिकित्सा, वातावरण जन्य चिकित्सा तथा विविध प्रकार के व्यावसायिक प्रशिक्षण की सहायता का बाल-अपराधियों को स्वस्थ रूप से पुनर्वासित करने के लिए आश्रय लेते हैं। इन सब विधियों से भी ऊपर शिक्षकों, माता-पिता, पड़ोसियों, स्वयंसेवी संस्थाओं और राज्य और केंद्र दोनों स्तरों की सरकारों के संगठित प्रयास हैं।

सारांश

असामान्य व्यवहार की व्याख्या व्यवहार के ऐसे ढंगों के रूप में की गई है जो समाज द्वारा स्वीकृत मानक व्यवहार के अनुसार नही है। विकासात्मक व्याधियाँ बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था की व्याधियों के वे समूह हैं जो शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास में किसी अभाव के कारण होते हैं। व्यावहारात्मक समस्याएँ बच्चों के वे अनुक्रिया ढंग हैं जो समाज की अपेक्षाओं के अनुसार नही है।

स्वलीनता बाल्यावस्था की एक गंभीर विकासात्मक व्याधि है जिसकी विशेषता समाज से संबंध रखने में असमर्थता है। स्वलीन अकेलापन, संचार समस्याएँ, रीति रिवाज और बाध्यता वृत्तिविषय, निर्जीव वस्तुओं में प्रभुत्वपूर्ण अभिरुचि, वाणी के विकास में मंदन, लयात्मक गतियों का प्रदर्शन, और ऊँचे शोर से भय ये स्वलीन बच्चों की विशेषताएँ होती हैं। पारिवारिक परस्पर क्रिया का अभाव, तंत्रिकीय असामान्यताएँ और बौद्धिक न्यूनता स्वलीनता के कारण है। स्वलीन बच्चे का नियंत्रण शिक्षा, व्यवहार परिष्करण, और माता-पिता को परामर्श द्वारा किया जा सकता है।

मानसिक मंदन जन्म से शुरू होकर या बाद में बौद्धिक कार्यक्षमता की कमी और समाज की माँगों के साथ समायोजन में असमर्थता की ओर इंगित करता है। अल्प, मध्यम, तीव्र और गहन मानसिक मंदन के चार प्रकार हैं। जन्म पूर्वकाल के दौरान समस्याएँ, बच्चे के जन्म के दौरान जटिलताएँ, शैशवावस्था और बाल्यावस्था के दौरान दुर्घटनाएँ, जननिक दोष तथा सामाजिक सांस्कृतिक कारक मानसिक मंदन में योग देते हैं। पारिवारिक उत्तरदायित्व, निदान स्वीकार करना और संस्था में रखना, मानसिक रूप से मंद बच्चों के नियंत्रण के लिए प्रभावकारी माने जाते हैं।

इस एकक में समाज विरोधी व्यक्तित्व व्याधि की एक विकासात्मक व्याधि के रूप में व्याख्या की गई है। समाज विरोधी व्यक्ति को असामाजीकृत दूसरे व्यक्तियों, समूहों, सामाजिक मूल्यों और मानकों के प्रति निष्ठा में असमर्थ और प्रायः समाज के साथ संघर्षरत व्यक्ति के रूप में वर्णित किया गया है। नैतिक मूल्यों, चिंता और अपराध भावना की कमी, अनुत्तरदायी और आवेगपूर्ण व्यवहार, बाहरी आकर्षण और प्रभावी बुद्धिवादी, सत्ता का अस्वीकरण एवं अनुभवों से लाभान्वित होने में असमर्थता तथा सामान्य अंतवैयक्तिक संबंधों में निष्क्रियता समाज विरोधी व्यक्तियों की विशेषताएँ हैं। पारिवारिक और सामाजिक संदर्भ, अधिगम के दोष और शारीरिक दुष्क्रिया समाज विरोधी व्यक्तित्व व्याधि के कारणात्मक कारक हैं। व्यक्तिगत मनोचिकित्सा, सामूहिक चिकित्सा, औषधि चिकित्सा और व्यवहार चिकित्सा समाज विरोधियों को नियंत्रित करने के लिए प्रयोग की जाती हैं।

नशीली दवा वह पदार्थ है जिसे शरीर में लिया जाए तो वह इसके एक या एक से अधिक शारीरिक या मानसिक कार्यों में परिवर्तन ले आए। नशीली दवा के प्रति सहनशीलता तब आती है जब किसी विशेष मात्रा के प्रयोग या इसकी पुनरावृत्ति करने पर कम अनुक्रिया होने लगे। यदि नशीली दवा नहीं ली जाती तो भिन्न प्रकार की अवांछनीय शारीरिक व्याकुलताएँ या शारीरिक लक्षणों का अनुक्रम प्रकट होना शुरू हो जाता है। इन्हें प्रत्याहार लक्षण कहा जाता है। नशीली दवाओं के व्यसन का तात्पर्य किसी ऐसी नियत कालिक या निरंतर उन्मादन का सेवन करने से है जो किसी व्यक्ति या समाज के लिए हानिकारक हैं। नशीली दवाओं पर मनोवैज्ञानिक निर्भरता उस स्थिति को इंगित करती है जब व्यक्ति या तो इसके प्रभाव का आनंद लेने के लिए या इसके अभाव में हुई असुविधा के कारण बिना अवरोध के इसे लेने के लिए निरंतर रूप से बाध्य हो जाते हैं। उत्तेजक, शामक, मतिभ्रम करने वाले, कैनेबिस और स्वापक ये पाँच प्रकार की नशीली दवाएँ हैं। जैव-रासायनिक, व्यक्तित्व कारक, वातावरण जन्य, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव नशीली दवाओं के व्यसन के कारणत्व कारक हैं।

व्यसनियो के नियत्रण के लिए परिवार, विशेषज्ञो और समाज द्वारा समाकलित उपागमों की आवश्यकता है।

हठोद्रेक बच्चों के व्यवहार की समस्या है। इसकी परिभाषा क्रोध के एक अनियत्रित विस्फोटन के रूप मे की जाती है जिसकी अभिव्यक्ति शारीरिक प्रदर्शन, शर्मीलेपन, चिड़चिड़ापन और बदलती चित्तवृत्ति में होती है। आगिक व्याधियाँ, माता-पिता द्वारा अति सुरक्षा, और सवेगात्मक असुरक्षा हठोद्रेक के कारण है। बच्चो के हठोद्रेक का प्रबध करने के लिए सामान्य शारीरिक जाँच, बच्चे के पालन पोषण -सबंधी व्यवहार मे परिष्करण और माता-पिता की सवेगात्मक परिपक्वता आवश्यक है।

झूठ बोलना किसी तथ्य को जान-बूझ कर गलत बताना, झुठलाना, विकृत करना या उसका गलत प्रतिनिधित्व करने का सुविचारित प्रयत्न है। विनोदशील, कल्पना प्रवाह, उलझन भरे, दम्भ युक्त, बदले की भावना, स्वार्थ, निष्ठापूर्ण, रोगात्मक, ये आठ प्रकार के असत्य हैं। झूठ बोलने के मूल कारणो की खोज, उत्तेजक अवसरो का परिहार, मिथ्या भाषी द्वारा अपराध स्वीकरण, सकारात्मक निर्देश, दंड और बच्चे की आवश्यकताओं की सपूर्ति मिथ्या भाषण के नियत्रण की विधियाँ है।

पलायन का अर्थ विद्यालय से भागना या फरार होना या विद्यालय के बाहर संबधित अधिकारियों की बिना आवश्यक आज्ञा के घूमते रहना है। चोरी की व्याख्या किसी व्यक्ति की किसी वस्तु को उसकी बिना स्वीकृति या जानकारी के ले लेने से की गई है। बाल-अपराध का अर्थ किसी भी नियम तोड़ने वाले व्यवहार से है जो अनुमानतः 18 वर्ष से कम और 10 वर्ष से अधिक आयु के युवा द्वारा किया गया हो। पारिवारिक कारक, सामाजिक-सास्कृतिक कारक, व्यक्तित्व कारक, और आर्थिक कारको की बाल अपराध के कारणात्मक कारको के रूप मे व्याख्या की गई है। इन अपराधियों का नियत्रण परख अवधि, सुधार सस्थाओ और मनोवैज्ञानिक व्यवस्था द्वारा किया जाता है। क्रीड़ा-चिकित्सा, मनोअभिनय और अंगुलि-चित्रण मनोवैज्ञानिक व्यवस्था के तीन तरीके हैं।

प्रश्न

1. असामान्य व्यवहार से आप क्या समझते हैं?
2. स्वलीनता की विशेषताएँ बताइए। स्वलीन व्यवहार का नियत्रण कैसे किया जा सकता है?
3. मानसिक मदन के विभिन्न प्रकार क्या हैं? कौन से कारक मानसिक मदन मे योग देते है?
4. समाज विरोधी व्यक्ति आनुवशिकी और पर्यावरण का परिणाम है। व्याख्या कीजिए।
5. नशीली दवाओ के व्यसनी के नियंत्रण में आप किस प्रकार सहायता कर सकते हैं?
6. हठोद्रेक के कारणों और इसके नियत्रण की व्याख्या कीजिए।
7. झूठ बोलने का नियत्रण करना क्यो कठिन है? असत्य भाषण के प्रत्येक प्रकार की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
8. बाल-अपराध के कारणो और नियत्रण की संक्षेप मे व्याख्या कीजिए।
9. इनमे से कौन से कथन सत्य हैं?
   (क) छोटे बच्चो मे बाध्यता मिथ्याभाषण स्वाभाविक है। यह व्याधि नही है।
   (ख) पचास से कम बुद्धिलब्धाक वालो को शिक्षित किया जा सकता है।
   (ग) मनोचिकित्सा उपचार की एक प्रक्रिया है।
   (घ) स्वलीन बच्चो की सामाजिक स्थितियो मे श्रेष्ठतम चिकित्सा की जा सकती है।
   (ङ) मानसिक मदन जननिक कारणों से होता है।
10. निम्न पर सक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
    (क) नशीली दवाएँ (ख) सहनशीलता
    (ग) प्रत्याहार लक्षण (घ) नशीली दवाओ का व्यसन
    (ङ) पलायन (च) चोरी करना

एकक 7

निर्देशन एवं परामर्श

इस एकक के अध्ययन के बाद विद्यार्थी इस योग्य होंगे कि वे

- **निर्देशन, परामर्श और उनके संबंधों की व्याख्या कर सकें;**
- **निर्देशन की आवश्यकता का वर्णन कर सकें;**
- **निर्देशन के क्षेत्रों के बारे में बता सकें;**
- **समूह निर्देशन का वर्णन कर सकें;**
- **परामर्श के प्रकारों का वर्णन कर सकें;**
- **परामर्श के उपागमों की व्याख्या कर सकें;**
- **परामर्शदाता के कार्यों का वर्णन कर सकें;**
- **एक अच्छे विद्यालय परामर्शदाता की विशेषताओं को पहचान सकें।**

क्या आपको वह दिन याद है जब आप दसवीं कक्षा की परीक्षा में उत्तीर्ण घोषित किए गए थे। आप प्रसन्न थे कि सामान्य शिक्षा की अवस्था पूर्ण हुई परंतु आगे की परीक्षा के पाठ्यक्रम के चुनाव का असमंजस था। क्या यह विज्ञान, वाणिज्य, कला विषय या व्यावसायिक पाठ्यक्रम होना चाहिए। और इन पाठ्यक्रमों मे भी कौन से विषयों का चयन किया जाए। शायद आप प्रत्येक से पूछ रहे थे। आपने माता-पिता, बड़े भाई-बहनों और शिक्षकों से इन पाठ्यक्रमों को चुनने के भविष्य की संभावनाओं के विषय में पूछा था। आपने इस विषय में भी सोचा होगा कि इनमें से कौन से पाठ्यक्रम आपकी योग्यताओं तथा अभिरुचियों के अनुसार हैं। उस समय आपने निर्देशन की आवश्यकता का अनुभव किया होगा। यह सत्य है कि ऐसे समयों पर निर्देशन की आवश्यकता होती है। किंतु निर्देशन का क्षेत्र और कार्य केवल चयन करने में सहायता करने की अपेक्षा कहीं अधिक व्यापक है।

महत्वपूर्ण प्रत्यय

निर्देशन

निर्देशन के अंग्रेज़ी पर्यायवाची शब्द गाइडेंस पद की उत्पति "गाइड" से हुई है जिसका अर्थ है मार्ग दिखाना अथवा नेतृत्व करना। पथप्रदर्शन से अभिप्राय स्थानों,

समस्याओ, विषयो, परिस्थितियो अथवा व्यक्तियो के बारे में आवश्यक सूचना प्रदान करने के कार्य से है। निर्देशन के अनिवार्य कार्यों में से एक कार्य सूचना प्रदान करना है। निर्देशन पद को अनेक प्रकार से पारिभाषित किया है जिनमे से अधिकाश परिभाषाएँ निर्देशन के उद्देश्यों तथा कार्यों पर विस्तृत रूप से सहमत हैं। *निर्देशन प्रत्येक व्यक्ति को अपने आप को पहचानने, अपने आतरिक संसाधनों का प्रयोग करने अपने लक्ष्यों को निर्धारित करने, योजनाएँ बनाने और समाज द्वारा प्रदत्त अनुकूलतम दशाओं मे अपने विकास की समस्याओं को हल करने में सहायता करने की प्रक्रिया है।*

परामर्श

परामर्श के अंग्रेज़ी पर्यायवाची पद काउंसेलिंग की उत्पत्ति काउंसेल शब्द से हुई है जिसका अर्थ सलाह परामर्श, राय या सुझाव है। व्यक्ति विभिन्न स्थितियों और समस्याओ मे परामर्श ढूंढ़ते हैं जैसे व्यावसायिक, व्यक्तिगत, विवाह संबंधी और चिकित्सा आदि। परामर्श या सुझाव माता-पिता, मित्र और शुभचिंतकों द्वारा दिए जाते हैं। कुछ विभिन्न प्रकार की पृष्ठभूमि और प्रशिक्षण प्राप्त व्यावसायिक व्यक्ति जैसे डॉक्टर, वकील, सामाजिक कार्यकर्ता और कार्मिक कार्यकर्ता भी अपने-अपने क्षेत्रों में परामर्श देने का कार्य करते हैं। किंतु परामर्श को निर्देशन कार्यकर्ता परामर्शदाता द्वारा परामर्शग्राही को दी गई राय ही नहीं मानते हैं। यह व्यक्ति को उनकी समस्या का समाधान देने या सूचना प्रदान करने या उनके प्रश्नो का उत्तर देने तक ही सीमित नहीं है। यह उस व्यक्ति जिसे सहायता की आवश्यकता है, परामर्शग्राही और दूसरे प्रशिक्षित व्यक्ति जो सहायता दे सकते है, परामर्शदाता के बीच एक संबध है। इसका उद्देश्य परामर्शप्रार्थी में समझ प्राप्त करने और स्वयं अपनी दिशा ढूँढ़ने में सहायता करना है। परामर्श प्रक्रिया के दौरान परामर्शदाता व्यक्ति में आवश्यक सामाजिक कौशलो का विकास करने, उनके व्यक्तिगत विकास में वृद्धि करने और सामाजिक समायोजन को सुसाध्य करने तथा आधुनिक जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सहायता करते हैं।

इस क्षेत्र मे कार्यरत अनेक लोगों ने परामर्श को पारिभाषित करने का प्रयत्न किया है। परंतु ई.जी. वेदनायगम ने एक व्यापक परिभाषा दी है "परामर्श एक स्वीकृति युक्त, विश्वास पूर्ण तथा सुरक्षित संबंध है जिसमें मुवक्किल या परामर्शग्राही अपनी परेशानियों के बारे में स्वतंत्रता पूर्वक विचार-विमर्श करते है, अपने लक्ष्यों को पारिभाषित करते हैं, आवश्यक सामाजिक कौशल अर्जित करते हैं और उसे व्यवहार में कार्यान्वित करने का साहस एवं आत्म विश्वास विकसित करते हैं"।

निर्देशन और परामर्श में संबंध

निर्देशन एक क्रमबद्ध एव संगठित सेवा है जो विद्यालयों में सभी विद्यार्थियो की व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए बनाई गई है। यह विद्यार्थियों की योग्यता एवं अभिरुचियों को पहचानने और उनके विकास मे सहायता प्रदान करती है। इसमे सभी विद्यार्थियों के विषय मे विस्तृत सूचना एकत्र की जाती है और लेखाबद्ध करके उसका प्रतिपादन किया जाता है। यह सूचना विद्यार्थियों को भी अपने स्वय के बारे में जानने में सहायता करने के लिए दी जाती है। विद्यार्थियों को उनके सम्मुख शैक्षिक एवं व्यावसायिक अवसरों के विषय में सूचना भी प्रदान की जाती है और उनके व्यवसाय संबंधी योजना बनाने और विकास करने में सहायता की जाती है।

विद्यार्थियो के सर्वांगीण विकास मे सहायता करते समय प्रायः देखने में आया है कि कुछ विद्यार्थियों को अपनी समस्याओं के समाधान में व्यक्तिगत ध्यान की आवश्यकता होती है। इन विद्यार्थियों की आवश्यकताओ की पूर्ति व्यक्तिगत सहायता, स्वीकृति और बोध के सबंधों में की जाती है जिसे परामर्श की संज्ञा दी जाती है। परामर्श में परामर्शग्राही के

साथ अद्वितीय स्थितियों में अद्वितीय व्यक्ति के रूप में व्यवहार किया जाता है।

निर्देशन के कुछ कार्य जैसे व्यवसाय संबंधी सूचना एकत्र करना तथा प्रसार करना विद्यालय छोड़ने वाले विद्यार्थियों की अनुवर्ती सेवा, प्रत्येक विद्यार्थी के बारे में सूचना एकत्र करना, आदि निर्देशन कार्यकर्ता द्वारा किए जा सकते हैं। परंतु परामर्श में उच्च स्तरीय कौशल एव विशेष व्यावसायिक प्रशिक्षण अपेक्षित होता है। अतः यह उन्हीं व्यक्तियो द्वारा किया जाना चाहिए जिनके पास आवश्यक शैक्षिक पृष्ठभूमि तथा प्रशिक्षण हो।

निर्देशन की आवश्यकता

मनुष्य को समाज में रहना होता है। उसे अपने अंतर्द्वद्वों को समाप्त करना होता है और बाह्य माँगों के साथ सामंजस्य स्थापित करना होता है। उसे दूसरों के साथ समायोजन करते हुए अपना मानसिक सतुलन बनाए रखना पड़ता है ऐसा करते हुए उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और निर्देशन की आवश्यकता होती है। व्यक्ति को जीवन पर्यंत निर्देशन की आवश्यकता होती है। किंतु वह अवस्था जिसमें निर्देशन की अत्यधिक आवश्यकता होती है वह तब होती है जब उसे शिक्षित किया जाता है और समाज में एक उपयोगी एवं उत्पादक भूमिका लेने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। यह समय शिक्षा के समय के साथ घनिष्ठ रूप से मेल खाता है। यही वह समय है जब अतःशक्तियों की अनुभूति होती है, योग्यताएँ तथा कौशल विकसित होते हैं, आदतों व अभिवृत्तियों का निर्माण होता है, और सामाजिक व संवेगात्मक विकास होता है। अतः विद्यार्थियों के जीवन के विभिन्न पहलुओ के संबंध में निर्देशन की आवश्यकता होती है। निर्देशन की आवश्यकताओं को दो भागों में बाँटा जा सकता हैः (i) वैयक्तिक आवश्यकताएँ तथा (ii) सामाजिक आवश्यकताएँ

(i) वैयक्तिक आवश्यकताएँ

वैयक्तिक आवश्यकताओं को भी आगे तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है (अ) शैक्षिक वृद्धि, (ब) व्यावसायिक विकास तथा (स) वैयक्तिक-सामाजिक विकास।

(अ) शैक्षिक वृद्धि

बच्चे जो विद्यालय में प्रवेश लेते हैं वे अपनी योग्यताओं और कौशलों का विकास करना चाहते हैं। यदि शिक्षक प्रभावशाली ढंग से पढ़ाना चाहते हैं तो उन्हें न केवल अपने शिक्षण विषय को ही जानना चाहिए वरन् उस बालक को भी जानना चाहिए जिसे उन्हें पढ़ाना है। निर्देशन में प्रशिक्षित व्यक्ति अध्यापकों को बच्चों की आवश्यकताओं, योग्यताओ और अभिरुचियों के विषय मे समझने में सहायता करते हैं ताकि वे अपने विषय को उन्हीं के अनुकूल पढ़ा सकें और इसे अधिक सफल बना सकें। बच्चो की योग्यताओ और अभिरुचियो को जानने पर अध्यापक उनकी अपनी अंतःशक्तियो के विकास करने मे सहायता कर सकते हैं।

(ब) व्यावसायिक विकास

विद्यार्थियों में कार्य के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास करने हेतु निर्देशन की आवश्यकता होती है। विद्यालय के प्रारम्भिक वर्षों से ही विद्यार्थियो को अपने विषय मे अभिज्ञता तथा कार्य जगत के बारे में अवगत कराने की आवश्यकता है। पाठ्यक्रमों की विविधता और व्यवसायों के नए अवसर जो तेज़ी से विकसित हो रहे हैं उन के कारण यह कार्य और भी अधिक जटिल हो गया है। आत्मबोध के साथ विद्यार्थियों को अपनी योग्यताओं, कौशलो, अभिवृत्तियों तथा अभिरुचियों का भी विकास करने की आवश्यकता है ताकि वे अपने को व्यवसाय के चयन के लिए तैयार कर सकें। यदि जीवन के निर्माणात्मक काल में ही उनके विकास की ओर उचित ध्यान न दिया गया तो बाद मे व्यावसायिक निर्देशन अधिक सहायक नही भी हो सकता है।

(स) वैयक्तिक सामाजिक विकास

बच्चे अपने जीवन में बहुत सी समस्याओं का सामना करते हैं। ये समस्याएँ पारिवारिक, शारीरिक, रूपरंग, स्वास्थ्य, साथी समूह, शिक्षक, शैक्षिक समस्याओं और ऐसी ही दूसरी संबद्ध स्थितियों के बारे में हो सकती हैं। वैयक्तिक-सामाजिक विकास में निर्देशन की आवश्यकता तीव्र सामाजिक परिवर्तन के कारण बढ़ गई है। ग्रामीण परिवारों के नगरों में प्रवासी बच्चों, प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों और कामकाजी माताओं के बच्चों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

(ii) सामाजिक आवश्यकताएँ

सामाजिक आवश्यकताओं को भी तीन उप भागों में बाँटा गया है, (अ) सुखी पारिवारिक जीवन के लिए निर्देशन, (ब) मानव संसाधनों के बेहतर उपयोग हेतु निर्देशन और (स) अच्छी नागरिकता हेतु निर्देशन।

(अ) सुखी पारिवारिक जीवन हेतु निर्देशन

अच्छे पारिवारिक संबध और परिवार के अन्दर अच्छा समायोजन समुदाय में समायोजन का आधार है। बच्चों और उनके परिवार के सदस्यों के संबंधों को सुधारने की दिशा में बहुत कुछ करना है। इससे पारिवारिक जीवन के सुधार में सहायता मिलेगी।

(ब) मानव संसाधनों के उचित उपयोग हेतु निर्देशन

व्यवसाय केवल व्यक्ति के दृष्टिकोण से ही महत्वपूर्ण नहीं है जिसको अपने लिए जीविकोपार्जन करना होता है बल्कि समाज के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है जिसे प्रत्येक व्यक्ति द्वारा किए गए उत्पादनों से अपने संसाधनों का निर्माण करना पड़ता है। यह आवश्यक है कि व्यक्ति जो भी जीवन वृत्ति चयन करें वह उनकी योग्यताओं, अभिरुचियों, कौशलो, अभिवृत्ति और व्यक्तित्व विशेष के अनुरूप हो और वे उससे संतुष्टि प्राप्त करें तभी वे समाज के प्रति अपना लाभदायक योगदान कर पाएँगे।

(स) अच्छी नागरिकता के लिए निर्देशन

विद्यालय में विद्यार्थियों को सामाजिक मूल्यों, आवश्यकताओं, अभिवृत्तियों, आदतों, और अच्छे तौर तरीकों को आत्मसात् करने, निष्ठा और सामाजिक उत्तरदायित्वों को मन में बैठाने में निर्देशन द्वारा सहायता की जाती है।

निर्देशन के क्षेत्र

क्षेत्र विस्तार के संदर्भ में निर्देशन के क्षेत्र इस प्रकार वर्गीकृत किए जा सकते हैं (1) शैक्षिक (2) व्यावसायिक तथा (3) वैयक्तिक-सामाजिक।

(1) शैक्षिक निर्देशन

शैक्षिक निर्देशन में विद्यार्थियों को विद्यालयी शिक्षा से अधिकतम लाभ उठाने और विभिन्न स्तरो पर उनकी शिक्षा संबंधी समस्याओं का समाधान करने में सहायता की जाती है। शैक्षिक निर्देशन कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों के लिए निम्नलिखित कार्यों का निष्पादन करना है।

(i) विद्यार्थियों को अपनी अभिरुचियों तथा योग्यताओं को पहचानने, विकसित करने और सुधार करने के अवसर प्रदान करना।
(ii) अध्ययन की अच्छी आदतों का विकास करने में विद्यार्थियो की सहायता करना।
(iii) आवश्यकता पड़ने पर प्रतिकारी कार्य की व्यवस्था करना।
(iv) विद्यार्थियों को शैक्षिक योजना की आवश्यकता के बारे में अवगत कराना।
(v) विद्यार्थियों को उनके उचित विषयों के चयन में सहायता करना।
(vi) उच्च शिक्षा के बारे में सूचना देना और इस पर ध्यानपूर्वक विचार करने के लिए प्रोत्साहित करना।

इसके अतिरिक्त निर्देशन कार्यकर्ता शिक्षकों और प्रधानाचार्य को विद्यार्थियों के अधिकतम शैक्षिक विकास की उन्नति के लिए विद्यालयो के शैक्षिक कार्यक्रम की योजना बनाने एवं सचालन करने में भी सहायता करते हैं।

(2) व्यावसायिक निर्देशन

पिछले वर्षों में व्यावसायिक निर्देशन ही केवल ऐसी सहायता थी जो निर्देशक कार्यकर्ता द्वारा दी जाती थी। यद्यपि निर्देशन के अन्य क्षेत्रों की आवश्यकता की लगातार अनुभूति हो रही है किंतु अब तक व्यावसायिक निर्देशन एक महत्वपूर्ण सेवा बनी रही है। व्यवसाय भिन्न हैं इसी प्रकार व्यक्ति भी भिन्न हैं। विभिन्न व्यवसाय व्यक्तियों से जो माँगें करते हैं वे भी भिन्न हैं। व्यवसाय का चयन करते समय यह जानना महत्वपूर्ण है कि विभिन्न व्यवसाय क्या हैं और व्यक्तियों से उनकी क्या माँग है। व्यावसायिक निर्देशन विद्यार्थियों को बहुत से व्यवसायों में से वह व्यवसाय चयन करने में सहायता करता है जो उनके अनुरूप है और फिर तैयारी, प्रवेश पाने, और उनमे उन्नति करने में उनकी सहायता करता है। व्यावसायिक निर्देशन शीघ्र ही प्रारंभ हो जाना चाहिए। चूंकि व्यावसायिक निर्देशन शैक्षिक प्रक्रिया से जुड़ा है अतः यदि इसे विद्यालयी वर्षों में फैला दिया जाए तो यह अधिक प्रभावशाली होगा। परामर्शदाता विद्यार्थियों को शैक्षिक और व्यावसायिक योजना बनाने में निम्नलिखित सहायता प्रदान करते हैं।

(अ) विद्यार्थियों को स्वयं को समझने, अपनी योग्यताओं, अभिरुचियों, जीवन मूल्यों एवं लक्ष्यों को समझने में सहायता करना।

(ब) व्यवसायो के विषय में जानकारी देना, कार्य की प्रकृति, व्यवसाय की दशाएँ, उन्नति के लिए अवसर, तथा व्यवसायों में प्रवेश व सफलता के लिए अपेक्षित दशाएँ, आवश्यक योग्यताओं, व कौशलों की जानकारी देना।

(स) परामर्शदाता विभिन्न शैक्षिक एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थाओं के विषय में जानकारी भी प्रदान करते हैं।

(द) परामर्शदाता विद्यार्थियों को अपने विषय में जानकारी और प्रशिक्षण संस्थाओं व व्यवसायो की प्रकृति में संबंध स्थापित करने में सहायता करते हैं। वे विद्यार्थियों को अपने उद्देश्यों और आकांक्षाओं के बारे में चिंतन के लिए व क्रिया योजना रेखांकित करने के लिए अभिप्रेरित करते हैं।

3. वैयक्तिक-सामाजिक निर्देशन

वैयक्तिक-सामाजिक पद के अंतर्गत विद्यार्थी के जीवन के वे पक्ष आते हैं जो उसके स्वयं से व समाज से संबंधित हैं। विद्यार्थी कुछ विशेष समस्याओं का सामना करते हैं जिनके लिए वे बहुत चिंतित हो सकते हैं। प्रायः विद्यार्थी स्वय ही उन समस्याओं से समायोजन करने का प्रयत्न करते हैं। वे गलतियाँ भी कर सकते हैं और इस प्रकार समस्या को और गंभीर भी बना सकते हैं।

निर्देशन का कार्यक्रम विद्यार्थियों को इन समस्याओं को समझने और समाधान करने मे सहायता करता है। व्यक्तिगत या सामूहिक निर्देशन द्वारा उन्हें यह अनुभूति करवाई जाती है कि कुछ समस्याएँ सामान्य हैं जिनका इस अवस्था में सभी छात्रों को सामना करना पड़ता है। किंतु कुछ समस्याएँ अधिक गम्भीर हो सकती हैं और उन पर विशेष ध्यान अपेक्षित होता है। विद्यार्थियों की समस्याएँ निम्न के बारे में होती हैं : (क) सामाजिक समायोजन, (ख) पारिवारिक संबंध, (ग) आत्म प्रत्यय और व्यक्तित्व, (घ) किशोरावस्था की स्वास्थ्य चिंताएँ तथा (ङ) अवकाश का समय व्यतीत करना।

(क) सामाजिक समायोजन

मित्रता, दूसरे युवाओं के साथ समायोजन और दूसरों को स्वीकार करना सामान्य विकास के परिचायक हैं। युवाओं के संवेगात्मक विकास में मित्रता महत्वपूर्ण है। कभी-कभी घर में बड़े लोग विद्यार्थियों के मित्रों को स्वीकार नहीं करते। कुछ विद्यार्थी दूसरों के साथ समायोजन नही कर पाते या दूसरो को स्वीकार नहीं कर पाते, ऐसी स्थितियों में विद्यार्थियों को संतोषप्रद

अंतर्वैयक्तिक संबंधों के विकास के लिए निर्देशन की आवश्यकता होती है। यह निर्देशन प्रशिक्षित परामर्शदाता द्वारा किया जाता है जो न तो माता-पिता होते हैं और न शिक्षक, किंतु किशोरों की संवेगात्मक आवश्यकताओं को समझते हैं। निर्देशन की आवश्यकता इसलिए होती है क्योंकि यह उन्हें इस बात को समझने में सहायता देती है कि मनुष्यों मे व्यक्तिगत भेद होते हैं। विभिन्न जातियों और समुदायों के विद्यार्थी भी एक दूसरे के साथ अच्छी तरह समायोजन कर सकते हैं। विद्यार्थियों को इस तथ्य को भी समझना चाहिए कि दूसरों की भी अपनी समस्याएँ हो सकती है इससे उन्हें दूसरों के उस व्यवहार को सहन करने में सहायता मिलेगी जिसे वे समझ नहीं सके और दूसरों को स्वीकार करने से अपनी ईर्ष्या और आक्रामकता में कमी लाएँगे और विद्यार्थियों को विचारशील, दयालु और सहकारी होना सीखने में सहायता करेगा। परामर्शदाता किशोरों को इन परिस्थितियों मे अपनी समस्याओं के हल ढूँढने में उनकी सहायता करते हैं।

(ख) पारिवारिक संबंध

व्यक्ति के जीवन में परिवार महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह व्यक्ति को संवेगात्मक व नैतिक समर्थन देता है। कभी-कभी उचित समझ की कमी के कारण माता-पिता व बच्चों या भाई-बहनों के बीच संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। किशोरो को यह जानना आवश्यक है कि उनकी समस्याएँ सामान्य हैं और उनकी आयु के सभी युवा उन्हें अनुभव करते हैं। किंतु कभी-कभी वास्तव में कठिनाइयाँ आती हैं और परामर्शदाता को माता-पिता के साथ मिलकर उन्हें बच्चों का दृष्टिकोण समझाने के लिए कार्य करना पड़ता है। कभी-कभी पारिवारिक संघर्ष और खंडित गृह के कारण भी कठिनाईयाँ उत्पन्न हो सकती हैं। ऐसी स्थितियों में परामर्शदाता विद्यार्थी को संवेगात्मक समर्थन प्रदान करके अपने माता-पिता और परिवार के दूसरे सदस्यों के साथ कार्यकारी संबंध विकसित करने में सहायता करते हैं।

(ग) स्वप्रत्यय और व्यक्तित्व

प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयुक्त स्वप्रत्यय का विकास महत्वपूर्ण है। युवा अपने विषय मे संदिग्ध होते है। वे अपनी अंतःशक्तियो को नही जानते हैं। छिद्रान्वेषी टिप्पणियाँ, या यहाँ तक कि आकस्मिक समीक्षाएँ उन्हें हीन या असुरक्षित अनुभव करा सकती हैं। दूसरों द्वारा स्वीकृति स्वप्रत्यय के स्वस्थ विकास के लिए महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त उन्हें अपनी योग्यताओं और अपने प्रभावशाली तथा दुर्बल बिंदुओं को जानने के अवसरों की आवश्यकता होती है। परामर्शदाता का यह उत्तरदायित्व है कि वे विद्यार्थियो को स्वयं को समझने में सहायता करें।

(घ) किशोरों की स्वास्थ्य चिंताएँ

किशोर प्रायः अपने शरीर गठन के विषय में चिंतित होते हैं इस अवस्था में वे यौवनारम्भ के कारण होने वाले तीव्र शारीरिक परिवर्तन जैसे ऊँचाई, वज़न, शक्ति, मुहाँसों में एकाएक वृद्धि के कारण स्व-चेतन हो जाते हैं। ये परिवर्तन उन्हें चिंतित व संकोची बना देते है और बहुत से किशोर चिड़चिड़ापन, आलस्य, निराशा, विषाद तथा चित्तवृत्ति परिवर्तनों से ग्रस्त हो जाते हैं। उन्हें अपने शारीरिक रूपांतरण जो उन्हें वयस्कता की ओर अग्रसर करते हैं, के प्रति स्वस्थ अभिवृत्तियाँ विकसित करने में निर्देशन की आवश्यकता होती है।

(ङ) अवकाश के समय को व्यतीत करना

विद्यालय में विद्यार्थी बहुत सी पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं जैसे खेल कूद, वाद-विवाद, नाटक, बालचर तथा राष्ट्रीय छात्र सेना में सम्मिलित होते हैं। इन विभिन्न क्रियाओं में भाग लेने से विद्यार्थी अपनी योग्यताओं तथा संवेगों की अभिव्यक्ति के लिए मार्ग पाते हैं। किंतु बहुत से विद्यार्थियों को स्वयं ही कुछ करके उदाहरणार्थ कला, अथवा शिल्पकला द्वारा अपनी प्रतिभा को अभिव्यक्ति देने के अवसरों की आवश्यकता होती है। कुछ विद्यार्थी शर्मीले होते हैं उन्हें प्रोत्साहन



चित्र 7.1 एक समूह निर्देशन सत्र

की आवश्यकता होती है। निर्देशन इन विद्यार्थियों को अपने अवकाश के समय का सृजनात्मक उपयोग और अपनी प्रतिभाओं के विकास के लिए उचित अवसर पाने में सहायता करता है।

सामूहिक निर्देशन

निर्देशन क्रिया व्यक्तिगत अथवा सामूहिक रूप में की जाती है। सामूहिक और व्यक्तिगत निर्देशन एक दूसरे के पूरक है। निर्देशन के कुछ उद्देश्यों की प्राप्ति विद्यार्थियों के साथ निजी रूप से कार्य करने पर उत्तम रूप से प्राप्त होती है और कुछ उद्देश्यों की प्राप्ति सामूहिक कार्यों से विभिन्न प्रकार से लाभदायक होती है जैसे ये मितव्ययी होती हैं। उदाहरणार्थ जब बहुत से विद्यार्थियों को एक ही प्रकार की सूचना की आवश्यकता होती है तो समूह में देने में समय तथा प्रयत्नों की बचत होती है। किंतु मितव्ययिता ही सामूहिक कार्य के लिए अकेला तर्क नही है। कुछ समस्याओं पर समूहों में ही अच्छी प्रकार विचार-विमर्श किया जाता है विशेषतया विचार-विमर्श के द्वारा समूह के सदस्य एक दूसरे को पुनर्विश्वास देते हैं। यह सामूहिक कार्य के मुख्य लाभों में से है। सामूहिक कार्यों के अनुरूप कुछ निर्देशन कार्य निम्नलिखित हैं।

(क) नए छात्रों का पूर्वाभिमुखीकरण

विद्यालय के नए विद्यार्थियों के परिचय कराने में सामूहिक निर्देशन आदर्श रूप से उपयुक्त है। नए छात्रों को एक सी सूचना की आवश्यकता होती है जो आसानी से समूह में दी जा सकती है। इसके अतिरिक्त समूह निर्देशन उन्हें उन विद्यार्थियों के साथ रहने में सहायता करता है जो विद्यालय में उन्हीं की भाँति नए हैं और वे भी उनके जैसे ही असुरक्षित अनुभव कर रहे हैं। एक विद्यार्थी का प्रश्न दूसरों की सहायता कर सकता है क्योंकि उनमें कुछ इतने भीरु होंगे कि प्रश्न भी नहीं पूछ सकेंगे।

(ख) सामान्य समस्याओं पर विचार-विमर्श

बहुत से युवा लोगों की सामान्य समस्याएँ होती है। इन समस्याओं की समूह में चर्चा करने से उन्हें यह अनुभूति होती है कि वे इन समस्याओं का सामना करने वाले अकेले नहीं हैं। इस बात के ज्ञान से कि दूसरों को भी इसी प्रकार की समस्याएँ हैं, उनकी चिंता कम हो जाती है। वे दूसरों के अनुभवों से भी सीखते हैं।

(ग) दूसरों को स्वीकार करना सीखना

युवा लोग कभी-कभी दूसरे लोगों की बहुत आलोचना करते हैं। समूह चर्चाओं द्वारा उन्हें दूसरों के दृष्टिकोण समझने और उन्हें स्वीकार करने में सहायता मिल सकती है।

(घ) सामूहिक चर्चाओं में सहभागिता

कुछ विद्यार्थी कक्षा मे बोलने या विचार-विमर्श में सहभागिता करने में बहुत संकोची होते हैं। छोटे समूह में उन्हें बोलने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। इस अनुभव के साथ वे बड़े समूहों तथा कक्षा में भी बोलना सीख सकते हैं।

(ङ) विद्यालय अनुशासन

कभी-कभी विद्यार्थी कुछ विशेष नियमों पर अप्रसन्न होते हैं क्योंकि वे उनका उद्देश्य नहीं समझते। उनकी समूहों में चर्चा की जा सकती है और उनके महत्व की व्याख्या की जा सकती है। यदि छात्रों को वास्तव में कोई कठिनाई है तो वह अधिकारियो के विचार के लिए उनके ध्यान में लाई जा सकती है। समूह चर्चाएँ विद्यालय की सम्पत्ति की देखभाल और विद्यालय को साफ-सुथरा रखने के महत्व की अनुभूति कराने में सहायता देने के लिए भी प्रयुक्त की जा सकती है।

(च) व्यवहार के वांछनीय ढंग सीखना

समूह कार्य से विद्यार्थियों में नई स्थितियों में अच्छे ढंग व व्यवहार सीखने में सहायता मिलती है। वरिष्ठ विद्यार्थियों के लिए नकली साक्षात्कारों की व्यवस्था करके उन्हें व्यवसाय अथवा अन्य साक्षात्कारो के लिए तैयार किया जा सकता है।

(छ) व्यावसायिक एवं शैक्षिक सूचना

विद्यार्थियों को व्यावसायिक एवं शैक्षिक सूचना समूहों में प्रदान की जा सकती है। यह परामर्शदाता द्वारा कक्षा वार्तालापों में वक्ताओं को आमंत्रित करके, व्यवसाय दिवस मनाकर या व्यावसायिक गोष्ठियो का आयोजन करके अथवा कार्य स्थलों पर ले जा कर करवाई जा सकती है।

परामर्श

परामर्श निर्देशन सेवाओं की केंद्रीय क्रिया है। यह इस मान्यता पर आधारित है कि प्रत्येक व्यक्ति में अपने संसाधन हैं और वे अपनी क्रियाओं का उत्तरदायित्व स्वयं लेने में समर्थ हैं। व्यक्ति कठिन स्थितियो में समायोजन करने की योग्यता विकसित और सुदृढ़ करते हैं जो वयस्क होने पर भली प्रकार उनका साथ देती हैं। परामर्श प्रक्रिया का उद्देश्य विद्यार्थी के आत्मबोध, आत्म-स्वीकृति तथा आत्म अनुभूति में वृद्धि करना है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें परामर्श-ग्राही स्वतंत्रता पूर्वक एवं निःसंकोच अपनी भावनाओं के बारे में बोलते हैं, स्थिति को समझते हैं और अपना सर्वोत्तम उपयोग करना सीखते हैं। इस प्रक्रिया द्वारा वे आत्म निर्भर होना, अपने लिए स्वयं निर्णय लेना, उत्तरदायित्व लेना किसी भी संकट का सामना करना और कभी-कभी कठिन स्थिति में जीना सीखते हैं।

परामर्श के प्रकार

बहुत सी ऐसी समस्याएँ हैं जो युवा विद्यार्थियों के लिए चिंता का कारण हो सकती हैं। कुछ में तो गहन कार्य तुरंत अपेक्षित होता है और अन्य में दीर्घकालीन परामर्श की आवश्यकता होती है। अतः परामर्श भी विभिन्न प्रकार का होता है। यह इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है। (i) संकट कालीन परामर्श (ii) सुसाध्यकारी परामर्श (iii) निवारक परामर्श तथा



चित्र 7.2 *परामर्श साक्षात्कार*

(iv) विकासात्मक परामर्श। परामर्श के ये प्रकार आपस में भिन्न नहीं हैं। बहुत से उदाहरणो में एक ही मुवक्किल के साथ एक से अधिक प्रकार का परामर्श प्रयुक्त होता है। उदाहरण के लिए परामर्शग्राही जो व्यवसाय के लिए निर्णय करने के साथ-साथ संवेगात्मक समस्याओं का सामना भी कर रहा है तो उसे सुसाध्यकारी के साथ-साथ संकटकालीन परामर्श की भी आवश्यकता होती है।

(i) संकटकालीन परामर्श

यह सामान्य अनुभव है कि प्रायः सभी व्यक्तियों ने अपने जीवन में कभी न कभी संकट की स्थिति का अनुभव किया है, जैसे प्रिय जन की कमी, पारिवारिक संघर्ष, बेरोजगारी, परीक्षा में असफलता आदि। जब यह संकट बहुत अधिक गम्भीर हो जाता है तो युवाओं का सामान्य व्यवहार प्रभावित होता है। उनमें स्वयं पर संदेह, चिंता, एवं अपराध भावना विकसित हो सकती है। ऐसी स्थिति में उन्हें प्रशिक्षित परामर्शदाता की सहायता की आवश्यकता होती है। परामर्शदाता युवाओं की कठिनाइयों को अनेदखा नहीं करते परंतु उन्हें अपने जीवन के तनावो को समझने और सहन करने के लिए आत्मविश्वासी बनाने में और व्यवहार के नए ढंग अपनाने का प्रयत्न करने में सहायता करते हैं।

(ii) सुसाध्यकारी परामर्श

हम सभी कुछ न कुछ भूले करते हैं अथवा कभी न कभी कुछ स्पष्टता की आवश्यकता होती है।

परामर्शदाता विद्यार्थी को स्थिति को स्पष्ट करने में सहायता करते हैं। आत्म बोध द्वारा विद्यार्थी स्वयं कार्य योजना बनाते हैं और उस पर कार्य करते हैं। इस प्रकार का परामर्श उपचारी अथवा समायोजनात्मक परामर्श भी कहलाता है जिसका तात्पर्य विद्यार्थी के त्रुटिपूर्ण अथवा अवांछित व्यवहार को ठीक करना होता है।

सुसाध्यकारी परामर्श शैक्षिक समस्याओं, पाठ्यक्रमों के चयन, व्यवसाय की योजना बनाने और परिवार के सदस्यों एवं कक्षा के विद्यार्थियो के साथ समायोजन करने से संबंधित हैं।

(iii) निवारक परामर्श

यह ठीक ही कहा गया है कि उपचार से परहेज बेहतर है। निवारक परामर्श दूसरे प्रकार के परामर्शों से इस अर्थ में भिन्न हैं कि यह विशिष्ट मुद्दों से सबंधित होता है। इस परामर्श का उद्देश्य विद्यार्थियों को भविष्य में आने वाली घटनाओं के प्रति तैयार करना है जैसे विद्यार्थियों को वर्तमान पाठ्यक्रमो के विषय में अवगत कराना और उनमें प्रवेश के पश्चात् भविष्य के परिणामी प्रभावों से अवगत कराना, +2 पर व्यावसायिक विषयों के चयन तथा शैक्षिक और व्यावसायिक जीवनवृत्तियों के विषय में अवगत कराना आदि। निवारक परामर्श एक व्यावहारिक प्रक्रिया है जिसका आयोजन पहले से ही करना पड़ता है। शैक्षिक एवं व्यावसायिक अभिज्ञता संबंधी निवारक परामर्श विद्यार्थियों को पहले से ही भविष्य की संभावनाओं के पूर्णज्ञान के लिए तैयार करता है जिससे वे अपनी अपेक्षाओं के अनुरूप व्यवसाय में प्रवेश न पाने पर आघात से ग्रस्त न हों। निवारक परामर्श की विद्यार्थियों को विशेषकर नशीली दवाओ के व्यसन, हिंसा तथा पलायनवादिता के खतरों के बारे में शिक्षा देने के लिए आवश्यकता है क्योंकि यह समस्याएँ भयात्मक रूप से वृद्धि पर है।

(iv) विकासात्मक परामर्श

विकासात्मक परामर्श एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जीवन पर्यंत चलती है। यह व्यक्ति को अपने जीवन की हर अवस्था में सकारात्मक वैयक्तिक विकास प्राप्त करने में सहायता करती है। यह विद्यार्थी को अपने स्वयं के तथा अपने आसपास के पर्यावरण के बारे में जानकारी प्राप्त करने में सहायता करती है। इसका उद्देश्य व्यक्ति मे सकारात्मक अभिवृत्तियाँ, जीवन मूल्य तथा नैतिक व्यवहार का विकास करना है। विकासात्मक परामर्श द्वारा परामर्शदाता विद्यार्थी के भविष्य के व्यवहार के लिए लक्ष्यो के विन्यास करने में तथा अपनी क्षमता के उपयोग करने की विधियों का विकास करने, और उन्हें स्पष्ट करने मे सहायता करते हैं।

परामर्श उपागम

परामर्श के अनेक उपागम हैं। विन्यास अथवा उपागम परामर्शदाता द्वारा प्रयुक्त प्रक्रिया में बल अथवा दिशा के अनुसार होता है। यह परामर्श साक्षात्कार में वर्तमान बल होता है जो इसे निदेशात्मक, अनिदेशात्मक अथवा विभिन्न दर्शनग्राही उपागम से नामांकित करता है जैसे : (i) निदेशात्मक परामर्श (ii) अनिदेशात्मक परामर्श तथा (iii) विभिन्नदर्शनग्राही

(i) निदेशात्मक परामर्श

निदेशात्मक परामर्श में परामर्शदाता द्वारा प्रत्यक्ष परामर्श होता है जो परामर्श साक्षात्कार का नेतृत्व और नियंत्रित करते हैं। परामर्शदाता परामर्शग्राही की क्रियाओं को निर्देशित करते हैं। यह उपागम इस मान्यता पर आधारित है कि परामर्शदाता का ज्ञान व अनुभव उन्हें परामर्शग्राही की समस्याओं के समाधान में सक्षम बनाता है। फिर भी परामर्शदाता परामर्शग्राही को अपने द्वारा दिए गए समाधान को स्वीकार करने के लिए बाध्य नही करते किंतु वे परामर्शग्राही के चिंतन को उस कार्ययोजना की स्वीकृति की दिशा में निर्देशित करते है जिसे वे सोचते है कि वह परामर्शग्राही के लिए उत्तम होगा। इस प्रकार के विन्यास में परामर्श अपेक्षाकृत सक्षिप्त और उद्देश्यपूर्ण होता है क्योंकि परामर्शग्राही द्वारा समस्या

पर चिंतन करने और निर्णय पर पहुँचने में समय व्यतीत नहीं होता। निदेशात्मक उपागम को विशेषक व कारक उपागम का नाम भी दिया गया है जिसका तात्पर्य है कि परामर्श की प्रक्रिया परामर्शग्राही की योग्यताओं, अभिरुचियों तथा व्यक्तित्व विशेषकों का विश्लेषण और पहचान करके उन्हें विभिन्न प्रकार की स्थितियो—शैक्षिक, व्यावसायिक एवं वैयक्तिक के साथ अनुरूप किया जाता है।

(ii) अनिदेशात्मक उपागम

निदेशात्मक उपागम से उलटा अनिदेशात्मक उपागम है जिसमें परामर्शदाता दिशा निर्देश का दायित्व परामर्शग्राही पर डाल देते है। अनिदेशात्मक परामर्श का उपागम इस मान्यता पर आधारित है कि प्रत्येक परामर्शग्राही अपनी समस्याओं का समाधान करने मे सक्षम है बशर्ते उन्हें समस्याओं से अवगत करा दिया जाए। इस उपागम मे परामर्शदाता परामर्शग्राही को उनकी क्रिया योजना के बारे में दिशा निर्देश नहीं देते। वे श्रोता की भूमिका निभाते हैं और उनका मुख्य उद्देश्य परामर्शग्राही को बिना हिचक के बोलने के लिए प्रोत्साहित करना होता है और उनके दमित विचारो को सतह पर लाकर तनावो से मुक्त करना और उनकी समस्याओं को समझना होता है। अनिदेशात्मक उपागम विशेषतः वहाँ उपयुक्त होता है जहाँ परामर्शग्राही की समस्या संवेगात्मक है। परामर्शग्राही परामर्शदाता की सहायता चिंता, आकुलता अथवा तनाव की दशा में चाहते हैं। उनसे निःसंकोच बात करवा कर परामर्शदाता उन्हें उनकी ही समस्याओं को नए कोणों से दृष्टिगत करने, अपनी अभिवृत्तियों में परिष्कार करने और अपने लक्ष्यो को दोबारा संगठित करने योग्य बनाते हैं। यह स्पष्ट है कि ऐसे विन्यास में परामर्श को अधिक समय लगता है। अनिदेशात्मक उपागम शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्णय लेने में भी उपयुक्त होता है।

(iii) विभिन्नदर्शनग्राही उपागम

यह उपागम उन लोगों द्वारा विकसित किया गया है जो निदेशात्मक और अनिदेशात्मक परामर्श के अतिवादी दृष्टिकोणों मे विश्वास नही रखते हैं। उन्होंने इसको विभिन्नदर्शनग्राही उपागम की सज्ञा दी है। परामर्शदाता इस प्रक्रिया के दौरान बारी-बारी से दोनो उपागमो अर्थात् निदेशात्मक तथा अनिदेशात्मक को परामर्शग्राही की आवश्यकताओं के अनुसार प्रयोग कर सकते हैं। वे उपागम में जहाँ भी उन्हें आवश्यकता हो सुधार कर सकते हैं। यह उपागम इस तथ्य को मान्यता देता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं, व्यक्तित्व एवं अनुभवों मे भिन्न है। अतः परामर्श का केवल एक उपागम सभी व्यक्तियो के मामलों में उपयुक्त रूप से व्यवहृत नहीं किया जा सकता। परामर्शदाताओं का यह विचार है कि कुछ उदाहरणो में परामर्शग्राही की समस्याओं को ध्यान से सुनना भी बहुत प्रभावी सिद्ध होता है। जबकि दूसरे उदाहरणों में परामर्शदाता कुछ निर्णय लेने में विशिष्ट सहायता दे सकते है और परामर्शग्राही की सहायता करने के लिए आवश्यक न्यूनतम निर्देशन दे सकते हैं। सामान्य शैक्षिक एव व्यावसायिक चयन की समस्याओं में निदेशात्मक झुकाव अधिक व्यावहारिक हो सकता है जबकि वैयक्तिक-सामाजिक क्षेत्र में गहरी समस्याओं के संबध में कार्य करते समय अनिदेशात्मक उपागम की ओर झुकाव अधिक लाभकारी सिद्ध हो सकता है। इस प्रकार के परामर्श में परामर्शदाता और परामर्शग्राही दोनो ही बराबर सक्रिय रहते हैं।

विद्यालय परामर्शदाता के कार्य

विद्यालय परामर्शदाता अपना अधिकांश समय विद्यार्थियो के शैक्षिक एवं व्यावसायिक भविष्य की योजनाओं के निर्माण में लगाते हैं। यह एकमात्र क्रिया नहीं है किंतु विद्यालय के सम्पूर्ण निर्देशन कार्यक्रम का भाग है जो सभी विद्यार्थियो के जीवन को स्पर्श करता है। विद्यालय के निर्देशन कार्यक्रम में बहुत-सी

क्रियाएँ सम्मिलित होती है और यह एक निरंतर प्रक्रिया है। निर्देशन परामर्शदाता प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति होते हैं जो विद्यार्थियो की आवश्यकताओं का सर्वेक्षण करके, विद्यालय के भौतिक तथा अन्य ससाधनों को एकत्र करके और प्रशासनिक अधिकारियों के सहयोग को सुनिश्चित करने के बाद विद्यालय के निर्देशन के कार्यक्रम को ध्यानपूर्वक विकसित करके सुव्यवस्थित रूप से कार्य करते हैं।

विद्यालय परामर्शदाता के कुछ मुख्य कार्य निम्नलिखित हैं।

(i) नए विद्यार्थियो का पूर्वाभिमुखीकरण, (ii) विद्यार्थियो का मूल्यांकन (iii) शैक्षिक एवं व्यावसायिक सूचना, (iv) परामर्श, (v) स्थानन, (vi) अनुवर्ती तथा (vii) अनुसंधान एवं मूल्यांकन

(i) नए विद्यार्थियों का पूर्वाभिमुखीकरण

स्थितियों से परिचय ऐसा कारक है जो विद्यार्थी के समायोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वह सेवा जो विद्यार्थियों को नए विद्यालय में समायोजन करने में सहायता के लिए दी जाती है पूर्वाभिमुखीकरण सेवा कहलाती है। परामर्शदाता उन्हें विद्यालय से परिचय कराने के लिए पूर्वाभिमुखीकरण क्रियाएँ करते हैं। उसका इतिहास, परम्पराएँ, उद्देश्य, नियम व अधिनियम, भवन तथा भौतिक सुविधाएँ, शिक्षक समुदाय एवं छात्र संगठन, पाठ्यक्रम व पाठ्यसहगामी क्रियाओं से अवगत कराने के लिए पूर्वाभिमुखीकरण क्रिया करते हैं।

(ii) विद्यार्थियों का मूल्याकन

जैसा पहले उल्लेख किया जा चुका है कि विद्यार्थी को समझने के लिए और विद्यार्थी स्वयं को समझे, इस कार्य मे सहायता करने के लिए उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं और पृष्ठभूमि के विषय में सूचना एकत्र करने की आवश्यकता होती है। इसमें उनकी घरेलू पृष्ठभूमि, निवास स्थान, उनके परिवार के सदस्यों विशेषकर उनके पिता की शिक्षा एवं व्यवसाय सम्मिलित हैं। उनकी योग्यताओं, अभिरुचियों, स्वास्थ्य और सामान्य व्यवहार के ढंगों के विषय में सूचना आवश्यक होती है। यह सूचना बहुत से स्रोतों से एकत्र की जाती है सबसे पहले तो स्वयं विद्यार्थी और उसके माता-पिता से ली जाती है। यह प्रश्नावलियों या साक्षात्कार द्वारा हो सकती है। छात्रों को जाँच सूची भी दी जा सकती है। विद्यालय अभिलेखों से उपस्थिति, स्वास्थ्य और उपलब्धि अभिलेखों से भी सूचना प्राप्त की जा सकती है। विद्यार्थी के व्यवहार का निरीक्षण भी मूल्यवान सूचनाएँ प्रदान करता है। परामर्शदाता विद्यार्थी की अभिक्षमताओं तथा अभिरुचियों के विषय में सूचना प्राप्त करने के लिए मनोवैज्ञानिक परीक्षणो का इस्तेमाल भी कर सकते हैं। इस प्रकार एकत्र की हुई सूचना सचयाप्रपत्र पत्रक पर अभिलिखित कर ली जाती है। इस प्रकार यह आसानी से प्राप्त होती है और पत्रक प्रपत्र का अध्ययन करने से विद्यार्थी के विषय मे व्यापक वर्णन प्राप्त होता है।

(iii) शैक्षिक एवं व्यावसायिक सूचना

शैक्षिक एवं व्यावसायिक सूचना का एकत्रीकरण और प्रसार शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन के लिए आवश्यक है। परामर्शदाता विभिन्न व्यवसायों की, उनके कार्य की प्रकृति, उनमें प्रवेश पाने के लिए अपेक्षित शिक्षा एवं प्रशिक्षण, प्रशिक्षण संस्थाओं और प्रशिक्षण के पश्चात् रोज़गार की संभावनाओं के विषय में सूचना प्रदान करते हैं। कार्यदशाओं, आय तथा अन्य आर्थिक लाभों के बारे में भी सूचना प्रदान की जाती है। परामर्शदाता विद्यार्थियों को उनके कार्य जगत को समझने मे सहायता करते हैं।

परामर्शदाता विभिन्न स्रोतों से सूचना एकत्र करते हैं। पुस्तकें, पुस्तिकाएँ, शिक्षा और प्रशिक्षण सस्थानों की विवरण पत्रिकाओं के साथ-साथ विज्ञापन भी लाभदायक सूचना देते हैं। ये व्यावसायिक सूचना सेवा केन्द्र में वर्गीकृत और प्रदर्शित किए जाते हैं। उन व्यवसायों को चित्रित करने वाले, जिनकी ओर

विभिन्न पाठ्यक्रम अग्रसर करते हैं, लाभदायक लेखाचित्र बनाए जाते हैं। इनमें अपेक्षित शिक्षा और प्रशिक्षण, प्रवेश की विधियाँ, वेतन, उन्नति की संभावनाएँ और विभिन्न व्यवसायों के अन्य लाभ चित्रित किए जा सकते हैं। परामर्शदाता विभिन्न व्यवसायों के प्रतिनिधियों द्वारा वार्तालापों की व्यवस्था करके उनके कार्य की प्रकृति, कार्यदशाएँ और कार्य के लिए अपेक्षित आवश्यकताओं के विषय में आँखो देखे प्राथमिक स्रोतों से स्पष्टीकरण दे सकते हैं। चूंकि नए व्यवसाय उभर रहे हैं और व्यावसायिक ढाँचों में निरन्तर परिवर्तन आ रहे हैं। इसलिए परामर्शदाता को अपनी सूचनाओं को आधुनिकतम करने के लिए हर प्रकार से लगातार प्रयत्न करने पड़ते हैं।

(iv) परामर्श

जैसा कि पहले कहा जा चुका है परामर्श विद्यालय परामर्शदाता के महत्वपूर्ण कार्यों में से एक है। परामर्शदाता विद्यार्थियों को अपने आप को व्यक्ति के रूप में समझने और स्वीकृत करने में सहायता करते हैं। वे उनमे समायोजन की, समस्याओ के समाधान की, निर्णय लेने और भविष्य के लिए योजनाएँ बनाने में बढ़ती हुई क्षमता की अधिक योग्यताएँ विकसित करने में सहायता करते हैं। वे इस कार्य मे शिक्षकों, माता-पिता और प्रशासन का सहयोग लेते हैं।

(v) स्थानन

स्थानन साधारणतया विद्यार्थियों को अगला काम लेने में सहायता को इंगित करती है चाहे वह आगे प्रशिक्षण की ओर हो, कार्य स्थिति मे हो अथवा विभिन्न पाठ्यक्रमों में हो। परामर्शदाता विद्यार्थी और बाह्य संस्था के बीच संपर्क अधिकारी की भाँति कार्य करते हैं। वे विद्यार्थियों को प्रवेश पाने अथवा नौकरी प्राप्त करने में सहायता करते हैं। वे इस बात के लिए भी निर्देशन देते हैं कि किसी नौकरी अथवा प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रवेश पाने के लिए किस प्रकार आवेदन करना होता है। नौकरियो में नियुक्ति की सेवा प्रायः रोज़गार कार्यालय द्वारा दी जाती है।

(vi) अनुवर्ती

परामर्शदाता भूतपूर्व विद्यार्थियों से संपर्क बनाए रखने के लिए व्यवस्थित योजना विकसित करते हैं। अनुवर्ती अध्ययनो से प्राप्त आंकड़ों से विद्यालय को अपनी योजनाओं की प्रभावकता सामान्य रूप से और निर्देशन कार्यक्रम को विशेषरूप से मूल्यांकन करने में सहायता मिलती है। अनुवर्ती द्वारा प्राप्त सूचना उन विद्यार्थियों के लिए बहुत लाभदायक होती है जो अभी विद्यालय मे हैं। यह उन अवसरों का वास्तविक चित्रण करती है जो उनके विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को प्राप्त थे और उन समस्याओं के विषय में भी, जिनका उन्होंने सामना किया था।

उत्तम परिणाम पाने के लिए विद्यार्थी जब विद्यालय में ही होते हैं तो उन्हें अनुवर्ती क्रियाओं और इनके उद्देश्यों के विषय में बता दिया जाता है और यह भी कि उनके विद्यालय छोड़ने के बाद उनसे संपर्क किया जाएगा। विद्यार्थियों पर अनुवर्ती करने की विधियाँ प्रश्नावलियाँ, साक्षात्कार, दूरभाष सम्पर्क तथा पत्र आदि हैं। सक्षिप्त प्रश्नावली बहुत व्यावहारिक पाई गई है।

(vii) अनुसधान एवं मूल्याकन

यह जानने के लिए कि क्या विद्यालय निर्देशन का कार्यक्रम विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और वांछित लक्ष्यों के अनुसार है अथवा उस कार्यक्रम में आगे सुधार की आवश्यकता है इसके लिए परामर्शदाता मूल्यांकनकर्ता और अनुसंधानकर्ता की भाँति कार्य करते हैं। वे इस क्रिया के क्रियान्वयन के लिए कार्य योजना बनाते हैं। वे समस्याओं को पहचानते हैं, आंकड़े एकत्र करते है और सूचनाओं का विश्लेषण करते हैं। वे व्यावसायिक सर्वेक्षण और अनुवर्ती अध्ययन करते है जिनमे बहुत विस्तृत अनुसंधान कार्य सम्मिलित होता है। अनुसंधान विद्यार्थियों के अभिलेखों और प्रशासित परीक्षणो पर भी आधारित हो सकता है जो उन्हें स्थानीय मानकों के निर्माण में सहायता कर सकता है।

अच्छे विद्यालय परामर्शदाता की विशेषताएँ

विद्यालय परामर्शदाता का विद्यालय में एक विशिष्ट स्थान होता है। वे व्यावसायिक होते हैं जो प्रत्येक विद्यार्थी के विकास से संबधित होते हैं। अपने उत्तरदायित्वों को प्रभावशाली ढंग से कार्यान्वित करने के लिए उनमें निम्नलिखित विशेषताएँ होनी चाहिए।

(i) स्वीकृति

एक सफल परामर्शदाता की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है कि वह प्रत्येक विद्यार्थी को योग्य व्यक्ति स्वीकार करे। अपनी क्रियाओं, शब्द, भाव-भंगिमाओं या मुख मुद्राओं द्वारा उन्हें विद्यार्थी को अपनी स्वीकृति सप्रेषित कर देनी चाहिए। स्वीकृति न केवल परामर्श में आवश्यक है बल्कि यह सभी निर्देशन स्थितियो में आधारभूत है।

(ii) आस्था

सफल परामर्श संबंध आपसी आस्था पर आधारित होता है। विद्यार्थी परामर्शदाता मे विश्वास ही नहीं करेंगे यदि वे परामर्शदाता में आस्था नहीं रखते। विद्यार्थियों को इस आश्वासन की आवश्यकता होती है कि परामर्शदाता उनके संबंध में कोई भी सूचना उनके अध्यापको, माता-पिता, प्रधानाध्यापक और साथियो आदि को प्रकट नही करेंगे। इसलिए परामर्शदाता को विद्यार्थी की गोपनीयता के सिद्धांत की व्याख्या करने में निपुण होना चाहिए। यदि परामर्शदाता अनुभव करते हैं कि विद्यार्थी की समस्या के विषय मे किसी अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति से विचार-विमर्श की आवश्यकता है तो उन्हें विद्यार्थी से ऐसा करने की अनुमति ले लेनी चाहिए।

(iii) समझदारी से सुनना

परामर्शदाता को सहानुभूतिपूर्ण श्रोता होना चाहिए। ध्यानपूर्वक सुनना परामर्शदाता की एक मूलभूत योग्यता है। परामर्शदाता के पास विद्यार्थी इसीलिए आते हैं क्योंकि उनकी कोई समस्या है जिसके विषय में वे कुछ कहना चाहते हैं। परामर्शदाता के लिए यह आवश्यक है कि वे ध्यान से सुनने के कौशल का विकास करें और विद्यार्थी के शब्दों के पीछे छिपी भावनाओं को समझने का प्रयत्न करें।

(iv) प्रभावशाली संप्रेषण

परामर्शदाता की एक और विशेषता यह है कि उसमे अपने विद्यार्थियों के साथ संप्रेषण स्थापित करने की योग्यता होनी चाहिए। निष्क्रिय रूप से सुनना, थकावट भरा और रुचिरहित बना सकता है किंतु यदि परामर्शदाता विद्यार्थियों के साथ बात कर सकने मे समर्थ हो जाते हैं तो वे उनसे मूल्यवान सूचनाएँ प्राप्त कर सकते हैं जिनसे उनकी समस्याएँ और उनके कारणो को समझने मे सहायता मिलेगी। प्रभावकारी संप्रेषण विद्यार्थियो को उचित रूप से समझने मे महत्वपूर्ण कुंजी है।

(v) आपसी आदर और सहयोग

परामर्शदाता को विद्यार्थियों का आदर करना चाहिए और अपने व्यवहार से वे विद्यार्थियों से आदर करवाते हैं जैसे विद्यार्थियों का नाम याद रखना, पहले हुए साक्षात्कार की कुछ विस्तृत बाते या यदि वे पहली बार मिल रहे हैं तो शिष्ट होना। परामर्श की पूरी प्रक्रिया आपसी आदर पर आधारित है। अच्छे परामर्शदाता विद्यार्थियों को सहयोग करने के लिए अभिप्रेरित कर लेते हैं और परामर्श प्रक्रिया मे भागीदार बना लेते है। परामर्शदाता के लिए विद्यार्थी की सहायता करना कठिन होगा जब तक कि वे उनके साथ सहयोग नहीं करते और प्रक्रिया में भागीदार नही बनते।

(vi) समानुभूति

समानुभूति का तात्पर्य है कि परामर्शदाता भी विद्यार्थी के साथ-साथ अनुभव करें। वे विद्यार्थी के दृष्टिकोण से समस्या या स्थिति को देखें न कि ऐसे जैसे किसी बाहरी व्यक्ति को दिखाई देती है। परामर्शदाता को यह समानुभूति विद्यार्थी को स्नेह और सद्भाव से संप्रेषित करने योग्य होना चाहिए तभी विद्यार्थी को

यह समानुभूति होगी कि परामर्शदाता उन्हें समझते है और वे समस्या का सामना करने में अकेले नहीं हैं।

(vii) *ईमानदारी*

परामर्शदाताओ को विद्यार्थियो् के साथ ईमानदार होना चाहिए। उनका उद्देश्य विद्यार्थियों को अपने मनोबल और दुर्बलताओ को स्वीकार करने के लिए मार्गदर्शक बनना होना चाहिए। विद्यार्थियों को वास्तविकता का सामना करने में उन्हें सहायता देनी चाहिए और झूठे आश्वासन नहीं देने चाहिए। किंतु इस कार्य को नीतिपूर्ण तरीके तथा सौम्यता से करना चाहिए। किसी भी प्रकार विद्यार्थियों को निकृष्ट अनुभव नही कराना चाहिए। इसमे परामर्शदाता द्वारा स्थिति को कुशलतापूर्वक संभालना अपेक्षित होता है।

(viii) अच्छे बिंदुओ को पहचानने और प्रोत्साहित करने की योग्यता

प्रत्येक व्यक्ति के व्यवहार में अच्छे बिदु और दुर्बलताएँ होती हैं। अच्छे परामर्शदाता वे होते हैं जिनमे विद्यार्थियो के अच्छे और सकारात्मक पहलुओं को पहचानने ओर उन्हें प्रोत्साहित करने की योग्यत होती है। इससे विद्यार्थियों के सकारात्मक स्व-प्रत्यय के विकास में सहायता मिलती है। परामर्श की स्थिति में विद्यार्थी प्रायः ऐसे व्यवहार प्रकट कर देते हैं जो वे जानते है कि सामाजिक मानको के अनुसार नहीं है। कभी-कभी वे कुछ ऐसा करते हैं जिसके लिए वे लज्जित होते हैं और जानते हैं कि ये उनके आस-पास वाले लोगो द्वारा निंदनीय हैं। ऐसी दशाओं में परामर्शग्राही की सहायता परामर्शदात कर सकते हैं यदि वे उन कुछ चीज़ों को पहचानते हैं जो परामर्शग्राही ने की हैं और उनका ध्यान उन्हें दोषी ठहराने की अपेक्षा उन चीज़ो की ओर खीचेगे। इससे विद्यार्थियो को अपने विषय में सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करने मे सहायत मिलेगी जो उनके व्यक्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है।

सारांश

इस एकक के अतर्गत निर्देशन को विद्यार्थियो के शैक्षिक, व्यावसायिक और सामाजिक विकास मे सहायक प्रक्रिया के रूप मे पारिभाषित किया गया है। परामर्श की परिभाषा परामर्शदाता तथा परामर्शग्राही जो आत्मबोध, निर्णय करने और समस्या समाधान के कौशलो मे सहायता चाहते है के बीच व्यक्तिगत आमने-सामने सबध एव सम्पर्क प्रक्रिया के रूप मे की गई है। निर्देशन एव परामर्श मे सबध की व्याख्या की गई है। शैक्षिक वृद्धि, व्यावसायिक विकास तथा वैयक्तिक सामाजिक विकास को व्यक्तिगत आवश्यकताओ के अतर्गत, तथा सुखी पारिवारिक जीवन के लिए, मानवीय ससाधनो के समुचित उपयोग तथा आदर्श नागरिकता के लिए निर्देशन की सामाजिक आवश्यकताओ में सम्मिलित किया है। शैक्षिक, व्यावसायिक एव वैयक्तिक-सामाजिक निर्देशन के उद्देश्यो को प्रस्तुत किया गया है। विद्यार्थियों के समूहो मे दिया जाने वाला निर्देशन सामूहिक निर्देशन होता है।

परामर्श प्रक्रिया को सकटकालीन, सुसाध्यकारी, निवारक तथा विकासात्मक परामर्श इन चार मे वर्गीकृत किया गया है। परामर्श के निदेशात्मक, अनिदेशात्मक तथा विभिन्न दर्शनग्राही इन तीन उपागमो की व्याख्या की गई है। नए विद्यार्थियो का पूर्वाभिमुखीकरण, विद्यार्थियो का मूल्याकन, शैक्षिक एव व्यावसायिक सूचना, परामर्श, स्थानन, अनुवर्ती तथा अनुसंधान एव मूल्याकन ये परामर्शदाता के कुछ महत्वपूर्ण कार्य है। स्वीकृति, आस्था, समझदारी से सुनना, प्रभावशाली सप्रेषण, आपसी आदर व सहयोग, समानुभूति, ईमानदारी, अच्छे बिदुओ को पहचानने और प्रोत्साहित करने की योग्यता एक परामर्शदाता की विशेषताएँ है।

प्रश्न

1 निर्देशन तथा परामर्श की परिभाषा दीजिए और उनके बीच सबध का वर्णन कीजिए।

2 निर्देशन की व्यक्तिगत और सामाजिक आवश्यकताएँ क्या हैं?

3 सामूहिक निर्देशन की विवेचना कीजिए।

4 परामर्श प्रक्रिया के उपागम कौन से हैं? उन स्थितियो का वर्णन कीजिए जिसमें प्रत्येक उपयोगी है।

5 परामर्श के प्रकारो की व्याख्या कीजिए।

6 विद्यालय परामर्शदाता के कार्यों का वर्णन कीजिए।

7 एक अच्छे विद्यालय परामर्शदाता की विशेषताएँ क्या होती हैं?

निम्नलिखित विकल्पो मे सबसे सही पर यह निशान (√) लगाइए।

8 विद्यालय मे इन्हें परामर्श दिया जाता है

(अ) असामान्य व्यक्तियो को

(ब) समस्याग्रस्त सामान्य व्यक्तियों को

(स) बच्चो तथा युवाओ को

9 निर्देशन प्रक्रिया मे यह सम्मिलित है

(अ) सूचना प्रदान करना

(ब) चयन प्रक्रिया मे विद्यार्थियो की सहायता करना

(स) विद्यार्थियो को उनकी सामर्थ्य एवं कमियों को जानने में सहायता करना

(द) उपरोक्त सभी मे सहायता देना

10 व्यवसाय चयन इससे सुसाध्य होता है

(अ) अप्रत्यक्ष परामर्श (ब) व्यावसायिक निर्देशन

(स) प्रशिक्षण

11 परामर्शदाता का इसमे मुख्य उत्तरदायित्व होता है।

(अ) अनिदेशात्मक परामर्श (ब) विभिन्न दर्शनग्राही परामर्श

(स) निदेशात्मक परामर्श

12 अनिदेशात्मक परामर्श मे

(अ) विद्यार्थी स्वय ही खोजते और ढूँढ़ते है

(ब) विद्यार्थी को अपने चयन के लिए उसके विषय में सूचना प्रदान की जाती है

(स) विद्यार्थियो को विशेषज्ञ की राय दी जाती है

13 परामर्शदाता को इसमे अधिक विशिष्टीकरण प्राप्त होता है

(अ) सामाजिक कार्य (ब) मनोविज्ञान

(स) कल्याण क्रिया

14 व्यावसायिक निर्देशन का तात्पर्य यह है

(अ) आत्मबोध के विकास की उन्नति। (ब) प्रतिभाशाली विद्यार्थियो का निर्देशन

(स) विद्यार्थियो को व्यवसाय चयन मे दिशा निर्देश

एकक 8

मनोविज्ञान में विवरणात्मक सांख्यिकी

इस एकक के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी इस योग्य होंगे कि वे
- सांख्यिकी के प्रत्यय एवं प्रकारों का वर्णन कर सकें;
- सांख्यिकी की आवश्यकता और मापन के प्रकारों के बारे में बता सकें;
- आवृत्ति वितरण बना सकें;
- आँकड़ों के आलेखी प्रस्तुतीकरण की व्याख्या कर सकें;
- केंद्रीय प्रवृत्ति के मापन और उनके प्रयोगों का वर्णन कर सकें;
- मध्यम, माध्यिका तथा बहुलांक की गणना कर सकें;
- प्रसार क्षेत्र, चतुर्थक विचलन, माध्य विचलन और मानक विचलन की गणना कर सकें;
- सह संबंध के प्रत्यय का वर्णन कर सकें;
- श्रेणी अन्तर विधि से सह संबंध की गणना कर सकें;
- सामान्य संभाव्यता वक्र के प्रत्यय और सामान्यता से इस के विचलन की व्याख्या कर सकें।

सांख्यिकी

सांख्यिकी गणित की वह व्यावहारिक शाखा है, जिसका संबंध परिगणना और मापनों से है। किसी घटना या दृग्विषय के सख्यात्मक अभिलेखों को सांख्यिकी कहा जाता है। सांख्यिकी का तात्पर्य समूह आँकड़ों पर गणना करने के लिए संख्यात्मक मान जैसे मध्यम, माध्यिका या मानक विचलन से है। इसका अभिप्राय या तो विवरणात्मक प्रत्यय अथवा आँकड़ों से प्राप्त किए गए उनके विशेष मान हैं। आँकड़े संख्यात्मक लेखा अथवा प्रतिवेदन मे दिए गए विस्तृत वर्णन हैं। आँकड़े शब्द प्रायः एक से अधिक निरीक्षण अथवा मापन को इंगित करता है। सांख्यिकी दो प्रकार की होती है (अ) विवरणात्मक और (ब) आनुमानिक।

(अ) विवरणात्मक सांख्यिकी

विवरणात्मक साख्यिकी वास्तव में निरीक्षित व्यक्तियों के समूह के विवरण से सबंधित होती है। इन निरीक्षणों

अथवा आँकड़ो पर की गयी गणना विवरणात्मक सांख्यिकी कहलाती है। इस साख्यिकी का प्रयोग उस समूह विशेष के विवरण के लिए ही किया जाता है जिस पर उनकी गणना की गई है और यह केवल उस समूह के लिए ही व्यवहृत होती है। इस विवरण का उन समान व्यक्तियों के लिए सामान्य सिद्धातो की भाँति उपयोग नहीं किया जा सकता जिनका अध्ययन नहीं किया गया है।

(ब) आनुमानिक साख्यिकी

दूसरे प्रकार की सांख्यिकी आनुमानिक कहलाती है जिसका प्रयोग प्रायः वैज्ञानिक अनुसंधानों में किया जाता है। इसके *अतर्गत उन सामान्य सिद्धांतो की खोज का प्रयत्न किया जाता है जिनको उस समूह जिसका वास्तव में निरीक्षण किया गया है उससे परे भी अधिक विस्तृत क्षेत्र पर व्यवहृत किया जा सके।* बड़े क्षेत्र को समष्टि या जनसख्या कहते है और निरीक्षित मामलों को प्रतिदर्श की सज्ञा दी जाती है। जनसंख्या व्यक्तियो या निरीक्षणो का सुनिश्चित समूह होता है। प्रतिदर्श पर गणना किए हुए मापनों को प्रायः सांख्यिकी कहा जाता है और जनसंख्या के मानो को प्राचल कहा जाता है।

प्रतिदर्श पर सांख्यिकीय मान प्राप्त करने के उपरांत उनका इस्तेमाल जनसख्या के बारे मे सूचना प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह एक प्रकार का प्रतिदर्श से जनसंख्या के बारे में सामान्धीकरण है जिसे आनुमानिक सांख्यिकी कहते हैं। प्रतिदर्श की विवरणात्मक सांख्यिकी ज्ञात है क्योंकि वे गणना योग्य हैं जबकि अनुरूपी जनसंख्या मान अज्ञात है यद्यपि वे आकलनीय हैं। सांख्यिकीय अनुसंधानों के मुख्य कार्यों मे से एक यह है कि अध्ययन किए गए एक या अनेक प्रतिदर्श के आधार पर जनसंख्या की विशेषताओं के बारे में अनुमान लगाए। आनुमानिकी सांख्यिकी यह प्रदर्शित कर सकती है कि किस प्रकार एकमात्र प्रतिदर्श के मापन से प्राप्त सांख्यिकी, वृहत् जनसख्या का जिससे यह प्रतिदर्श लिए गए हैं, प्रतिनिधित्व करता है।

सांख्यिकी की आवश्यकता

(अ) शिक्षक के लिए सहायक

साख्यिकी का अध्ययन अनेक महत्त्वपूर्ण कारणों से किया जाता है। सांख्यिकी दैनिक प्रयोग में आती है और इसकी व्यावहारिक उपयोगिता है। सांख्यिकी किसी विशेष कक्षा को विद्यार्थियों के उपसमूह में वर्गीकृत करने में शिक्षक की सहायता करती है जिससे उनके शिक्षण की विधि के लिए निर्णय किया जा सके। सांख्यिकीय विधियाँ उपलब्ध आकड़ों से प्राप्त सूचना से व्यावहारिक समस्याओ के समाधान में व्यवहृत की जाती हैं। ये समस्या कक्षा में विद्यार्थियों के औसत निष्पादन को जानना अथवा उनके अंकों का वितरण हो सकता है।

(ब) वैज्ञानिकों के लिए उपकरण

वैज्ञानिक व्यावहारात्मक आँकड़ों की व्याख्या करने में सांख्यिकी की सहायता लेते हैं। अनुसंधान कार्यों में चाहे नए संबंधो की खोज करें या सिद्धांतों की जाँच करें हमारी विधियाँ अधिकतर साख्यिकीय होती हैं। समाज वैज्ञानिक तथा अनुसंधान कर्ता सांख्यिकी का उपयोग करते हैं और चरो के बीच संबंधों की खोज करते हैं।

आँकड़े

आकड़ों को दो प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है। (अ) सतत और (ब) असतत

(अ) सतत

मानसिक वं शारीरिक मापनों में अनेक चर सतत श्रेणी के अंतर्गत आते हैं। भौतिक मापन जैसे मीटर, लीटर, किलोग्राम और घटे और मानसिक मापन जैसे बुद्धिलब्धि भी सतत श्रेणी में आते हैं। हम सतत श्रेणी में किसी भी मात्रा तक उपवर्गीकरण कर सकते हैं और सतत क्रम में एक दूसरे के बहुत पास बीच में के अनंत मूल्यों को पाना संभव होता है। श्रेणी में ऐसी निरंतरता विभिन्न मात्राओं का परिमार्जित और

परिशुद्ध मापन प्राप्त करने का अवसर प्रदान करती है। इस प्रकार के मापनों को रेखा के बिंदुओं की भाँति सोचा जा सकता है, उदाहरणार्थ मीटर को सेटीमीटर में और सेंटीमीटर को मिलीमीटर में पुनः विभक्त किया जा सकता है। मनोविज्ञान में मापन किए जाने वाले अधिकतर चरों को सतत की भाँति प्रयोग किया जाता है।

(ब) असतत

असतत आंकड़ों में मापन पूर्ण इकाईयो में अभिव्यक्त किए जाते हैं। चूंकि असतत श्रेणी में मूल्यों के बीच वास्तविक अंतर प्रदर्शित किए जाते हैं अतः यह श्रेणी के बीच के मूल्यो और उपविभाजनों के बीच के मूल्यों को प्रदर्शित नहीं करती है। कुछ ऐसे पूर्ण वर्ग होते हैं जिनको सतत मूल्यों में रूपांतरित नहीं किया जा सकता। किसी परिवार में व्यक्तियों की सख्या, परिवार में विवाहित और अविवाहितों की सख्या, कक्षा में लड़कों और लड़कियों की संख्या और सही रूप से पुनःस्मरण किए गए शब्दों की संख्या असतत आकड़ों के उदाहरण हैं। दो और तीन लडकियाँ, तीन और चार शब्दो में, और दो विवाहित और तीन अविवाहित व्यक्तियों के बीच वास्तविक अंतर है और ये अंतर छोटे मापनो में विभाजित नही किए जा सकते।

प्राप्तांक (X)

प्राप्तांक सतत श्रेणी में प्राप्तांकों का मापन या सातत्यक पर प्रायः दूरियों के रूप मे प्रदर्शित किया जाता है। वे केवल असतत बिंदु नहीं हैं। प्राप्ताक को ऐसे अंतराल के रूप में वर्णित किया जाता है जिसका विस्तार प्राप्ताक से नीचे .5 इकाई तथा ऊपर .5 इकाई तक होता है। स्वयं प्राप्तांक का अंतराल की प्रत्यक्ष मूल्य माना जाता है। 110 का प्राप्ताक 109.5 से 110.5 तक का प्राप्ताक अंतराल इंगित करता है और इनका सुनिश्चित मध्यबिंदु 110 प्राप्ताक है जैसा कि नीचे प्रदर्शित किया गया है।

प्राप्ताक 110

109.5 110 110.5

आवृत्ति वितरण

हमें परीक्षणों, प्रयोगो तथा सर्वेक्षणों को करने के बाद निरीक्षणों का विन्यास मिलता है। मान लीजिए आपकी कक्षा में 50 विद्यार्थी हैं। हमारे पास उनके मनोविज्ञान प्रयोग मे अंक निम्न प्रकार हैं :

सारणी 8.1

मनोविज्ञान प्रयोग मे प्राप्त अक

60	65	54	50	86	45	34	36	24	31
70	62	58	58	32	35	48	46	56	73
52	55	82	75	78	83	66	68	44	38
80	76	78	56	42	30	22	64	86	75
54	40	60	63	55	43	45	57	48	58

N = 50

इन आँकड़ो को देखने पर समूह की विशेषताओ के विषय में कोई विचार बनाना कठिन प्रतीत होता है क्योंकि इसमें बहुत से प्राप्ताक हैं। आँकड़े अर्थहीन होते हैं, जब तक कि उन्हें सुव्यवस्थित ढंग से वर्गीकृत न किया जाए। अतः प्राप्तांकों को समूहबद्ध करके उन्हें प्राप्ताकों की श्रेणियों मे संगठित करना आवश्यक हो जाता है। जब मापनों की सख्या कम हो तो हम आँकड़ों को अवर्गीकृत रख सकते हैं। जब यह संख्या अधिक हो तो उन्हें आवृत्ति वितरण में वर्गीकरण करने की आवश्यकता होती है।

आवृत्ति वितरण बनाने के सोपान

आवृत्ति वितरण बना कर हम प्राप्तांको को वर्गों में समूहबद्ध करके आँकड़ों को सुव्यवस्थित क्रम में वर्गीकृत करते हैं। इस प्रकार करने से आँकड़े अधिक सुव्यस्थित, अर्थपूर्ण और व्याख्या करने योग्य बन जाते

हैं। प्राप्तांकों को आवृत्ति वितरण में श्रेणीबद्ध करने के सोपान निम्नलिखित हैं।

(क) प्रसार क्षेत्र का निर्धारण

प्रथम सोपान, प्राप्तांकों का विस्तार क्षेत्र अथवा प्राप्तांकों का फैलाव निर्धारण करना है। प्रसार की परिभाषा उच्चतम प्राप्तांकों तथा निम्नतम प्राप्तांकों के अंतर से की गई है। सारणी 8.1 में उच्चतम प्राप्तांक 86 है, तथा निम्नतम प्राप्तांक 22 है। अतः मापन का प्रसार क्षेत्र 64 है।

(ख) अंतराल के आकार का निर्णय

दूसरा सोपान, वितरण में प्राप्त समूहों अथवा वर्ग अंतराल के आकार तथा संख्या के निर्णय करने का है। वर्ग अंतराल के सामान्यतः प्रयुक्त आकार 3, 5 या 10 प्राप्तांकों की इकाई होती है। वर्ग अंतरालों का आकार प्रायः प्रयास और त्रुटि से चयनित किया जाता है ताकि उनकी संख्या 5 और 15 के बीच रहे। प्रायः विषम अंकों को अंतराल के आकार के लिए वरीयता दी जाती है। इससे यह लाभ होता है कि वर्ग अंतराल के मध्य बिंदु पूर्ण अंक होंगे। इससे मध्य बिंदुओं के निर्धारण का कार्य शीघ्र और सरल हो जाता है और बाद की साख्यिकीय गणना में आसानी हो जाती है।

(ग) वर्ग अंतराल की संख्या

वर्ग अंतरालों की संख्या का अनुमान प्रसार को वर्ग अंतराल के आकार से विभक्त करके जाना जा सकता है। उदाहरणार्थ सारणी 8.1 के आँकड़ों का प्रसार 64 है। इसको 5 से विभक्त करने पर 12.8 या 13 वर्ग अंतराल आता है। अब हमें यह निर्णय करना होता है कि सबसे नीचे वाला अंतराल कहाँ से शुरू करें जो कि अंतराल आकार का गुणक हो। हमारा निम्नतम प्राप्तांक 22 है और वर्ग अंतराल चूंकि 5 है नीचे वाला अंतराल 20 पर प्रारम्भ होकर 24 पर समाप्त होता है जैसा कि सारणी 8.2 मे दिखाया गया है। चूँकि हम सुनिश्चित ऊपरी तथा निम्न सीमाओं के साथ कार्य करते हैं; नीचे का अतराल वास्तव में 19.5 से शुरू होता है और 24.5 पर समाप्त होता है। उच्चतम सीमा से न्यूनतम सीमा को घटाने पर (24.5–19.5) हमें 5 की संख्या प्राप्त होती है जो वर्ग अंतराल का आकार है।

इस निम्नतम अंतराल का मध्य बिंदु नीचे और ऊपर की सीमाओं के बिल्कुल मध्य में अवस्थित है। अतः इस अंतराल का मध्य बिदु 22 बन जाता है अर्थात् 19.5+2.5। जब अतराल का आकार सम संख्या होता है तो मध्य बिदु दशमलव संख्या होगी।

(घ) प्राप्ताको का अनुमेलन करना

अगला सोपान प्राप्तांकों का अनुमेलन करना है। सामान्यतः हम एक समय में एक प्राप्तांक लेते हैं और उसके उपयुक्त अन्तराल के सामने अनुमेलन का चिन्ह लगा देते हैं। सारणी 8.2 में स्तभ में अंतरालों को नीचे सबसे कम प्राप्तांकों से लेकर ऊपर तक अधिकतम प्राप्तांकों को क्रमबद्ध तरीके से सुव्यवस्थित किया गया है। स्तम्भ 2 मे प्राप्तांकों को अनुमेलन के चिन्हों के रूप में उनके उपयुक्त अंतरालों के सामने सूचीबद्ध किया गया है। उदाहरणार्थ पहले प्राप्तांक 60 का 60-64 के अंतराल के सामने अनुमेलन लगाकर दूसरे प्राप्ताक 70 को 70-74 के अंतराल के सामने और तीसरे प्राप्तांक 52 को 50-54 के अंतराल के सामने अनुमेलन लगाकर प्रदर्शित करते हैं। इसी प्रकार बाकी सभी प्राप्तांकों को अनुमेलन चिन्ह लगाकर प्रदर्शित किया गया है।

(ङ) अनुमेलनो के योग द्वारा सख्या (N) ज्ञात करना

प्रत्येक अंतराल के अनुमेलनों की पूर्ण संख्या को स्तम्भ 3 में अंकित किया जाता है और उसे आवृत्ति या f का शीर्षक दिया जाता है। आवृत्ति स्तम्भ की सभी संख्याओं का पूर्णांक संख्या देता है जो वितरण

सारणी 8.2

कक्षा मे 50 विद्यार्थियो के मनोविज्ञान प्रयोग मे प्राप्तांको का आवृत्ति-वितरण वर्ग अतराल आकार 5 के अनुसार

(1) वर्ग अतराल	(2) अनुमेलन	(3) आवृत्ति
85-89	//	2
80-84	///	3
75-79	~~////~~	5
70-74	//	2
65-69	///	3
60-64	~~////~~	5
55-59	~~////~~ ///	8
50-54	////	4
45-49	~~////~~	5
40-44	////	4
35-39	///	3
30-34	////	4
25-29	0	0
20-24	//	2
	आवृत्तियो का योग (N)	50

में पूर्ण प्राप्तांक पाने वालो की संख्या है। अर्थात् $\sum f$ आवृत्ति या संख्या N=50 होती है। जब प्रत्येक अंतराल की उनके उचित अतराल के सामने की सभी आवृत्तियों की गणना करके N संख्या प्राप्त की जाती है तो आवृत्ति वितरण पूर्णतः बन जाता है।

आलेखी प्रस्तुतीकरण

आँकड़ों के विश्लेषण में आवृत्ति वितरण के चित्रात्मक निरूपण से लाभदायक सहायता ली जा सकती है। इसके अंतर्गत आँकड़ों के आधार पर आवृत्ति बहुभुज या आयत चित्र को अंकित करना आता है। इस प्रकार के आलेखी प्रस्तुतीकरण आकृष्ट कर लेते हैं और अवधानग्राही होते हैं। यह इसलिए होता है कि वितरण की परिरेखाएँ सुस्पष्टतः प्रस्तुत की जाती हैं, विभिन्न अतरालों में व्यक्तियों की संख्या ठीक-ठीक जानी जा सकती है और एक अतराल का दूसरे से घटाव-बढ़ाव विशिष्टतः चिन्हित होता है। अतः आवृत्ति बहुभुज तथा आयत चित्र वितरण के संख्यात्मक तथ्यों को मूर्त और बोधगम्य आकार में परिवर्तित कर देते हैं।

आवृत्ति बहुभुज

बहुभुज एक ऐसा चित्र होता है जिसकी बहुत सी भुजाएँ होती हैं। बहुभुज को बनाने में हम दो अतिरिक्त अतराल बनाते हैं—वितरण के प्रत्येक छोर पर एक। इन सीमावर्ती अंतरालो मे प्रत्येक की आवृत्ति शून्य है। इस सोपान से बहुभुज के दोनों किनारे X-अक्ष पर स्थिर करते है।

आवृत्ति बहुभुज के निर्माण मे सोपान

आवृत्ति बहुभुज के निर्माण के सोपान निम्नलिखित हैं :

(i) आधार रेखा

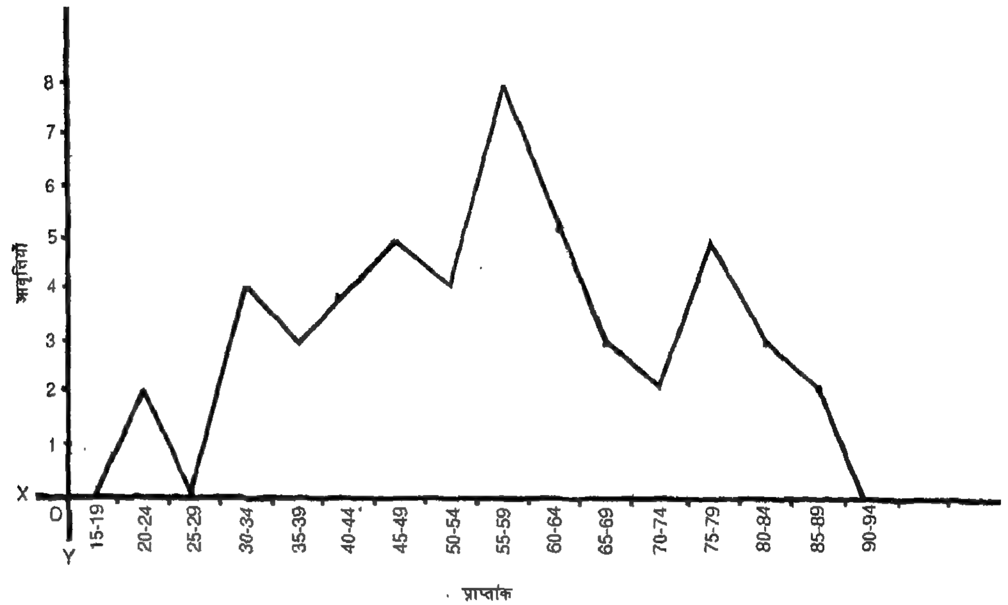
प्राप्तांक प्रायः X-अक्ष पर अंकित करते हैं। X-अक्ष के साथ-साथ क्रमिक अतरालो की प्राप्तांक सीमाओ को व्यक्त करना सदैव सरल रहता है। X-अक्ष के नीचे प्राप्तांक शब्द लिखा जाता है।

(ii) लेखाचित्र की ऊँचाई

बहुभुज या आयत चित्र मे आवृत्तियाँ सदैव Y-अक्ष पर अंकित की जाती हैं। Y-अक्ष की ऊँचाई X-अक्ष की 75% होनी आवश्यक है। आवृत्ति शब्द Y-अक्ष की ओर लिखा जाता है।

(iii) आवृत्तियाँ आलेखित करना

मध्य बिंदु वह मूल्य है जो किसी विशेष अंतराल का उत्तम प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए प्रत्येक आवृत्ति अपने वर्ग अंतराल के मध्य बिंदु के एकदम ऊपर एक बिंदु पर अंकित की जाती है। हम ऐसा तब तक करते हैं जब तक सभी अंतरालो की आवृत्तियाँ उनके मध्य बिंदुओं के एकदम ऊपर अंकित हो जाएँ। तब ये बिंदु सीधी रेखाओं द्वारा मिला दिए जाते हैं।



चित्र 8.1 *सारणी 8.2 के प्राप्तांको के वितरण के लिए आवृत्ति बहुभुज*

चित्र को पूर्ण करने के लिए हम दो सीमावर्ती अंतराल जोड़ते हैं एक वितरण के निम्नतम और दूसरा उच्चतम छोर पर। दोनों अंतरालो पर आवृत्ति शून्य है। अतः बिंदु उनके मध्य बिंदुओं अर्थात् 17 और 92 पर X- अक्ष पर अंकित कर दिए हैं और लेखाचित्र के दोनों छोर इन बिंदुओं पर मिला दिए हैं। अतः लेखाचित्र अब समस्तर अक्ष पर स्थिर हो गया है, और आवृत्ति बुहभुज पूर्णरूपेण बन जाता है। इस बहुभुज का क्षेत्र आवृत्ति की पूर्ण संख्या अथवा वितरण की संख्या N का प्रतिनिधित्व करता है।

आयतचित्र

आयतचित्र आवृत्ति वितरण के प्रतिनिधित्व की एक और विधि है। आवृत्ति बुहभुज तथा आयतचित्र के निर्माण में आवृत्तियो के अंकन तक के सोपान एक समान होते हैं। महत्वपूर्ण विभेद निम्न दो सोपानों में होते हैं।

प्रथमतः हम प्रत्येक अकन पर अंतराल की चौड़ाई को ढकने वाली समस्तर रेखाएँ अंकित करते हैं। दूसरे हम अंतराल की दोनों सीमाओं पर समस्तर पंक्तियों को स्पर्श करती हुई अनुलम्ब रेखाएँ अंकित कर देते हैं। इन दोनों सोपानो से प्रत्येक वर्ग अंतराल पर आयत बन जाते हैं। इस आयत का आधार X- अक्ष पर वर्ग अतराल की चौड़ाई के बराबर होता है और प्रत्येक आयत की ऊँचाई Y- इकाईयों की संख्या के बराबर होती है जो उस विशेष अंतराल की आवृत्ति का प्रतिनिधित्व करती है।

आवृत्ति बहुभुज में वर्ग अंतरालों की आवृत्तियाँ उनके अपने-अपने अंतरालों के मध्य बिंदुओं पर अंकित की जाती है जबकि आयतचित्र में आवृत्तियाँ अंतरालों में एक समान बिखरी हुई मानी जाती है। अतः अंतराल का पूरा सीमा क्षेत्र अंतराल की आवृत्ति से अंकित भी किया जाता है। आयतचित्र में प्रत्येक आयत आधार पर दो लम्बमान रेखाओं द्वारा अवलंबित होता

है। अतः दो अतिरिक्त अंतराल जिनकी बहुभुज में आधार रेखा को स्थिर करने में आवश्यकता पड़ती है आयतचित्र को अकित करने में अपेक्षित नहीं होते है।

केंद्रीय प्रवृत्ति के मापन

मान लीजिए हम जानना चाहते हैं कि 12 वीं कक्षा की मनोविज्ञान में उपलब्धि कितनी अच्छी या बुरी है या हम यह जानना चाहते हैं कि चार वर्गों ए,बी,सी,डी में से किसका मनोविज्ञान में सबसे कम उपलब्धि स्तर है ताकि उन्हें अतिरिक्त शिक्षण दिया जा सके। इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए मनोविज्ञान मे व्यक्तिगत प्राप्तांकों की लंबी सूची अर्थहीन तथा महंगी होगी। दूसरी ओर किसी विषय में अकेला प्राप्ताक अविश्वसनीय होगा क्योंकि सभी विद्यार्थियों ने बराबर अंक प्राप्त नहीं किए होते। प्रत्येक समूह के मनोविज्ञान के व्यक्तिगत प्राप्ताको के औसत की गणना करना सबसे अधिक अर्थपूर्ण तथा विश्वसनीय उत्तर होगा। तब हम प्रत्येक वर्ग के औसत अकों की तुलना कर यह जान सकते हैं कि कौन सा वर्ग मनोविज्ञान की उपलब्धि में सबसे कम स्तर पर है।

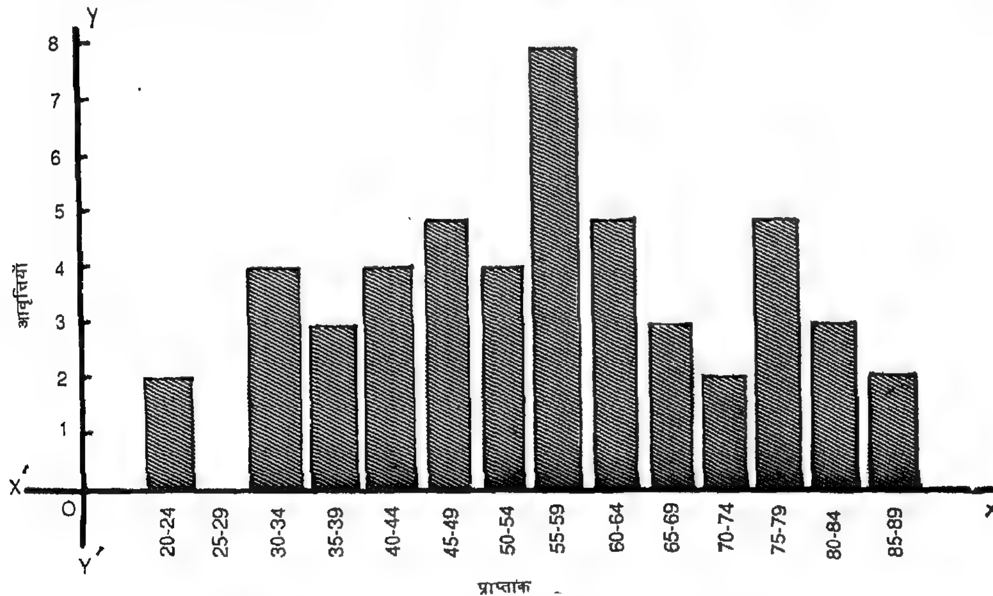
केंद्रीय प्रवृत्ति के मापन *व्यक्तियों के समूह के केंद्रीय मूल्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं*। समूह में व्यक्तियो के प्राप्तांकों का वर्णन करने की महत्वपूर्ण विधियाँ औसत अथवा केंद्रीय प्रवृत्ति के मापन हैं। औसत शब्द किसी भी केंद्रीय प्रवृत्ति का प्रतीक होता है। प्रायः तीन औसत या केंद्रीय प्रवृत्ति के मापन मध्यम माध्यिका तथा बहुलांक को साधारणतया प्रयोग किया जाता है।

केंद्रीय प्रवृत्ति मापनों के उपयोग

केंद्रीय प्रवृत्ति के मापन का मान निम्नलिखित तीन उद्देश्यो की पूर्ति करता है।

(i) समूह निष्पादन का सूचक

यह एकल संख्यात्मक मूल्य है जो व्यक्तियों या निरीक्षणों के समूह का प्रतीक है। किसी समूह के



चित्र 8.2 *सारणी 8.2 के प्राप्तांको के वितरण के लिए आयतचित्र*

व्यक्तिगत प्राप्तांकों का पुंज केंद्रीय प्रवृत्ति अथवा औसत के मापन से एकल प्राप्तांक वर्णन में रूपांतरित हो जाता है। चूंकि औसत व्यक्तियों के समूह के सभी प्राप्तांकों का प्रतिनिधित्व करता है यह मितव्ययी और अर्थपूर्ण होता है। अतः यह समूचे समूह के निष्पादन का वर्णन है।

(ii) दो या अधिक समूहों की तुलनात्मकता

औसतों के उपयोग से हम दो या अधिक समूहों को उनके विशिष्ट आदर्श निष्पादन के संबंध में तुलना करने में समर्थ होते हैं।

(iii) जनसंख्या के औसतों के आकलन

किसी समूह या प्रतिदर्श का औसत कुछ सीमाओं के साथ उस जनसंख्या के औसत का वर्णन करता है जिसमें से यह प्रतिदर्श लिया गया है। दूसरे शब्दों में प्रतिदर्श जनसंख्या औसतों के निकटतम आकलन हैं। अपने प्रतिदर्श के साथ प्रतिदर्शों से आगे भी सामान्यीकरण कर सकते हैं और जनसंख्या के लिए भविष्यवाणियाँ कर सकते हैं। किंतु यह तभी संभव होगा जब हमारा प्रतिदर्श अपनी जनसंख्या का उचित प्रतिनिधित्व करता हो।

1. मध्यम अथवा अंकगणितीय मध्यम (M)

केंद्रीय प्रवृत्ति के तीनों मापनों में से सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाला मापन औसत है। यह वह मूल्य भी है जो बहुत सी सांख्यिकीय गणनाओं का आधार है। चूंकि मध्यम *व्यक्तिगत अंकों का अंकगणितीय औसत होता है वह विभिन्न प्राप्तांको के योग को उनकी संख्या से विभक्त करके प्राप्त किया जाता है।* उदाहरणार्थ एक समूह के पाँच विद्यार्थियों ने मनोविज्ञान में निम्नलिखित अंक प्राप्त किए हैं :

$X_1 = 53$ $X_2 = 67$ $X_3 = 65$ $X_4 = 58$ और $X_5 = 62$

मध्यम जिसको हम M से इंगित करेंगे इस प्रकार होगा

$$M = \frac{\Sigma X}{N}$$

(अवर्गीकृत आँकड़ों के लिए मध्यम)

जहाँ M = मध्यम

Σ = योग संकेतक

X = प्रत्येक व्यक्तिगत प्राप्तांक

N = मापनों की संख्या

गणना करने पर मनोविज्ञान में पाँचों विद्यार्थियों के अंकों का मध्यम होगा

$$M = \frac{X_1 + X_2 + X_3 + X_4 + X_5}{N}$$

$$= \frac{53 + 67 + 65 + 58 + 62}{5}$$

$$= \frac{305}{5}$$

$$= 61$$

(अ) वर्गीकृत आँकड़ों का दीर्घ विधि द्वारा मध्यम

जब प्राप्तांक बहुत अधिक होते हैं तो हम उन्हें आवृत्ति वितरण में वर्गीकृत कर लेते हैं और मध्यम की गणना के लिए एक अन्य सूत्र का इस्तेमाल करते हैं

वर्गीकृत आँकड़ों के लिए मध्यम $M = \frac{\Sigma fx}{N}$

जहाँ *f* = वर्ग अंतरालो की आवृत्ति

X = वर्ग अंतरालों के मध्यबिंदु

N = मापनों की संख्या

आइए हम सारणी 8.3 में दिए गए आवृत्ति वितरण से मध्यम की गणना करें। पहले हम प्रत्येक वर्ग अंतराल के मध्य बिंदुओं को निकालते हैं और उन्हें X- स्तम्भ के नीचे लिखते हैं। उसके उपरांत प्रत्येक मध्य बिंदु (X) को उसके अंतराल की आवृत्ति (f) में गुणा करने पर fX प्राप्त होता है। हम यह सब गुणा की गई संख्याएँ fX स्तंभ में रखते हैं। तब हम इस fX स्तभ का योग प्राप्त करते हैं अर्थात् ΣfX और फिर M या मध्यम प्राप्त करने के लिए N से विभक्त करते हैं।

प्राप्तांकों को अतरालों में समूह बद्ध करने पर उनकी पहचान खो जाती है और उनका प्रतिनिधित्व

सारणी 8.3
वर्गीकृत आँकड़ो से मध्यम की गणना
दीर्घ विधि द्वारा

(1) वर्ग अंतराल प्राप्तांक	(2) मध्यबिन्दु (X)	(3) आवृत्ति (f)	(4) भारित मध्यबिन्दु (fX)
85-89	87	2	174
80-84	82	3	246
75-79	77	5	385
70-74	72	2	144
65-69	67	3	201
60-64	62	5	310
55-59	57	8	456
50-54	52	4	208
45-49	47	5	235
40-44	42	4	168
35-39	37	3	111
30-34	32	4	128
25-29	27	0	0
20-24	22	2	44
		N = 50	∑fX-2810

$$\text{मध्यम } M = \frac{\sum fX}{N} = \frac{2810}{50} = 56.2$$

उस अंतराल का मध्यबिदु करता है। अतः हमें उस मध्यबिंदु को उतनी ही बार जोड़ने की आवश्यकता होती है जितनी बार उस अंतराल मे वह प्राप्ताक आया है। अंतराल में आए प्राप्तांकों की सख्या द्वारा इन मध्यबिंदुओं को भारित करने के लिए प्रत्येक अंतराल के मध्यबिंदु को उसी अंतराल की आवृत्ति से गुणा करते हैं। इस प्रकार प्रत्येक अंतराल का fX उस अंतराल में आने वाले मूल प्राप्तांकों के योग का निकटतम अनुमान बन जाता है। उसी तरीके से ∑fX वितरण मे सम्मिलित सभी प्राप्तांकों के योग के लगभग बराबर हो जाता है। इसी कारण से मध्यम प्राप्त करने के लिए ∑fX के मान को N से विभक्त किया जाता है।

(ब) अनुमानित मध्यम अथवा संक्षिप्त विधि द्वारा वर्गीकृत आँकड़ो के लिए मध्यम

मध्यम की गणना के लिए उपरोक्त वर्णित विधि प्रत्यक्ष विधि है और सही परिणाम देती है। किंतु हम प्रायः बहुत बड़ी संख्या में प्राप्तांको के साथ कार्य करते हैं और दीर्घ विधि में थकाने वाली गणना सम्मिलित होती है और कभी-कभी हम ग़लतियाँ भी कर सकते हैं। अतः मध्यम की गणना के लिए संक्षिप्त विधि का आश्रय लिया जाता है। यह विधि अनुमानित मध्यम अथवा यथेच्छ संदर्भ बिंदु निश्चित करके प्रारंभ होती है बाद में इस अनुमानित मध्यम में संशोधन का इस्तेमाल करके हम वास्तविक मध्यम प्राप्त करते हैं।

अनुमानित मध्यम अथवा यथेच्छ संदर्भ बिंदु निश्चित करने के लिए कोई निश्चित नियम नहीं है। आदर्श विधि यह है कि वितरण के बीच वाले अंतराल या उस अंतराल जिसकी सबसे अधिक आवृत्ति हो, के मध्यबिंदु को मान लिया जाए। परिणामो के संबंध में इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कौन से मध्य बिंदु को अनुमानित मध्यम निश्चित किया गया है। संशोधन कारक उस भिन्नता को संभाल लेता है। वर्गीकृत आँकड़ों के लिए अनुमानित मध्यम की गणना के लिए सूत्र यह हैः

मध्यम या $M = AM + ci$

जहाँ AM = अनुमानित मध्यम $= \frac{\sum fx'}{N}$

i = वर्ग अतराल का आकार

हम सारणी 8.4 में मध्यम की गणना करने की अनुमानित विधि के लिए निम्नलिखित सोपानों से गुजरते हैं।

(i) वितरण के लगभग केंद्र का तथा सबसे अधिक आवृत्ति वाला अंतराल 55-59 है। हम इस अतराल के मध्य बिंदु को अनुमानित मध्यम के इस्तेमाल के लिए चयन करते हैं। यहाँ पर अनुमानित मध्यम या AM 57.0 है।

सारणी 8.4

समूहगत आँकड़ों पर सक्षिप्त विधि द्वारा मध्यम की गणना

(1) वर्ग अतराल प्राप्तांक	(2) f	(3) x'	(4) fx'	
85-89	2	6	12	
80-84	3	5	15	
75-79	5	4	20	
70-74	2	3	6	
65-69	3	2	6	
60-64	5	1	5	(64)
55-59	8	0	0	
50-54	4	−1	−4	
45-49	5	−2	−10	
40-44	4	−3	−12	
35-39	3	−4	−12	
30-34	4	−5	−20	
25-29	0	−6	0	
20-24	2	−7	−14	(−72)
	N = 50		$\Sigma fx' = -8$	

अनुमानित मध्यमान = 57

$$c = \frac{\Sigma fx'}{N} = \frac{64-72}{50} = \frac{-8}{50} = -0.16$$

i = वर्ग अंतराल का आकार = 5

मध्यम या $M = AM + ci = 57 + (-0.16) \times 5$
$= 57 - 0.8 = 56.2$

(ii) तीसरा स्तम्भ जिसे x' नामांकित किया गया है यह अनुमानित मध्यम के वर्ग अंतराल से प्रत्येक वर्ग अंतराल का विचलन इंगित करता है। हम इसमे अनुमानित मध्यम से विभिन्न अंतरालो के मध्य बिंदुओं का विचलन वर्ग अतराल की इकाईयों के रूप में अंकित करते हैं। चूंकि अंतराल 55-59 के मध्यबिंदु को अनुमानित मध्यम माना गया है अतः इस अंतराल का विचलन 0 है और इस अंतराल के सामने x' वाले स्तम्भ में शून्य को रखा गया है। अंतराल 60-64 का मध्य बिंदु अनुमानित मध्यम से एक अंतराल विचलित करता है अतः इस अंतराल के लिए x' स्तम्भ में 1 अंकित किया गया है। इसी प्रकार अंतराल 65-69 के मध्यबिंदु का अनुमानित मध्यम से विचलन दो इकाई है अतः इस अंतराल के सामने x' वाले स्तम्भ में 2 अंकित किया गया है।

इसी तरीके से ऊपरी दिशा की ओर अतराल 85-89 तक विचलन अकित किए जाते हैं। हम अनुमानित मध्यम वाले अंतराल से नीचे (55-59) वाले अंतरालों के लिए भी इसी तरीके का प्रयोग करते हैं चूंकि 55-59 से नीचे के सभी अंतराल अनुमानित मध्यम से कम हैं x की इन अंतरालों की प्रविष्टियाँ ऋणात्मक हैं अतः 50-54 अंतराल की प्रविष्टिया −1, 45-49 की −2, 40-44 की −3 आदि हैं। ऋणात्मक चिन्ह तब प्रयुक्त होते हैं जब मध्यबिंदु अनुमानित मध्यम से कम होते हैं और धनात्मक चिन्ह तब प्रयुक्त होते हैं जब मध्यबिंदु अनुमानित मध्यम से अधिक होते हैं।

(iii) हम प्रत्येक x' को उसके अपने f से गुणा करते हैं और गुणनफल को अंतराल के सामने वाले fx' के स्तम्भ में अंकित कर देते हैं। प्रत्येक fx' के चिन्ह इसके fx' के चिन्हों पर निर्भर करते हैं। यही कारण है कि अनुमानित मध्यम के ऊपर के अंतरालों के fx' धनात्मक हैं और अनुमानित मध्यम के नीचे के अंतराल ऋणात्मक हैं।

(iv) हम fx' स्तम्भ का बीजगणितीय योग प्राप्त करते हैं और शुद्धिमान c प्राप्त करने के लिए योग को N से विभक्त कर देते हैं। यह c वर्ग अंतरालो की इकाईयों में शुद्धिमान है। हम प्राप्तांकों का शुद्धिमान प्राप्त करने के लिए c को वर्ग अंतराल के आकार (i) गुणा करते हैं। कभी-कभी ci धनात्मक हो सकता है और कभी-कभी ऋणात्मक। उदाहरणार्थ सारणी 8.4 में धनात्मक fx' का योग 64 है और ऋणात्मक fx' का योग −72 है। उनका बीजगणितीय योग −8 है और −8 को 50 (N)

से विभक्त करने पर हमें −0.16, प्राप्त होता है तब हम —c (−0.16) को i (5) के साथ गुणा करते है और ci का मान−0.8 आ जाता है।

(v) *अंत में हम यथार्थ मध्यम प्राप्त करने के लिए* अनुमानित मध्यम में ci के मान का बीजगणितीय योग करते हैं। सारणी 8.4 में जब ci(−0.8) को अनुमानित मध्यम (57.0) में जोड़ा जाता है तो हमें यथार्थ मध्यम अर्थात् 56.2 प्राप्त हो जाता है।

2. माध्यिका (Mdn)

किसी वितरण के मध्यबिंदु को जिसके नीचे 50 प्रतिशत और ऊपर 50 प्रतिशत स्थितियाँ होती हैं उसे माध्यिका कहते हैं। माध्यिका एक बिंदु या विशेष 50 प्रतिशत बिंदु है और मापन को वितरण में प्राप्तांक नहीं है। माध्यिका वितरण को दो बराबर आधे भागों में विभक्त कर देती है जिसमे एक आधा उसके नीचे और दूसरा आधा उसके ऊपर स्थिर होता है।

(अ) *अवर्गीकृत आँकड़ों से माध्यिका की गणना*

जब अवर्गीकृत प्राप्तांक दिए जाते है तो पहला सोपान उन प्राप्तांकों को उनके आकार के अनुसार क्रम में व्यवस्थित करना होता है। श्रेणी मे प्राप्तांकों की संख्या (N) विषम हो सकती है या सम। दोनों ही स्थितियों में श्रेणी में माध्यिका की गणना करने का सूत्र निम्नलिखित है।

माध्यिका $Mdn = \frac{(N+1)}{2}$ वां माप श्रेणी का।

मान लीजिए हमारे पास प्राप्तांकों की विषम संख्या है जैसे 12, 12, 13, 15, 16, 18, 20, 21 और 24 है चूंकि N = 9 माध्यिका $\frac{(N+1)}{2}$ वाँ या $\frac{(9+1)}{2}$ या श्रेणी का 5 वा मापन (प्राप्तांक) होगा। यहाँ पर माध्यिका 16 है जिसके नीचे 4 अक (50 प्रतिशत) और ऊपर दूसरे 4 अक (50 प्रतिशत) स्थित है। प्राप्ताक 16 इस वर्ग अतराल का भी मध्य बिंदु है जिसकी सीमा 15.5 से 16.5 तक है। जब श्रेणी में सम संख्या में प्राप्तांक होते हैं जैसे 12, 13, 15, 16, 17, 20, 21 और 24 माध्यिका श्रेणी का $\frac{(8+1)}{2}$ या 4.5वां माप बन जाता हैं। अतः माध्यिका 16.5 होती है जिसके नीचे 4 प्राप्तांक और ऊपर 4 प्राप्तांक स्थित है प्राप्ताक 16.5 वह बिंदु है जहाँ प्राप्तांक 16 की ऊपरी सीमा और प्राप्तांक 17 की निचली सीमा मिलती है। दोनो उदाहरणों में माध्यिका प्राप्ताको की श्रेणी को दो बराबर अर्ध भागों में विभक्त कर देती है।

(ब) *वर्गीकृत आँकड़ों से माध्यिका*

माध्यिका आवृत्ति वितरण का 50 प्रतिशत बिंदु है। माध्यिका को निर्धारित करने के लिए हमें वितरण में तब तक गणना करने की आवश्यकता होती है जब तक 50 प्रतिशत बिंदु तक पहुँच जाएँ। आइए हम सारणी 8.4 आंकड़ों के लिए विधि स्पष्ट करें। वितरण में 50 प्राप्तांक हैं चूंकि N/2 = 25, माध्यिका इस वितरण में वह बिंदु है जिसके ऊपर 25 स्थितियाँ है और जिसके नीचे दूसरी 25 स्थितियाँ हैं। इसका तात्पर्य यह है कि माध्यिका वितरण मे वह बिंदु है जिसके दोनों ओर 25 स्थितियाँ हो।

आवृत्ति वितरण में नीचे से ऊपर की ओर प्राप्तांकों को जोड़ते समय हम ध्यान देते है कि अंतराल 20-24 से लेकर 50-54 तक 22 प्राप्ताक होते हैं। इसमें माध्यिका तक पहुँचने मे आवश्यक प्राप्तांकों मे 3 की कमी है। अतः माध्यिका अंतराल 55-59 में कहीं अवस्थित है। इस अंतराल मे 8 प्राप्ताक है और हम अनुमान करते है कि ये 8 स्थितियाँ 54.5 से 59.5 की सीमा में समरूप से बिखरी हुई है अर्थात् अंतराल की वास्तविक सीमाओं में है।

अब हमें यह जानने के लिए कि हम 54.5 से कितना ऊपर जाएँ ताकि माध्यिका से नीचे की 25 स्थितियो को पूर्ण करने के लिए जो तीन स्थितियाँ

लेनी हैं इसके लिए अतर्वेशित करने की आवश्यकता है। चूंकि अंतराल के प्राप्तांकों का पूर्णांक 8 है जिसमे से हमें 3 की आवश्यकता है और अंतराल की सीमा 5 है हमें 54.5 जो अंतराल की निम्न सीमा है उससे ऊपर 5 का 3/8 लेना चाहिए। अतः इस वृद्धि को अंतराल की निम्न सीमा में जोड़कर हमें 54.5 + 1.9 = 56.4 माध्यिका प्राप्त हो जाती है। माध्यिका की गणना की यह विधि निम्न सूत्र में अभिव्यक्त की जा सकती है।

माध्यिका $$Mdn = l + \left(\frac{N/2 - F}{fm}\right) i$$

इसमें l = उस अंतराल की यथार्थ निम्नसीमा जिसमे माध्यिका है।

N/2 = पूर्ण प्राप्तांको का 50 प्रतिशत

F = माध्यिका वाले अंतराल के नीचे के सभी अंतरालों की आवृत्तियों का योग।

fm = माध्यिका वाले अतराल की आवृत्ति

i = वर्ग अतराल का आकार

सारणी 8.4 के आँकड़ों के लिए सूत्र को स्पष्ट करने के लिए हमारे पास

$l = 54.5,\ N/2 = 25,\ F = 22,\ fm = 8$ और $i = 5$

अतः माध्यिका Mdn =

$$Mdn = l + \left(\frac{N/2 - F}{fm}\right) i$$

$$= 54.5 + \left(\frac{25-22}{8}\right) 5 = 54.5 + 1.9 = 56.4$$

हम वितरण के ऊपर की ओर से N/2 स्थितियों को नीचे की ओर गिनती करते हुए माध्यिका की इन गणनाओं का मिलान भी कर सकते हैं। इसमें हम 85-89 के अंतराल से 60-64 के अंतराल तक नीचे जाते हैं और इस प्रकार 20 स्थितियाँ बन जाती हैं जो माध्यिका की 25 स्थितियो से 5 कम हैं। अतः माध्यिका 55-59 के अंतराल में (यथार्थ उच्च और निम्न सीमा 54.5-59.5) मे स्थित है। अतः हमे माध्यिका के यथार्थ उच्च सीमा 59.5 से 5/8 या 3.1 इकाई नीचे जाने की आवश्यकता है। अब 59.5—3.1 से हमे 56.4 माध्यिका मिल जाती है। अतः वितरण के ऊपर से नीचे की ओर गणना द्वारा प्राप्त माध्यिका नीचे से ऊपर की ओर गिनती करते हुए माध्यिका की गणना की जाँच करती है।

3. बहुलांक (Mode)

बहुलाक की परिभाषा उस *एकल प्राप्तांक से की जाती है जिसकी आवृत्ति वितरण मे सर्वाधिक होती है*। अवर्गीकृत आकड़ों में बहुलांक वह प्राप्तांक है जो सबसे अधिक बार घटित होता है। इसे अशोधित बहुलांक कहते हैं और यह प्रायः वितरण के केंद्र के पास स्थित होता है। उदाहरणार्थ हमारे पास इन प्राप्तांकों की श्रृखला 15, 16, 16, 17, 17, 18, 18, 18, 18, 19, 19 तथा 20 है। यहाँ बहुलाक 18 है क्योकि श्रृखला में इसकी आवृत्ति अन्य प्राप्ताकों की तुलना मे सबसे अधिक बार हुई है।

जब प्राप्तांक आवृत्ति वितरण में वर्गीकृत है तो वर्ग अंतराल जिसमे सबसे अधिक आवृत्ति होती है उसके मध्यबिदु को अशोधित बहुलाक अनुमानित किया जाता है। सारणी 8.4 में अतराल 55-59 मे सबसे अधिक आवृत्ति है। अतः इसका मध्यबिदु 57 अनुमानित बहुलाक या अशोधित बहुलाक है। किसी आवृत्ति वितरण में शुद्ध बहुलांक अशोधित बहुलाक से भिन्न होता है। शुद्ध बहुलांक वितरण का वह बिदु है जिस पर अन्य बिदुओं की अपेक्षा किसी एक विशेष प्राप्तांक का अधिकतम केंद्रीकरण होता है। जब आवृत्ति वितरण सममित होता है तब शुद्ध बहुलांक के अनुमान का सूत्र है :

बहुलांक = 3 माध्यिका —2 मध्यम

सारणी 8.4 के आँकड़ो पर सूत्र व्यवहृत करने पर

बहुलाक =3 माध्यिका —2 मध्यम

= (3×56.4) — (2×56.2)

= 169.2 — 112.4 = 56.8

जब N बड़ा होता है जो अशोधित बहुलाक शुद्ध बहुलांक के निकट होता है। यद्यपि अशोधित बहुलाक शुद्ध बहुलाक के अनुमानतः बराबर होता है किंतु यह केद्रीय प्रवृति का अस्थिर मापन है। यह अस्थिरता गंभीर दुर्बलता नही है क्योकि अशोधित बहुलांक सामान्यतः निरीक्षणात्मक औसत की भाँति प्रयुक्त होता है। यह वितरण में मोटे तौर पर किसी विशेष प्राप्ताक का अधिकतम केद्रीकरण का बिदु प्रदर्शित करता है। इसके कारण बहुलाक मे गणना की यथार्थता माध्यिका या मध्यम की भाँति नही होती।

मध्यम, माध्यिका और बहुलाक का प्रयोग कब करें

चूकि मध्यम की गणना समूह के सभी प्राप्तांको पर आधारित होती है इसे आदर्श औसत माना जाता है। मध्यम किसी समूह प्राप्ताको के वितरण के लिए गुरुत्वाकर्षण केंद्र होता है। जब जनसख्या से बहुत से प्रतिदर्श लिए जाते हैं तो उन प्रतिदर्शों के मध्यम उनके माध्यिका अथवा बहुलांकों की अपेक्षा कम विचरणशील होते हैं। अतः मध्यम को केंद्रीय मान का सबसे परिशुद्ध और विश्वसनीय मापन माना जाता है।

मध्यम आगे वाली सांख्यिकीय गणनाओ जैसे विचलन, सहसंबंध आदि की गणना करने में उपयुक्त मान है। व्यक्तिगत प्राप्ताको का मध्यम से विचलन, समूह में प्राप्तांकों के प्रकीर्णन की प्रकृति के विषय में महत्वपूर्ण ज्ञान प्रदान करता है। किसी प्रतिदर्श में प्राप्तांकों के अंतर उनके मध्यम के विषय में पूर्णतः संतुलित होते हैं। मध्यम के इन प्राप्ताकों के अंतरों या विचलनो का बीजगणितीय योग शून्य होता है। किंतु कई स्थितियाँ ऐसी होती हैं जहाँ माध्यिका अथवा बहुलांक उद्देश्य पूर्ति कर सकते हैं।

मध्यम का प्रयोग

(अ) जब अधिकतम स्थिरता वाले केंद्रीय बिदु का मापन आवश्यक हो।

(ब) जब केंद्र बिदु के दोनो ओर प्राप्ताक सममित रूप से वितरित हों अर्थात् प्राप्ताको का वितरण विषम न हो।

(स) आगे की गणनाएँ जैसे विचलन और सहसबध की गणना करनी हो।

माध्यिका का प्रयोग

(अ) जब वितरण का एकदम 50 प्रतिशत या मध्य बिदु की आवश्यकता होती है।

(ब) जब सीमावर्ती प्राप्ताको द्वारा मध्यम विशेष रूप से प्रभावित होता है, माध्यिका सीमावर्ती प्राप्ताकों से प्रभावित नही होती।

(स) जब किसी व्यक्तिगत प्राप्ताक की स्थिति, वितरण के मध्य बिदु से प्रतिशत दूरी के रूप मे जानना वांछित हो।

बहुलाक का प्रयोग

(अ) जब वितरण के केंद्रीय बिदु के मोटे और तात्कालिक मापन की आवश्यकता हो।

(ब) जब किसी समूह के विशेष मूल्य या स्वरूप के विषय मे केद्रीय बिदु का माप अपेक्षित होता है।

विचरणशीलता के मान

औसतों जैसे मध्यम, माध्यिका, तथा बहुलाक की गणना करके हम वितरण के केंद्र की स्थिति ज्ञात करते हैं। परंतु ये औसत इस बारे मे इंगित नही करते कि किस प्रकार प्राप्तांक केंद्र के संबध मे बिखरे हुए हैं। किसी समूह मे प्राप्ताको के वितरण की प्रकृति के बारे में अच्छी प्रकार जानने के लिए हमे विचरणशीलता के मापनों की गणना की आवश्यकता होती है यह केंद्रीय बिदु से व्यक्तिगत प्राप्ताकों के प्रकीर्णन को इंगित करते हैं। मान लीजिए हम किसी कक्षा को विशेष शिक्षण देना चाहते है जिसकी उपलब्धि गणित मे कम है। 12 वीं कक्षा के वर्ग ए और बी के गणित के अकों पर गणना करते हैं। दोनों वर्गों के मध्य अंक 68 हैं। अतः जहाँ तक मध्यमों का प्रश्न है दोनों

समूहो का गणित के निष्पादन मे कोई अतर नही है। किंतु उनके अकों को ध्यान से देखने पर पता चलता है कि वर्ग ए के अंकों की सीमा 60-80 तक है और वर्ग बी की 25-85 तक। विचरणशीलता की सीमाएँ ए और बी दोनों वर्गों के लिए क्रमशः 20 और 60 है।

इससे इंगित होता है कि गणित के अंकों में वर्ग बी के विद्यार्थियों में वर्ग ए के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक विचरणशीलता है। वर्ग ए में समान योग्यता वाले विद्यार्थी हैं। अतः इसके अधिकांश प्राप्ताक समूह के मध्यम के आसपास स्थित है किन्तु बी वर्ग मे असमान योग्यता वाले विद्यार्थी हैं। अतः व्यक्तिगत प्राप्ताक मध्यम के आसपास अधिक प्रकीर्णित है।

यदि केवल इन मध्यम अकों को देखें तो हम यह सोच सकते हैं कि दोनों वर्गों की गणितीय योग्यता समान होगी । इस आधार पर हम यदि दोनो वर्गों को एक ही विधि से शिक्षण देंगे तो यह निश्चय ही गलत निर्णय होगा। यह इसलिए होगा क्योंकि जब हम उनके अंकों की अस्थिरता की सीमा पर विचार करते है तो पाते हैं कि वर्ग बी में कुछ बेहद निम्न योग्यता वाले विद्यार्थियों के साथ श्रेष्ठ योग्यता वाले शामिल है। उस वर्ग में एक ही प्रकार का शिक्षण सभी विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त नहीं होगा। इसी वजह से वर्ग बी को निम्न और श्रेष्ठ योग्यता वाले समूहों में वर्गीकृत करने की आवश्यकता और उसी के अनुसार शिक्षण की विभिन्न विधियाँ उनके लिए उपयोगी होगी। ऐसी स्थितियो में विचरणशीलता के मापन हमें यह बताएँगे कि किसी समूह में किस सीमा तक समान या असमान व्यक्ति शामिल है। इस ज्ञान से हमें समूह के शिक्षण की विधि की योजना बनाने में सहायता मिलेगी।

चार मापन जो प्राप्तांको के समूह में विचरणशीलता को इंगित करते है वे हैं (1) प्रसार क्षेत्र (2) चतुर्थक विचलन (3) माध्य विचलन और (4) मानक विचलन

(i) प्रसार क्षेत्र

प्रसार क्षेत्र का मापन किसी समूह मे प्राप्तांकों के प्रकीर्णन का मोटा मापन है। यह वितरण के उच्चतम एव निम्नतम प्राप्तांकों के बीच का अतराल है। प्रसार क्षेत्र की गणना उच्चतम प्राप्तांक में से निम्नतम प्राप्ताक को घटाकर और उसमें 1 अंक जोड़कर करते हैं। इस प्रकार प्रसार की गणना में समूह के केवल सीमावर्ती प्राप्तांकों को लिया जाता है। सारणी 8.1 में प्राप्तांकों का प्रसार क्षेत्र 86−22+1 = 65 है। जब हमें विचरणशीलता के अन्य मापनों की गणना करने का समय नहीं होता है तो हम प्रसार क्षेत्र का प्रयोग करते हैं।

कभी-कभी हम दो या दो से अधिक समूहों की उनकी विचरणशीलता के सदर्भ में प्रारम्भिक या मोटे तौर पर तुलना करना चाहते हैं। इस स्थिति मे प्रसार क्षेत्र लाभदायक है। किंतु प्रसार क्षेत्र प्रत्येक प्रतिदर्श के साथ विचरणशीलता की किसी भी अन्य मापन की अपेक्षा अधिक परिवर्तनशील है। इस प्रकार यह अस्थिर मापन है। जब समूह में प्राप्ताकों की सख्या कम है या प्राप्तांकों के वितरण में रिक्तियाँ हैं तब भी यह अविश्वसनीय मापन है।

(ii) चतुर्थक विचलन (Q)

जैसा हम जानते हैं आवृत्ति वितरण में माध्यिका 50 प्रतिशत बिंदु या 50 वां प्रतिशतक है। इसी प्रकार 25 प्रतिशत बिंदु अथवा 25 वें प्रतिशतक को प्रथम चतुर्थक Q_1 कहते हैं। Q_1 वह बिंदु है जिसके नीचे वितरण के 25 प्रतिशत प्राप्ताक होते हैं इसे प्रथम चतुर्थक कहते हैं। इस प्रथम चतुर्थक के ऊपर अन्य 75 प्रतिशत स्थितियाँ होती हैं। इसी प्रकार 75 प्रतिशत बिन्दु या 75 वें प्रतिशतक को तीसरा चतुर्थक या Q_3 कहते हैं। Q_3 वितरण की निम्न सीमा से प्राप्ताको के पैमाने पर वह बिंदु है जिसके नीचे 75 प्रतिशत प्राप्ताक रहते हैं और ऊपर 25 प्रतिशत स्थितियाँ होती हैं।

प्रथम तथा तृतीय चतुर्थक के बीच की दूरी को

अंतःचतुर्थक प्रसार कहा जाता है। वितरण के बीच के 50 प्रतिशत प्राप्तांक, दो चतुर्थकों Q_1 तथा Q_3 के बीच में होते हैं। बीच के इस 50 प्रतिशत प्राप्तांकों के प्रसार क्षेत्र के आधे को अर्द्ध अंतःचतुर्थक प्रसार अथवा Q कहते हैं। दूसरे शब्दों में अर्द्ध अंतःचतुर्थक प्रसार ही चतुर्थक विचलन या Q है जो वितरण में Q_3 तथा Q_1 की दूरी का आधा होता है। चतुर्थक बिंदुओं Q_1 तथा Q_3 की माध्यिका से औसत दूरी, चतुर्थक विचलन Q द्वारा मापी जाती है। यह Q या चतुर्थक विचलन वितरण के मध्य मे प्राप्तांकों के घनेपन को इंगित करता है।

जब किसी वितरण में प्राप्ताक माध्यिका के पास घने गुच्छ के रूप में होते हैं तो चतुर्थक परस्पर समीप होंगे जिससे Q का मान कम हो जाता है। दूसरी ओर जब प्राप्तांक दूर दूर बिखरे होते हैं तो चतुर्थक भी परस्पर दूर होंगे और Q का मान भी बड़ा होगा। इस प्रकार Q का आकार समूह में प्राप्ताकों के विचलन पर निर्भर करता है। चतुर्थक विचलन की गणना इस प्रकार की जाती है: $Q = \frac{Q_3 - Q_1}{2}$

इस सूत्र से यह ज्ञात होता है कि Q की गणना करने के लिए हमें पहले वितरण के Q_3 और Q_1 की गणना करनी चाहिए Q_3 और Q_1 की गणना माध्यिका की भाँति ही की जाती है। हम सारणी 8.3 में दिए गए आँकड़ों की सहायता से Q प्राप्त करने के लिए आवश्यक गणना करते हैं। Q_1 की गणना करने के लिए सूत्र निम्नलिखित है :

$$Q_1 = l + \left(\frac{N/4 - F}{fq}\right) i$$

इसमें l = Q_1 वाले अंतर की सही निम्न सीमा
N = स्थितियों की संख्या
F = Q_1 वाले अंतराल के नीचे की आवृत्तियों का योग
fq = Q_1 वाले अंतराल की आवृत्ति
i = वर्ग अंतराल का आकार

Q_1 की गणना करने के लिए हमें वितरण के नीचे वाले छोर से कुल प्राप्तांकों का 1/4 अर्थात् 12.5 प्राप्त हुआ। नीचे से ही गणना करने पर हमे यह पता चलता है कि पहले चार अंतरालों अर्थात् 20-24 से 35-39 में 9 प्राप्तांक हैं। इससे अगले अंतराल 40-44 में 4 आवृत्तियाँ हैं अतः हमारा Q_1 इसी अंतराल में होना चाहिए। अब हमारे पास Q_1 के सूत्र के लिए मान है तो हम Q_1 की गणना निम्न प्रकार से करते हैं।

$$Q_1 = l + \left(\frac{N/4 - F}{fq}\right) i$$
$$= 39.5 + \left(\frac{12.5 - 9}{4}\right) 5$$
$$= 39.5 + 4.37$$
$$= 43.87$$

Q_3 की गणना के लिए हम निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग करते हैं:

$$Q_3 = l + \left(\frac{3N/4 - F}{fq}\right) i$$

इसमें l = Q_3 वाले अंतर की सही निम्न सीमा
N = स्थितियों की संख्या
F = Q_3 वाले अतराल के नीचे तक की आवृत्तियों का योग
fq = Q_3 वाले अंतराल की आवृत्ति
i = वर्ग अतराल का आकार

Q_3 की गणना करने के लिए हम वितरण के नीचे की ओर से N का 3/4 जिसमे 37.5 स्थितियाँ हो, गिनते हैं। हम देखते है कि 20-24 से 60-64 तक से अंतरालों में 35 प्राप्ताक है। हमें 65-69 वाले अंतराल की 3 स्थितियों मे से 2.5 स्थितियाँ चाहिए जिसमें Q_3 का होना अनुमानित है। अब हम Q_3 की निम्नलिखित तरीके से गणना करेंगे :

$$Q_3 = l + \left(\frac{3N/4 - F}{fq}\right) i$$
$$= 64.5 + \left(\frac{37.5 - 35}{3}\right) 5$$
$$= 64.5 + 4.16 = 68.66$$

इसके पश्चात् अत मे हम Q_1 तथा Q_3 की गणना के पश्चात् अर्द्ध अतःचतुर्थक प्रसार या Q की गणना इसके मूल्यो को सूत्र में प्रतिस्थापित करने पर

$$Q = \frac{Q_3 - Q_1}{2}$$

$$= \frac{68.66 - 43.87}{2}$$

$$= \frac{24.79}{2} = 12.39$$

$$Q = 12.39$$

(iii) माध्य विचलन (AD)

माध्य विचलन (AD) को मध्यम विचलन (MD) भी कहते हैं। अवर्गीकृत आँकड़ो का माध्य विचलन आँकड़ों के मध्यम से सभी व्यक्तिगत प्राप्ताको का विचलन है। किसी भी वितरण मे मध्यम से इन विचलनों का योग शून्य होता है अतः माध्य विचलन की गणना करते समय चिन्हो की उपेक्षा कर दी जाती है। सभी विचलन इस गणना मे धनात्मक रूप मे ही लिए जाते हैं। माध्य विचलन का सूत्र इस प्रकार लिखा जाता हैं।

$$AD = \frac{\sum |x|}{N}$$

यहाँ पर $|x|$

चिन्हो का ध्यान न रखते हुए माध्यम से प्राप्ताको का विचलन

$|x| = X - M$

N = प्राप्ताको की सख्या

उदाहरणार्थ हमारे पास 8 प्राप्ताक 12, 14, 15, 16, 18, 19, 21 तथा 29 है। इन प्राप्ताकों का मध्यम 18 हैं। मध्यम से इन प्राप्ताको का विचलन निम्न प्रकार पाया जा सकता है। 12–18 =–6, 14–18 =–4, 15–18 = –3, 16–18= –2, 18–18 = 0, 19–18 = 1, 21–18 = 3 और 29–18 = 11 चिन्हो पर ध्यान दिए बिना इन विचलनो का योग 30 है। इन विचलनो के योग से मध्यम प्राप्त करने के लिए हम 30 को 8 से विभक्त करते है और माध्य विचलन 3.75 प्राप्त होता है।

वर्गीकृत आँकड़ो से माध्य विचलन

वर्गीकृत आँकड़ों से माध्य विचलन की गणना हेतु सूत्र इस प्रकार है।

$$AD = \frac{\sum |fx|}{N}$$

इसमें fx = मध्यम से प्रत्येक अतराल के मध्य बिंदु के विचलन को उसी अतराल की आवृत्ति से गुणा किया हुआ।

और N = स्थितियों की सख्या

वर्गीकृत आँकड़ों से माध्य विचलन की गणना करने के लिए इस व्यवहृत सूत्र को सारणी 8.5 में प्रदर्शित किया गया है।

सारणी 8.5

वर्गीकृत आँकड़ो से माध्य विचलन AD तथा मानक विचलन SD की गणना

(1) वर्ग अतराल प्राप्ताक	(2) मध्य बिन्दु x	(3) आवृत्ति f	(4) (X-M) x	(5) fx fx	(6) fx^2 fx^2
85-89	87	2	30.8	61.6	1897.28
80-84	82	3	25.8	77.4	1996.92
75-79	77	5	20.8	104.0	2163.20
70-74	72	2	15.8	31.6	4.99.28
65-69	67	3	10.8	32.4	349.92
60-64	62	5	5.8	29.0	168.20
55-59	57	8	0.8	6.4	5.12
50-54	52	4	−4.2	−16.8	70.56
45-49	47	5	−9.2	−46.0	423.20
40-44	42	4	−14.2	−56.8	806.56
35-39	37	3	−19.2	−57.6	1105.92
30-34	32	4	−24.2	−96.8	2342.56
25-29	27	0	−29.2	0.0	0.0
20-24	22	2	−34.2	−68.4	2339.28
		N = 50		$\sum fx$ = 684.8	$\sum fx^2$ = 14168.00

यहाँ पर वितरण का मध्यम 56.2 है जैसा कि सारणी 8.4 मे गणना की गई है। इसके पश्चात् हम मध्यम से X का विचलन प्रत्येक वर्ग अतराल के मध्यबिंदु से 56.2 का विचलन प्राप्त करते हैं और उनके अपने अंतराल के सामने x स्तम्भ में अंकित कर देते हैं। इन विचलनो को भारित करने के लिए हम प्रत्येक विचलन अर्थात् x को उसी के संगत अतराल की आवृत्ति अर्थात् f से गुणा कर देते हैं इससे हमें fx मूल्य प्राप्त हो जाते हैं। चिन्हो का ध्यान न रखते हुए fx स्तभ में प्राप्त मूल्यो का योग 684.8 है। इस मूल्य को N से विभक्त करके माध्य विचलन प्राप्त किया जा सकता है।

अतः $AD = \frac{\sum|fx|}{N}$

$= \frac{684.8}{50} = 13.7$

(iv) *मानक विचलन* (SD)

विचरण के सभी सूचकों मे मानक विचलन सामान्यतः प्रयुक्त होता है। यह विचरणशीलता का सबसे अधिक स्थिर मापन है। इसे जनसंख्या के प्रकीर्णन की मात्रा का विश्वसनीय अनुमान भी समझा जाता है जिससे प्रतिदर्श लिया गया है। अतः इसका इस्तेमाल साख्यिकीय गणनाओं मे किया जाता है। मानक विचलन या SD का चिन्ह यूनानी अक्षर सिग्मा σ है।

(अ) अवर्गीकृत ऑकड़ों से मानक विचलन गणना

मानक विचलन गणना की प्रक्रिया उसी प्रकार प्रारम्भ होती है जैसे माध्य विचलन मे होती है। हम AD की गणना वाले 8 प्राप्तांक ले सकते हैं। इन 8 प्राप्तांकों का मध्यम 18 है। मध्यम से प्राप्तांकों के विचलन क्रमशः −6, −4, −3, −2, 0, 1, 3 और 11 है। एकमात्र नया सोपान जो हम यहाँ जोड़ते हैं वह है इन विचलनों का वर्ग क्रमशः 36, 16, 9, 4, 0 1, 9 तथा 121 हो जाता है। इन विचलनो के वर्गों का योग अर्थात् $\sum x^2$ 196 है। अवर्गीकृत आँकड़ों के मानक विचलन का सूत्र इस प्रकार है।

$$SD \text{ या } \sigma = \sqrt{\frac{\sum x^2}{N}} = \sqrt{\frac{\sum (X-M)^2}{N}}$$

इसमें $\sum x^2$ = मध्यम से प्राप्ताको के विचलनो के वर्गो का योग

N = प्राप्ताको की सख्या

इस सूत्र के मान रखने पर

$$SD = \sqrt{\frac{\sum x^2}{N}} = \sqrt{\frac{196}{8}} = \sqrt{24.5}$$

$$= 4.94$$

(ब) अवर्गीकृत ऑकड़ो के मूल प्राप्ताको से मानक विचलन

जब प्राप्तांको की संख्या बहुत बड़ी न हो एव प्राप्ताको का मान भी कम हो और गणक यत्र (कैलकुलेटर) उपलब्ध हो तो अपरिष्कृत प्राप्तांको से सीधे SD की गणना करने से प्रायः समय तथा श्रम की बचत होती है अवर्गीकृत प्राप्ताको के विन्यास से SD की गणना का सूत्र यह है।

$$SD \text{ या } \sigma = \frac{\sqrt{N\sum x^2 - (\sum x)^2}}{N}$$

इसमें N = प्राप्ताकों की सख्या

$\sum X^2$ = वर्गीकृत प्राप्तांको का योग

$(\sum X)^2$ = प्राप्ताकों के योग का वर्ग

हम उपरोक्त सूत्र का प्रयोग करके सारणी 8.6 मे समाधान स्पष्ट कर रहे हैं।

सारणी 8.6

मूल प्राप्तांको से SD की गणना

(1) X	(2) X^2
29	841
21	441
19	361
18	324
16	256
15	225
14	196
12	144
X = 144	X^2 = 2788

$$SD \text{ या } \sigma = \sqrt{\frac{N\Sigma X^2 - (\Sigma X)^2}{N}}$$

$$\sigma = \sqrt{\frac{8X2788 - (144)^2}{8}}$$

$$\sigma = \sqrt{\frac{22304 - 20736}{8}}$$

$$\sigma = 39.60 = 4.94$$
$$\sigma = 4.94$$

मूल प्राप्ताकों से सीधे SD की गणना करने के लिए सूत्र का प्रयोग करना अधिक सरल है। इसमें केवल दो मुख्य गणनाएँ हैं जैसे ΣX और ΣX^2। सारणी 8.6 में हम अपरिष्कृत प्राप्ताकों का योग करके X= 144 यह मान प्राप्त करते हैं। दूसरे हम प्रत्येक अपरिष्कृत प्राप्तांक का वर्ग करते हैं और ΣX^2के मान स्तम्भ 2 में अंकित करते हैं। स्तम्भ X^2 का योग प्राप्त करने पर हमे ΣX^2= 2788 प्राप्त होता है। चूँकि N = 50 हमे SD= 4.94 प्राप्त करने के लिए सूत्र में मान रखते हैं।

(स) वर्गीकृत ऑकड़ो से मानक विचलन

वर्गीकृत आँकड़ों से मानक विचलन की गणना करने की प्रक्रिया सारणी 8.5 मे स्पष्ट की गई है। शुरू के सोपान वही हैं जो वर्गीकृत आँकड़ों से AD की गणना में अनुसरण किए जाते हैं। हमें विचलनों के वर्गों की गणना करनी होती है। अर्थात् x^2 जैसे अवर्गीकृत प्राप्तांकों से मानक विचलन प्राप्त करते समय की जाती है। किंतु fx^2 पाने के लिए प्रत्येक विचलन वर्ग को उसकी संगत वर्ग अंतराल की आवृत्ति से भारित करते हैं। हमें fx^2 स्तम्भ के योग की आवश्यकता होती है।

fx^2 की गणना करने का एक आसान तरीका प्रत्येक x^2 को उसकी संगत fx से गुणा करने का है जैसा कि सारणी 8.5 मे दिखाया गया है। इससे स्तम्भ 6 में fx^2 आता है। fx^2 के योग (अर्थात् 14168.00) को तब N (50) से विभक्त करके उन वर्गीकृत विचलनों का मध्यम (अर्थात् 283.36) प्राप्त किया जाता है। संख्या 283.36 का वर्गमूल 16.83 है जो वितरण का मानक विचलन है अतः वर्गीकृत आँकड़ों के मानक विचलन का सूत्र है :

$$SD \text{ या } \sigma = \sqrt{\frac{\Sigma fx^2}{N}} = \sqrt{\frac{\Sigma f(X-M)^2}{N}}$$

इसमें x^2 मध्यम से वर्ग अंतरालों के मध्य बिंदुओं के वर्गीकृत विचलन।

f= संगत अंतरालों की आवृत्ति

N प्राप्तांको की कुल संख्या

हमारे आँकड़ों से मान रखने पर हमें

$$SD \text{ या } \sigma = \sqrt{\frac{\Sigma fx^2}{N}} = \sqrt{\frac{14168}{50}}$$

$$= \sqrt{283.36} = 16.83$$

(द) वर्गीकृत आँकड़ों से मानक विचलन की गणना संक्षिप्त विधि द्वारा

यह संक्षिप्त विधि अनुमानित मध्यम की गणना मे प्रयुक्त होती है। इस विधि से वर्गीकृत आवृत्ति वितरण से कार्य करने में समय तथा श्रम की बचत होती है। इससे हम मध्यम का अनुमान करते हैं और उसके उपरांत वास्तविक मध्यम प्राप्त करने के लिए संशोधन करते हैं। संक्षिप्त विधि से SD गणना का सूत्र है :

$$SD \text{ या } \sigma = i\sqrt{\frac{\Sigma fx^2 - c^2}{N}}$$

इसमें i = वर्ग अंतराल का आकार

x^2 = अनुमानित मध्यम से अंतरालों के मध्य बिदुओं के विचलनो का वर्ग

f = प्रत्येक अंतराल की आवृत्ति

c = fx' के बीजगणितीय योग को N द्वारा विभक्त किया हुआ

N = प्राप्तांकों की कुल संख्या

उपरोक्त सूत्र लागू करने पर हम सारणी 8.7 के आँकड़ों के लिए SD की गणना स्पष्ट करते हैं। गणना की प्रक्रिया स्तंभ 4 तक (अर्थात् fx' स्तंभ) मध्यम की संक्षिप्त विधि के समान ही है।

सारणी 8.7

वर्गीकृत आँकड़ों से संक्षिप्त विधि द्वारा SD की गणना

(1) वर्ग अंतराल प्राप्तांक	(2) f	(3) x'	(4) fx'	(5)	(6) fx'²
85-89	2	6	12		72
80-84	3	5	15		75
75-79	5	4	20		80
70-74	2	3	6		18
65-69	3	2	6		12
60-64	5	1	5		5
55-59	8	0	0	64	0
50-54	4	−1	−4		4
45-49	5	−2	−10		20
40-44	4	−3	−12		36
35-39	3	−4	−12		48
30-34	4	−5	−20		100
25-29	0	−6	0		0
20-24	2	−7	−14	−72	98
	N = 50				∑fx'² = 568

$$c = \frac{\sum fx'}{N} = \frac{64-72}{50} = \frac{-8}{50} = -0.16$$

$$c^2 = (-0.16)^2 = 0.03$$

$$\text{SD या } \sigma = i\sqrt{\frac{\sum fx^2}{N} - c^2}$$

$$\text{SD या } \sigma = 5 \times \sqrt{\frac{568}{50} - 0.03}$$

$$\text{SD या } \sigma = 5 \times 3.36 = 16.83$$

सर्वप्रथम हम स्वतंत्र सन्दर्भ बिंदु अथवा अनुमानित मध्यम का चयन करते हैं। चूंकि अन्तराल 55-59 की आवृत्ति सबसे अधिक अर्थात् 8 है। हम इसके मध्य बिंदु को अनुमानित मध्यम मान लेते हैं। इस अंतराल को शून्य का विचलन मान देते हैं और x' स्तम्भ को शुरू करते हैं। इस अंतराल से ऊपर धनात्मक मान और नीचे ऋणात्मक मान रखते हैं। तब हम fx' का मान प्राप्त करने के लिए प्रत्येक fx' को उसके संगत अंतराल के x' से गुणा करते हैं (स्तंभ 4), स्तंभ 6 में इन fx^2 का योग करके $\sum fx'^2$ का मान 568 प्राप्त करते है। स्तंभ 4 के fx' के मानों के बीजगणितीय योग को N (50) से भाग देकर c का मान −0.16 और c^2 का 0.03 हो जाता है। वर्ग अंतराल या i=5 अब सूत्र में मानों को प्रतिस्थापित कर मानक विचलन या SD का मान 16.83 प्राप्त करते हैं।

विचलनशीलता के विभिन्न मापनों के उपयोग

(1) प्रसार क्षेत्र का उपयोग तब किया जाता है—
- (अ) जब प्राप्तांक बहुत प्रकीर्णित हों या आँकड़े सापेक्षतः कम हों।
- (ब) जब प्राप्तांकों के पूर्ण फैलाव की जानकारी की आवश्यकता हो।

(2) अर्द्ध अंतः चतुर्थक प्रसार या Q का उपयोग तब किया जाता है—
- (अ) जब केंद्रीय प्रवृत्ति का मापन माध्यिका हो।
- (ब) जब सीमावर्ती प्राप्तांक हो और उनसे मानक विचलन से प्रभावित होने की संभावना हो।
- (स) जब माध्यिका के आसपास प्राप्तांकों के घनेपन या केंद्रीकरण के ज्ञान की आवश्यकता हो।

(3) माध्य विचलन या AD तब प्रयुक्त होता है—
- (अ) जब मध्यम से विचलनों का आकार मुख्यतः विचारणीय हो।
- (ब) जब मानक विचलन की बहुत कम और बहुत अधिक विचलनों द्वारा प्रभावित होने की संभावना हो।

(4) मानक विचलन या SD तब उपयोग किया जाता है—
   (अ) जब अधिकतम स्थिरता वाले विचरणशीलता के मान की आवश्यकता हो।
   (ब) जब सीमावर्ती विचलनों से विचरणशीलता के प्रभावित होने की संभावना हो।
   (स) जब उच्चतर सांख्यिकीय गणनाएँ जैसे सह संबंध गुणक या अन्य सांख्यिकी की गणना करनी हो।

सह संबंध (Correlation)

एक विषय अथवा वस्तु का अन्य से सबंध का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है। दो वस्तुओं के विषय में जाँच करने के लिए हम प्रायः सह संबंध मान की सहायता लेते हैं। सह सबंध गुणक दो चरों के बीच संबधों का माप होता है। अर्थशास्त्र में किसी वस्तु का मूल्य बिक्री के लिए उसकी उपलब्ध मात्रा से सबधित होता है। रेखागणित में किसी वृत्त की परिधि का माप उसकी त्रिज्या की लंबाई से सबंधित होता है। मनोविज्ञान में व्यक्ति की संवेगात्मकता और उसकी तर्कणा में नकारात्मक सबध है। और गणितीय योग्यता और बुद्धि में धनात्मक संबंध है। स्मरण प्रक्रिया में अधिगम सामग्री की मात्रा और व्यक्ति की धारण मात्रा में, चिंतन में अमूर्त प्रत्ययो के निर्माण का बौद्धिक विकास के साथ धनात्मक संबंध है। इस प्रकार जीवन के सभी क्षेत्रो में दो या अधिक चरो मे परस्पर संबध देखे जाते हैं। मध्यम या मानक विचलन के समान सह संबंध भी एकल सारांशित संख्या है जो सब कुछ वर्णित कर देती है।

परिधि और त्रिज्या मे, मूल्य और उपलब्धता मे, अमूर्त प्रत्ययों और बौद्धिक विकास में धनात्मक संबंध है। धनात्मक सह संबंध मे किसी मे भी उसी अनुपात में वृद्धि या ह्रास होता है। ऋणात्मक सह संबध में एक चर के मान में वृद्धि से दूसरे चर के मान में कमी होती है। जैसे अधिगम और पुनः स्मरण के बीच समय अंतराल में जितनी वृद्धि होगी धारण उसी अनुपात में कम होगा। ऐसी भी स्थितियाँ हो सकती हैं जिनमें चरो के बीच इस प्रकार के कोई संबंध न हों। मान लीजिए तर्कशास्त्र और हिंदी विषय मे यदि कोई सबंध नहीं है इसका तात्पर्य है कि तर्कशास्त्र की उच्च या निम्न उपलब्धि वालों की हिंदी विषय की उपलब्धि में यह दोनों स्थितियाँ नहीं होंगी। अतः तर्कशास्त्र और हिन्दी के बीच कोई संबध नहीं है।

इस प्रकार दो वस्तुओं के बीच धनात्मक, ऋणात्मक या शून्य सह सबंध हो सकता है। इन सह संबंधों को सह सबंध गुणक से दर्शाया जाता है जिसका प्रसार क्षेत्र +1 से 0 और फिर − 1 होता है। गुणक +1 और −1 का तात्पर्य दो चरो के बीच क्रमशः पूर्ण धनात्मक या ऋणात्मक सह संबंध इंगित करता है। 0 से +1 की सीमाओ के बीच धनात्मक सह संबंध को बढ़ते क्रम मे 0.25 0.56, 0.64, 0.83 तथा 0.91 गुणक द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। इसी प्रकार नकारात्मक सह सबंधों को −1.00 से .00 तक की दिशा में −0.28,−0.54,−0.62, −0.86 तथा −0.93 द्वारा व्यक्त करते हैं।

सह संबंध का गुणक धनात्मक हो या ऋणात्मक उनमें दो प्रमुख बातें ज्ञात होती हैं। वे दो चरो के संबधों के परिमाण की दिशा बताते हैं। सह संबंध गुणक का उच्च मान दो चरों के बीच उच्च स्तर की अनुरूपता को प्रदर्शित करता है। दूसरे धनात्मक अथवा ऋणात्मक सह संबध गुणक दो चरों के संबंधों की दिशा दर्शाते हैं। चरों के बीच कोई सह संबंध न हो तो वह शून्य सह संबंध गुणक से व्यक्त किए जाते हैं।

श्रेणियो से सह संबंध

कुछ जटिल व्यवहारों जैसे ईमानदारी, विक्रय कौशल, सामाजिक समायोजन आदि का मापन करना संभव नहीं होता। इसी प्रकार विज्ञापनों, चित्रों, चुटकुलों को क्रमशः उनकी गुणवत्ता, सुदरता तथा प्रसन्न करने वाले हास्य रस आदि के रूप मे संख्यात्मक जाँच करना भी कठिन है। अतः ऐसी स्थितियों मे

व्यक्तियों या वस्तुओं को उनकी विशेषताओं या गुणों के आधार पर अभिक्रमित किया जाता है। व्यक्तियों या वस्तुओ के बीच के अतर को 1,2,3 के क्रम में अभिक्रमित करके अभिव्यक्त किया जाता है। जब प्राप्तांकों के दो विन्यास प्राप्त हैं तो उनकी सापेक्ष स्थितियाँ श्रेणी क्रम में अभिव्यक्त की जा सकती हैं। और हम श्रेणी अंतर विधि द्वारा सह सबंध गुणक की गणना करते हैं। श्रेणी अंतर विधि या श्रेणी क्रमबद्ध विधि को p(rho) के नाम से भी जाना जाता है। p उन स्थितियो मे अधिक उपयुक्त होती है जहाँ स्थितियो की संख्या 30 से कम है। श्रेणी अंतर विधि से सह संबंध गुणक का सूत्र इस प्रकार है :

$$\rho = 1 - \frac{6\Sigma D^2}{N(N^2-1)}$$

इसमें p श्रेणी अतर से सह सबंध गुणक है।

ΣD^2 = दो विन्यासों के प्राप्ताको के श्रेणी क्रमो के अंतर के वर्गों का योग

N = समूह मे स्थितियो की सख्या।

अब हम श्रेणी क्रमबद्ध या श्रेणी अंतर विधि द्वारा दिए गए आँकड़ो पर सह सबध गुणक की गणना सारणी 8.8 में स्पष्ट करते हैं।

अतः rho का मान अथवा X और Y के बीच सह सबंध गुणक .49 है जो धनात्मक और निम्न है।

सारणी 8.8 के सदर्भ मे श्रेणी अन्तर सह सबंध की गणना में निम्नलिखित सोपान सम्मिलित हैं :

1. R_1 स्तम्भ मे परीक्षण X के प्राप्ताको मे उच्चतम प्राप्ताक को 1 उससे अगले को 2 और उसी प्रकार क्रम देते हैं। यदि कोई प्राप्ताक दो या अधिक बार आया है तो बाद मे आने वाले क्रमों का औसत निकाल कर बराबर प्राप्ताको को वह औसत क्रम दे देते हैं। उदाहरणार्थ परीक्षण X मे दो व्यक्तियों ने 47 अक प्राप्त किए है। इन दो प्राप्ताको के लिए 4 और 5 क्रम प्रयुक्त किए गए हैं। इसलिए हम इन दोनो को 4.5 निर्दिष्ट कर देते हैं। अगला क्रम 6 से प्रारंभ होता है जो 45 को निर्दिष्ट किया गया है।इसी प्रकार तीन व्यक्तियों ने 43 प्राप्ताक लिए। चूकि ये तीन प्राप्ताक 8,9,10 क्रमो द्वारा आच्छादित किए जाते हैं, अतः हम तीनो का 8,9 और 10 का औसत अर्थात् 9 प्रत्येक को निर्दिष्ट करते है। उससे अगला क्रम 11 से प्रारम्भ होता है जो 41 को दिया गया है यदि निम्नतम प्राप्तांक की आवृत्ति दो बार नहीं हुई है तो इसका अनुक्रम सख्या के बराबर होना चाहिए। इस प्रकार की जॉच हमारी अनुक्रम प्रक्रिया की शुद्धता को इंगित करेगी।

सारणी 8.8

श्रेणी अतर विधि से सह सबध गुणक की गणना

व्यक्ति (1)	X परीक्षण मे प्राप्ताक (2)	Y परीक्षण मे प्राप्ताक (3)	R_1 (4)	R_2 (5)	D (R_1-R_2) (6)	D^2 (7)
A	58	58	1	2	−1	1.00
B	52	66	2	1	1	1.00
C	51	38	3	9	−6	36.00
D	47	50	4.5	3	1.5	2.25
E	47	48	4.5	6	1.5	2.25
F	45	36	6	10.5	−4.5	20.25
G	44	49	7	4	3	9.00
H	43	30	9	12	−3	9.00
I	43	36	9	10.5	−1.5	2.25
J	43	39	9	8	1	1.00
K	41	48	11	6	5	25.00
L	39	48	12	6	6	36.00
					$\Sigma D = 0$	$\Sigma D^2 = 45$

$$p = 1 - \frac{6\Sigma D^2}{N(N^2-1)}$$

$$p = 1 - \frac{6 \times 145}{12(144-1)} = 1 - \frac{870}{12 \times 143}$$

$$= 1 - 0.51 = 0.49$$

2. परीक्षण Y में प्राप्तांकों को क्रम में रखते हैं और R2 स्तम्भ में क्रम अंकित करते हैं। यहाँ पर भी हमें दो स्थानों पर अधिक आवृत्ति वाले क्रम जैसे 6 और 10.5 पर मिले।

3. R1 और R2 के दो संगत क्रमो के बीच अंतर ज्ञात करते हैं ताकि हमारे पास धनात्मक एवं ऋणात्मक क्रम आ जाएँ। इन क्रम भेदों को D स्तम्भ में अंकित कर देते हैं। यदि अनुक्रम प्रक्रिया सही है तो सभी Ds का बीजगणितीय योग शून्य होगा। यद्यपि यह गणना सह सबंध गुणक की गणना में प्रयुक्त नहीं होती किंतु अनुक्रम प्रक्रिया की शुद्धता को प्रभावित करने की जाँच है।

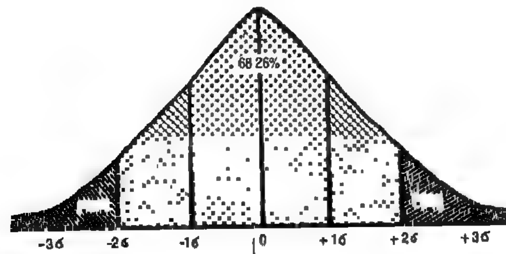
4. प्रत्येक D का वर्ग करते हैं और वह मान D^2 स्तम्भ मे अंकित कर देते हैं।

5. $\sum D^2$ पाने के लिए D^2 का योग प्राप्त करते हैं। सारणी 8.8 में $\sum D^2$=145 है।

6. $\sum D^2$ के मान और N को श्रेणी अंतर सूत्र में प्रतिस्थापित करने पर सह संबंध गुणक की गणना करते हैं।

सामान्य संभाव्यता वक्र

जब हम सामान्य जनसंख्या से व्यक्तियों का चयन करते हैं और उनके शारीरिक या मनोवैज्ञानिक गुणों जैसे ऊँचाई, वज़न, बुद्धि और अनुक्रिया समय का मापन करते है तो हमें प्राप्ताकों के आँकड़े प्राप्त होते हैं। यदि हम इन प्राप्तांकों को आवृत्ति वितरण में रखें और फिर इस आवृत्ति वितरण से आवृत्ति वक्र बनाए तो हमें घण्टाकार आकृति का वक्र प्राप्त होता है जैसा कि चित्र 8.3 में दर्शाया गया है।



चित्र 8.3 *सामान्य वितरण वक्र मे क्षेत्रों का अनुपात*

प्राप्तांकों के वितरण की प्रकृति का अध्ययन करने से हम देखते हैं कि प्राप्तांक केन्द्र के आसपास घने रूप से केंद्रीकृत है और वक्र के शिखर या केन्द्रीय शीर्षबिंदु के बाएँ और दाएँ छोरों की ओर क्रमशः कम होते गए हैं। वक्र में यह प्रदर्शित किया गया है कि वक्र के निम्नतम प्राप्तांकों वाले छोरों की ओर क्रमशः कम प्राप्तांक होते हैं, तब वक्र के मध्य तक प्राप्तांक अधिकतम संख्या तक बढ़ जाते हैं तथा पुनः उच्च प्राप्ताक वाले सिरे की ओर क्रमशः कम होते जाते हैं।

यदि वक्र के शीर्ष शिखर बिंदु से X- अक्ष पर लम्ब खींचा जाए तो यह वक्र को दो बराबर रूप वाले और क्षेत्रों वाले अर्धों में विभाजित करता है। इस प्रकार का घंटाकार वक्र जिसमे द्विपक्षीय सममिती होती है सामान्यः संभाव्यता वक्र अथवा सामान्य वितरण कहलाता है। वक्र की सर्वाधिक ऊँचाई या उच्चत भुजमान वितरण के मध्यम पर होती है। बाकी सभी भुजमान केंद्रीय भुजमान से छोटे होते हैं। यह रुचिकर तथ्य है कि सामान्य वितरण वक्र में मध्यम, माध्यिका तथा बहुलांक तीनों वितरण के एक ही बिंदु पर पड़ते हैं। इस वक्र को अन्य रूप से उपगामी या अनन्तस्पर्शीय कहते हैं क्योंकि वक्र के सिरे X- अक्ष को कभी स्पर्श नहीं करते बल्कि अनंत तक दोनों विरोधी दिशाओं में बढ़ते जाते हैं।

संभाव्यता के आधार भूत सिद्धांत

किसी घटना की संभाव्यता समान घटनाओं में उस घटना के घटित होने की अपेक्षित आवृत्ति है। घटित होने की अपेक्षित आवृत्ति का पता उन दशाओं के तथ्यों पर विचार करके किया जा सकता है जिनकी उस घटना के घटित होने को प्रभावित करने की संभावना है। किसी घटना की संभावना संभाव्यता की गणितीय विधि द्वारा गणना की जा सकती है जिसे सामान्यतः अनुपात से अभिव्यक्त किया जाता है। मान लीजिए हम एक सिक्का उछालते हैं, सिक्के का चित्र आने की संभाव्यता दो में से एक है। इसको इस

प्रकार अभिव्यक्त करते हैं p=1/2 या 0.5 सिक्के के पट्ट की आने की सम्भावना भी 1/2 या 0.5 है।

यदि हम किसी घटना की आवृत्ति की संभाव्यता को p कहें तथा घटना न होने की संभावना को q कहें तो P तथा q का योग या p+q मिलाकर हमेशा एक के बराबर होता है। सिक्का उछालने के उदाहरण के p+q=1/2+1/2 या 0.5+0.5=1 इसी प्रकार एक घनाकार पासा फेंकने पर दो बिंदु वाले फलक के आने की संभावना 1/6 होती है तथा अन्य फलकों के ऊपर आने की संभावना के 5 अवसर होते हैं अतः p = 1/6, q = 5/6 तथा p + q = 1/6 + 5/6 = 1. उदाहरण के लिए कोई विद्यार्थी सत्य असत्य प्रकार के प्रश्न के उत्तर के विषय में कुछ नहीं जानता। उसके सही उत्तर पाने की संभावना 1/2 या 0.5 है, यदि उसको बहुविकल्प प्रकार के प्रश्न जिसमे 5 अनुक्रिया है तो उसके सही उत्तर देनें की संभावना 1/5 या 0.2 है। अतः जब संभावना कार्य करती है वहाँ हम केवल अपेक्षित परिणाम ही बता सकते हैं।

संभाव्यता अनुपातों में रेखा के ऊपर वाला अंक वांछित परिणामों के बराबर होता है और रेखा के नीचे वाले अंक संपूर्ण संभावित परिणामो के बराबर होते हैं। अतः संभाव्यता अनुपात की परिभाषा वांछित परिणामो को सम्पूर्ण परिणाम की संख्या से विभक्त करने के पश्चात् प्राप्त अंश से की जाती है। यह संभाव्यता का मुख्य नियम है जिसके अनुसार किन्ही दो या अधिक परस्पर विशिष्ट घटनाओ के घटित होने की संभावना उनकी अलग-अलग सभावनाओं के योग के बराबर होती है। सामान्यतः संभाव्यता अनुपात 0 जिसका तात्पर्य घटित होने की असभावना और 1.00 के बीच होती है, जिसका तात्पर्य घटित होने की पूर्ण निश्चितता होती है।

सामान्य वक्र के अंतर्गत क्षेत्र

सामान्य वितरण वक्र का सपूर्ण क्षेत्र वितरण की कुल संख्या अर्थात् सपूर्ण स्थितियों के बराबर होता है। यदि हम इसे मानक वक्र के रूप में लें जिसमे N=100 हो तो हम प्रतिशतों से कार्य कर सकते हैं। अतः वक्र का 50 प्रतिशत मध्यम के ऊपर की ओर तथा दूसरा 50 प्रतिशत नीचे की ओर रहता है। मध्यम से +1σ तक एक तिहाई स्थितियाँ और मध्यम से दूसरी तरफ −1σ तक अन्य एक तिहाई स्थितियाँ अपेक्षित होती हैं। अतः मध्य के दोनों ओर फैले हुए एक मानक विचलन में लगभग 2/3 स्थितियाँ आ जाती हैं। यदि इसे प्रतिशत के रूप में व्यक्त करें तो प्रत्येक ओर 34.13 प्रतिशत स्थितियाँ होंगी अतः −1σ से +1σ तक के अंतराल में 68.26 प्रतिशत स्थितियाँ आ जाती हैं जैसा कि चित्र 8.3 में प्रदर्शित किया है।

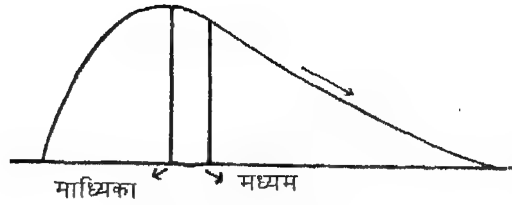
सामान्यता से अपसरण

1. वैषम्य

प्राप्तांकों के किसी वितरण के आधार पर आवृत्ति बहुभुज बनाते समय चित्रों मे सममिति या असममिति हमारा अवधान आकृष्ट करती है। हम यह देखते हैं कि वक्र विभिन्न रूप लेते हैं जिन्हें कुछ प्रकारों में बाँटा जा सकता है। सामान्य वक्र में मध्यम, माध्यिका तथा बहुलांक एक बिंदु पर ही पड़ते हैं और इसमें केंद्रीय बिंदु के बाएँ और दाएँ अर्ध भागों में संतुलन पूर्ण होता है। किंतु जब चित्र का यह संतुलन या गुरुत्वाकर्षण का केंद्र वितरण में मध्यम और माध्यिका विभिन्न बिंदुओं पर होने के कारण कभी बाएँ तो कभी दाएँ की ओर बदलता प्रतीत होता है तब इस प्रकार की स्थितियाँ विषम वितरण कहलाती है।

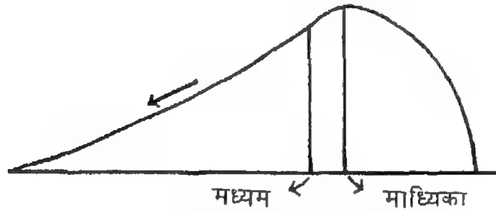
धनात्मक एव ऋणात्मक वैषम्य

जब आवृतियाँ चित्र के बाई ओर एकत्र हो जाती है और उसकी पूंछ दाहिनी छोर की ओर बढ़ती जाती है तो वक्र धनात्मक रूप से विषम होता है। दूसरे शब्दो में जब प्राप्ताक वक्र के निचले सिरे पर जमा हो जाते हैं तथा क्रमशः ऊपरी सिरे की ओर फैलते हैं तो वितरण की इस प्रकार की विषमता को धनात्मक कहते हैं।



चित्र 8.4 *धनात्मक वैषम्य*

जब आवृतियाँ चित्र के दाएँ ओर एकत्र हो जाती है और उसकी पूंछ बांई ओर फैलती है तो वक्र के वैषम्य को ऋणात्मक कहते हैं। अतः वैषम्य का चिन्ह अर्थात् धनात्मक अथवा ऋणात्मक, वक्र की पूंछ तथा प्राप्तांकों के घनेपन की अवस्थिति से निश्चित होता



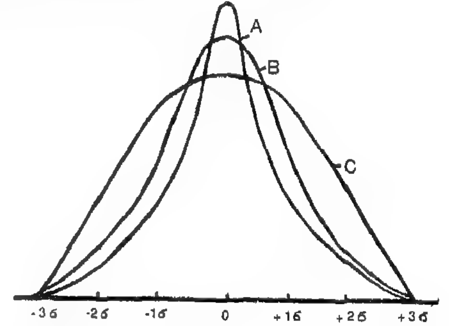
चित्र 8.5 *ऋणात्मक वैषम्य*

धनात्मक तथा ऋणात्मक वैषम्य की निम्नलिखित उदाहरणो द्वारा व्याख्या की गई है। मान लीजिए बारहवीं कक्षा के मनोविज्ञान विद्यार्थियो के बहुत कम अंक, लगभग 40 प्रतिशत और उससे भी कम आते हैं। जब इन अंकों के आधार पर आवृत्ति वक्र बनाया जाए तो अधिकांश छात्रों के अंक वक्र के निचले सिरे पर जमा हो जाते है। वक्र के बाई अथवा निम्न ओर प्राप्तांकों का घना गुच्छ ओर दाई अथवा उच्च दिशा में पूंछ फ़ैलती है। इसके परिणामस्वरूप धनात्मक वक्र बनता है। दूसरी ओर मनोविज्ञान परीक्षा का प्रश्नपत्र अत्यधिक सरल आ जाता है और अधिकांश विद्यार्थी बहुत उच्च अक, लगभग 70 प्रतिशत या उससे भी अधिक प्राप्त करते हैं। यदि उनके इन प्राप्तांको से आवृत्ति वक्र खींचा जाता है तो अधिकाश विद्यार्थी वक्र के ऊपरी सिरे पर दाई ओर को एकत्र हो जाते हैं और वक्र बाई ओर को पूंछनुमा नुकीला हो जाता है तो ऐसे वक्र को ऋणात्मक रूप से विषम वक्र कहा जाता है।

चूंकि सामान्य वितरण में मध्यम, माध्यिका के बराबर होता है अतः यहाँ वैषम्य शून्य होता है। मध्यम तथा माध्यिका जितने समीप होते हैं वैषम्य उतना ही कम होता है तथा वितरण उतना ही सामान्य वक्र जैसा ही होता है। परंतु मध्यम और माध्यिका मे जितना अधिक अंतर होता है वैषम्य उतनी ही बढ़ता है। चित्र 8.4 तथा 8.5 के विषम वितरणो में मध्यम, माध्यिका की तुलना में वक्र के विषम सिरे की ओर अधिक झुका हुआ है। जब मध्यम आवृत्ति वितरण मे माध्यिका के बाई ओर पड़ता है तो वैषम्य ऋणात्मक होता है परंतु मध्यम, माध्यिका के दाई ओर पड़ता है तो वैषम्य धनात्मक होता है।

(2) वक्रता मात्रा

आवृत्ति वक्र को उसके चपटेपन या नुकीलेपन के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है जिसे वक्रता मात्रा कहते हैं। वक्रता मात्रा तीन प्रकार की होती है — (अ) तुगद वक्रता (ब) चिपिट वक्रता तथा (स) मध्य शंकु या सामान्य वक्रता



चित्र 8.6 *तीन प्रकार की वक्रता मात्रा*

सामान्य वक्र की तुलना मे अधिक नुकीले आवृत्ति वक्र को तुंगद वक्र या तुगद कुदी कहते हैं। तुगद वक्रता मे वक्र के छोर आधार रेखा पर अधिक उठे हुए होते हैं। सामान्य वक्र की तुलना में सामान्य से अधिक चपटे आवृत्ति वक्र को चिपिट कुदी अथवा चिपिंट वक्रता कहते हे। सामान्य वितरण वक्र को सामान्य अथवा मध्य वक्रता वक्र कहते हैं।

साराश

साख्यिकी आँकड़ो को सख्यात्मक रूप मे प्रस्तुत करने मे सहायता करती है। यह आँकड़ो को बोधगम्य तथा अर्थपूर्ण इकाइयो मे सगठित करने मे सहायता करती है। साख्यिकी वर्णनात्मक तथा अनुमानात्मक होती है। वर्णनात्मक साख्यिकी मे समूह सदस्यो के वास्तविक निरीक्षणो का वर्णन प्रस्तुत किया जाता है जबकि अनुमानात्मक साख्यिकी मे ऐसे सामान्य सिद्धातो को खोजने के प्रयास किए जाते हैं जिन्हें सामान्य जनसख्या पर व्यवहृत किया जा सके। साख्यिकी का व्यावहारिक उपयोग बहुत है। शिक्षक तथा समाज वैज्ञानिक इसका उपयोग विभिन्न सबधो की खोज करने मे करते हैं।

मापनो के प्रकारो को सतत श्रेणी जैसे भौतिक चरो के मापन और असतत श्रेणी जहाँ मूल्यो मे वास्तविक अतर होता है जिनमे श्रेणी मे उपविभाजन की अनुमति नही होती है, मे बाँटा जाता है। प्राप्ताक केवल असतत बिदु नही है किंतु श्रेणी अथवा सातत्यक पर दूरियो के रूप मे मापे जाते है।

जब मापनो की सख्या कम होती है तो उन्हे बिना वर्गीकृत आँकड़े रख सकते हैं किंतु जब अधिक होती है तो उन्हें हम आवृत्ति वितरण के रूप मे वर्गीकृत करते हैं। आवृत्ति वितरण मे व्यवस्थित आँकड़े सगठित, अर्थपूर्ण और व्याख्या करने योग्य हो जाते है। आँकड़ो के विश्लेषण का एक उपयोगी सहायक आँकड़ो का चित्रात्मक प्रस्तुतीकरण है। इसके अतर्गत आवृत्ति बहुभुज और आयत चित्र आते हैं। इस प्रकार के आलेखीय प्रस्तुतीकरणो से व्याख्या करने मे आसानी होती है। ये वितरण के साख्यिकीय तथ्यो को मूर्त तथा बोधगम्य प्रकारो मे परिवर्तित करते हैं।

केंद्रीय प्रवृत्ति के मापन व्यक्तियो के समूह के केंद्रीय मान का प्रतिनिधित्व करते हैं। औसत शब्द केंद्रीय प्रवृत्ति के किसी भी मापन को कहा जा सकता है। साधारणतया केंद्रीय प्रवृत्ति के तीन औसत या मापनो मध्यम, माध्यिका तथा बहुलाक का उपयोग होता है। मध्यम व्यक्तिगत प्राप्ताको या मापनो का वह कुल योग है जो प्राप्ताको की कुल संख्या से विभक्त करने पर प्राप्त होता है। वर्गीकृत आकड़ो के लिए मध्यम की गणना दीर्घ तथा सक्षिप्त विधियो द्वारा की जा सकती है। माध्यिका किसी वितरण का वह मध्य बिदु है जिसके ऊपर और नीचे 50 प्रतिशत स्थितियाँ आती हैं। माध्यिका की गणना वर्गीकृत तथा अवर्गीकृत दोनो प्रकार के आँकडो के लिए की जा सकती है। बहुलाक एक ऐसा एकल अक है, जिसकी वितरण मे सर्वाधिक आवृत्ति होती है। मध्यम, माध्यिका तथा बहुलाक का उपयोग विभिन्न स्थितियो मे होता है।

विचरणशीलता की व्याख्या केंद्रीय बिदु के आसपास व्यक्तिगत प्राप्ताको के प्रकीर्णन के रूप मे की जाती है। किसी वितरण का प्रसार क्षेत्र उसके उच्चतम तथा निम्नतम प्राप्ताको के बीच का अतराल है। चतुर्थक विचलन वितरण के मध्य के प्राप्ताको के घनेपन को इंगित करता है। Q की उपयुक्त सूत्र द्वारा गणना की जा सकती है। माध्य विचलन, प्राप्ताको के विचलनो का मध्यम है। मानक विचलन, उस जनसख्या के प्रकीर्णन की मात्रा का सबसे विश्वसनीय अनुमान माना जाता है जिससे प्रतिदर्श लिया गया है। मानक विचलन की गणना मूल प्राप्ताको तथा वर्गीकृत आकड़ो के लिए दीर्घ तथा सक्षिप्त विधि द्वारा करते हैं। अलग-अलग स्थितियो मे विचरणशीलता की गणना हेतु अलग-अलग मापनो का इस्तेमाल होता है।

दो चरों के बीच सबध को सह सबधो के रूप मे पारिभाषित किया गया है। सह सबध गुणक की सीमा −1 से +1 के बीच होती है। जब व्यक्तियो या वस्तुओ को उनकी विशेषताओ या गुणवत्ता या योग्यता के अनुसार अनुक्रमित किया जाता है तो ऐसी स्थिति मे हम सह संबध गुणक की गणना श्रेणी अतर विधि से करते हैं।

सामान्य जनसख्या के प्राप्ताको को जब हम आवृत्ति वक्र मे अकित करते हैं तो प्राप्ताक केद्र बिदु के आसपास घने रूप से जमा होते हैं तथा केद्र के दोनो ओर बाएँ या दाएँ छोरो पर क्रमशः कम होते हैं। इस घटाकार आकृति वाले वक्र को सामान्य सभाव्यता वक्र कहते हैं। इस वक्र के फैलाव को धनात्मक अथवा ऋणात्मक वैषम्य कहते हैं। आवृत्ति वक्र के चपटेपन या नुकीलेपन को वक्र की वक्रता मात्रा कहते हैं।

प्रश्न

1. अनुमानात्मक तथा वर्णनात्मक सांख्यिकी मे क्या अंतर है? उदाहरण दीजिए।

2. सांख्यिकी में कौन-कौन से मापो का उपयोग किया जाता है? उदाहरण देकर समझाइए।

3. निम्नलिखित आँकड़ो से आवृत्ति वितरण बनाइए जिसमे 3 तथा 5 के वर्ग अतराल हो।
   11वीं कक्षा के 25 विद्यार्थियो के मनोविज्ञान के प्राप्तांक
   72, 69, 84, 82, 67, 73, 72, 63, 78, 81, 70, 76, 76, 75, 72, 72, 86, 65, 71, 83, 64, 87, 77, 67, 61.

4. आँकड़ों का आलेखित प्रस्तुतीकरण क्यो करना चाहिए?

5. निम्नलिखित आँकड़ों से आवृत्ति बहुभुज तथा आयतचित्र बनाइए ।
   40 विद्यार्थियों के भौतिक शास्त्र के प्राप्तांक :
   78, 24, 49, 99, 72, 88, 56, 66, 42, 62, 63, 91, 72, 72, 81, 69, 78, 74, 91, 88, 89, 76, 51, 38, 72, 55, 84, 84, 77, 88, 86, 86, 67, 72, 31, 58, 84, 92, 65, 86

6. निम्नलिखित आवृत्ति वितरण से मध्यम, माध्यिका तथा बहुलाक की गणना कीजिए। इसके लिए मध्यम की गणना दीर्घ तथा सक्षिप्त दीनो विधियो से कीजिए।

(अ) प्राप्ताक	आवृति	*(ब)* प्राप्ताक	आवृत्ति
		75-79	1
55-59	2	70-74	3
50-54	25	65-69	6
45-49	48	60-64	12
40-44	47	55-59	20
35-39	19	50-54	36
30-34	26	45-49	20
25-29	15	40-44	15
20-24	9	35-39	6
15-19	7	30-34	4
10-14	2	25-29	2
	N = 200		N =125

7. मध्यम, माध्यिका तथा बहुलाक के इस्तेमाल के बारे मे विवेचना कीजिए।

8. 5, 9, 11, 17, 19 इन आँकड़ो से (अ) प्रसार क्षेत्र (ब) माध्य विचलन तथा (स) मानक विचलन की गणना कीजिए।

9. प्रश्न क्रम 6 के आँकड़ो से (अ) माध्य विचलन (ब) दीर्घ विधि से मानक विचलन (स) सक्षिप्त विधि से मानक विचलन और (द) अर्द्ध अतः चतुर्थक प्रसार की गणना कीजिए।

10. मनोविज्ञान तथा अंग्रेज़ी विषयो मे 10 विद्यार्थियो के प्राप्ताक निम्न लिखित है :
मनोविज्ञान 56, 82, 78, 72, 68, 65, 60, 55, 30, 42
अंग्रेजी 41, 64, 66, 56, 58, 56, 54, 48, 41, 48
मनोविज्ञान तथा अंग्रेज़ी के इन प्राप्ताको के बीच सह संबध की गणना कीजिए।

11. सामान्य संभाव्यता वक्र के प्रत्यय तथा सिद्धांतों की विवेचना कीजिए।

12. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लीखिए :
(क) सांख्यिकी की आवश्यकता
(ख) प्राप्तांक
(ग) केंद्रीय प्रवृत्ति के मापन
(घ) विचरणशीलता का प्रत्यय
(ङ) सह संबंध
(च) सामान्यता से अपसरण
(छ) वक्रता मात्रा

संदर्भ पुस्तकें

अग्रवाल, लक्ष्मीनारायण	:	मनोविज्ञान एवं शिक्षा मे सांख्यिकी, ऐजूकेशनल पब्लिशर्स, आगरा
गुप्त, रामेश्वरदास	:	व्यावहारिक मनोविज्ञान, किताब महल, इलाहाबाद
पाण्डे, जगदानन्द	:	असामान्य मनोविज्ञान, तारा पब्लिकेशन्स, वाराणसी
पाण्डे, जगदानन्द	:	सामाजिक मनोविज्ञान, तारा पब्लिकेशन्स, वाराणसी
भार्गव, महेश	:	आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एव मापन, हरप्रसाद भार्गव, आगरा, 1982
रस्तोगी, घनश्यामदास	:	आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान, टाटा मैक्ग्राहिल पब्लिशिग कम्पनी लिमिटेड, नई दिल्ली 1980
त्रिपाठी, राम ऋषि	:	व्यावहारिक मनोविज्ञान, रामनारायण लाल बेनीमाधव, इलाहाबाद

पारिभाषिक शब्द-कोश

अनन्य विशेषक	वे लक्षण है जो व्यवहार को विस्तृत रूप से प्रभावित करते है और दसरो से पृथक दिखते है।
अनिदेशात्मक परामर्श उपागम	साक्षात्कार की दिशा निर्देश का दायित्व परामर्शग्राही पर होता है। परामर्शदाता श्रोता होते है और परामर्शग्राही को बोलने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
अनुकरण	अनुकरण वह प्रक्रिया है जिसमे आदर्श व्यवहार देखकर व्यक्ति नए व्यवहार को सीखते हैं और अपने व्यवहार की दिशा बदल लेते है।
अनुमेलन	प्रत्येक अतराल के सामने की आवृत्ति।
अनौपचारिक समूह	अनौपचारिक समूह की सरचना अनन्य नही होती तथा इनमे सवेगात्मक अभिव्यक्ति मे सहजता की मात्रा अधिक होती है।
अन्तः चतुर्थक प्रसार	प्रथम तथा तृतीय चतुर्थक के बीच की दूरी को अन्तः चतुर्थक प्रसार कहा जाता है।
अंतर्द्वंद्व	अंतर्द्वंद्व तब उत्पन्न होता है जब आवश्यकताएँ परस्पर विरोधी होती हैं।
अंतर्मुखी व्यक्तित्व	अतर्मुखी व्यक्तित्व उन गुणों को कहते है जैसे शर्मीला, विनिवर्तित इत्यादि।
अंतर्हितिकाल	छः वर्ष की अवस्था से वयः सन्धि तक का काल। इसमे बच्चे विद्यालय कार्यों तथा जीवन के क्षेत्रो मे श्रेष्ठता प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं।
अभिरुचि	व्यक्ति को जिस कार्य करने मे आनन्द मिलता है वह उसमे उसकी अभिरुचि को दर्शाता है।
अभिवृति	किसी भी व्यक्ति अथवा वस्तु के प्रति अनुकूलन अथवा प्रतिकूल तरीके से अनुक्रिया करने वाली सामान्य पूर्ववृति।
अभिक्षमता	पर्यावरण से प्रभावित होने वाली जन्मजात योग्यता।
असतत आँकड़े	इनका मापन पूर्ण इकाइयों मे अभिव्यक्त होता है और मूल्यो के बीच वास्तविक अन्तर होता है जो उपविभाजनो मे व्यक्त नही किया जा सकता जैसे व्यक्तियो की गणना, पुनःस्मरण किए शब्दो की सख्या।
असामान्य व्यवहार	वे ढंग जो व्यक्ति के परिवार, समुदाय अथवा समाज द्वारा स्वीकृत मानक व्यवहार के अनुसार नही है।
अहम्	वास्तविकता की मागो और इदम् के आवेगो के बीच मध्यस्थता के लिये उत्तरदायी।
अहस्तक्षेपी नेतृत्व शैली	समूह के सदस्य अपने निर्णय स्वय लेने तथा समूह लक्ष्यो की प्राप्ति के लिए अपने तरीको को निश्चित करते हैं।
आक्रामकता	यह क्रोध की हिंसात्मक अभिव्यक्ति है जो या तो शब्दो द्वारा या मासपेशियो की तीव्र गतियो से प्रकट होती है।

आदत	उद्दीपन और अनुक्रिया के बीच का सीखा हुआ साहचर्य है।
आनुमानिकी सांख्यिकी	इसके अंतर्गत उन सामान्य सिद्धातो की खोज का प्रयत्न किया जाता है जिनको उस समूह जिनका वास्तव मे निरीक्षण किया गया है उससे भी अधिक विस्तृत क्षेत्र पर व्यवहृत किया जा सके।
आवृति वितरण	प्राप्तांको को श्रेणियो मे सगठित करना।
इदम्	जन्मजात मूलप्रवृत्यात्मक आवेग जो अचेतन एवं स्वचालित रूप से कार्य करते हैं।
इलेक्ट्रा ग्रन्थि	एक विशेष अवस्था मे लड़कियो के मन में पिता के प्रति प्रेम तथा माँ के प्रति ईर्ष्या तथा प्रतिद्वन्द्विता।
ओडिपस ग्रन्थि	एक विशेष अवस्था मे लड़कों के मन में माँ के प्रति प्रेम तथा इच्छा तथा पिता के प्रति ईर्ष्या तथा प्रतिद्वन्द्विता।
औपचारिक समूह	औपचारिक समूह गौण समूह होते है इनकी संरचना जटिल होती है जहाँ विभिन्न सदस्यो की भूमिका पूर्व निश्चित तथा अनुक्रम मे होती है।
औषधि चिकित्सा	विशिष्ट औषधियों के उपयोग द्वारा उपचार करना है।
कल्पना प्रवाह	जब व्यक्ति की इच्छाऐं वास्तविकता द्वारा कुंठित हो जाती है तो वह अपने बनाए हुए संसार मे आ जाता है अथवा वही वापिस आ जाता है जो काल्पनिक तत्वो का बना होता है जहाँ उसकी अपूर्ण कुंठित इच्छाओं की सतुष्टि होती है इस प्रक्रिया को कल्पना प्रवाह कहते हैं।
कर्मयोग	स्वार्थ रहित सेवा का मार्ग है। यह बिना किसी बाह्य अभिप्रेरक अथवा स्वार्थपूर्ति के कार्य एवं सेवा करना है।
कार्योन्मुखी नेता	उस कार्य को सम्पन्न करता है जिसमें समूह व्यस्त है।
कुण्ठा	जब किसी की आवश्यकताओ की समुचित रूप से पूर्ति नहीं होती तो उसमे कुण्ठाएँ उत्पन्न हो जाती हैं।
केंद्रीय प्रवृति के मापन	व्यक्तियों के समूह के केंद्रीय मूल्यो का प्रतिनिधित्व करते है। औसत शब्द किसी भी केंद्रीय प्रवृति का प्रतीक होता है।
गत्यात्मक	व्यक्तित्व की सतत विकसित होती एवं बदलती प्रकृति।
गुदा संबंधी अवस्था	जीवन के दूसरे और तीसरे वर्ष मे गुदा तथा उससे सबधित अग कामोद्दीपक क्षेत्र होते है।
गौण समूह	गौण समूह अधिक अवैयक्तिक व औपचारिक होते हैं तथा कुछ नियमो एवं मानको के कुछ विन्यासों द्वारा शासित होते है।
चमत्कारी नेता	निजी सौम्यता तथा प्रभाव के कारण जो व्यक्ति नेता बन जाते हैं उन्हें चमत्कारी नेता कहते है।
चेतनमन	चेतना का दूसरा नाम।
चोरी करना	दूसरे व्यक्ति की किसी वस्तु को उसकी बिना स्वीकृति या जानकारी के ले लेना है।

जननांगी काल	मनोलैंगिक विकास की पांचवी व अन्तिम अवस्था विषम लिंगीय प्रेम व यौन इच्छाओ का पुनरुत्थान।
जीवनवृत्ति	जो धन हम व्यय करते हैं उसे विशिष्ट कार्यों द्वारा कमाना होता है जिन्हें व्यवसाय या जीवनवृत्ति कहते हैं।
झूठ बोलना	"असत्य को बताना" अर्थात् अनुचित या गलत तथ्य। यह किसी तथ्य को इच्छापूर्वक झुठलाने या विकृत करने या गलत प्रतिनिधित्व करने का सुविचारित प्रयत्न है इसे किसी तथ्य के घटित होने का सचेत सम्पूर्ण खंडन भी कहा जा सकता है।
तर्कसंगतीकरण	तर्कसंगतीकरण का अर्थ है बहाने बनाना अथवा वास्तविक तर्कों के स्थान पर स्वीकृत तर्क देना। यह "अंगूर खट्टे" प्रतिक्रिया भी कहलाती है।
दमन	यह विस्मरण की एक अचेतन प्रक्रिया है। इसमे व्यक्ति अपने जीवन की कुछ अवांछित घटनाओ को मन के सबसे गहरे स्तर पर दमित करने का प्रयत्न करते हैं। ये चेतन अभिज्ञता में से उन विचारों तथा आवेगों का अनैच्छिक तथा स्वतः बहिष्करण है जो व्यक्ति को अशान्त कर देते हैं क्योंकि उनकी प्रकृति कष्टदायक होती है।
दाब	उन अपेक्षाओ तथा जीवन स्तरो के रूप मे होते है जो व्यक्ति स्वय के लिए निर्धारित कर लेता है अथवा वे दूसरों द्वारा निर्धारित किए जाते है।
द्विवैयक्तिक संप्रेषण	दो व्यक्तियों के बीच का संप्रेषण है।
नशीले पदार्थों का व्यसन	ऐसी नियत कालिक या निरंतर उन्मादन के सेवन से है जो व्यक्ति या समाज या दोनो के लिए हानिकारक है।
निर्देशन	प्रत्येक व्यक्ति को अपने आप को पहचानने मे अपने आंतरिक ससाधनो का प्रयोग करने, अपने लक्ष्यों को निर्धारित करने, योजनाएं बनाने और समाज द्वारा दी गई अनुकूलतम दशाओ में अपने विकास की समस्याओ को हल करने में सहायता करने की प्रक्रिया है।
निवारक परामर्श	विद्यार्थियों को भविष्य मे आने वाली विशिष्ट घटनाओं या परिणामी प्रभावो से अवगत कराने वाला परामर्श।
नेता	समूह का वह सदस्य जिसे समूह लक्ष्यो की प्राप्ति हेतु सक्षम माना जाता है।
नेतृत्व शैली	नेतृत्व शैली उस विशिष्ट तरीके को कहते हैं जिससे नेता अपने समूह की क्रियाओं को सम्पन्न करते हैं।
परामर्श	परामर्श एक स्वीकृतियुक्त विश्वासपूर्ण तथा सुरक्षित सबध है जिसमे मुवक्किल या परामर्शग्राही अपनी परेशानियो के बारे मे स्वतंत्रतापूर्वक विचार विमर्श करते हैं। अपने लक्ष्यों को पारिभाषित करते है, आवश्यक सामाजिक कौशल अर्जित करते हैं और उसे व्यवहार मे कार्यान्वित करने का साहस एवं आत्म विश्वास विकसित करते है।
पराहम्	अन्तःकरण की समस्याओ तथा नैतिक मानको एवं नियमों से सबधित सरचना।
पलायन	विद्यालय से भागना या फरार होना या सबंधित अधिकारियो की आवश्यक आज्ञा प्राप्त किए बिना विद्यालय के बाहर घूमते रहना।

प्रतिगमन	स्व की रक्षा करने मे व्यक्ति अपने जीवनकाल के पूर्वकाल अथवा सुखद काल की स्थिति मे पहुँच जाते है। ऐसा करने में व्यक्ति पूर्वकाल के व्यवहार के ढग यहाँ तक कि चिन्तन तथा अनुभव भी अपना लेते हैं।
प्रतिबल	प्राणी पर समायोजन करने, सामना करने तथा अनुकूलन करने की आवश्यकता।
प्रजातांत्रिक नेतृत्व शैली	निर्णय प्रक्रिया मे योगदान के लिए समूह के सभी सदस्यो को समान अवसर प्रदान करता है।
प्रसार क्षेत्र	उच्चतम प्राप्तांको तथा निम्नतम प्राप्तांको का अन्तर।
प्रक्षेपण	प्रक्षेपण "बलि का बकरा" युक्ति है इस प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति अपनी कमियो अथवा असफलताओ के लिए दूसरों को उत्तरदायी ठहराता है।
प्राप्तकर्ता	वह व्यक्ति जो सदेश प्राप्त करता है और जिस पर उसके विसकेतन का उत्तरदायित्व होता है।
पुनर्निवेशन	वह सदेश जो सप्रेषण की प्रभावकता को इगित करता है।
पूर्वाग्रह	पक्षपातपूर्ण अभिवृत्ति अथवा पूर्व निर्णय।
पूर्वाभिमुखीकरण सेवा	वह सेवा जो विद्यार्थियो को नए विद्यालय मे समायोजन करने मे सहायता के लिए दी जाती है।
बहिर्मुखी	बहिर्मुखी व्यक्तित्व का तात्पर्य गुणों के ऐसे समूह से है जैसे मिलने-जुलने वाला, मित्रता रखने वाला इत्यादि।
बहुलांक	बहुलांक की परिभाषा उस एकल प्राप्ताक से दी जाती है जिसकी वितरण मे आवृति सर्वाधिक होती है।
बाल अपराध	18 वर्ष से कम और 10 वर्ष से अधिक के युवा द्वारा नियम तोड़नेवाला व्यवहार।
बुद्धि लब्धि	बुद्धि का माप जो प्रायः $\frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{शारीरिक आयु}} \times 100$ द्वारा इगित किया जाता है।
भक्ति योग	उपासना तथा प्रेम का मार्ग है। जो व्यक्ति संवेग प्रधान होते हैं वे भक्ति मार्ग का अनुसरण करते हैं।
भावात्मक संघटक	भावात्मक अथवा भावना सघटक का तात्पर्य किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के साथ सबधित सवेगो से होता है।
मध्यम या अंकगणितीय औसत	केंद्रीय प्रवृत्ति के तीनों मापनो मे से सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाला मापन औसत है। चूँकि मध्यम व्यक्तिगत अंको का अकगणितीय औसत होता है वह विभिन्न प्राप्तांकों के योग को उनकी सख्या से विभक्त करके प्राप्त किया जाता है।
मन तरंग	जब एक व्यक्ति दिवा स्वप्न में आसक्त होता है तो वह वास्तविकता से अस्थायी रूप से अलग हो जाता है तथा कल्पना के ससार मे खो जाता है। मन की इस दशा को मनतरंग या मनोविलास भी कहते हैं।

मनोदैहिक तंत्र	उन आदतो, अभिवृत्तियो, सवेगात्मक दशाओ, अभिप्रेरको एव विश्वासो से बना है जो प्रकृति से मनोवैज्ञानिक है किन्तु इनका शारीरिक आधार व्यक्ति की तत्रिका, ग्रथियाँ तथा सामान्य शारीरिक अवस्याएँ होती है जिनसे क्रिया करने की सामान्य क्षमता आती है।
माध्य विचलन	आँकड़ो के मध्य से व्यक्तिगत प्राप्तांको का विचलन।
माध्यिका	किसी वितरण के मध्य बिन्दु को जिसके नीचे 50 प्रतिशत और ऊपर 50 प्रतिशत स्थितियाँ होती हैं उसे माध्यिका कहते हैं।
मानक विचलन	विचरणशीलता का अधिकतम स्थिर मापन।
मानसिक मंदन	जन्म से या उसके बाद बाल्यावस्था अथवा किशोरावस्था मे उत्पन्न मानसिक न्यूनता या बौद्धिक कार्यक्षमता की कमी है। समाज की माँगो के साथ समायोजन मे असमर्थता होती है। इसके लिए एक और शब्द मानसिक विकलागता है।
मानसिक स्वास्थ्य	व्यक्ति मे विद्यमान बौद्धिक, सवेगात्मक, शारीरिक, सामाजिक व आध्यात्मिक गुणो का सुखद मिश्रण।
मुख-रति अवस्था	जीवन का प्रथम वर्ष जब मुख कामोद्दीपक क्षेत्र होता है।
योग	योग शब्द की उत्पत्ति सस्कृत शब्द "युग" से हुई है जिसका तात्पर्य है जोड़ना या "सम्मिलन"। योग द्वारा निम्नस्तरीय प्रकृति को उच्चस्तरीय आध्यात्मिक "स्व" के साथ का सम्मिलन होता है।
रक्षा युक्तियाँ	वे विशिष्ट प्रतिक्रियाएँ जो विभिन्न प्रकार की कुण्ठाओ की धमकियो से स्व की रक्षा के लिए प्रयुक्त की जाती है।
राजयोग	ध्यान प्रार्थना का मार्ग है अर्थात् ऐसा मार्ग जिसमे एकाग्रता द्वारा मन पर नियन्त्रण तथा स्वामित्व किया जाता है।
रूढि	किसी भी समूह के व्यक्तियो के प्रति अति सामान्यीकृत विश्वास है।
रोगात्मक झूठ	जो व्यक्ति जो बिना किसी बात के मिथ्या भाषण मे आनन्द प्राप्त करने या केवल दूसरो के ऊपर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करके सतोष प्राप्त करने के प्रयत्न मे झूठ बोलते हैं।
लिंग अवस्था	जीवन के तीसरे वर्ष मे बच्चा स्वय तथा सुख की खोज करता है। इस अवस्था मे जनन अग कामोद्दीपन क्षेत्र होते है।
विकासात्मक परामर्श	यह निरन्तर प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य व्यक्ति मे सकारात्मक अभिवृत्तियो, जीवन मूल्य तथा नैतिक व्यवहार का विकास करने मे सहायता देना है।
विकासात्मक व्याधियाँ	बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था की व्याधियो के वे समूह है जो शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा सवेगात्मक विकास मे किसी कमी के कारण होते है।
विचरणशीलता	केन्द्रीय बिन्दु से व्यक्तिगत प्राप्तांको का प्रकीर्णन।
विद्यालयी उपलब्धि	विद्यार्थी की शैक्षिक विषयों एव विद्यालय से सबधित क्रियाओ मे प्राप्त श्रेणी अथवा क्रम।

विवरणात्मक साख्यिकी	निरीक्षित व्यक्तियो के समूह के विवरण से सबधित होती है। इन निरीक्षणो अथवा ऑकड़ो पर की गई गणना विवरणात्मक साख्यिकी कहलाती है।
विशेषक	व्यक्ति के उस लक्षण को कहते है जो प्रत्येक व्यक्ति मे सामान्यतः स्थायी और सगतिपूर्ण तरीके से भिन्न होता है।
विसंकेतन	वह प्रक्रिया है जिससे प्राप्तकर्ता द्वारा सकेतो की व्याख्या की जाती है।
विस्थापन	व्यक्ति अपने प्रेम अथवा घृणा की कुठित भावनाओ को किसी उस वस्तु अथवा व्यक्ति के प्रति व्यक्त करता है जो उस विशेषवस्तु अथवा व्यक्ति से अलग है जो वास्तव मे कुंठा का कारण है।
वैयक्तिक मनोचिकित्सा	यह एक विशेष मनोवैज्ञानिक प्राविधि है, जिसमे व्यक्ति या रोगी को अपनी सब समस्याओ के बारे मे बिना किसी प्रतिबध के सब कुछ बता देना होता है। यह एक प्रकार की वार्तालाप चिकित्सा है।
वैयक्तिक सामाजिक निर्देशन	विद्यार्थियो के जीवन के उन पक्षों में निर्देशन जो उसके स्वय से व समाज से सबधित है।
वैषम्य	जब प्राप्ताको का वक्र सामान्य से हटकर होता है।
व्यक्तित्व	व्यक्तियो के भीतर उन मनोदेहिकशील गुणो का गत्यात्मक सगठन जो उसके विशिष्ट व्यवहार एव चितन को निर्धारित करते है।
व्यवहार चिकित्सा	यह एक आधुनिक मनोवैज्ञानिक प्रविधि है जो व्यक्तियो की अवांछनीय आदतो को तोड़ने या उन्हें निर्मूल करके व्यवहार और सवेगो का परिष्करण करने के लिए प्रयुक्त की जाती है।
व्याधियाँ	जब हमे कुछ स्थितियो या घटनाओ का सामना करना पड़ता है जो हमारी मानसिक शाति तथा सामजस्य के लिए धमकी होती है। यह जब समायोजन की गभीर विफलताओ अथवा विघटन को जन्म देती है तो उन्हे व्याधियाँ कहते हैं।
व्यावसायिक समायोजन	व्यवसाय के क्षेत्र मे समायोजन से अभिप्राय कार्यजगत के सबध मे अन्य व्यक्तियो के साथ सामजस्य पूर्ण जीवन यापन है जिसमें न्यूनतम भिड़त या सघर्ष हो।
व्यावहारात्मक संघटक	व्यावहारात्मक अथवा क्रियात्मक सघटक का तात्पर्य उस वास्तविक व्यवहार से है जो किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के प्रति किया जाता है।
व्यावहारात्मक समस्याएँ	बालक के ऐसे अनुक्रिया ढग हैं जो माता-पिता परिवार अथवा समुदाय के सदस्यो की अपेक्षाओ के अनुसार नही है।
शाब्दिक सचार	शाब्दिक सप्रेषण सदैव किसी भाषा के प्रयोग द्वारा होता है।
शैक्षिक निर्देशन	विद्यार्थियो को विद्यालयी शिक्षा से अधिकतम लाभ उठाने और विभिन्न स्तरो पर उनकी शिक्षा सबधी समस्याओ का समाधान करने मे सहायता करने की प्रक्रिया।
शोर	कोई भी कारक जो प्राप्तकर्ता का सदेश ग्रहण करने की योग्यता मे बाधा विकृति अथवा हस्तक्षेप करता है।
श्रेणी अन्तर सह-संबंध	व्यक्तियो की गुणो या विशेषताओ के आधार पर सह-सबध की गणना।

संकटकालीन परामर्श	जीवन के तनावों को समझने और उन्हें सहन करने के लिए आत्मविश्वास बनाने मे और व्यवहार के नए ढंग अपनाने के लिए दिया गया परामर्श।
सकेतन प्रक्रिया	अभीष्ट सदेश को प्रयुक्त सकेतों मे रूपान्तरण करने की प्रक्रिया।
संगठनात्मक सप्रेषण	वह सप्रेषण जो उद्योगो, चिकित्सालयो, शासकीय विभागो सैनिक तथा विद्योपार्जन संस्थानों इत्यादि में होता है।
सदेश	वह उद्दीपन है जो स्रोत्र प्राप्तकर्ता को प्रेषित करता है यह उन सकेतों से बना होता है जिनसे अभीष्ट अर्थ प्रेषित होता है।
सप्रेषण/संचार	विचारो, मतो या सूचनाओ को बोलने, लिखने या सकेतो द्वारा प्रदान करना।
सतत आँकड़े	ऐसे मापन हैं जो निरन्तर होते है और उनका किसी भी मात्रा तक उपविभाजन हो सकता है जैसे मीटर, लीटर, किलोग्राम और घंटे।
समाज विरोधी व्यक्तित्व	वह विकासात्मक व्याधि जिसमे व्यक्ति असामाजिक, दूसरे लोगो, समूहों, सामाजिक मूल्यों तथा मानको के प्रति निष्ठा मे असमर्थ होते है और उनका व्यवहार प्रायः समाज के साथ उनको सघर्ष की स्थिति में ले आता है।
समायोजन	समायोजन वह मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अथवा विभिन्न आवश्यकताओं का प्रबन्ध अथवा सामना करता है।
समूह	दो या दो से अधिक व्यक्ति जो एक दूसरे पर निर्भर है तथा सामान्य लक्षणो की प्राप्ति हेतु विश्वासों, मूल्यो तथा मानकों की भागीदारी करते हैं जो उनके आपसी आचरण को विनियमित करता हैं।
समूह विचारधारा	समूह के सदस्य जिन सामान्य विश्वासो, मूल्यो तथा मानको को मानते हैं उसे समूह विचारधारा कहते है।
समूह संसक्तिशीलता	जब समूह के सदस्य एक दूसरे को पसन्द करते है तथा सदस्यता को बहुत अधिक मूल्य दिया जाता है।
सत्तावादी नेतृत्व शैली	सभी निर्णय समूह नेता द्वारा लिए जाते है।
संबंधोन्मुखी नेता	समूह की सामाजिक तथा सवेगात्मक समास्याओ का समाधान करता है।
सरणि	वह साधन जिसके द्वारा कोई सदेश स्रोत्र से प्राप्तकर्ता तक पहुँचता है।
सहनशीलता	किसी नशीले पदार्थ के प्रति सहनशीलता का अर्थ है किसी विशेष मात्रा के बारम्बर इस्तेमाल करने पर अनुक्रिया कम हो जाना।
सह संबंध	सह-सबंध गुणक दो चरो के बीच संबंधो का माप होता है।
सांख्यिकी	सांख्यिकी गणित की वह व्यावहारिक शाखा है जिसका संबध परिगणना और मापनों से है। किसी घटना या द्वविषय के सख्यात्मक अभिलेखो को सांख्यिकी कहा जाता है।
सामाजिक-अधिगम-उपागम	बाह्य व्यवहार के निरीक्षण एवं व्याख्या द्वारा व्यक्तित्व की व्याख्या करना।
सामूहिक चिकित्सा	सामूहिक चिकित्सा से तात्पर्य समूहों मे उपचार से है।

सामूहिक निर्देशन	जो निर्देशन क्रियाएँ सामूहिक रूप में की जाती हैं।
सार्वजनिक संचार	वह औपचारिक सचार जो सार्वजनिक स्थानों जैसे सभागार, विद्यालय प्रागण, मदिर अथवा गाँव की चौपाल मे होता है।
सुसाध्यकारी परामर्श	शैक्षिक समस्याओं, पाठ्यक्रमो का चयन, व्यवसाय की योजना बनाने और परिवार के सदस्यो एवं कक्षा के विद्यार्थियो के साथ समायोजन के लिए दिया गया परामर्श।
स्रोत्र	स्रोत्र संदेश का जन्मदाता होता है।
स्थानन	स्थानन साधारणतया विद्यार्थियो को अगला काम लेने में सहायता को इंगित करता है चाहे वह आगे प्रशिक्षण की ओर हो, कार्य स्थिति मे हो अथवा विभिन्न पाठ्यक्रमो में हो।
स्व	व्यक्तित्व के गुण अवगुणो तथा सभी पहलुओं को एक साथ जोड़े हुए एक केन्द्रीय बिन्दु है जिसको "स्व" कहते है।
स्वलीनता	एक प्रकार की विकासात्मक व्याधि जो बच्चो में पाई जाती है। बच्चे जब अपने आप को कल्पना प्रवाह की दुनिया में बन्द कर लेते हैं और स्वय में ही सिमट जाते हैं या अन्तर्लीन रहते है।
हठ योग	आसनों के अभ्यास तथा श्वसन नियन्त्रण मार्ग द्वारा प्रसन्नता, मानसिक सन्तुलन तथा मन की शान्ति प्राप्त करना।
हठो ब्रेक	क्रोध के अनियत्रित विस्फोटन के रूप में होता है जिसका प्रदर्शन ठोकर मारने, चीखने-चिल्लाने, श्वास को रोकने और यहाँ तक कि फर्श मे लेटने मे होता है। यह बच्चे के रोष और कुण्ठा का शारीरिक प्रदर्शन है।
ज्ञान योग	विवेक और बुद्धि का मार्ग है।
ज्ञानात्मक सघटक	ज्ञानात्मक अथवा विश्वास सघटक विश्वासो तथा मतो का विन्यास है जिसके द्वारा अभिवृत्ति व्यक्त होती है।

हिन्दी-अंग्रेज़ी शब्दावली

अंकगणितीय	Arithmetical
अंगुलि चित्रण	Finger Painting
अहाणु	Ovum
अतःस्त्रावी ग्रंथियां	Endocrine Glands
अतर्मुखी	Introvert
अकेलापन	Aloneness
अचेतन	Unconscious
अतिश्रेष्ठ	Superior
अद्वितीय सगठन	Unique Organization
अधिगम	Learning
अधिगम कौशल	Learning Skills
अधिनियम	Regulations
अनंत स्पर्शीय	Asymtotic
अनाभिप्रेत	Unintentional
विकृति	Distortion
अनिदेशात्मक	Non-Directive
उपागम	Approach
अनुकंपी तत्र	Sympathetic System
अनुकरण	Imitation
अनुक्रिया	Response
अनुगामी	Followers
अनुजीवन	Survval
अनुदैर्ध्य अध्ययन	Longitudinal Study
अनुबंध	Contract
अनुबंधन	Deconditioning
अनुमानित मध्यम	Assumed Mean
अनुमेलन	Tallies
अनुरक्षण कार्य	Maintenance Functions
अनुरूपी	Corresponding
अनुवर्ती	Follow up
अनुसधान	Research
अनेकार्थकता	Ambiguity
अनौपचारिक	Infomial
अन्तर्गुम्फित	Interwoven
अन्तर्द्वन्द्व	Conflict
अन्तर्दृष्टि	Insight

अन्तर्नोद	Drive
अन्तर्मुखी	Introvert
अन्तरंगता	Intimacy
अन्तरस्थ	Internalised
अन्तरस्थता	Internalisation
अन्तराल	Interval
अन्तर्वैयक्तिक	Interpersonal
कौशल	Skills
अन्तर्वैयक्तिक	Interpersonal
सबध	Relationship
अन्तःशक्ति	Potentiality
अन्तःसंबधित	Interrelated
अतर्समूहिक विवाद	Inter Group Clashes
अन्तर्हिति काल	Latency Period
अपरिपक्व	Immature
अभिप्रेरण	Motivation
अभिप्रेरणात्मक	Motivational
अभिप्रेरित	Motivated
अभियान्त्रिकी	Engineering
अभिरुचि	Interest
अभिवृत्ति	Attitude
अभिक्षमता	Aptitude
अभिज्ञता	Awareness
अमूर्त चिन्तन	Abstract Thinking
अमूर्त	Abstract
तर्कणा	Reasoning
अर्थविहीन अस्तित्व	Meaningless existence
अर्धचेतन	Sub Conscious
अर्धोपवास की अवस्था	Semistarvation
अल्पकालीन	Transitory
अल्पभाव प्रबोधित	Under Aroused
अल्प मानसिक	Mild Mental
मदन	Retardation
अल्पावटुता	Hypothyroidism
अवगत	Aware
अवटुन्यासर्ग	Thyroid Hormone
अवधान	Attention

अवधारणा	Concept
अवर्गीकृत	Ungrouped
अशाब्दिक	Non Verbal
अशोधित बहुलाक	Crude Mode
असगठित	Unstructured
असतत	Discrete
असामान्यता	Abnormality
अस्थायी	Temporary
अस्थिर मापन	Unstable Measure
अहम्	Ego
अहस्तक्षेपी	Laissez Faire
अव्यक्तिकरण	Depersonalisation
आंकड़ो आंकिक	Numerical Ability
योग्यता	Data
आगिक दोष	Organic Defects
आकलनीय	Estimable
आकांक्षा	Aspiration
आक्रामक	Aggressive
आत्मकेंद्रित	Egocentric
आत्म अनुभूति	Self-Realization
आत्मबोध	Self-Understanding
आत्म विश्वास	Self-Confidence
आत्म सम्मान	Self-Esteem
आत्मसात्	Imbibing
आत्म स्वीकृति	Self-Acceptance
आत्मा	Soul
आदर्श औसत	Ideal Average
आदर्शवादी	Idealist
आधार रेखा	Base Line
आधासीसी	Migraine
आध्यात्मिक	Spiritual
आनुमानिक	Inferential
आनुवंशिकी	Hereditary
आन्तरिक कारक	Internal Factors
आन्तरिक पर्यावरण	Inner Environment
आयतचित्र	Histogram
आर्थिक कारक	Economic Factors
आलेखी	Graphical

आवृति बहुभुज	Frequency Polygon	औसत बुद्धि	Average Intelligence	चिन्तन	Thinking
आवृति वितरण	Frequency Distribution	औसत विचलन	Average deviation	चिन्ता	W o r r y
आवेग	Impulse	औषधि चिकित्सा	Drug Therapy	चिपिट वक्रता	Platykurtic -
आवेगपूर्ण	Impulsive	कल्पना प्रवाह	Fantasy	चुनौती	Challenge
आवेष्टन का स्तर	Level of Involvement	कल्पना प्रवाह असत्य	Fantasy Lies	चेतन	Conscious
आशावान	Sanguine Type	कामोद्दीपक क्षेत्र	Erogenous Zone	चौर्योन्माद	Kleptomania
आस्था	Trust	कारक	Factors	छितरी	Scattered
इकाई	Unit	कार्योन्मुखी	Task Oriented	जनन अग	Genital Organs
इदम्	Id	कण्ठा	Frustration	जनन कोशिका	Germ Cells
इलेक्ट्रा ग्रन्थि	Electra Complex	कुंठित	Frustrated	जननागी काल	Genital Period
उच्च उपलब्धि	High Achieving	कुपोषण	Malnutrition	जननिक दोष	Genetic Defects
उच्च रक्तचाप	Hypertension	कुरचना	Malformation	जननिक विज्ञान	Genetics
उच्च लब्धाँक	High Achievers	कुसमायोजित	Maladjusted	जमघट	Aggregate Group
उच्चतम सीमा	Upper Limit	केन्द्रीय प्रवृति	Central Tendency	जाँच सूची	Checklist
उत्तर जीविता	Survival	केन्द्रीय बिन्दु	Central Core	जिजीविषा	Eros
उत्तेजना	Stimulation	कोपशील	Choleric Type	जीवनवृत्ति	Vocations, Job
उत्पादक	Productive	कोषाणु	Cell	जैवरासायनिक	Bio-Chemical
उदात्तीपन	Stumulus	क्रमबद्ध	Systematic	जैविक	Biological
उदत्तीकरण	Sublimation	क्रमिक	Successive	जैविकीय	Biological
उदासीनता	Apathy	क्रियाप्रसूत	Operant	झूठ बोलना	Lying
उद्विग्न	Anxious	अनुकूलन	Conditioning	तनाव	Tensions
उपकरण	Tool	क्रियाशील	Active	तनावपूर्ण स्थितियाँ	Stressful Situations
उपक्रमण	Initiative	खिन्न वृतिवाला	Melancholic Type	तर्क सगतीकरण	Rationalization
उपजाति प्रवर्धन	Species Propagation	गतिकी	Dynamics	तत्रिकातापी	Neurotics
उपलब्धि	Achievement	गत्यात्मक क्रिया	Motor Functioning	तत्रिकातापी आवश्यकताएँ	Neurotic Needs
उपवल्कुटीय तंत्र	Limbic System	गत्यात्मक सगठन	Dynamic Organization	तत्रिकीय	Neurological
उपविभाजन	Sub-Division	गुदा सबधी अवस्था	Anal Stage	असामान्यताएँ	Abnormalities
उपसमूह	Sub-Group	गुणक	Multiple	तादात्मीकरण	Identification
उपागम	Approach	गुणसूत्र	Chromosomes	तुगद वक्रता	Leptokurtic
उलझन भरे असत्य	Confusing Lies	गुदा तुष्टि अन्वेषण	Seeking anal Gratification	तुलनात्मकता	Comparability
ऋणात्मक	Negative	गुणात्मक	Quantitative	दण्ड	Punishment
ऋणात्मक वैषम्य	Negative Skewness	गुरुत्वाकर्षण	Gravity	दम्भयुक्त	Vanity
एकान्तवास	Loneliness	घण्टाकार आकृति	Bell-Shaped Cruve	मिथ्याभाषण	Arousing Lies
एकाग्रता	Concentration	घण्टाकार वक्र	Bell-shaped cruve	दमन	Repression
एड्रीनलिन न्यासर्ग	Adrenaline Hormone	घोषतंत्री	Vocal Cords	दमा	Asthma
ओडिपस ग्रन्थि	Oedipus Complex	चतुर्थक विचलन	Quartile Deviation	दमित अभिप्रेरक	Repressed Motives
औपचारिक	Formal	चर	Variable	दर्शन शास्त्र	Philosophy
औसत निष्पादन	Average Performance	चक्षु सपर्क	Eye Contact	दशमलव सख्या	Decimal Number
		चिड़चिड़ापन	Irritability	दाब/दबाव	Pressure
		चित्तवृति	Disposition, Moodiness	दिवा-स्वप्न	Day-Dreaming
				दीर्घ विधि	Long Method

दीक्षा	Initiation
दुर्भीति	Phobia
दुश्चिंता	Anxiety
दुष्क्रिया	Dysfunctions
दृढ़ता	Persistence
दैहिक	Physical
द्विपक्षीय सममिती	Bilateral Symetry
द्विवैयक्तिक	Two Persons
धनात्मक वैषम्य	Positive Skewness
धमकी	Threat
ध्वन्यात्मक	Phonetically
समानता	Similar
ध्यान/मनन	Meditation
नवीनता	Novelty
नलिका विहीन	Endocrine
ग्रन्थियाँ	Glands
नशीला पदार्थ/दवा	Drug
निदेशात्मक उपागम	Directive Approach
निम्न लब्धाँक	Low Achievers
निम्नतम	Lowest
निरीक्षणात्मक	Observational
अधिकम	Learning
निरीक्षणात्मक	Inspectional
औसत	Average
निर्देशन	Guidance
निर्धारक	Determinant
निर्माणात्मक काल	Formative Years
निर्भर योग्यता	Dependability
निर्विघ्न	Smoothly
निर्विवाद	Undisputed
निवारक परामर्श	Preventive Counselling
निषेचित अंडाणु	Fertilized Ovum
निष्पादन	Performance
नेतृत्व	Leadership
नैतिक व्यवहार	Moral Behaviour
नैमित्तता	Instrumentality
न्यासर्ग	Hormones
पद अनुक्रम	Status Hierarchy
परख अवधि	Probation
परस्पर क्रियात्मक उपागम	Interactional Approach
पराअनुकंपी तंत्र	Parasympathetic System
परामर्श	Counselling
परामर्शदाता	Counsellor
परामर्श ग्राही/प्रार्थी	Counsellee
परमानसिकीय	Psychic
संरचना	Structure
पराहम्	Super-Ego
परिक्रमा	Revolving
परिगणना	Enumeration
परिचालन पद्धति	Circulatory System
परिच्छेदिका	Profile
परिपक्वता	Maturity
परिप्रेक्ष्य	Perspective
परिमाणात्मक	Quantitative
परिमार्जित	Refined
परिधि	Circumference
परिहार	Avoidance
परिशुद्ध मापन	Precise
परीक्षण	Test
पर्यायवाची	Synonymous
पर्यावरण	Environment
पलायन वादिता	Truancy
पाचकरस	Enzyme
पाठ्क्रम	Course
पाशविक	Brutal
नरसंहार	Massacre
पुनर्अनुबन्धन	Reconditioning
पुनर्निवेशन	Feedback
पुनर्बलित	Renforced
पुनर्विश्वास	Reassurance
पूर्वचेतन	Preconscious
पूर्वाग्रह	Prejudice
पूर्वाभिमुखीकरण	Orientation
प्रक्रिया	Process
प्रकीर्णन	Scatter
प्रतिगमन	Regression
प्रजनन	Reproduction
प्रजातान्त्रिक	Democratic
प्रतिकारी कार्य	Remedial Work
प्रतिक्रिया विधान	Reaction Formation
प्रतिदर्श/न्यादर्श	Sample
प्रतिद्वन्द्विता	Rivarly
प्रतिपादन	Interpret
प्रति-प्रजनन	Cross Breeding
प्रतिबल	Stress
प्रतिबिम्ब	Reflect
प्रतिभाशाली	Genius
प्रतिभा	Talent
प्रतिरूपण	Modelling
प्रतिस्पर्धा	Competition
प्रतिस्थापित	Replaced
प्रतिशोधी	Reyengeful
मिथ्या भाषण	Lies
प्रतीकात्मक आदर्श	Symbolic Models
प्रत्यभिज्ञा	Recognition
प्रत्यय	Concept
प्रत्ययीकरण	Conceptualization
प्रत्यक्षीकरण	Perception
प्रत्यायनीयता	Persuasibility
प्रत्याहार	Withdrawal
प्रभावकता	Effectiveness
प्रमस्तिष्कीय विद्युत आरेख	Electroence phalogram
प्रयोग	Experiment
प्रवर्तित	Persuaded
प्रविधि	Technique
प्रशिक्षण	Training
प्रशिक्षित	Trained
प्रश्नावली	Questionnaire
प्रसार क्षेत्र	Range
प्रस्फुटन	Blossoming
प्रक्षेपण प्राविधि	Projective Technique
प्रासंगिक उपागम	Contextual Approach
प्राचल	parameters
प्राप्तकर्ता	Receiver
प्राप्तांक	Score
प्रावरोधित	Prohibited
बर्हिमुखी	Extrovert
प्रेषित	Transmit
बहुलांक	Mode
बाध्यता दृग्विषय	Compulsive Phenomena
बाल अपराध	Juvenile Delinquency

बालरोग विशेषज्ञ	Paediatrician
बाह्य कारक	External Factors
बाह्य ध्वनियाँ	Extraneous Sounds
बिखराव	Dispersion
बिन्दु	Points
बीजगणितीय	Algebraic
बुद्धिलब्धि	Intelligence Quotient
बौद्धिक	Intellectual
बौद्धिक न्यूनता	Intellectual Deficit
भांग	Cannabis
भावना	Feeling
भावात्मक	Affective
भीड़	Crowd
भौतिक कारक	Physical Factors
भौतिक सामीप्य	Physical Proximity
भ्रातृयमज	Fraternal Twins
मतिभ्रम करने वाली	Hallucinogens
मध्य बिन्दु	Mid Point
मध्यम	Mean
मध्य शंकु/सामान्य वक्रता	Mesokurtic
मन	Mind
मनतरंग	Reverie
मनप्रभावी पदार्थ	Psychoactive Substance
मनस्तापी	Psychotics
मनचिकित्सक	Psychiatrists
मनोदैहिक तंत्र	Psychophysical System
मनोदैहिक बीमारियाँ	Psychosomatic Ailments
मनोलैंगिक अवस्थाएं	Psycho-Sexual Stages
मनोविकृति	Psychoseis
मनो विश्लेषणात्मक उपागम	Psycho-Analytical Approach
मनोवैज्ञानिक कारक	Psychological Factors
मलत्याग	Elimination
मलमूत्र प्रशिक्षण	Toilet Training

मलोत्सर्ग	Evacuation
मासपेशियाँ	Muscles
माध्यिका	Median
मानक	Norm
मानक विचलन	Standard Deviation
मानदण्ड	Standard
मानव संसाधन	Human Resources
मानवतावादी एव अस्तित्ववादी उपागम	Humanistic and Existential Approach
मानसिक आयु	Mental Age
मानसिक मदतायुक्त	Mental Retardates
मानसिक मंदन	Mental Retardation
मानसिक विकलागता	Mental Handicap
मानसिक संतुलन	Mental Balance
मानसिक स्वास्थ्य	Mental Health
मापन	Measurement
मिथ्या भाषण	Falsehood
मुख मुद्राए	Facial Expression
मुखौटा या	Mask
मुखावरण मुमूर्षा	Thanatos
मूलप्रवृति	Instinct
मूल्याकन	Assess
मेधावी	Gifted
मैथुन	Intercourse
मोर्स कूट	Morse Code
मौखिक अवस्था	Oral Stage
यादृच्छिक	Random
योग्यता	Ability
रंगान्धता	Colour Blindness
रक्त परिभ्रमण	Circulation of Blood
रक्षायुक्तियाँ/मनो-रचनाएं	Defense Mechanisms
रीति रिवाज	Ritualistic
रोगात्मक झूठ	Pathological Lies
रोगात्मक मिथ्या भाषी	Pathological Liar
रूढ़ि	Stereotype
लयात्मक गतियाँ	Rhythmical Movements

लक्ष्य	Goal
लिंग अवस्था	Phallic Stage
लेखाचित्र	Graph
लेखाबद्ध	Recorded
लैंगिग परिपक्वता	Sexual Maturity
लोकप्रियता	Popularity
वंशानुसक्रमण	Genetic Inheritance
वक्रता मात्रा	Kurtosis
वफादारी के असत्य	Lies of Loyalty
वर्गीकृत	Grouped
वयःसन्धि	Puberty
वयस्कता	Adulthood
वर्णसकर मटर	Hybrid Peas
वल्कुट	Cortex
वाणी संकेत	Vocal Cues
वास्तविकोन्मुख	Reality-Oriented
विकलाँग	Handicapped
विकर्षण	Distraction
विकासात्मक परामर्श	Developmental Counselling
विकासात्मक व्याधियाँ	Developmental Disorders
विकृति	Distortion
विघटन	Breakdown
विघटित	Disintegrated
विचरण शीलता	Variability
विचलन	Deviation
वितरण	Distribution
वितृष्णा	Aversion
विद्वता	Scholarship
विनिवर्तित	Withdrawn
विनोदशील असत्य	Playful Lies
विन्यास	Set
विभक्त	Divide
विभिन्न दर्शनग्राही	Eclectic Approach
विरक्त	Alienation
विलुप्तीकरण	Extinction
विवरणात्मक प्रत्यय	Descriptive Concepts
विश्लेषण	Analysis
विश्वसनीयता	Trust Worthiness

विसकेतन	Decoding
विस्फोटन	Out burst
विस्मरण	Forgetting
विस्थापन	Displacement
विषय वस्तु	Object
विषाद पूर्ण	Depressed
वैमनस्य	Friction
वैयक्तिक आवश्यकताएं	Individual Needs
वैयक्तिक पर्याप्तता	Personal Adequacy
वैयक्तिक सामाजिक	Personal Social
विकास	Development
वैषम्य	Skewness
व्यक्तिगत	Individual
व्यक्तित्व	Personality
व्यक्तित्व साक्षात्कार सूची	Personality Interview Schedule
व्यक्तिपरक	Subjective
व्यवसाय सबंधी योजना	Career Planing
व्यवहार चिकित्सा	Behaviour Therapy
व्यवहार परिष्करण	Behaviour Modification
व्यसन	Addiction
व्याधि	Disorder
व्यसनी	Addict
व्यावसायिक गोष्ठी	Career Conference
व्यावसायिक पाठ्यक्रम	Vocational Course
व्यावसायिक प्रशिक्षण	Professional Training
व्यावसायिक विकास	Vocational Development
व्यावसायिक समायोजन	Occupational Adjustment
व्यावहारात्मक	Behavioural
मानक	Norms
व्रण	Ulcers
शकालु	Suspicious
शक्ति	Power
शयनशाला	Dormitories
शल्यचिकित्सा	Surgical
शाब्दिक	Verbal
शाब्दिक कौशल	Verbal Skills
शामक	Depressants
शारीरिक आयु	Chronological Age
शारीरिक भाषा	Body Language
रूपरंग	Physical Appearance
शारिरिक विकृतियाँ	Bodily Deformities
शीर्ष बिन्दु	High Point
शुद्ध बहुलाक	True Mode
शैली	Style
शैशवस्था	Infancy
शैक्षिक प्रक्रिया	Educational Process
शैक्षिक वृद्धि	Academic Growth
शोर	Noise
श्रेणीबद्ध सरचना	Hierarchical Structure
श्रेष्ठता	Superiority
श्लैष्मिक	Phelegmetic Type
श्वसन क्रिया	Breathing
संकटकालीन परामर्श	Crisis Counselling
सकेतन प्रक्रिया	Encoding Process
सकोची	Reserved
सख्यात्मक	Numerical
अभिलेख	Records
सगठन	Organization
सगठनात्मक सचार	Organizational Communication
संघटक	Components
संचयाप्रपत्र पत्रक	Cumulative Record Card
सचार प्रक्रिया	Communication Process
सतुलन	Balance
सदेश	Message
संपूर्ति व्यवहार	Compensatory Behaviour
सप्रेषक	Communicator
सप्रेषण कौशल	Communication Skill
सभाव्य योग्यता	Potential Ability
सभाव्यता वितरण	Probability Distribution
सरचना	Structure
सवेगात्मक अनुरोध	Emotional Apeal
सवेगात्मक असुरक्षा	Emotional Insecurity
सवेगात्मक दशा	Emotional State
सवेगात्मक प्रतिक्रियाएँ	Emotional Reactions
सवेदन गति परीक्षण	Sensory Motor Test
सवेदी गत्यात्मक	Sensorimotor
सवेदनशील	Sensitive
ससर्ग	Combinations
सक्रियता	Actively
सतत	Continuous
सततता	Constancy
सत्तावादी	Authoritarian
समकालीन	Contemporary
समरूप यमज	Identical Twins
समाज विरोधी	Antisocial
समानान्तर अक्ष	Horozontal Axis
समानुभूति	Empathy
समायोजक	Adjustive
समायोजन	Adjustment
समायोजन क्षमता	Adaptability
समूहबद्ध	Grouping
समूहलक्ष्य पूर्ति कार्य	Group Goal Accomplishment Function
समूह विचारधारा	Group Ideology
समूह व्यवहार	Group Behaviour
सम्बन्धोन्मुखी	Relation-Oriented
सरणी	Channel
सर्वेक्षण	Survey
ससक्तिशीलता	Cohesiveness
सहकारिता	Cooperativeness
सहगामी क्रियाएँ	Cocurricular Activities
सहनशीलता	Tolerance

सहसम्बन्ध	Correlation
सहिष्णुता	Patience
सांख्यिकी	Statistics
साथी समूह	Peer Group
सामंजस्य	Harmony
सामंजस्यपूर्ण जीवन	Harmonious Living
सामाजिक कौशल	Social Skills
सामाजिक प्रभावशीलता	Social Effectiveness
सामान्य बुद्धि	General Intelligence
सामान्य लक्ष्य	Common Goal
सामान्य वितरण वक्र	Normal Distribution Curve
सामान्य सभाव्यता वक्र	Normal Probability Curve
सामाजिक समायोजन	Social Adjustment
सामाजिक समूह	Social Group
सामाजिक सहभागिता	Social Participation
सामाजिक-सांस्कृतिक कारक	Socio-Cultural Factors
सामूहिक अचेतन	Collective Unconscious
सामूहिक चिकित्सा	Group Therapy
सामूहिक निर्देशन	Group Guidance
सामूहिक व्यवहार	Collective Behaviour
सारणी	Table
सार्वजनिक संचार	Public Communication
सार्वभौमिक अर्थ	Universal Meaning
सार्वभौमिक क्रिया	Universal Activity
साक्षात्कार	Interview
सुखद क्रियाएँ	Pleasurable Activities
सुखेप्सा सिद्धान्त	Pleasure Principle
सुविचारित	Deliberate
सुसमायोजित	Well Adjusted
सुसाध्य कारक	Facilitating Factors
सुसाध्यकारी परामर्श	Facilitative Counselling
सुषम्ना नाड़ी	Spinal Cord
सृजनात्मक	Creative
सृजनात्मक कल्पना	Constructive
प्रवाह	Fantasy
सोपान	Step
स्थानन	Placement
स्नायु विशेषज्ञ	Neurologists
स्व	Self
स्वचालित	Automatica
स्वछवि	Self Image
स्वतः	Spontaneous
स्वनिर्देशन	Self Direction
स्वपहचान	Self Identity
स्वप्रत्यय	Self Concept
स्वप्निल	Dreamy
स्वमूल्याकन	Self Evaluation
स्वलीनता	Autism
स्व-संकल्प	Self Determination
स्व यथार्थीकरण	Self Actualization
स्वापक	Opiates
स्वायत्त तन्त्रिकातन्त्र	Autonomic Nervous System
स्वार्थपूर्ण असत्य	Selfish Lies
स्थितिपरक कारक	Situational Factors
स्थिर अस्तित्व	Stable Existence
स्थिरता	Stability
स्वीकृति	Acceptance
स्राव	Secretion
स्रोत	Source
हठोद्रेक	Temper Tantrums
हावभाव	Gestures
हीनता ग्रन्थि	Inferiority Complex
क्षमता	Capacity
त्रिज्या	Radius
ज्ञानात्मक योग्यताएँ	Cognitive Abilities
ज्ञानेन्द्रियाँ	Senses